BIBLIOTHECA INDICA;

A

COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED UNDER THE SUPERINTENDENCE OF THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

NEW SERIES,

Nos. 339, 340, 342, 347, 348, 351, and 355 ?

Sáma Veda Sañhitá.

WITH THE COMMENTARY OF

SA'YAṆA A'CHA'RYA.

EDITED BY

SATYAVRATA SA'MAS'RAMI',

EDITOR OF THE HINDU COMMENTATOR.

VOL. III.

BIBLIOTHECA BODLEIANA

CALCUTTA.

PRINTED BY N. K. SIRCAR, AT THE GANES'A PRESS.

1876.

Digitized by Google

Digitized by Google

सामवेदसंहिता,

भगवत्सायणाचार्य्य-विरचित-भाष्य-सहिता।

—∽—

श्रीलश्री

वङ्गदेशीयासियाटीक्-समाजाभ्यर्थनया

——000——

अधीतवेद-"प्रत्नकम्रनन्दिनी"-सम्पादकेन

श्रीसत्यव्रतसामश्रमिभट्टाचार्य्येण

वङ्गसामगेन

टीकिता यथावसरं शोधिता च।

——000——

तृतीयो भागः

उत्तरार्चिकः

प्रथमादि-प्रपाठकत्रयात्मकः॥

कलिकाता

गणेशयन्त्रे मुद्रितः।

शाकाः १७९७।

Digitized by Google

Digitized by Google

॥ मन्त्राणामकारादिक्रमेण सूची ॥

——०*०——

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
अग्नआयाहि (१, १, ४, १ = उ ०)	१४
अग्निंवोवृधन्तं (१, १, १०, १ = उ २, १, २०—६, २, १) ...	५७२
अग्निमग्निः (१, २, ५, १ = उ ०)	२८५
अग्निन्दूतं (१, १, ६, १ = उ ०)	२०१
अग्निमग्निंहवीमभिः (१, १, ६, २ = उ ०)	२०३
अग्ने देवां (१, १, ६, ३ = उ ०)	२०५
अच्छाकोशम् (१, १, ३, १ = उ ११, १, १३)	१०
अच्छासमुद्रम् (१, १, ३, २ = उ ११, १, १२)	११
अतस्त्वारयिर् (१, २, ३, ३ = उ ०)	२८१
अत्राहगोर् (३, १, ८, १ = उ ०)	५०९
अधधारया (३, १, १० १ = उ ३, १, १५—८, १, ५)	६७१
अधाहीन्द्र (१, १, २१, १ = उ १, १, १७—१०, २, ८)	१९०
अधाहिन्वान (१, २, ३, ४ = उ ०)	२८२
अतुलारोदसी (३, १, ९, २= उ ०)	६११
अनुप्रत्नस्यौकसो (१, १, ११, १ = उ १, २, ९)	११९
अनूपेगोमान् (३, १, ११, १ = उ ३, १, ३—४--७, १, १९—१९, १, १— ...	
१०, १, १९—११, १, १५)	६२०
अप्साइन्द्राय (३, १, ११, १ = उ, अर्षासोम)	६१५
अभिगावो (१, २, २, १ = उ ०)	५९१
अभितेमधुना (१, १, १, २ = उ ११, १, ११)	४
अभित्वावृषभा (१, १, ७, १ = उ १, २, ५)	२१५

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

अभित्वाशूर (१, १, ११, १ = उ १२, १, १९,—२१, १, १—२१, १, १२) ८३
अभिद्युम्नं (२, २, १७, १ = उ ३, १, ११—५, १, १ –९, १, १२—
१४, २, १४—१९, १, १२) ६४५
अभिद्रोणानि (१, १, १९, २ = उ, प्रशोभारोविपश्चितो) ... २६७
अभिप्रवः (२, १, १३, १ = उ २, १, २—७, १, ७—२१, १, ११—१५) ३३४
अभिप्रियाणि (१, १, १९, १ = उ १, १, १३,—९, १, २—१४, १, १८—
१९, १, १५—१९, १, १४) १६५
अभिब्रह्मीर् (२, २, १४, २ = उ २, १, २०—७, १, १६—९, १, ७—
१५, १, १९—१६५ २०, १, १०—११) .. ४४२
अभिव्रतानि (३, २, २०, ३ = उ ३, १, १५—८, २, ५) ... ६७२
अभिसोमास आयवः (२, २, ९, १ = उ २, १, १४ –१५—४, २, ७—
८—९—१०— ११—१२—७, १, १३—७, २, १४—
१५—१६—८, १, १६—१७—८, २, १८—९, २, १५— .. ..
९, ३, ६—१२, १, ३—१२, २, १६—१४, १, ९— ... ...
१४, २, ५—७—१६, २, २—३—१८, २, २— ... ...
३—१०—२२, २, १०) ४०१
अभीषुणः (१, १, १२, ३ = उ १, १, ५—१०, १, ८) ... ८९
अभ्यर्षं बृहत् (३, २, ४, ४ = उ ०) ५९९
अयं यथान (३, १, २०, २ = उ २, २, १०—६, २, ११) ... ५७४
अयं वां मित्रावरुणा (३, १, ७, १ = उ ०) ५०४
अयं विश्वा अभि (३, १, २०, ३ = उ २, २, १०—६, २, ११) ... ५७४
अयं विश्वानि तिष्ठति (१, २, १६, २ = उ, अस्यप्रत्ना) ... २५२
अयं सो (३, २, ४, ३ = उ ०) ४९२
अयं सूर्य (१, २, १६, २ = उ, अस्यप्रत्ना) २५१
अयन्त इन्द्र (१, २, ५, १, = उ १, २, २—१, २, २) २०८
अयम्पुनान उषसो (२, १, १७, ३ = उ २, १, १०—९, १, ५—१६, १, १७) ३६०
अयम्पूषा रयिर् (२, १, १६, १ = उ २, १, ८—९—७, १, ९—११, २, १०— ...

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्

१०—१२, १, ९—१५, १, ११—१४—१, १०— .. ...
१०, १, ५—८—११, २, ९) ३४५
अयाचित्तो (२, १, १०, २ = उ, ह्यापवस्व) ३१४
अयमराय (१, १, १७, १ = उ, इन्द्रमच्छसुता) १११
अयापवस्वदेवयुर् (१, २,११,१ = उ १, २, १६—१७—६, २, १५—१६—९ २, २) २८९
अरूरुचदुषसः (२, २, १९, १ = उ ७, २, १—११, २, १—१५, १; १) ४६१
अर्षासोमद्युमत्तमो (१, १, ११, १ = उ १, १, ५—६—७—८—८, २, ३— ...
४—९, २, ११—१९, २, ३—२०, १, १९—२०,—२०, २, १) ६१४
अवद्युतानः (१, १, १९, १ = उ, अभिप्रियाणिपवते) १६७
अश्वोनचक्रदो (२, १, ३, २ = उ ०) २९८
असर्जिकलशां (१,१,१८,३ = उ ३,१,१७—७,१,९—९,१, ४—१५, २, ११) ५६१
असाविसोमइन्द्र (१, २, २१, १ = उ ३, १, १८—११, २, १८—
२१, २, १८—२२, १, ४) ६८२
असाव्यंशुर् (१, २, १६, १ = उ २, १, ११—७, २, १९—१६, १, ४—
२०, २, २) ६४१
असिहिवीर (३, १, १४, २—१९, २, ४) ६२१
अस्यप्रत्नामनु (१, २, १९, १ = उ ९, १, ९—२, ३—३, १०—११, २, ८—
१४, १, १९—२०—१४, २, १—१—१—४) .. २४९
अस्येदिन्द्रोमदेष्वा (१, १, १७, १ = उ, इन्द्रमच्छसुता) ११२

आवामसद् (१, २, ११, १ = उ १, २, ९) १२०
आतिष्ठवृत्रहन् (१, २, २२, १ = उ ३, १, १८—११, २, १८—२१, १, ४) ६८४
आनूनमिन्द्रमनुमन्तं १, २, ९, १ = उ १, २, ४) २११
आतेअग्नइधीमहि (२, २, २१, १ = उ २, १, १६—१७, १, ६) ... ६७६
आतेअग्नऋचा (२, १, २१, १ = उ २, १, १६—१७, १, ६) .. ६७७
आलाग्नयुजा (१, १, ९, २ = उ ०) १८
आत्वेतानिषीदत— (१, २, १०, १ = उ १, २, ८) ११४

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्				पृष्ठम्
आदह स्वधाम् (२, १, ७, १ = उ०)	...	...	...	१९५
आदीं हंसो (१, २, २१, १ = उ १, १, १४—११, १, १०)			..	१८७
आदीं त्रितस्य (१, २, २१, २ = उ १, २, १४—११, १, १०)			...	१८७
आदीमश्वं (२, १, १४, २ = उ २, १, १०—७, २, १९—१६, १, ४—१०, २, २)				६४२
आ न इन्द्रो (२, २, २, २ = उ ०)	..	...	..	१०९
आ नः सोम सहो (२, ०, २, २ = उ ०)	...	...	...	१०९
आ नो मित्रावरुणा (१, १, ५, १ = उ ०)	...	...	...	१६
आ पप्राथ २, २, ११ २ = उ २२, १, १९)		...	...	४२२
आ पवमान सुष्टुतिं (२, १, ५, २ = उ ५, १, १०—१९, २, १०)			...	४९६
आ पवस्व महीम् (२, १, २, ४ = उ ०)	..	...	...	४८९
आ पवस्व सुवीर्यम् (२, १, ४, २ = उ ०)		...	..	२००
आ याहि सुषुमा (१, १, ६, १ = उ ०)	...	...	...	१८
आ योनिमरुणो (२, १, ११, २ = उ २, २, १२—२२, २, ११—११—१२)				५२२
आ वंसते (२, २, १७, २ = उ २, २, ५)	...	.	..	४६७
आ वच्यस्व सुदक्ष (२, २, १४, २ = उ २, १, ११—५, १, १—९, १, १२— १४, २, १४—१९, १, १२)	..	..	..	६४६
आविवासन् (२, १, ४, ५ = उ ०)	...	...	...	४९४
आसुरर्वं (२, १, ५, १ = उ ०)	...	...	...	४९१
आवर्धतोपजुर्मो (१, २, १०, १ = उ, प्रतीमदेववीतये)			...	२७५
इच्छन्ति देवाः (१, २, ३, १ = उ १, १, १०)		..	...	२०२
इन्द्रमग्नस्य (२, १, ८, २ = उ ०)	..	..	...	५७८
इदं वसो सुतं (१, २, ८, १ = उ १, २, ६)	...	..	...	२१०
इदं ह्यन्वोजसा (१, २, ९, १ = उ १, २, ७)		..	...	२११
इन्दुरिन्द्राय पवते (२, २, १५, २ = उ २, २, २—४—७, १, २०—९, १, ८— १५, २, १—२—१६, १, २—२०, १, १२—२२—२३, २, ११)			..	४५०
इन्दुर्वाजी पवते (२, २, २०, १ = उ ३, १, १५—८, ३, ५)			...	...
इमोयपातन (२, १, ५, २ = उ०)	...	..	..	६०१

मन्त्रप्रतीकम् ... पृष्ठम्

इन्द्रो यद्द्रिभिः (२, २, ३, ४ = उ ०) ४९५
इन्द्र इद्धर्योः (२, १, ८, २ = उ ०) ३०९
इन्द्र इषो (१, २, १, ३ = उ १, १, १८) १९७
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् (२, १, १९, १ = उ २, १, १२—७, १, ११,—२१, १, ... २—२, ३) ३९८
इन्द्र जठरं (३, १, १२, २ = उ ३, १, २) ५८३
इन्द्र जुषस्व (२, १, ११, १ = उ ३, १, २) ५८२
इन्द्र क्रतुं (३, १, १५, २ = उ २, २, १४--७, २, ७—१८, २, १२) ५४६
इन्द्रमग्निं कविच्छदा (१, १, ७, ३ = उ ०) २१
इन्द्रमच्छ सुता (१, १, १७, १ = उ २, १, ७—१०, १, १६—१३, १, १०— ... १, १, १०—९, १, १७,—६, २, ८—९, १, २०—१०, २, १— ... १२, २, १०—१२, १, १—१४, १, ११—१४, १, १७) .. १११
इन्द्रमिद्गाथिनो (२, १, ८, १ = उ ०) ३०८
इन्द्रमिद्धरी (३, २, २३, ३ = उ ३, १, १८— ११, २, १८—१२, २, १८— .. १३, १, ४) ६८४
इन्द्र वाजेषु (२, १, ८, ३ = उ ०) ३०९
इन्द्र सुतेषु (१, २, ११, १ = उ १, २, १०—१९, १, २) .. २३२
इन्द्र तुराषाण्मित्रो (३, १, २१, ३ = उ ३, १, २) ५८३
इन्द्राग्नी आगतं (१, १, ७, १ = उ ०) १९
इन्द्राग्नी अरित्तुः (१, १, ७, २ = उ ०) २०
इन्द्राग्नी युवां (३, २, १०, १ = उ ०) ६१२
इन्द्राय नूनं (३, १, २१, ३ = उ ३, १, १—२१, २, १७—२२, १, २) ५७८
इन्द्राय मद्वने (१, २, ४, १ = उ १, २, १) २०४
इन्द्राय साम (३, २, १२, १ = उ ३, १, ७) ६८०
इन्द्रे अग्ना (२, १, ९, १ = उ ०) ३११
इन्द्रं वर्धन्ति (२, २, ७, १ = उ ०) ३९१
इन्द्रो दधीचो (३, १, ८, १ = उ ०) ५०६

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
इन्द्रोदीर्घाय (२, १, ८, ४ = उ०)	३१०
इन्द्रोमहायवाहचे (२, २, १४, १ = उ १९, २, ४) ...	६२१
इममिन्द्रसुतं (२, १, ११, १ = उ २, १, १—२१, २, १०—२२, २, २)	५०७
इमाउत्वांद्दिविष्टय (१, २, १५, १ = उ ११, २, १—१२—१६ ..	२४५
इयंवामस्य (२, १, ९, १ = उ ०)	५११
इयन्नोवाय (२, २, ११, २ = उ अर्षासोम)	६१६
इयेमपवस्व (२, २, ४, १ = उ ०)	३८२
इहत्वागोपरीणसं (१, २, ७, २ = उ १, २, ५)	२१६
ईशानइमा (२, २, १, २ = उ ८, २, ७—१३, १, १८) ...	५८८
उग्राविघनिना (२, २, ७, २ = उ ०)	३९९
उच्चातेजातम् (१, १, ८, १ = उ १, १, १—२, १, १२—६, १, ९—१०— .. ७, १, १२—८, १, ११—१०, १, १०—११—११, १, १४— ... १२, १, १—२—१२, २, ७—१३, १, १०—१५, १, ३—४— .. ५—१६, १, १९—१९, १, ११, २०, १, ६—७—८—९— ... २०, २, १४—२२, १, ४)	२२
उतनोगोविद् (२, २, ५, ३ = उ ०)	६०२
उत्तिष्ठन्नोजसा (२, २, ९, १ = उ ०)	६१०
उदुत्वियाःसृजते (१, २, १४, २ = उ ११, २, ९—१२—१५) ...	२४१
उपक्षितस्य (२, २, १८, २ = उ प्राणाभिग्घ्रद्)	६५०
उपत्वाकर्मन्नूतये (१, १, २२, २ = उ १, १, १६— ११, १, १०) ...	१८७
उपभिक्षापतस्युषी (१, २, १८, १ = उ ६, १, ५—१९, २, ११—२१, १, २—११)	२६२
उपास्मै (१, १, १, १—१, २, १८, २ = उ २१, १, ११—६, १, ४— ... १९, २, ११—२१, १, २—११)	४।२६२
उपोषुजातम् (१, २, १८, २ = उ ६, १, ५—१९, २, ११—२१, १, २—११	२६३
उभयतःपवमानस्य (२, १, १, २ = उ ८, २, २)	४८०
उरुमंसा (१, १, ५, २ = उ ०)	१६

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् | पृष्ठम्

ऊर्जोनपातंस (१, १, १०, २ = उ यज्ञायज्ञा) १७६

ऋतस्यजिह्वापवते (१, १, १९, २ = उ अभिप्रियाणिपवते) .. १६६
ऋतेनमित्रावरुणा (२, १, ६, २ = उ ०) १९०
ऋतेनयावृतावृधा (२, १, ०, २ उ = ०) २०६
ऋतेनयावृतावृधा (२, १, ७, २ = उ ०) २०६
ऋधक्सोम (१, १, २, ३ = उ ११, १, १२) ८
ऋषिर्विप्रः (१, १, १०, ३ = उ १, १, ४—१९, १, ७) ८०

एतेअसृग्रम् (२, २, १, १ = उ ०) २७६
एनाविश्वान्यर्य आ (१. १, ८, २ = उ उवातेजा) १२
एनावोअग्निं (१, २, १२, १ = उ २१, २, ८—२१, २, ११—२१, २, १४) २२६
एवानःसोमपरि (२, २, १०, ३ = उ २, १, १७) ४१९
एवापवस्वमदिरो (२, १, ११, ३ = उ २, १, २—७, १, ६) ... ३१७
एवारातिस्त (२, १, १८, ३ = उ २, १, ११—२१, २, २) .. २६५
एवाह्यसिवीरयुर् (२, १, १८, १ = उ २, १, ११—२१, २, २) २६४
एषप्रत्नेनजन्मना (१, २, १७, १ = उ ०) २६०
एषप्रत्नेनजन्मना (१, २, १७, २ = उ ०) २६१
एषुपुप्रयाचि (१, १, २१, १ = उ १, १, १५—१३, १, १२) ... १८३

ओभिसुवन्द्र (३, २, ११, ३ = उ २, २, २१, ३—२, १, १६—१७, १, ६) ६७८

कण्वेभिर्धृष्णवा (२, २, ११, २ = उ २, १, १८—४, १, ८—९—१९, २, ७) ४२६
कयानश्चित्र (१, १, १२, १ = उ १, १, ५,—१०, १, ८) ... ८७
कवीनोमित्रावरुणा (२, २, ६, ३ = उ ०) ३९१
कस्त्वासत्यो (१, १, ११, २ = उ १, १, ५—१०, १, ८) .. ८८
कवकमावरियो (२, २, १, ३ = उ ०) ३७७
केतुकृण्वन्दिवस् (२, २, २, २ = उ ०) ५९२
क्रीडुर्मखो (३, २, ४, ७ = उ ०) ६००

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

गृणानाजमदग्निना (१, १, ५, ३ = उ ०) १७
गोवित्पवस्व (९, २, १, १ = उ ८, २, ७—१३, १, १८) .. ५८६

जघ्निर्वृत्रं (३, १, १५, २ = उ ०) ३३४
जज्ञानोवाचं (३, २, २, ३ = उ ०) ५९१
जनस्यगोपा (३, १, ६, १ = उ १९, १, १५) ४९९

तंवोदस्म (१, १, १३, १ = उ १, १, ६—६, २, १४—१३, १, ५—
१३, १, ८—१४, १, १०—२१, १, ४—२१, १, ९—२१, १, १७— ...
२१, १, १४) ९१
तद्वोगाय (२, १, १८, ३ = उ २, २, ६—८, १, १२—१९, १, १९) ४७०
तन्तेमदं (२, १, १८, १ = उ २, २, ६—८, १, १२—१९, १, १९) ४६८
तन्तेयवंयथा (१, २, ८, ३ = उ १, २, ६) २१९
तन्त्वाधर्तारं (२, १, १०, २ = उ इषापवस्व) ३१४
तन्त्वानृम्णानि (२, २, ३, १ = उ ०) ३८०
तन्त्वासमिद्भिर् (१, १, ४, २ = उ ०) १४
तन्दुरोषमभीनरः (१, १, १८, ३ = उ पुरोजितीवो) ... ६१२
तपोष्पवित्रं (१, २, १६, २ = उ ७, १, १—१२, २, २—१५, १, १) ४६०
तमुष्टवाम (२, २, १९, ३ = उ १, १, ७—१३, १, १४) .. ४७५
तमुत्वावाजसातय (१, २, १२, ९ = उ १, २, १०—१९, १, २) .. ११४
तरणिरित्सिषासति (२, २, १२, १ = उ २, १, १९) ४४०
तरत्समुद्रं (२, २, ९, २ = उ अभिसोमासआयवः) ४०१
तरोभिर्वो (१, १, १४, १ = उ १, १, ७—१०, १, १५) .. १०१
तवश्रियो (३, २, ७, १ = उ ०) ६०५
तवाहंनक्तं (३, १, ११, २ = उ तवाहंसोम) ५१७
तवाहंसोम (३, १, ११, १ = उ २, २, ९—१०—११—८, १, १८— ...
९, १, १०— ९, २, १४—१३, २, १—२—१६, २, १५— ..
१६—१७—१८—१९, २, १—२०, १, १४—१५—१९) .. ५१७

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

तावश्चममपा (१, २, १५, १ = उ १०, १, ४) ६१९
तावश्वपूप्रलाग्नुवः (२, २, १५, २ = १०, १, ४) ६१८
ताभिरामच्छतं (१, २, १०, १ = ०) ६११
तावांशस्य (१, २, ८, १ = उ ०) ६०९
तावांमोभिंर (२, १, ९, १ = उ ०) २११
तापूषाआपूताच्छतो (१, १, ७, १ = उ०) ५०५
ताश्चिमग्नन्न (२, १, ९, १ = उ ०) २११
ताक्वेषवीर् (२, २, ८, १ = उ ०) २९९
तिवोरंरवति (१, २, १०, १ = उ २, १, १०,) ४२०
तिवोवाचवद् (२, २, १४, १ = उ २, १, २०—०, १, १६—९, १, ०—
१५, १, १९—२०, १, १०—११) ४४१
तुभ्येनाभुवना (२, १, १, १ = उ ०) २९४
त्विकद्र् केपुचेतनं (१, २, ४, २, = उ १, २, १) २०५
त्वोविचितस्य (१, २, १८, १ = उ मावाभिस्पृर्) ६५०
तंराजेवद्धप्रती (१, २, ४, ५ = उ ०) ५९९
तंसमुद्रिवा (२, १, १, २ = उ ०) २९४
तंशोमनुमाह्वः (३, २, २, ५ = उ ०) ५९५
तंशोमपरिषव (१, २, ६, १ = उ ०) ६०४
तंस्याज्रेव (१, १, १०, १ = उ २, २, १६—५, २, १६—११, २, १८—
१९, १, १२) ५५५
तन्ध्याव (३, २, १९, १ = उ पवस्ववाजसातये) ६५९
तस्रम्नवाजकुस् (१, २, २, १ = उ १, १, १९) २००
तस्र्वचा (१, २, १, २ = उ ८, २, ७—१२, १, १८) ... ५८०
त्वमिन्द्राभिभूर् (१, २, १२, १ = २, १, १०) ६८१
त्वोरिहन्ति (१, २, १८, १ = उ पवस्ववाजसातये) .. ६५९
त्वामग्ने (१, १, ६, २ = उ १९, १, १५) ५०१
त्वामिदाह्यो (१, १, १४, १ = २, १, ४—१८, २, ८) ... २०४

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्				पृष्ठम्
त्वामिद्धिहवामहे (२, १, १२, १ = उ ०)	....	..		२२०
दविद्युतत्यारुचा (१, १, २, १ = उ ११, १, ११)	..	..		७
दुहानऊधर् (१, १, ६, २ = पुनानःसोम)	...	..		४२
दुहानःप्रत्नमित् (१, २, १७, ३ = उ ०)	..	...		२६१
धुषं सुरासु (१, १, १३, १ = उ तंयो ०)	...	...		९२
धीभिर्मृजन्ति (३, १, १८, २ = उ १, १, १७—७, १, ९—९, १, ४—				...
१५, १, ११)	...	...	... ...	५६०
नकिष्ट्वद्रथीतरो (३, १, २१, २ = उ ३, १, १—२२, १, १७—२३, १, ३)				५७७
नवं मन्वत् (१, २, ३, २ = उ १, १, २०)	...	..		२०२
ननानांचम्वी (१, १, ११, २ = उ १२, १, १९—२१, १, १—२२, १, १२)				८४
नहुह निद्रविणोदेषु (२, २, १२, २ = उ २, १, १९)	...	..		४४१
नवांकुशा (१, १, १४, २ = उ १, १, ७—१०, १, १५)	..	...		१०१
नहितेपूर्त्तम् (१, १, २१, ३ = उ १, १, १५—१३, १, १२)		...		१८४
नहित्वाशूर (१, २, ६, ३ = उ १, २, ४)	...	...		२१३
नूनीरयिं (३, १, १३, ३ = उ ३, २, १२—१३, २, ११—१२—१३)				५२४
नृभिर्धौतः (१, २, ८, २ = उ १, २, ६)	..	...		२१८
न्यभिर्येमाचो (२, २, ९, २ = उ अभिसोमासआयवः)	...	..		४०२
नेमिन्नमन्ति (३, १, १४, २, = उ १, २, १२)	...	..		५४२
परितःप्रसंयन्त्या (३, १, २, ६ = उ ०)	..	...		४९०
परिप्रियादिवः (३, १, १६, १ = उ १, २, १५—७, २, ८—१५, १, १०—				...
१६, १, ११—२०, १, १७)	...	...	..	५५०
परिविंशानि (३, २, ४, ३ = उ ०)	...	...	..	५९८
परिष्कृण्वन् (३, १, ४, २ = उ ०)	...	..	..	४९२
पवतेहर्यतो (१, २, २१, २ = उ यथापवस्वदेवयू)		...		२८९
पवमानधिया (३, १, १०, ३ = उ १, १, ८—१५, १, ९—१६, १, १)				५१४
पवमानरसस्तव (३, १, २, २ = उ ३, १, १७)	...	...		४८४

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
पवमानवधावचा (३, १, ५, २ = ७ ५, १, १०—१५, २, १०) ..	४९६
पवमानस्यतेकवे (१, १, ३, १ = ७ ११, १, १३)	१०
पवमानस्यतेरसो (३, १, २, १ = ७ ३, १, १७)	४८४
पवमानस्यतेवयं (१, १, ५, १ = ७ ०)	३०१
पवमानस्यविश्ववित् (३, २, २, १ = ७ ०)	५९१
पवमानोअजीजनत् (२, १, २, १ = ७ ३, १, १७) ...	४८२
पवस्वदक्षसाधनो (३, १. १०, १ = ७ २, २, ८—१५, २, ९—१६, २, १)	५१३
पवस्वमधुमत्तम (१, १, १६, १ = ७ १, १, ९—२, १, ६—७, १, ८—	...
१०, १, ५—१३, १, ४—४ १, ८—९, २, ७—१०, २, ५—	...
१३, २, १८)	११५
पवस्ववाचो (२, १, १, १ = ७ ०)	२९३
पवस्ववाजसातये (३, २, १९, १ = ७ ३, १, १३—१४,—८, १, १—२, ६—	...
१५ २, १९—२०—२१—१६, १, १०—२, ९—२०, २, २—	..
२१, ३, २—१९, १, १२)	६५८
पवस्वविश्वचर्षण (३, १, ३, ५ = ७ ०)	४९०
पवस्वदेववत्तम (३, २. ३, ६ = ७ ०)	५९६
पवस्वेन्दो (२, १, २, १ = ७ ०)	२९५
पवित्रन्ते विततं (२, ३, १६, १ = ७ ७, २, १—१२, २, २—१५, १, १)	४५९
पातन्नोमित्रा (३, २, ८, ३ = ०)	६०९
पान्तमावो (१, २, १, १ = ७ १, १, १८)	१९५
पिबासोममिन्द्र (३, १, १३, १ = ७ २१, २, १—३)	५३७
पुनानःसोमधारया (१, १, ९, १ = ७ १, १, २—३—२, २०—२, १, १—	...
४, १, ४—५—६—६, १, ११—१२—१३—२, २—८, २, १२—१४—	...
१५—९, २, १६—१२, १, १२—१०, १, १३—२०—११, २, १६—	...
१३, १, ७—१९—२, १५—१६—१५, २, ३—४—१६, १, १०—	...
१७, १, १—१६—१८, १, ७—२०—२१—२, ३—१९, १, २०—	..
३, १२—२०, २, ११—१५—१६—१७—२१, २, ९—१२, १, ५—	..
८—२१, २, ८)	४१

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् | पृष्ठम्

पुनानो अक्रमीद् (२, १, ११, १ = उ २, २, ११—१२, २, ११—१२—१२) ५३२
पुनानो देववीतय (२, २, ४, २ = उ ०) ३८४
पुनानो वरिवस्कृधि (२, २, ४, २ = उ ०) ३८४
पुरुत्रा तम्पुरुष्टुतं (१, २, १, २ = उ १, १, १८) १९६
पुरूतमम्पुरूणाम् (१, २, १०, २ = उ १, २, ८) २२५
पुरूवसाभिधस्यामो (३, २, ५, १ = उ ०) ६०८
पुरोजिती वो अन्धसः (१, १, १५, १ = १, १, ११—१२—२, २, १८—
४, १, १२—१४—६, २, ९—७, २, १०—५, २, १५—१६—१७—
१०, १, ३—१७—१२, १, ६—१२, २—१२—१२—१२—१४—
१२, १, ६—२, ६—१६, १, ३—८—९—१६, २, ६—१७, १, २—
४—१७—२०, १, १८—२, १२—१२—२१, २, १—३, ३—
२२, १, ६—७—९—२, १३—१५—२३, १, ९) १२१
पूर्वीरिन्द्रस्य (२, १, १९, २ = उ २, १, १२—७, १, ११—२१, १, २—२, २) ३००
प्रकविर्देववीतये (३, २, ४, १ = उ ०]) ५९०
प्रतद्वाग्निर्नो: (३, १, १, १ = उ ८, २, २) ४०९
प्रत्नद्रव (१, १, १०, १ = उ १, १, ४—१९, १, ७) ७८
प्रते अश्नोतु (१, २, ९, २ = उ १, २, ७) २२२
प्रत्युअदर्श्या (१, २, १४, १ = उ २१, २, ९—१२—१५ ... २४०
प्रपवमानधन्वसि (३, २, ३, २ = उ ०) ५९४
प्रप्रक्षयायपन्यसे (३, १, १३, ३ = उ ६, २, १५—७, २, ८—१५, २, १०—
१६, १, ११—२०, १, १७) ५५१
प्रबंचिष्ठाय (२, २, १०, = उ २, २, ५) ४६६
प्रबङ्गाणीन (३, १, ३, १ = उ ०) ४८७
प्रवइन्द्रायमादनं (१, २, २, १ = उ १, १, १९) १९८
प्रबन्याजाय (१, २, ११, २ = उ यथापवस्वदेवयुर्) १९०
प्रवोमहे मतीनये (१, २, १०, १ = उ १, २, १३—६, २, १३—
८, १, १२—९, २, १७—१८—११, १, १७—१४, १, १५— .. ..
...

मन्त्रप्रतीकम् — पृष्ठम्

१८, १, ११—१३—१४—१९, २, १७—२१, १, ६) .. २७४
प्रणोमामोषचन्मिषुः (२, ९, ३, १ = ष ०) ५९२
प्रणोमामोमहन्मुनः (१, २, २१, १ = ष १, २, १४—११, १, २०) १८६
प्रणोमामोविपश्चितः (१, २, १९, १ = ष १, १, ११—१२—६, २, ११— ...
११, २, ११—१४, १, १२—१२—१४—१८, १, ११—१९, २, १५—१६) ...
प्राणाग्निमुद् (३, २, १८, १ = ष ३, १, १२—५, १, २—७, २, १०— ...
७, २, २१—९, १, १४—९, ३, २—१२, १, ५—१५, २, ८—१६, २, ८) ६४९
प्रावीविपद्वाच (६, १, १९, २ = ष २, २, १९—८, २, १—२३, १, १०— ...
१६) ५६८
बीधात्मने (६, १, १२, १ = ष ११, २, १—२) ५२८
ब्रह्मादेवानां (३, १, १९, २ = ष २. २, १९—८, २, १—२३, १, १०—१६) ५६६
ब्रह्मावध्वायुना (१, १, ६, २ = ष ०) १९
मत्वाशुभिमिन् (२, १, १४, २ = ष २, १. ४—१८, २, ८) ... २४०
मनीषिभिःपवते (२, १, १७, २ = ष २, १, १०—९, १, ५—१६, १, १७) ३५९
मामापूरा० (१, २, ७, २ = ष १, २, ५) २१५
मापापत्नाय (६, १, ९, २ = ष ०) ५१२
मित्रं वयं हवामहे (२, १, ७, १ = ष ०) ३०५
मित्रं हुवे (२, २, ६, १ = ष ०) ३८९
मेधाकारं (३, २, ७, ३ = ष ०) ६०७
मोषुब्रह्मेव (२, १, १८, २ = ष २, १, ११—२१, २, २) ... ३६३
यथोजिह्वमा (२, १, १९, २ = ष यथामूधारयित्) ३४७
यमसूवेतु (३, ६, ६, २ = ष १९, १, १५) ५०१
यज्ञायज्ञावो (१, १, २०, १ = ष १, १, १४—१२, २, ५—१२, १, ११—
२१, २, २०—२१—२३, १, ८) १०५
यमत्राय (१, १, २१, २ = ष १, १, १५—१३, १, १२) .. १८४
यस्योमधिनं (३, २, १६, १ = ष ३, १, ९) ६२९
यदद्भिःपरिषिच्यसे (२, १, ४, २ = ष ०) २९९

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

यदुदीरत (२. २, १४, २ = उ १९, २, ४) ६३४
यद्यावइन्द्र (२, २, ११, १ = उ १९, १, १९) ४२१
यमंयवग्नो (२, २, ५, १ = उ ०) ६०१
यदिन्द्र (२, २, १९, २ = २, २, ७—१२, १, १४) ... ४७४
यस्तेअनु (१, २, ९, २ = उ १, २, ७) २१२
यस्ते मदो युज्यश्चारु (२, १, १२, २ = उ १२, २, १—२) .. ५२८
यस्ते मदोवरेण्यं (२, १, १५, १ = उ ०) ३४२
यस्ते शृङ्गवृषो (१, २, ५, २ = उ १, २, २—१, २, ३) .. २०९
यस्त्वामग्ने (२, २, ५, २ = उ ०) २८६
यस्मिन्विश्वा (१, २, ४, २ = उ १, २, १) २०५
यस्यतेपीत्वा (१, १, १६, २ = उ मघखमधुमत्तम) ११६
यस्यतेसख्ये (२, १, २, २ = उ ०) २९२
यातेभीमान्यायुधा (२, १, २, २ = उ ०) २९६
यावांसन्ति (२, २, १०, २ = उ ०) ६१३
यास्तेधारा (२, २, ६, १ = उ ०) ६०३
युञ्जन्तिहरिः (१, १, २२, २ = उ १, १, १०—१०, २, ८) ... १९२
युवांचित्रं (१, २, १५, २ = उ २१, २, १०—११—१६) ... २४२
युवंहिस्थः (२, २, १२, २ = उ २, १, ९) ६३०
येतेपवित्रं (२, १, ५, १ = उ ०) ३०१
येनज्योतींष्यायवे (२, २, १८, २ = उ २, २, ६—८, १, १२— .. ...
१९, १, १९) ४६९
येनानवन्ना (२, १, १७, २ = उ २, २, १६—५, २, १६—११ २, १८— ...
१९, १, १९) ५५६
योअग्निंदेववीतये (२, २, ५, २ = उ ०) २८७
योगेयोगेतवस्तरं (१, २, ११, १ = १, २, ९) २२८
योजिनाति (२, २, ५, २ = ०) ६०२

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
योधारया (१, १, १८, १ = उ पुरोजिती)	११२
योराजाचर्षणीनां (१, १, १५, १ = उ १, १, १४—७, २, ७—१८, १, १२)	५४५
रक्षोहा (१, १, १५, १ = उ स्वादिष्ठयामदिष्ठया)	१०६
रसाय्यःपयसा) १, १, ११, १ = उ २, १, १—७, १, ६) ...	११६
राजानावनभिद्रुहा (२, १, ७, १ = उ ०)	५०५
राजामेधाभिर् (१, १, १, १ = उ ०)	१७८
रायःसमुद्रांश्चतुरो (१, २, १४, १ = उ १, १, १०—७, १, १६—९, १, ७— ... 15, १, १९—२०, १, १०—११)	४४४
वयकृत्वा (२, १, १२, १ = उ १, १, १८—४, १, ८—९—१९ १, ७)	४१४
वयमुत्वामपूर्व्य (१, १, १३, १ = उ १, १, १६—११, १, १०) ...	१८७
वयमुत्वातदिदर्था (१, १, २, १ = उ १, १, १०)	२०१
वरिवोधातमो (१, १, १५, १ = उ स्वादिष्ठयामदिष्ठया) ...	१०६
वरुणप्राविता (१, १, ७, १ = उ ०)	३०७
वाचमष्टापदीं (२, १, ९, १ = उ ०)	९११
वातोपजूत (१, १, ७, १ = उ ०)	९०६
वार्णत्वायव्याभिर् (१, १, १३, १ = उ १, १, १७—१०, १, ८) ...	१९०
विघ्नन्तोदुरिता (१, १, १, १ = उ ०)	३०७
विद्माखिला (१, १, ६, १ = उ १, १, ४)	११२
विभ्राजञ्ज्योतिषा (१, १, ११, १ = उ १, १, १०)	६८१
विश्वआदसह प्रे (२, १, ३, ५ = उ ०)	९८३
विश्वाःपृतना (३, १, १४, १ = उ १, १, १२)	५४१
विश्वाधामानि (३, १, १, ३ = उ ८, १, १)	४८१
वीळुचिदारुजत्नुभिर् (१, १, ७, ३ = उ ०)	२९७
वृषापवस्व (१, १, १०, १ = उ १, १, १९—४, १, १—२—३—६, १, १— .. ७, १, १—१—११, १, १४—१५—१८, १, १८— ... .. १९—२०, १, १—२, ९—१०)	२१३

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

वृषा पुनान. (३, १, १३, २ = उ ९, १, ९) ६९९
वृषा मतीनां (२, १, १०, १ = उ २, १, १०—९, १, ५—१६, १, १७) ३५७
वृषा शोणो (२, १, ११, १ = उ २, १, २—७, १, ६) ३२५
वृषा सोम (२, १, २, १ = उ ०) २९७
वृषा ह्यसि (२, १, ४, १ = उ ०) २९९
वृष्णस्ते वृष्ण्यं (१, १, २, २ = उ ०) २९८
शंसेदुक्थं (१, २, २, २ = उ १, १, १९) १९९
शतानीकेव (२, १, १२, २ = उ २, १, ३—७, १, ७—११, १, ११—१५) ३२५
शाचीगो (१, २, ५, २ = उ १, २, २—१, २, ३) २०८
शुचिः पावक (३, २, २, ७ = उ ०) ५९६
शुभ्रमन्धो (३, २, १६, २ = उ ३, १, १०—७, २, १९—१६, १, ४— ..
२०, २, २) ६४१
शृणुतं जरितुर् (३, १, ९, २ = उ ०) ५११
शृण्वे वृष्टेरिव (३, १, ३, ३ = उ ०) ४८८
श्रुधी हवं तिरश्च्या (२, २, १९, १ = उ २, २, ७—१३, १, १४) ... ४०७
संहताध्व्यं (२, २, ३, २ = उ ०) ३८१
सख्ये त इन्द्र (२, १, १९, २ = उ २, १, ११—७, १, ११—११, १, ३—२, २) ३६९
स घा नो योग (१, २, १०, १ = उ १, २, ८) २२६
स त्वञ्चित्र (२, १, १२, २ = उ ०) २२१
स न इन्द्राय (१, १, ८, १ = उ उच्चा ते जातमन्धसो) २२
स नः पवस्व (१, १, १, ३ = उ २१, १, ११) ५
स नः पुनान (२, १, ५, २ = उ ०) ३०२
स नः स्तव (१, १, ४, २ = उ ०) १५
सन्देवैः शोभते (३, १, १०, २ = उ २, २, ८—१५, २, ९—१६, २, १) ५१३
समयमे (१, २, ११, २ = उ १, २, १०—१९, १, २) .. २२२
समीचीना अनूषत (३, १, ३, ६ = उ ०) ४९४

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम् पृष्ठम्

समुप्रियाअनूषत (२, १, १६, २ = उ ० अवम्नूपारविमंजः) ... १४६

समुरेभासो (२, १, १४, ३ = उ २, २, १२) ५४२

सखिस्रोषवणी (२, १, १५, १ = उ ०) २४५

सवीअतेवचसा (१, २, ११, २ = उ ११, २, ८—११—१४) ... १२७

सवक्रिरप्सु (२, २, ४, ६ = उ ०) ६००

सहस्तुर्मातरा (२, १, १६, २ = उ २, २, १५—७, २, ८—१५, २, १०— ...
१६, १, ११—१०, १, १०) ५५१

सचधारःपवते (२, २, १५, २ = उ १, २, ३—४—७, १, १०—९, १, ८— ...
१५, २, २—२६, १, २—२०, १, १२—१२—१२, २, ११) ४५०

स चित्राअरिष्टयः (१. २, ४, २ = उ ०) ५९८

सुतव्ति (२, १, ४, ४ = उ ०) ४९१

सुतारन्द्राय (१, २, १९, २ = उ प्रसोमासोविपश्चितो) ... १९८

सुतासोमधुमत्तमाः (२, २, १५, १ = उ १, २, ३—४—७, १, १०— ..
९, १, ८—१५, २, १—२—१६, १, २—२०, १, १२—१२— ...
१२, २, ११) ४४९

सुवितस्य (२, १, २, २ = उ ०) ४८८

सोमर्षेन्द्राय (२, २, ६, २ = उ ०) ६०४

सोमउच्याव: (२, २, १२, १ = उ २, १, ३—४—७, २, १२— .. ...
१८, २, २—१०, १, १९—११, १, १५) ६१९

सोमःपवते (२, १, १९, १ = उ २, २, १९—८, २, १—२२, १, १०—१६) ..

सोमःपुनानऊर्मिणा (२, १, १८, १ = उ २, २, १७—७, २, ९— ... ..
९, ३, ४—१५, २, ११) ५६०

सोमस्रावो (२, २, १०, २ = उ २, १, १७) ..; .. ४२८

स्वरन्तिला (२ २, ११, २ = उ २, १, १८—४, १, ८—९—१९, २, ७) ४२५

स्वादिष्ठया (१, १, १२, १ = उ १, १, ८—८, २, १०—१०, २, १०— ..
११, २, १०—२, २, ४—१९, १, ९—१२, २, १२— ... ..
१८, १, १५—१६—१९ २, १८—२०, २, २०—२१, १, ६) १०५

Digitized by Google

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
हादोरित्था (३, २, १५, १ = छ १०, १.४)	६२६
हामुषःपवते (१, १, १, १ = छ १, १. ४—१९, १, ७) ...	७९
हयोहचाख्यार्या (२, १, ८, ३ = छ ०)	४००
हिमग्निसूरम् (३, १, ५, १ = छ ५, ६, १०—१९, २, १०) ..	४९५
हिमालोचेतसविद् (१, ६, २, २ = छ ११, १, ११)	७

॥ ॐ नमः सामवेदाय ॥

॥ सामवेदसंहिता ॥

तत्र

॥ उत्तरार्चिकः ॥

॥ अथ भाष्यावतरणिका ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थाना मुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥ १ ॥
यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्—
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ २ ॥
तत्कटाक्षेण तद्रूपं दधद् बुक्कमहीपतिः ।
आदिशत् सायणाचार्य्यं वेदार्थस्य प्रकाशने ॥ ३ ॥
ये पूर्वोत्तरमीमांसे ते व्याख्यायातिसङ्ग्रहात् ।
कृपालुः सायणाचार्यो वेदार्थं वक्तु मुद्यतः ॥ ४ ॥
व्याख्यातावृग्यजुर्वेदौ सामवेदेऽपि संहिता ।
छन्दोभिधाभूद् व्याख्याता व्याख्यास्यत्युत्तराभिधाम् ॥ ५ ॥
छन्दस्येकैकशोऽधीता ऋचः सामोद्भवाय हि ।
स्तोम-निष्पत्तये सूक्तान्युत्तराया मधीयन्ते * ॥ ६ ॥

---

* छन्दसि पूर्वार्चिकमन्ये एकैकशः ऋचः अधीताः, सङ्गतिमपेक्ष्येति भावः ; तत्र सामोद्भवमात्रं प्रयोजनम्, सामोद्भवस्तु एकस्या ऋचि भवितव्य एव ; परं स्तोम-निष्पत्तिस्तु तथा न भवेत् अत एव उत्तरायां सूक्तानि द्व्यृच-तृचरूपाणि अधीयन्ते ।

Digitized by Google

स्तोमशब्देनोत्पत्तिषु सोमयागेषु प्रयुज्यमानास्त्रिवृत्पञ्चदशादयोऽभिधीयन्ते। अतएव तैत्तिरीयकाः प्रश्नोत्तराभ्या मिदमामनन्ति। तदाहुः—"कतमा वाव तानि ज्योतींषि य एतस्य स्तोमा इति? त्रिवृत्पञ्चदशः सप्तदश एकविंश एतानि वाव तानि ज्योतींषि यएतस्य स्तोमाः"—इति। छन्दोगाश्च त्रिवृदादि-स्तोमानां स्वरूपं ब्राह्मण-द्वितीय-तृतीययोरध्याययोः * बहुधा समामनन्ति। ते च बहुभिरवान्तररूपोपेताः समाम्नाताः स्तोमा नवसङ्ख्याकास्तेषु पूर्वोक्तास्त्रिवृदादयश्चत्वारः त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्रिनवसङ्ख्योपेतः स्तोमस्त्रिणवइत्युच्यते। छन्दोमनामका स्तोमास्त्रयस्तेषु चतुर्विंशाख्यस्तोमः प्रथमः। गायत्रीच्छन्दसा चतुर्विंशत्यक्षरोपेतेन मीयतइति छन्दोमः। चतुस्त्रिंशश्चत्वारिंशाख्यो द्वितीयः। स च त्रिष्टुप्छन्दसा मीयते। अष्टाचत्वारिंशाख्यस्तृतीयः। सोऽपि जगतीच्छन्दसा मीयते॥ नन्वथ ये इयाम्नातलक्षणोपेतेभ्यस्त्रिवृदादिभ्योऽष्टादश-नवदशादि--नामका बहवः स्तोमा विद्यन्ते। तथाच तैत्तिरीयकाः केषुचिदिष्टकोपधान-मन्त्रेषु देवतावद्रूपेष्टकात्व-विवक्षया तान् स्तोमानामनन्ति—"आशास्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योम सप्तदशः। प्रतूर्त्तिरष्टादशस्तपोनवदशोऽभिवर्त्तः सविंशो धरुण एकविंशो वर्चोद्वाविंशः सम्भरणस्त्रयोविंशो योनिश्चतुर्विंशो गर्भः पञ्चविंश ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकविंशो ब्रध्नस्य विष्टपश्चतुस्त्रिंशो नाकषट्त्रिंशोऽभिवर्त्तोऽष्टचत्वारिंशः"—इति। एवन्तर्हि सन्त्येव बहूनि

---

* ताण्ड्यमहाब्राह्मणस्येति।

स्तोमान्तराणि तेषां लक्षणानि तु ब्राह्मणान्तरानुसारेण सूत्रकारैर्व्युत्पादितानि ॥ ते च स्तोमाः सर्वेऽप्याज्यपृष्ठादि-स्तोत्रेषूपयुक्ताः "पञ्चदशान्याज्यानि, सप्तदशानि पृष्ठानि"—इत्यादि-श्रुतिभ्यः स्तोम-विषयाः स्तोत्रविषयास्तन्निष्पादक-साम-विषयाश्च । सर्वेऽपि विचारा अस्माभिश्छन्दोव्याख्यानावतारवेलाया मेव जैमिनीयान्यधिकरणान्युदाहृत्य प्रदर्शिताः * ॥ किं बहुना "एकं साम तृचे क्रियते स्तोत्रियम्"†—इत्यादि-वचनैः स्तोत्रनिष्पादकस्य साम्नस्तृचप्रगाथादि-रूपाणि सूक्तान्याश्रयत्वेनोत्तराख्ये संहिता-ग्रन्थे समाम्नातानि । स च ग्रन्थ एकविंशति-सङ्ख्यातैरध्यायै रुपेतः ‡ ॥

---

* १ भा० १० पृ०—२८ पृ० द्रष्टव्यम् ।

† द्रष्टव्योऽस्यार्थः १भा० २० पृष्ठे ।

‡ मूलपुस्तकस्य तु अध्यायसङ्ख्या नैव दृश्यते, परं सन्ति तत्र प्रत्यध्यायस्यार्द्धाध्यायः अध्यायद्वयेऽर्द्धाध्यायद्वयञ्च, पदग्रन्थे च तथा, विवरणादावप्येव मेव । सायणमते तु अर्द्धाध्यायानङ्गीकारस्ततश्चैकविंशतितमं सूक्तमिति । अध्यायेति व्यवहारश्च सायणीय एव, वस्तुतः सामवेदे प्रपाठकव्यवहारएव सर्व मूलपुस्तक-पदपुस्तक-गानपुस्तकादौ विवरणकारमते च प्रसिद्धः ।

Digitized by Google

तत्र, प्रथमाध्यायस्य प्रथमखण्डे, *

प्रथमसूक्ते तृचे, येयमृक् प्रथमा

सैव साम्नायते—

१ २   ३ १ २   ३ १ २

उपास्मैगायतानरःपवमानायेन्दवे।

३ २ ३ १   २र

अभिदेवाँइयक्षते॥ १॥ †

हे "नरः" नेतारः! यज्ञस्य, "देवान्" इन्द्रादीन् "अभि इयक्षते" आभिमुख्येन यष्टुमिच्छते "पवमानाय" क्षरते "अस्मै" अभिषूयमाणाय "इन्दवे" सोमाय "उप गायत" उपगानं कुरुत॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ २३१२१ १   २र

अभितेमधुनापयोथर्वाणोअशिश्रयुः।

३२३१ २ ३१

देवन्देवायदेवयु॥ २॥

हे सोम! "ते" तव "देवं" देवनशीलं "देवयुः" देव-कामं रसं ‡ "देवाय" देवनशीलायेन्द्राय "मधुना" ¶ "पयः" गव्येन

* अत्र ग्रन्थे खण्ड-व्यवहारोऽपि सायणेनाविष्कृतः।

† इयमेव ऋक् अत्रैव प्रपाठके द्वितीयार्द्धेऽपि दृश्यते (१८, ३)।

‡ 'देवयुः देवान् युनक्ति यः सोमेन स देवयुः'—इति वि०। 'देवयवः'—इति ऋत्विङ्नामसु अष्टमं नैघण्टुकम् (३, १८)।

¶ 'मधुना स्वादुना'—इति वि०।

Digitized by Google

पयसा * "अथर्वाणः" ऋषयः † "अभ्यश्रियुः" अभ्यश्रिअपन् समकुर्वन्नित्यर्थः ‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २   ३ १उ ३ १   १र ३ १ २र
सनःपवस्वशङ्गवेशञ्जनायशमर्वते ।

१ २ ३ १ २
शꣳराजन्नोषधीभ्यः ॥ ३ ॥ १ ¶

हे "राजन्" दीप्यमान सोम ! "सः" प्रसिद्धस्त्वं "नः" अस्माकं § "गवे" ‖ "शं" सुखं "पवस्व" चर + "जनाय"

---

* 'पयः प्रथमैकवचनमिदं तृतीयैकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । पयसा सोम-मिश्रणं कुर्वन्ति'—इति वि० ।

† 'सोममिश्रणं कुर्वन्ति के ? अथर्वाणः ऋत्विजः । अथवा अथर्वा नाम ऋषिः आत्मीयान् पुत्रपौत्राननुशास्ते—ते अथर्वाणः !'—इति वि० ।

‡ 'अभीत्ययमुपसर्गः अश्रियुरित्याख्यातेन सह सम्बन्धयितव्यः । अभ्यश्रियु =अभिमुखेन ते तव अश्रियुः=मिश्रणं कृतवन्तः'—इति वि० ।

¶ एतास्तिस्र ऋचः—ऋग्वेदे ९, ७, २६, १-२-३ अपि दृश्यन्ते । आसां ऋषि-सन्देहस्तु—"असितः काश्यपो देवलो वा"—इति ऋषि नै० । दैवत-सन्देहोऽपि यथा—"उत्तरास्तु रक्षस्यास्त्वाय देवताः । पूर्वोक्ता ऋतु ता एवोत्तरासूपास्ते अय-स्तुपाः । सौम्याः स सोमः पार्थिवः"—इति दैवत-नै० ॥

§ 'नः अस्माकम्'—इति वि० ।

‖ 'चतुर्थ्येकवचनमिदं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । गोभ्यो बहुभ्यः'—इति वि० ।

+ 'पवस्व प्राप्नुस्व'—इति वि० ।

Digitized by Google

पुत्राय च * "शं" पवस्व "अर्वते" अश्वाय † च "शं" पवस्व "ओषधीभ्यः" च ‡ शम्पवस्व ॥ २ ॥ १

४ २ ८ ४ २ ४८
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ उपाऽ५स्मै। गा३या३ताना

५ २ १ २ २ १ २ १ २ २
राः। पा३वामा३ना। या२३श्वा। ऊम्मायि। दा३वा

१ ८८ ३२ १ २ १८
यि। आभिदेवाँ३इयार२क्षताउ॥ ते (१)॥ आ। भिते

२ १ २ २ १ १८ ८ २ १
मा। धू३नापा३याः। आया२र्वा। णोआ२३शा। ऊ

२ २ १ ८८ ३२ १
म्मायि। आ३यूः। दायिवन्देवायदा२यिवयाउ॥ यू(२)॥

२ १ २ १ २ २ १ १८
साः। नःपवा। स्वा३श्राङ्गा३वायि। अज्ञा२ना। य

२ १ २ २ १ ८ ८
शा२३मा। ऊम्मायि। वी३तायि। शाँ३राजन्नोषधा

३२
२यिभ्यआउ॥ (३)॥ ११ ¶ ॥ १

* 'शं जनाय सुख मस्मिन्जनाय'—इति वि०।

† 'श मर्वते यजमानजनाय'—इति वि०।

‡ 'ओषधीभ्यः व्रीहि-यव-तिल-माषादिभ्यः'—इति वि०।

¶ सामवेदमूहगानस्यैकविंशप्रपाठक-प्रथमार्द्धस्यैकादशम्।

अथ द्वितीयखण्डे—प्रथमा ।

१ २   ३ १ २ ३ १ २   ३ २

द्यविद्युतत्यारुचापरिष्टोभन्त्याकृपा ।

१ २ ३ १ २र

सोमाःशुक्रागवाशिरः ॥ १ ॥

"द्यविद्युतत्या रुचा" अतिशयदीप्त्या "परिष्टोभन्त्या" परितः शब्दायमानया "कृपा" धारया च युक्ताः "सोमाः" "गवाशिरः" गवाशिराः भवन्ति गव्येन पयसा मिश्रिता भवन्ति इत्यर्थः* ॥१॥

अथ द्वितीया ।

२   २ ३ १ २ ३ १   २र ३क २र

हिन्वानोहेतृभिर्हितआवाजंवाज्यक्रमीत् ।

१ २   ३ १ २

सीदन्तोवनुषोयथा ॥ २ ॥

"वाजी" बलवान् सोमः "हेतृभिः" प्रेरकैः स्तोतृभिः† "हिन्वानः" स्तोत्रैः स्मर्यमाणः "हितः" अभीष्टकारी सन् "वाजं" यागाख्यं युद्धम् "आ अक्रमीत्" आक्रामति । तत्र दृष्टान्तः—

---

* "द्यविद्युतत्या देदीप्यमानया रुचा । परिष्टोभन्त्या परि समन्तात् स्तोभन्त्या पुनः पुनः स्तोभः अभ्यासः अभ्यस्यमानया । कृपा कान्त्या । सोमाः शुक्राः शुक्लवर्णाः । कथं शुक्लवर्णा भवन्ति ? गवाशिरः कारणे कार्यवदुपचारः गोक्षीराशिरः । आशिरं मिश्रम् ॥"—इति वि० ।

† "प्रहेतारं प्रभूणां प्रेरकम्"—इति ऋ० भा० ३, ९, ५, १ सा० द्रष्टव्यम् (१भा० ५८१प०) ।

Digitized by Google

यथा "वनुषः" हन्तारो भटाः * "सीदन्तः" युद्धं प्रविशन्तः आक्रामन्ति तद्वदित्यर्थः † ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २

ऋधक्सोमस्वस्तये सञ्जग्मानो दिवाकवे।

१ २ ३ १ २ ३२

पवस्वसूर्योदृशे ॥ ३ ॥ २ ‡

हे "सोम"! "कवे" क्रान्तदर्शिन्! "सूर्यः" सुवीर्यः ¶ त्वं "ऋधक्" ऋध्नुवत्। तथाच यास्कः—"ऋधगिति पृथग्भावस्यानुप्रवचनं भवत्यथाप्यृध्नोत्यर्थे दृश्यते (निरु० नै० ४, २५)"—

---

* "वनुष्यति"—इति क्रुध्यतिकर्मसु अष्टमं नैघण्टुकम् २, १२। "वनुष्यतिर्हन्तिकर्मानवगतसंस्काराभिर्वान 'वनुयामवनुष्यत' इत्यपि निगमो भवति"—इत्यादि निरु० नै० ५, २।

† 'हिन्वानः मीयमानः पीयमानो वा। कैः हेतुभिः? वरवस्त्रभावैरुल्लिङ्भिः वा वाजम्। आ शब्दः उपसर्गः। अक्रमीदित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः आ अमनुष्येण अक्रमीत् वाजं वाजी वाजमन्नं, पशुपुरोडाशादि-लक्षणस्यान्नस्य स्वामी अथवा वाजं द्रोणकलशम् आक्रमीत् सोमः। कथमाक्रमीत्? सीदन्तोवनुषोयथा। सीदन्तः उपविशन्तः वनुषः मनुष्यः एकवचनमिदं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्। वनुषाः मनुष्याः उच्यन्ते। यथा उपविशन्तो मनुष्याः आसन माक्रमन्ति तद्वत् द्रोणकलशं सोमः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, १, ४१, १-४-५। ऋ० "कश्यपो मारीचः" इति ऋषि-नै०। छन्दोदेवते पूर्ववत्।

¶ 'सूर्यः दृशे, सूर्यः (इव शब्द माहुयते। दृशे दर्शनाय। यथा सूर्य उदेति विश्वस्य जगतो दर्शनाय तद्वत् त्वमपि पवस्वेत्यभिप्रायः'—इति वि०।

Digitized by Google

इति । "सज्जग्मानः" सङ्गच्छमानः "स्वस्तये" "दृशे" दर्शनाय "दिवा" दिवः विभक्तिव्यत्ययः* ॥ "पवस्व"-"चर"—"दिवाकवे"-"दिवाकविः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २

४ ३   ४ १ ४र ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ इवाऽ५पियिद्य । ता३ती३याहूचा ।
१ १ २ २   १ २   १   २ १
पा३रायिष्टो३भा । ता२३मा । ऊम्नायि । का३र्षा ।
१ र र   ३ १   १ १   १र र २
सोमाःमृक्ागवार्२शिराउ ॥ रा(१)हायि । न्वानोहोट्
१ २ २   १र   १   र   २ १
३भायिर्चा३यिताः । आवा २जम् । वाजा२३या । ऊ
२ १   १ र   १ १ २   १
म्नायि । क्रा३मीत् । सायिदन्तोवनुषो२यथाउ ॥ था(२)
१ १ र   २ १ २ २   १ १र
न्ट । धक्सोमा । द्व३वास्ता३यायि । सञ्जा २म्मा ।
र   २   १   २ १   १ऽ र
नोदा२३यिवा । ऊम्नायि । का३वायि । पावस्वहरियो२
३ १
हश्राउ (३) ॥ १२ † ॥ [१]२

---

* 'दिवा कवे चान्यम्मानि ते मेधाविन् !'—इति वि० ।

† ऊ० गा० २१ प्र०१ ख० १२ सा० ।

Digitized by Google

तृतीय-तृचे—प्रथमा ।

१ २ ३ २ ३ १ २
पवमानस्यतेकवेवाजिन्त्सर्गाअसृक्षत ।
१ २ ३ १ २ २ १ २
अर्वन्तोनश्रवस्यवः ॥ १ ॥

मार्जनप्रसङ्गादाह—हे "कवे" क्रान्तप्रज्ञ ! हे "वाजिन्" बलवन् सोम ! "पवमानस्य" दशापवित्रेण पूयमानस्य "ते" तव "सर्गाः" सृज्यन्ते इति सर्गा धाराः *। कीदृश्यः ? "श्रवस्यवः" ["छन्दसि परेच्छायां क्यच् (३,१,८वा०] यदृच्छया मन्नं कामयमानास्त्वदीया धारा "असृक्षत" विसृजन्ति निर्गच्छन्तीत्यर्थः । तत्र दृष्टान्तः—"अर्वन्तो न" यथा अश्वा मन्दुरातो निर्गच्छन्ति तद्वत् पवित्राद्विःसरन्तीत्यर्थः† । प्रयोगापेक्षं चात्र धारा-बाहुल्यम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
अच्छाकोशम्मधुश्चुतमसृग्रंवारेअव्यये ।
१ २ ३ १ २
अवावशन्तधीतयः ॥ २ ॥

धारानिर्गमनप्रसङ्गादभिधीयते—"मधुश्चुतं" मधुररसस्य श्रावयितारं क्षारयितारं "कोशं" द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि-

* 'सर्गाः उदकस्य अन्योन्यकर्मयः सङ्गाताः'—इति वि० ।

† 'अर्वन्तः यजमानाः'—इति वि० ।

Digitized by Google

तस्य* "अव्यये" अवि-सम्भूते "वारे" वाले दशापवित्रे "असृग्रं" सोमाः ऋत्विग्भिरभिरज्यन्ते [सृजेः कर्म्मणि तिङ्गातिङ्गो भवन्तीति टेरमादेशः]। किञ्च। "धीतयः" [अङ्गुलि नामैतत्† धयन्ति पिबन्त्याभिरिति] अस्मदीया अङ्गुलयः "अवावशन्त" तान् सोमान् न पुनः पुनर्मार्जनार्थं कामयन्ते‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३१उ १ २ १ २ १२३१२
अच्छासमुद्रमिन्दवोस्तङ्गावोनधेनवः।
१ २३१२२ ३१
अग्मन्नृतस्ययोनिमा ॥ २ ॥ ३ ¶

"इन्दवः" क्षरन्तः सोमाः "समुद्रं" सोमाना मेकत्रैव सङ्गमनस्थानं द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि गच्छन्ति। तत्र दृष्टान्तः—"धेनवः" पयः-प्रदानेन जनानां प्रीणयित्र्यो नवप्रसूतिका गावः "अस्तं" गृहं यथा अभि गच्छन्तीति तद्वत् §। किञ्च ते

---

* 'अच्छ आप्नुम्'—इति वि०।

† "धीतयः"—इति अङ्गुलिनामसु सप्तमं नघण्टुकम् २, ५।

‡ 'धीतयः धीतिः बुद्धिः बुद्धिमन्तः सोमाः। अथवा अवावशन्त कामयन्तु के धीतयः ऋत्विजः, किं कामयन्त ? सोमस्य पावनं द्रोणकलशगमनञ्च'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ७, १, ८, ५—९, ६, २। ऋ० "वैखानसा आङ्गिरसः"—इति ऋषि मे०।

§ 'कथमाप्नुम् ? अस्तं गावो न धेनवः। अस्तमनकाले गावो न अम्ब उपरिष्टा

सोमा: "ऋतस्य योनिं" सत्यभूतस्य यज्ञस्य* योनिं स्थानम् "आ" "अग्मन्" आभिमुख्येन गच्छन्ति। [गमेर्लुङि सिचो लुकि उपधालोप: ॥ २ ॥ ३

४ ३ र ४ २ ४र ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवा५५मा। ना३स्या३तेकावायि।
२ १ २ १ १ २ १ २ २
वा३जायिन्मा३र्गाः। आ२३सा। ऊम्मायि। त्ता३ता।
१ र १२ १ १ १र र
आर्वन्तोनश्रवा२स्यवाउ ॥ वा(१)आ। च्छाकोशाम।
२ १ २ २ १ १ र २ १
मा३धूस्वू३ताम। असा२र्य्यम। वा२र२३आ। ऊम्मायि
२ २ १ र ३२ १ २
व्या३यायि। आवावग्नन्तधा२यितयाउ ॥ या(२)आ।
१ २ १ २ २ १ १र र
च्छासम्। द्रा३मायिन्दा३वाः। अस्ता२ज्ञा। वीना२
२ १ २ २ १ १र
३धे। ऊम्मायि। ना३वाः। आग्मन्नृतस्ययो२निमाउ।
१ १ १ १
वा३४५(३) ॥ १३ † ॥ [१]३

दुपमार्थीयः गावः इव धेनवः यथा आगमनकाले वत्सानतियन्ति तथा-हृष्टाः"—इति वि०।

* 'ऋतस्य यज्ञस्य प्रजापतेर्वा'—इति वि०।

† ऊ० गा० २१ प्र० १ ख० १३ सा०।

Digitized by Google

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः * ॥ १ ॥

---

* 'ज्योतिष्टोमिकं बहिष्पवमानं समाप्तम्'—इति वि०। "तदिदं सूक्तत्रयगानसाध्यं स्तोत्रं बहिष्पवमानमित्युच्यते। तदवस्थितानां ऋचां पवमानार्थत्वाद् बहिःसम्बन्धाच्च"—इति मी० द० जै० अ० ९ अध्या० ४ पा० २ अधि०। न खल्विदं स्तोत्रम् इतरस्तोत्रवत् सदोनामकस्य मण्डपस्य मध्ये औदुम्बर्याः शाखायाः सन्निधौ प्रयुज्यते किन्तु, सदसो बहिः प्रसर्पद्भिः प्रयुज्यते। 'बहिष्पवमान'-नाम वेदो, यत्र स्थित्वै तद्बहिष्पवमाननामकत्रक्-साध्य-त्रिवृन्नामस्तोमपाठपूर्वकं मार्जनं भवति ; 'सा तु उदग्वंशनामशालान्तर्गत-सदोमण्डपात् पश्चिमस्याः प्राचीनवंशनामशालान्तर्गते-ष्टिकवेदेरुत्तरतो विद्यते, अस्य च बहिष्पवमानस्य प्रकृतियागेऽग्निष्टोमादौ त्रिवृन्नामकः स्तोमो भवति, एतद्विधायकं ब्राह्मणवाक्यं ताण्ड्यद्वितीयप्रपाठकारम्भे एव खण्डत्रयात्मकं द्रष्टव्यम्—'तिसृभ्यो हिङ्करोतीत्यादि'। अत्र च विष्टुतित्रयमस्ति उद्यती, परिवर्त्तिनी, कुलायिनीति ; ताश्च तत्रैव स्फुटाः। विकृतियागेऽतिरात्राद्यावत्त्रैव एकविंशादि-स्तोमा विहिताः। बहिष्पवमाने चात्र आम्नातमानाभावात् त्रिषु तृचेष्ववस्थिताभिर्नवभिर्ऋग्भिरेकविंशस्तोमपूरणाभावात् तत्पूरणाय चत्वारस्तृचा आगमयितव्याः, त्रिणवस्तोमपूरणाय षट् तृचाः, त्रयस्त्रिंशत्स्तोमपूरणाय चाष्टौ तृचाः। तृचागमने च मानम्—"त्रीणि ह वै यज्ञस्योदराणि गायत्री"—इत्यादि ताण्ड्य-सप्तम-तृतीये द्रष्टव्यम्। आगन्तूनाञ्च तासां मध्ये निवेशः। द्वादशाहे तु मध्ये एव निवेशः। तद्विचारश्च मीमांसाधिकरणमालायाः पञ्चम-तृतीयस्य चतुर्थे द्रष्टव्यः। प्राकृतानां बहिष्पवमानगतानां त्रयाणां तृचानां स्तोत्रियोऽनुरूपः पर्यासश्चेति यथा क्रमं त्रीणि नामानि। अत्र मानम् ताण्ड्यैकादशषष्ठे "स्तोत्रियानुरूपौ तृचौ भवतः"—इत्यादि। गवामयनादिषु सत्त्रेषु पूर्वं चतुर्भिराभिप्लविकैः चतुर्विंशत्यहानि भवन्ति तत एकेन पृष्ठ्य-षडहेन मासः पूर्यते, तत्र प्रथमाहः त्रिवृत्स्तोमसाध्यः अतोऽयं स्तोमः पृष्ठ्य इत्यप्युच्यते। किञ्चेदमेकषष्ठ्यधिकत्रिशत-दिनसाध्येषु सत्त्रेषु—पञ्चविंशदिने, पञ्चपञ्चाशद्दिने, पञ्चाशीतिदिने, पञ्चदशाधिकशततमे दिने, पञ्चचत्वारिंशदधिकशतदिने, ऊनसप्तत्यधिकशतदिने, नवत्यधिकशतदिने, एकादशाधिकद्विशतदिने, एकचत्वारिंशदधिकद्विशतदिने, एकसप्तत्य-

Digitized by Google

द्वितीयखण्डे,

प्रथमदृचे—प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
१ २र ३ १ २
नि होता सत्सि बर्हिषि॥ १ *॥

हे "अग्ने" अङ्गनादिगुणविशिष्ट! त्वम् "आयाहि" अस्मद् यज्ञं प्रत्यागच्छ। किमर्थम्? "वीतये" हविषां चरुपुरोडाशादीनां भक्षणाय। कीदृशः सन्? "गृणानः" अस्माभिः स्तूयमानः [व्यत्ययेन: कर्मणि कर्तृ-प्रत्ययः]। पुनश्च किमर्थम्? "हव्यदातये" देवेभ्यो हविःप्रदानाय। आगत्य च "होता" देवाना माह्वाता सन् "बर्हिषि" आस्तीर्णे दर्भे "निषत्सि" निषीद [सदेः छान्दसः शपो लुक्]॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३१२
तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
३ १ २
बृहच्छोचा यविष्ठ्य॥ २ †॥

षिकद्विशतदिने, एकाधिकत्रिशततमे च दिने विनियुज्यते—इति दिक् विस्तरस्तु, माण्डे। चतुर्थप्रपाठकादिके।

* छ० आ० १, १, १, १ (१भा० ८४ पृ०) = ऋ० वे० ४, ५, २१, ४।

† य० वे० ३, ३ = ऋ० वे० ४, ५, २२, १।

Digitized by Google

हे "अङ्गिरः" अङ्गनादिगुणयुक्त! अङ्गिरसः पुत्र वा अग्ने! "तं" पूर्वोक्तगुणं "त्वा" त्वां "समिद्भिः" समिन्धन-हेतुभिः दारुभिः "घृतेन" आज्येन च "वर्द्धयामसि" वर्द्धयामः। अतो हे "यविष्ठ्य" युवतमाग्ने! * "बृहत्" महत् अत्यन्तं "शोच" दीप्यस्व॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सनःपृथुश्रवाय्यमच्छादेवविवाससि।
३ १ २ ३ १ २
बृहदग्नसुवीर्यम्॥ ३ †॥ ४ ‡

हे "देव" द्योतमानाग्ने! स पूर्वोक्तगुणस्त्वं "पृथु" विस्तीर्णं "श्रवाय्यं" श्रवणीयं प्रशस्तं "बृहत्" महत् "सुवीर्य्यं" शोभन-वीर्य्योपेतं धनं "नः" अस्मान्¶ "अच्छ" § "विवाससि" अभि-गमय+। अत्र वाजसनेयकम्—"अच्छादेवविवाससीति तन्नो ग्निमयेत्येवैतदाहेति॥ ३॥ ४

* 'यविष्ठ्यः अतिशयेन बलवान्'—इति वि०।

† ऋ० वे० ४, ५, २२, २।

‡ इदमाग्नेय माज्यम्।

¶ 'नः अस्मभ्यम्'—इति वि०।

§ 'अच्छ आप्तुम्'—इति वि०।

+ 'विवाससि . . . दीप्तिं करोषि'—इति वि०।

Digitized by Google

द्वितीयतृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २र

आनोमित्रावरुणाघृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्।

२ ३ १ २

मध्वारजाᳬंसिसुक्रतू॥ १ *॥

"सुक्रतू" शोभनकर्माणौ, हे "मित्रावरुणौ"! "नः" अस्माकम् "गव्यूतिं" गवां मार्गं गोनिवासस्थानं "घृतैः" क्षरणसाधनैः पयोभिरुदकैः "आ उक्षतं" समन्तात् सिञ्चतम्। अस्मभ्यं दोग्ध्रीः गाः प्रयच्छत मित्यर्थः। किञ्च "मध्वा" मधुरेण सुरसेन "रजांसि" पारलौकिकानि अस्मदावासस्थानानि "सिञ्चतम्" ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ १ ३ १२ २र

उरुशᳬंसानमोवृधामह्नादक्षस्यराजथः।

३ १

द्राघिष्ठाभिःशुचिव्रता॥ २ †॥

"शुचिव्रता" परिशुद्धकर्माणौ‡ हे मित्रावरुणौ! "उरुशंसा" उरुभिः बहुभिः¶ शंसनीयौ। यद्वात्र मुहच्छंसः शस्त्रं ययोस्तौ।

* ऋ० सा० ३, २, २, ७ (१भा० ४५९ पृ०) = ऋ० वे० ३, ४, ११, ५।

† ऋ० वे० ३, ४, ११, ६।

‡ 'हे शुचिव्रतौ शुचिर्यस्या मयैं क्रियमाणं कर्म भवति तौ शुचिव्रतौ सत्यव्रतौ —इति वि०।

¶ "उरु"—इति बहुनामसु पाठः नैघण्टुकम् ३, १।

"नमोवृधा" नमसा हविर्लक्षणेनानेन स्तोत्रेण वा वर्द्धमानौ*। "द्राघिष्ठाभिः" अत्यन्तदीर्घस्तुतिलक्षणाभिर्युक्तो युवां "दक्षस्य" दक्षते समर्थो भवत्यनेनेति दक्षं धनं बलं वा तस्य† "मह्ना" महत्वेन "राजथः" ईशाथे ‡॥ २॥

अथ तृतीया।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ऋणानाजमदग्निनायोनावृतस्यसीदतम्।

३ १ २र
पातꣳसोमवृतावृधा॥ ३ ¶॥ ५ §

हे मित्रावरुणौ! "जमदग्निना" एतन्नामकेन महर्षिणा यद्वा जमदग्निना प्रज्वलिताग्निना विश्वामित्रेण "गृणाना" स्तूयमानौ युवां "ऋतस्य" यज्ञस्य "योनौ" देवयजनाख्ये देशे "सीदतं" उपविशतं "ऋतावृधा" ऋतस्य कर्म्मफलस्य वर्द्धयितारौ युवां + "सोमं" "पातम्" अस्माभिरभिषुतम् सोमं पिबतम्॥ ३॥ ५

---

* 'नमस्कारैर्वृद्धौ'—इति वि०।

† 'दक्षस्य ऋषेः अथवा दक्षो यजमान उच्यते तस्य यजमानस्य बलेन दीप्यमानेन —इति वि०। दक्ष इति बलनामसु पठितं नैघण्टुकम् २, ९।

‡ 'राजथः दीप्यथः'—इति वि०।

¶ ऋ० वे ३, ४, ११, ७।

§ इदं मैत्रावरुणं साम।

+ 'ऋतावृधौ यज्ञेन वर्धितौ'—इति वि०।

तृतीये खण्डे—प्रथमा।

१ २ ३१उ ३१२ ३ २ १ २ ३ २
आयाहिसुषुमाहितइन्द्रसोमम्पिबाइमम्।
२उ ३ १ २ ३ १ २
एदम्बर्हिःसदोमम॥ १ *॥

हे "इन्द्र"! त्वम् "आ याहि" अस्मद्यज्ञं प्रत्यागच्छ, वयं "ते" त्वदर्थं "सुषुमा हि" सोम मभिषुतवन्तः खलु तम् "इमम्" अभिषुतं सोमं त्वं "पिब" त्वदर्थं "मम" यमिदं "बर्हिः" वेद्या मास्तीर्णं दर्भम् "आ सदः" आसीद अभि निषीद॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ ३ १ २
आत्वाब्रह्मयुजाहरीवहतामिन्द्रकेशिना।
३ १२ ३
उपब्रह्माणिनःशृणु॥ २ †॥

हे "इन्द्र"! "ब्रह्मयुजा" ब्रह्मणा मन्त्रेण युज्यमानो "केशिना" केशिनो केशवन्तो "हरी" हरणशीलो वा अश्वो "त्वा" त्वाम् "अवहताम्" अभि प्रापयताम्। त्वं चास्मद्यज्ञ मुपेत्य "नः" अस्माकं "ब्रह्माणि" स्तोत्राणि "शृणु" सम्यक् चित्ते धारय॥ २॥

---

* ऋ० आ० ९, २, ५, ७ (१ भा० ४१७ पृ०)=ऋ० वे० ६, १, ११, १।
† ऋ० वे० ६, १, ११, २।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ १

ब्रह्माणस्त्वायुजावयꣳसोमपामिन्द्रसोमिनः।

३ १ २

सुतावन्तोहवामहे॥ ३ *॥ ६ †

हे "इन्द्र" "ब्रह्माणः" ब्राह्मणा वयं त्वां "त्वायुजा" योग्येन स्तोत्रेण "हवामहे" आह्वयामहे। कथम्भूतम्? "सोमपां" सोमस्य पातारम्। ईदृशा वयं "सोमिनः" सोमयुक्ताः "सुतावन्तः" अभिषुतैः सोमैरुपेताः॥ "ब्रह्माणस्त्वायुजावयं"-"ब्रह्माणस्त्वा-वयं युजा"—इति पाठौ॥ ३॥ ६

चतुर्थं तृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ २ उ १ २

इन्द्राग्नीआगतꣳसुतङ्गीर्भिर्नभोवरेण्यम्।

३ १ २ ३ २ ३ २

अस्यपातन्धियेषिता॥ १ ‡॥

इन्द्रश्चाग्निश्च "इन्द्राग्नी" ¶ देवौ § "सुतम्" अभिषवा-

---

* ऋ० वे० ६, १, ११, २। † इद मैन्द्र माज्यम्।

‡ य० वे० ७, ३१ = ऋ० व० २, १, ११, १। ऋ० "विश्वामित्रो गाथिनः"—इति ऋषि-नै०। दे० 'इन्द्राग्नी ऐन्द्राग्नम्'—इति देव-नै०। छ० गायत्री। एव-मेवाग्रोत्तरयं द्वयोः।

¶ ऋ० वा० ३, २, ४, ९, = याच तु १, १, ७, १ = १, १, ७, २ = १, २, ८ १ = १, २, ८, २ = १, १, ९, १ = ३, २, १०, १—इति सप्तसु ऋचु श्रूयते 'इन्द्राग्नी'।

§ "अथास्य संस्तविका देवाः—अग्निः सोमो वरुणः पूषा बृहस्पति र्ब्रह्मणस्पतिः पर्वतः कुत्सो विष्णु र्वायुः"—इति निरु० ११, १०।

दिभिः संस्कारैः संस्कृतम् अतएव "वरेण्यं" वरणीयं सम्भजनीय मिमं सोमं प्रति "गोभिः" अस्मदीयाभिर्वाग्भिराहुतौ सन्तौ "नभः" नभसः स्वर्गाख्यात् स्थानात् "आगतम्" आगच्छतम्। आगत्य च "धिया" अस्माभिः क्रियमाणेन कर्मणा "इषिता" इषितौ प्रेरितौ युवाम् "अस्य" इमं सोमं "पातं" पिबतं। यद्वा "धिया" अस्मदीयया बुद्धा इषितौ प्राप्तौ * अस्मद्भक्त्या प्रेरितौ युवा मिमं सोमं पिबतम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ ३२ ३ १ २ १ ३ १ २
इन्द्राग्नीजरितुःसचायज्ञोजिगातिचेतनः।
३ १ २ ३ १ ३ २
अयापातमिमꣳसुतम् ॥ २† ॥

हे "इन्द्राग्नी" "जरितु" स्तोतुः‡ "सचा" स्वर्गादिलक्षणप्राप्तौ सहायभूतौ "यज्ञः" ज्योतिष्टोमादि-यज्ञ-साधनभूतश्चेतनः इन्द्रियाणां चेतयिता आप्यायनकारी सन्नसौ सोमः "जिगाति" युवा मभिगच्छति¶। "अया" अस्मदीयया स्तुतिलक्षणया अनया वाचा आहुतौ सन्तौ युवां "सुतम्" अभिषवादि-संस्कारोपेतम् "इमं" "पातं" पिबतम् ॥ २ ॥

---

* "इषता इषु इच्छायाम् इच्छन्त्या"—इति वि०।

† ऋ० वे० ३, १, ११, १। ‡ 'जरितुः स्तोतुः उद्गातुः'—इति वि०।

¶ 'जिगाति गायति चेतनः लुप्तोपमात मिदं चेतन इव'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे।
१ २र ३ १ २
ता सोमस्येह तृम्पताम्॥ ३ *॥ ६ †

“यज्ञस्य” यज्ञसाधनभूतस्य सोमस्य “जूत्या” जूतिः प्रेरणं सोमस्तावद्यजमानं प्रेरयति। साधन मुपलभ्य तत् साध्ये क्रतौ यजमानः प्रवर्त्ततइति हि तस्य प्रेरकत्वम्। तया प्रेरणरूपतया जूत्या ‡ प्रेरितोऽहं स्तोता “कविच्छदा” कवीनां स्तोतृणा मुचितफल-प्रदानेनोपच्छन्दकौ इन्द्र मग्निं च युवां “वृणे” सम्भजेत आगतौ च ताविन्द्राग्नी “इह” अस्मदीये अस्मिन् कर्मणि “सोमस्य” सोमेन सोमयागेन “तृम्पतां” तृप्यताम्॥ ३॥ ७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य
द्वितीयः खण्डः ¶॥ २॥

---

* ऋ० वे० ३, १, ११, १।

† इद मैन्द्राग्न माज्यम्। ‘प्रातः सवनं समाप्तम्’—इति वि०।

‡ ‘जूत्या अभिरुद्या निमित्तभूतया’—इति वि०।

¶ “तान्येतानि प्रातःसवने गायत्रसाम्ना गीयमानानि चत्वार्याज्यस्तोत्राणीत्युच्यन्ते”—इति मी० द० जै० अ० ९ अध्या० ४ पा० ३ अधि०। ‘यदाजिमीयुस्तदाज्यानामाज्यत्वम्’—इति चैतन्निर्वचनम् ता० ब्रा० ७, २। एभ्याज्यस्तोत्रेषु पञ्चदशनामकः स्तोमो भवति; तद्विधायकं ब्राह्मणं ताण्ड्य म, ‘पञ्चभ्यो हिङ्करोति’—इत्यादि (२, ५-

Digitized by Google

तृतीयखण्डस्य,

प्रथमतृचे—प्रथमा।

२ १ २ ३ ११ २र ३ ११ २र

उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्यादवे।

३ १र ३ २ ३ १ २

उग्रꣳशर्ममहिश्रवः॥ १ *॥

हे सोम! "ते" तव सम्बन्धिनः "अन्धसः" रसस्य "उच्चा" उपरि "जातं" जन्म अपिच "दिवि" द्युलोके "सत्" तव सम्बन्धि "उग्रम्" उद्गूर्णं "शर्म" सुखं "महि" महत्। "श्रवः" अन्नं "भूमि" भूमिष्ठैः यजमानैः "आ ददे" आदीयते॥ दिविसद्"-दिविषद्"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

सनइन्द्रायययज्यवेवरुणायमरुद्भ्यः।

५-६) तत्रैवैतद् विष्टुतिमयञ्च परिस्फुटम्। सोमोऽयं द्वितीय पृष्ठ्य इत्यप्युच्यते किञ्च सत्रेषु षड्विंशतितमे दिने, षट्पञ्चाशत्तमे दिने, षडशीतिदिने, षोडशाधिकशतदिने, षट्चत्वारिंशदधिकशतदिने, सप्तत्यधिकशतदिने, अष्टनवत्यधिकशतदिने, दशाधिकद्विशतदिने, चत्वारिंशदधिकशतदिने, सप्तत्यधिकद्विशतदिने, त्रिंशत्तमे च दिने विनियुज्यते। विस्तरस्तु ताण्ड्य-चतुर्थप्रपाठकादिके।

* छ० आ० ५, २, ४, १ (२ भा० २ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, १९, ५। ऋ० 'अमहीयुः आङ्गिरसः'—इति ऋषिने०। दे० 'पवमानः सोमः'—इति देव-ने०। छ० गायत्री। एवमेवाग्रोत्तरत्र द्वयोः॥ इहाग्नौ माध्यन्दिनः पवमानः। गायत्री बृहती त्रिष्टुबिति च्छन्दांसि। पुष्कलोऽग्निर्वामहीयवोऽग्निवरिष्ठीयुधाजीवउशनाःकाव्यः इति आर्षाणि। सोमः सोमदेवता साम-देवता विस्तरस्याग्रोक्तम्'—इति वि०।

Digitized by Google

२   ११   १र

वरिवोवित्परिस्रव ॥ २ * ॥

हे सोम "वरिवोवित्" धनस्य लम्भकः पवमानः † "नः" अस्माकं ‡ "यज्यवे" यष्टव्याय ¶ "इन्द्राय" "वरुणाय" च "मरुद्भ्यः" च "परि स्रव" धारया चर § ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२१   २र   ३२उ   ३   १   ३१   २

एनाविश्वान्यर्य्यआद्युम्नानिमानुषाणाम् ।

१   २

सिषासन्तोवनामहे ॥ ३ ** ॥ ८ ††

"मानुषाणां" मनुष्याणां लब्धव्यानि "एना" एनानि "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि "द्युम्नानि" यज्ञसाधनानि धनानि ‡‡ हे सोम ! त्वत्प्रसादात् "आ" आभिमुख्येन "अर्य्यः" ¶¶ अभि-

---

* छ० आ० आर० १, ७ (२ भा० २५४ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, १०, २ ।

† 'वरिवः वरिष्ठः । वित् भजनीयः'—इति वि० ।

‡ 'नः अस्माकम्'—इति वि० ।

¶ 'यज्यवे यजमानाय'—इति वि० ।

§ 'परिस्रव परि समन्तात् इमापवित्रात् स्रव'—इति वि० ।

** छ० आ० आर० १, ८ (२ भा० २५६ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, १०, (।

†† इदं माध्यन्दिनपवमान साम ।

‡‡ 'द्युम्नानि यज्ञानि'—इति वि० ।

¶¶ 'अर्यः यजमानः'—इति वि० ।

Digitized by Google

गच्छन्तः वयं "सिषासन्तः" सम्भक्तु मिच्छन्तश्च * "वनामहे" त्वां सम्भजामहे † ॥ ३ ॥ ८

५ र २ ४र ५ २ १
॥ आमहीयवम् ॥ उच्चाता३इजातमन्धसाः। दिवा
२ १ २ १ २ १
इसाऽ१ङ्कू २। मियार३ददाइ। उग्रऌशर्मा। मह्वार३
२ ५ २ ४र ५ १ २ १
इश्रवाउ। वा३ ॥(१) सनआ३इन्द्रायजयज्यवाइ। वरुणा
१ २ २ २र १
ऽ१या२। मरु२३द्भियाः। वरिवोवाइत्। परा२३इस्व
२ ५रर २ ४र ५ २ १ २
वाउ। वा३ ॥(२) एनावा३इस्वानिमर्यआ। द्युम्नानाऽ१इ
२ १ २र २ १ १
मा२। नृषा२३णाम्। सिषासन्ताः। वना२३महाउ।
२र १ १ १ १
वा३। स्तौषे२३४५(३) ॥ १ ‡ ॥ [१]

४ २ र ४ २ २ ५
॥ क्षुल्लकवैष्टम्भम् ॥ उच्चाऽ५ते। जा३तमन्धसाः।
१ २ र १ २ १ २ २ १
दायिवीसद्भू। मियादा१दे२३। श्रोवा३हायि। उग्राऌ

---

* 'सिषासन्तः साधयन्तः'—इति वि०।

† 'वनामहे याचयामः'—इति वि०।

‡ ऊ० गा० १प्र० १ख० १सा०।

Digitized by Google

आ१र्मा२३। होवा३हायि। मंहि। आ२वा२३४औ
होवा॥(१) सना ऽ५इ। द्रा३ययज्यवायि। वारुणाय। म
रुद्भा१या२३ः। होवा३हायि। वरायिवो१वी२३त्।
होवा३हायि। परि। स्रा२वा२३४औहोवा ॥(२) एना ऽ५
वि। श्वा३निअर्य्यआ। द्युम्नानिमा। नूषा१णा२३म्।
होवा३हायि। सिषासा१न्ता२३ः। होवा३हायि। वना।
मा२हा२३४औहोवा। दी२३४आः(३) ॥ १३ * ॥ [२]

॥ आजिगम॥ उच्चातेजा। तमान्धासाः। दि
विसङ्भू। माया१दा२३दायि। उग्रा ऽ शार्म्मा। महिश्रा
२३वा३४३ः ॥(१) सनाआयिन्द्रा। ययाज्यावायि। वरुणा
य। मारुद्भा२३याः। वरायिवोवीत्। परिस्रा२३वा३४
३ ॥(२) एनावायिश्वा। निआर्य्याआ। द्युम्नानिमा। नू

* ऊ० गा० २प्र० १अ० १३सा०।

Digitized by Google

षा२३णाम्। सिषासान्ताः। वनामा२३हा३४३यि। यो२३४५ई। डा (३) ॥ ९ * ॥ [३]

॥ आभीकम्॥ ऊ२३४च्चातेजा५। तमौहोन्धासाः। दिविसद्भूमियाददे। उग्रंशा२३४र्म्मा। माहा३उवा३४३। आ३४५वो६हायि ॥(१) सा२३४नइन्द्रा५। ययौहोज्यावायि। वरुणायमरुद्भ्याः। वरिवो२३४वीत्। पारा४उवा३४३। सा३४५वो६हायि॥(२) सा२३४थिनाविश्वा५। नियौहोर्य्याषा। द्युम्नानिमानूषा३णाम्। सिषासा२३४न्ताः। वाना३उवा३४२। मा३४५हो६हायि(३) ॥ १० † ॥ [४]

॥ गायत्रीवैरूपम्॥ उच्चाते२३४जा। तमान्धा३सा३ः। दिवा२यिसा२३४द्भू। माया१दादा२यि। उग्रा२३म्।

* अ० गा० ६प्र० १ख० ९सा०।

† अ० गा० ६प्र० १ख० १०सा०।

२ ५र र १ १ १ १११११ ११
शर्म्मा३४औहोवा। मधिश्रवा२३४५ः ॥(१) सना मा२३४यि
५ ११ २ १ १ १ ७
न्द्रा। ययाव्या३वा३यि। वरूणा२३४या। मारुद्भा
१ र १ ५र र १ ११ १ ११
या २ः। वरा२३यि। वोवा३४औहोवा। परिस्रवा२३
११ १र १र ५ १ १ १ १ १
४५ ॥(२) एनावा२३४यिश्वा। नियार्य्या३षा३। द्युम्ना२
१ ५ ११ १ १ १
ना२३४यिमा। नृषा१णा२म्। सिषा२३। सन्ता३४
५र र ११र१२ ११११
औहोवा। वनामहो२३४५यि(३) ॥ १२ * ॥ [५]

११ रर
॥ सत्रासाहीयम् ॥ उच्चा३४। तेजातमन्धसः।
५ ५ १ र र १ १ १
औ६वा। दिविसद्भूमियादा२दायि। उ२ग्राम्। आ
२ १ ६ र१ २र २ १ ५ ५
२३र्मा। महौ३हो। वाहा३४३यि। आ२३४वो६हा
३२ र र ५ ५ १ र
यि ॥(१) सना३४ः। इन्द्राययज्यवे। औ६वा। वरुणाय
१ १ १ १ ६ १र
मरुद्भा२याः। वा२रायि। वो२३वीत्। परौ३हो।
२र १ १ ५ ५ २र१ र
वाहा३४३यि। स्वा२३४वो६हायि ॥(२) एना३४। विश्वान्य

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ११गा०।

र ५ ५ १ र र १ १
र्य्यथा। श्रो६वा। द्युम्नानिमानुषा२णाम्। सा२यिषा।
२ १ ५ १र १र२ १ ५
सा२३न्ताः। वनौ३चो। वाहा३४५यि। मा२३४चो६
५
हायि(३) ॥ १२ * ॥ [६]

१ र र र २ ४ ३
॥ स्वारसौपर्णम्॥ उच्चात्तेजातमन्धा३साः। दिवि
४ र ५ र १ ३ ५ १ २ २ २
सद्भूमिया। ह्रुम्। दा२३४दायि। उग्रा३उवा। शर्म।
२ १ ५ ४ ५ २ २ २
मद्दो२३४वा। श्रा५वो६हायि ॥(१) सनइन्द्रायजज्या३वा
३ ४ ५र र १ ३ ५ १ र
यि। वरुणायमरु। ह्रुम्। द्भा२३४याः। वारा३उ
र र १ २ १ ५ ४ ५ १रर
वा। वोवित्। परो२३४वा। श्रा५वो६हायि ॥(२) एना
र २ ४ ३र ४ ५रर १ २ ५
विश्वान्यर्य्या३श्रा। द्युम्नानिमानू। ह्रुम्। षा२३४णाम्।
१ २ २ १र २ १ ५ ४ ५
सायिषा३उवा। सन्ताः। वनो२३४वा। मा५हो६हा
यि(३) ॥ १० † ॥ [७]

१ २ र १र २ १ २ १
॥ श्राकारवर्णम्॥ उच्चा। तेजातमन्धसाः। दिवि

* ऊ० गा० ८प्र० २श्व० १२सा०।

† ऊ० गा० १०प्र० १श्व० १०सा०।

Digitized by Google

सत्। भूमिया२। ददा३१उवा२३। ऊ३४पा। उग्र
ंशा२३र्मा। महिश्रवा३१उवा२३ ॥(१) सानाः। इन्द्राय
यज्यवायि। वरुणा। यमरु२। द्भिया३१उवा२३।
ऊ३४पा। वरिवो२३वीत्। परिस्रवा३१उवा२३॥(२) आ
यिना। विश्वान्यर्य्या। द्युम्नानि। मानू२। षाणा३
माउवा२३। ऊ३४पा। सिषासा२३न्ताः। वनामहा३१
उवा२३। ऊ३२३४पा३ ॥ ११ *॥ [८]

॥ जराबोधीयम्॥ उच्चातेजोवा। तामन्धसाः।
दिवायिसार३द्भू। मियादादायि। उग्रांशा१र्मा२३
मा। हि। श्रवो३४५ई। डा॥(१) सनइन्द्रोवा। याय
ज्यवायि। वरुणार३या। मरुद्भायाः। वरायिवो१वी
२३त्या। रि। स्रवो३४५ई। डा॥(२) एनाविश्वोवा। ना

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ११गा०।

२ १ २ १ २ १ २
मर्य्याश्रा। द्युम्नाना२३यिमा। नुषाणाम्। सिषासा
४ ५र २ २
१न्ता२३वा। ना। महो३४५ई। डा(३)॥ १४*॥ [९]

२र र र र
॥ ऋषभः पावमानम्॥ हाहाउआतेजा। हा३।
२ १ १ ५ २१ र २ २
हा३यि। तामा२न्ना२३४माः। दिविसद्भूमिया१दा३
२ २ ५ १ २ ४ ५ ४
दे। उग्र१ग्रा२३४र्म्मा। ओमो३। महोवा। आ५
५ २र र २ १
वो६हायि॥(१) हाहाउसनइन्द्रा। हा३। हा३यि। या
२ ५ १ र २ २ २ २
या२ज्या२३४वायि। वरुणायमरु१द्भा३याः। वरिवो
५ १ २ ४ ५ ४ ५ २र
२३४वीत्। ओमो३। परोवा। हा५वो६हायि॥(२)हा
र र र २ १ २ ५
हावेनाविश्वा। हा३। हा३यि। नाश्रा२र्य्या२३४षा।
१ र र २ २ २ २ २ ५ १ २
द्युम्नानिमानू१षा३णाम्। सिषासा२३४न्ताः। ओमो३।
४ ५ ४ ५
वनोवा। मा५हो६हायि(३)॥ १ †॥ [१०]

---

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १४सा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० १सा०।

Digitized by Google

॥ गौषूक्तम्॥ उच्चातेजातमौ। होहोवाहायि।
धसाः। दिविसद्भूमियौ२। ऊवायि। ऊवा२यि।
दादा२यि। उग्रꣳशर्ममहौ२। ऊवायि। ऊवा२
यि। आवा२३ः। हो२वा२३४औहोवा॥(१) सनइन्द्राय
यौ। होहोवाहायि। ज्यवायि। वरुणायमरौ२।
ऊवायि। ऊवा२यि। द्भाया२ः। वरिवोवित्परौ२।
ऊवाहि। ऊवा२यि। म्रावा२३। हो२वा२३४औहो
वा॥(२) एनाविश्वानियौ। होहोवाहा। र्यभा। द्युम्ना
निमानुषौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। पाणा२म्।
सिषासन्तोवनौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। माहा२३यि।
हो२वा२३४औहोवा। अग्निराहुता२३४५ः(३)॥ २*॥ [११]

॥ स्वारसैन्धुक्षितम्॥ उच्चातेजातमन्धासाः। दा

---

* ज० मा० १२प्र० १ख० २मा०।

Digitized by Google

२ १ २र र २ १
यिविसद्भू । मियादादौ । होवा३हायि । ऊया२९

१ २ १ ५ ४ ५ २ र
शार्म्मा२३ । मद्दो२३४वा । आ५वो६हायि ॥(१) सनइन्द्रा

१ २ १ २र १ २र र २
ययज्यावायि । वारुणाय । मरुद्भायौ । होवा३हा

१ १ २ १ ५ ४ ५
यि । वारा२यिवोवी२३त् । परो२३४वा । हा५वो६हा

२र र र १ २ १ र १ र १ २र
यि ॥(२) एनाविश्वानिअर्य्याआ । द्यूम्नानिमा । नूषाणौ ।

र २ १ १ २ १ ५ ४
होवा३हायि । सायिषा२सान्ता२३ः । वनो२३४वा । मा

५
५हो६हायि(३) ॥ ७ * ॥ [१२]

२ रर १ २ १ १ ३
॥ ऐडसौपर्णम् ॥ उच्चातेजोवा । तामन्धा२३४

५ १२ १ ० २ २
साः । दिवायिसद्भू । मिया२दा२३४दायि । ऊ२

१ २ १ २ १ २ ४ ५ २
ग्राम् । शा२३र्म्मा । माद्दिश्रवा । औ३होवा ॥(१)सन

१ ५ १ २ २ ५ २ १ २र १ ० २
इन्द्रौवा । यायज्या२३४वायि । वरुणाया । मरु२द्भा

५ १ २ १ २ १ २
२३४याः । वा२रायि । वो२३वीत् । पारिस्रवा । यौ

* ऊ० गा० १९प्र० २था० ७भा० ।

४ ५ २र२ १ २ १ १ २ ५ २ १
३होवा ॥(२) एनाविश्वोवा। गामर्य्या२३४आ। द्युम्ना
२ १ ४ ५ १ २
निमा। नू२षा२३४णाम्। सा२यिषा। सा२३न्ताः।
१ २र १ २ ४ ५ ५
वानामद्या। मौ३होवा। ह्वो५ई। डा(३) ॥ १७* ॥ [१३]

१र १र १ २
॥ सुरूपोत्तरम् ॥ उत्वातेजौहो२। इया। तम
१ १ १ २र १
न्धासा२ः। दिविसद्भौहो२। इया। मियादादा२
१ १ २ १ २
वि। उग्रऽग्रम्मौहो२। इया। महिश्रा२३वा३४३ः ॥(१)
२ १ १ २ १ १र
सनइन्द्रौहो२। इया। ययज्यावा२यि। वरुणायौहो
१ २ १ १र १
२। इया। मरुद्भाया२ः। वरिवोवौहो२। इया।
२ १ २ २र२ १ १ २ १
परिस्वार३वा३४३ ॥(२) एनाविश्वौहो२। इया। निग्नर्या
२ १ १ २१
आ२। द्युम्नानिमौहो२। इया। नुषाणा२म्। सि
१ १ १ २१र २ १
षासन्तौहो२। इया। वनामार३द्वा३४३यि। ओ२३
४५ई। डा (३) ॥ ३ † ॥ [१४]

---

* ऋ० मा० १२प्र० १भा० १०सा०।

† ऋ० मा० १५प्र० १भा० १सा०।

Digitized by Google

१र र र १
॥ भद्रारहस्त्॥ हाउज्ञातेजा। तमा२न्धासा२ः।
१ र २ १ १ १
दिविसद्भूमिया२दादा२यि। उग्रा२७ग्रार्म्मा२। महि।
२ २र र १र १
आ२वा२३४औहोवा ॥(१) हाउसनइन्द्रा। यया२ज्यावा।
१ र १ १
२यि। वरुणायमरु२द्भाया२ः। वरा२यिवोवी२त्।
१ २ २र र १र र र
परि। हा२वा२३४औहोवा ॥(२) हावेनाविश्वा। निश्वा
१ १ र र १ १
२र्य्याधा२। ग्रु म्नानिमानू२षाणा२म्। सिषा२सा
१ १ २र र १ १ २ र
न्ता२ः। वना। मा२हा२३४औहोवा। घसभ्यक्रातु
१२ २ १ १ १ १
विक्तमा२३४५म्(३)॥ ४ *॥ [१५]

१र र १ २
॥ इडानाऽसंवारः॥ औहोयिहुवा३होयि। उ
र र ४ २ १ ५ २ ४ २ १ ५
ग्रातेजा३ता३मन्धसः। दिविसद्भूमी३यादादायि।
३ १ २ ५ २ ११ १ २
उग्रा२ग्रा२३४र्म्मा। महिश्रवः। इडा२३॥(१) सनइन्द्रा३
४ २ १ ५ १ र ४ २१ ५ ११ २
या३यज्यवायि। वरुणाया३मा३रुद्भियः। वरायिवो२३

* ऋ० मा० १५म० १ख० ४वा०।

५ २ ११ १ २१र ४ २ ३ ५र
४वीत्। परिस्रव। इडा२३॥(२) एनाविश्वा३नी३यर्य्यंया।
१ र ४ २र ५र १र र १ ३ १र
द्यु म्नानिमा३नू३षाणाम्। यौ३होयिहुवा३होयि। सिषा
१ ५ २१र २ र १ २ ४ ५
सा२३४न्ताः। वनामहे। इडा२३भा३। एहीडा।
३
होऽ५ई। डा(३)॥ ५ *॥ [१६]

२ १र र १र २
॥ याम्नुभार्गवम्॥ उच्चाते। जातमन्धा३साः।
१ २ १ २ ५ १ २
हायिविसद्भू३। मायार२हा२३४हायि। उग्रा९श्रा१
१२ १ ५ ५ १११ १र
र्मा२। महा३यि। आर२४वो६हायि॥(१) सनइ। द्रा
२ १ २ १ २ ५
ययज्या३वायि। वारुणाया३। मारु२द्भा२३४याः।
१ २ १२ १ ५ ५ १र
वरायिवो१वीरत्। परा३यि। आर२३४वो६हायि॥(२) ए
१र र २ २ १ २ १ २
माविश्वानि। यर्य्या३या। द्यु म्नानी३। मानूर२षार२३
५ १ २ १२ १ ५ ५
४णाम्। सिषासा१न्ता२ः। वना३। मार२३४वो६हा
यि(३)॥ ११ †॥ [१७]

* ऊ० गा० १५प्र० १ख० ५गा०।

† ऊ० गा० १८प्र० १ख० ११गा०।

१र रर १ १
॥ सौमित्रम्॥ उच्चातेजातमन्धसा३ए। दिविस
१र १ १ १
द्भूमि। या२१२३। ददा३४३यि। ऊ२३याम्। म
१ ४ ५ ४ ५ १ र
र्मा२यो२३। महोवा। आ५वो६हायि॥(१) सनइन्द्राय
१ १ १र १
यज्यवा३ए। वरुणायम। रु२१२३। द्भिया३४३:।
१ १ र १ ४ ५ ४ ५
वा२३रायि। वोवा२ओ२३। परोवा। मा५वो६हा
१रर र १ १र १ १र
यि॥(२) एनाविश्वान्यर्य्यआ३ए। द्युम्नानिमा। नु२१२३।
र १ १ १ १ ४
षाणा३४३म्। सा२३यिषा। सन्ता२ओ२३। वनो
५ ४ ५
वा। मा५वो६हायि(३)॥ ६ *॥ [१८]

१ १ १ १ र र
॥ ऐटतम्॥ उच्चा। एउच्चा। तेजातम्। आ
१ १ ५र र १ ५ १ १
३। जा२मा२३४औहोवा। धा२३४साः। दिवायिसा
५ १ १ १ १ ५र र १ ५
२३४द्भू। मिया३। मा२या२३४औहोवा। दा२३४दे।
१ १ ५ १ १ १ १ ५र र
उग्रा२शा२३४र्मा। महा३यि। मा२हा२३४औहोवा।

* ऊ० गा० २०प्र० १अ० ६गा०।

२ ५ १२ १ २ र
आ२३४वाः ॥(१) सनः। एसानाः। इन्द्राय। या। ३।
१ २ ५रर २ ५ २ २ ५
यार्व्यार३४औहोवा। ज्या२३४वे। वरुणार३४या।
२१ १ २ ५रर २ ५ १ २
मरु३। मा२रुर३४औहोवा। द्भीर३४याः। वरायिवो
५ २१ १ २ ५रर २ ५
२३४वीत्। परा३यि। पा२रार३४औहोवा। स्वा२३४वा॥(२)
११ १ २ र १ २ ५रर
एना। एभायिना। विश्वानि। भा३। ना२भा२३४औहो
२ ५ १ २ ५ २र१ १ २
वा। र्या२३४भा। द्युम्ना२३४नी। मानू३। मा२नू२३४
५रर २ ५ १ २ २१
औहोवा। षा२३४णाम्। सिषासार३४न्ताः। वना३।
१ २ ५रर २ ५
वार्नार३४औहोवा। मा२३४हे(३)॥ ७ *॥ [१९]

१ र र१ ५ १
॥ धुरासाकमश्वम्॥ उच्चातेजा३। हौ३होर१।
२ ५ १ १ ५ १
तमन्धसा३ः। हौ३होर१यि। दिविसद्भू३। हौ३हो
र २ ५१ १
३१यि। मियाददा३यि। हौ३होर१यि। उग्र७शर्मा
५ १ २ ५ १
३। हौ३होर३१यि। महिश्रवा३ः। हौ३होर१२३४५ई।

* ऊ० आ० २०प्र० १ख० ७सा०।

१ २ ३१ २ ३
डा ॥(१) सनइन्द्राा३। हौ३हो३१। ययज्यवा३यि। हौ
२ २ २ ३ २ २
३हो३१यि। वरुणायाा३। हौ३हो३१यि। मरुद्भिया
३ २ २ २ ३ २
३ः। हौ३हो३१यि। वरिवोवीा३त्। हौ३हो३१यि। प
२ ३ २ १२ २
रिखवा३। हौ३हो३१२३४५ई। डा ॥(२) एनाविश्वाा३।
३ २ २ ३ २ २
हौ३हो३१। निभर्य्यंषाा३। हौ३हो३१यि। द्युम्नानि
२ ३ २ २ २ ३ २
मा३। हौ३हो३१यि। नुषाणाा३म्। हौ३हो३१यि।
२ २ ३ २ २ २ ३ २
सिषासन्ताा३ः। हौ३हो३१यि। वनामहाा३। हौ३हो
३१२३४५ई। डा(३) ॥ ८ * ॥ [२०]

१ १२२ १२१ १ १२
॥ विलम्बसौपर्णम् ॥ उच्चातेजातमन्धसः। इय
१२ ४ ३ ४२ ५२ २ २ १
इयाहायि। दिविसद्भूमिया। हा३हाा३यि। दा२३४
१ २ २ १ २ ५२ २ २
दायि। उग्राा३उवा३। माा२र्मा२३४औहोवा। महि
२ १११११ १११२२ २ १२ १११ २ २
श्रवा२३४५ः ॥(१) सनइन्द्रायययज्यवे। इयइयाहायि। व

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ८गा०।

Digitized by Google

४र५र र १ १ १ ५ १ १
रुणायमह्न। हाइहाइयि। द्भार२३४याः। वारा३उ
२ १ २ ५र र २ २ १ १ १ १ २र१र
वा३। वोर्वा२३४औहोवा। परिस्रवा२३४५॥(२)एना
२र १ १र १ १ १ १ ४ २र ४ र ५र १
विश्वान्यर्य्यआ। द्दुंयद्युयाद्याहि। द्युम्नानिमानू। हा३
२ १ ५ १ १ १ १ २
हा३यि। षा२३४णाम्। सायिषा३उवा३। सा२न्ता
५र र १र २ १ १ १ १
२३४औहोवा। वनामहा२३४५यि(३)॥ ८ *॥ [२१]

॥ मार्गीयवाद्यम्॥ उहौहोवा। तेजा२। तमा
२ ५ १ १र १ १ १ १२
न्भा२३४साः। दिविसद्भू। मियादा१दा२यि। उग्र
२ २ २ ५ १ २
म्। हा। औ३होयि। म्रा२३४र्म्मा। मा२हा२३४
५र र २ १ १ १ १ १ २र १ २ १
औहोवा। ए३। अवा२३४५ः॥(१) सनौहोवा। पायि
१ २ ५ १ २र १ २
म्रा२। ययाज्या२३४वायि। वरुणाय। मह्नद्भा१
१र २ २ २ २ १
या२ः। वरा। हा। औ३होयि। वो२३४वीत्। पा

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० ८सा०।

२रा२३४औहोवा। ए३। स्वा२३४५॥(२) एनौहोवा।
वायिश्वा२। निश्चार्य्या२३४आ। द्युम्नानिमा। नूषा१
णा२म्। सिषा। हा। औ३होयि। सा२३४न्ताः।
वा२ना२३४औहोवा। ए३। मह्या२३४५यि(३)॥ १४*॥[२२]

॥ ऐडकौत्सम॥ सनाचीन्द्रा२३। ययज्यवई्या।
वरुणायमरुद्भियः। वारुणाय। मरुद्भा२३याः। वा
रा३यिहायि। वोवो३हायि। परिस्रा२३वा३४३। ओ
२३४५ई। डा(२)॥ ४ †॥ [२३]

॥ सौमित्रम्॥ एनाविश्वान्यर्य्य आ३ए। द्युम्नानि
मा। नू२१२३। षाणा३४३म्। सा२३यिषा। सन्ता
२ओ२३। वनोवा। मा५ह्लोईहायि(३)॥ १८‡॥[२४] ८

---

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० १४गा०।

† ऊ० गा० २२प्र० १ख० ४गा०। द्वितीयस्या ऋचोगानमेतत्।

‡ ऊ० गा० १६प्र० १ख० १८गा०। तृतीयस्या ऋचोगानमेतत्।

Digitized by Google

द्वितीय-सूक्तरूपे प्रगाथे* प्रथमा—

२ १ २ ३१ २३ १ २र
पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि।
१ २३१ १ २र३१२ ३१ २ ३१ ३११ २
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः॥ १†॥

हे सोम! "पुनानः" पूयमानस्त्वम् "अपः" उदकानि वसतीवर्थ्याख्यानि "वसानः" आच्छादयन् "धारया" "अर्षसि" पवित्रं गच्छसि, ततो "रत्नधा" रत्नानां रमणीयानान्धनानां दाता च "ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "योनिं" स्थानम् "आसीदसि"। कीदृशस्त्वम्? "उत्सः" प्रस्यन्दनशीलः "देवः" द्योतमानः "हिरण्ययः" हिरण्मयः सुवर्णोत्पत्तिस्थान मित्यर्थः॥

"उत्सोदेवः"—"उत्सोदेव"—इति पाठौ॥ १॥

---

* "प्रकर्षेण प्रथनं यत्र स प्रगाथः। प्रकर्षो नाम चाम्नाता दृक्पाठा दाधिक्यम्"—इति मी० द० अ० ९, २, ६ अधि० १वर्णके माधवव्याख्यायाम्। एष च प्रगाथः—पादाभ्यास-पुरःसर मन्तरसम्पादनेनोपजायते। अत्र च "पुनःपदा"—इति श्रौतोक्तिलिङ्गम्। तथा च श्रूयते ताण्ड्ये तृतीये —"एषा वै प्रतिष्ठिता बृहती या पुनः पदा तद् यत् पदं पुनरारभते तस्माद् वत्सो मातर मभिहिङ्करोति"—इति। अस्यार्थः—या बृहती पुनः पदा भवति, सैषा प्रतिष्ठिता स्थिरा भवति; पदं चतुर्थः पादः सोऽप्यन्तर-सम्पादनाय पुनः पठ्यते, ततः सा बृहती पुनः पदा; सेय मृक्समाता, तस्याः पादो वत्सः; तथा सति यस्मादेव चतुर्थं पाद मुद्गाता पुनरारभते तस्माद् वत्सो मातर मभि वीक्ष्य हि मिति शब्दं करोतीति।

† छ० आ० ६,१,३,१ (२भा० ७० पृ०)=ऋ० वे० ७, ४, १२, ४। छ० बृहती। दे० छ० पूर्ववत्।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

२ ३र ३र ३ ३र ३र३१२ २ ३१२१ २
दुहानऊधर्दिव्यम्मधुप्रियम्प्रत्नꣳसधस्थमासदत् ।

२ ३१ ३१२२३र २१२३ १ २ ३ २
आपृच्छ्यन्धरुणंवाज्यर्षसिनृभिर्धौतोविचक्षणः ॥ २* ॥९†

"मधु" मदकरं ‡ "प्रियं" प्रीणनकारि ¶ "दिव्यं" दिविभवम् "ऊधः" सोमवल्ली-लक्षणं "दुहानः" पवमानः § सोमोदेवः "प्रत्नं" पुरातनं "सधस्थं" सह तिष्ठन्त्यत्रेति सधस्थं स्थान मन्तरिक्षम् ‖ "आसदत्" आसीदति [सदेर्लुङि रूपं] तदनन्तरम् "आपृच्छ्यं" कर्मणा प्रष्टव्यं "धरुणं" कर्मणो धारयितारं यजमानं "वाजी" अन्नवान्** सन् हे सोम! त्वम् "अर्षसि" तस्मै अन्नं दातु मतिगच्छसि। कीदृशः? नृभिः कर्मनेतृभिर्ऋत्विग्भिः "धौतः" अदाभ्यग्रहे परिशोधितः

---

* ऋ० वे० ७, ५, ११, १ । † इदं माध्यन्दिनपवमानं द्वितीयम् ।

‡ 'मधु स्वादु सोमाख्यम्'—इति वि० ।

¶ 'प्रियं देवमनुष्याणाम्'—इति वि० ।

§ 'दुहानः दुह्यमानः । ऊधः ऊधसः सकाशात् ग्रहापवित्ररूपात् । अथवा ऊधउदकं यत्र ध्रियते सोमस्य सकाशात् तद् दुह्यते'—इति वि० ।

‖ 'सधस्थं स्थानं द्रोणकलशाख्यम्'—इति वि० ।

** अन्नवान्—सोमः, चरुः, पशु, धानाः, करम्भः, पुरोडाशः, प्रतीवापः, पयस्येति ।

Digitized by Google

["तैरेनं* चतुराधूनोति पञ्च कृत्वः सप्त कृत्वो वा (१२, ५, १७)"—इत्यापस्तम्बेन सूचितम्] "विपश्चितः" सर्वस्य विद्रष्टा॥

"नृभिर्यता"—"नृभिर्धूतः"—इति पाठो॥ २॥ ९

२र   र   १   ५   १ र
॥ रौरवम्॥ पुनानःसोमा३धारा२३४या। आपो

र र र र र ३१ १ र
वसानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसा२इदसाइ। ओहा

र १ र रर १ १ र र १
३उवा। उत्सोदेवोहिरा२३ण्याइ। ओहा३उवा। इय्या।

२ ४ ५ २ र र र १ ५ १ र र
औ३होवा॥(१) उत्सोदेवोहा३इरण्या२३४याः। उत्सोदे

र र र र २१ १ र
वोहिरण्ययोदुहानऊधर्दिवियम्मधु२प्रियाम्। ओहा३उ

र १ र १ र र १
वा। प्रत्न९सधस्थमार३साइ। ओहा३उवा। सदात्।

---

* तैः निग्राभ्य-सञ्ज्ञकाद्भिः, एनं सोममित्यर्थः; चतुराभ्यमवे इति पङ्क्ति-शब्दः। चतुराभ्यमिति पर्वविशेषस्य नाम; तथाहि—'चतुराभ्यं महावात्याश्रित निग्राभ्याः मापने तस्मिंस्तूष्णीं सोमंशूनवधायाम्बये मा सावयच्छन्दसमिति प्रतिमन्त्र मुपवामः सर्वेषामविशेषात्'—इति का॰ श्रौ॰ सू॰ १२, ५, ११—१५। अस्यार्थः—यस्मिन्नौदुम्बरे भाण्डे अंशुं सोमः तस्मिन् सोतृवमयस्या निग्राभ्य-सञ्ज्ञा अप आनीय तस्मिंस्थिताः सोमलताः प्रविश्याम्बयेत्यादिविधिमिमंत्र्य: क्रमेणाद्याभ्यं पदं प्रक्षाति। मन्त्रैः सोमलता प्रक्षेपो वेति केचित्। उपयामप्रभृतीतोवीत्येतत् त्रिष्वपि मन्त्रेष्वाद्यावगुपश्च-नीयं सर्वप्रेपत्वाद्याम्नातत्वेति॥ किञ्च अभिषोतव्यस्य सोमस्य मेचनीया आपो निग्राभ्या उच्यन्ते।

Digitized by Google

४ ५ २ १ ५ १
औ२३होवा ॥(२) प्रत्नꣳसधस्था३मासा२३४दात्। प्रत्नꣳस

र र र २ २ १ २ २
धस्थमासदद्दापृच्छन्न्धरुणंवाजियाꣳर्षसाइ। औहो३उवा।

१ २१ २ १२ २ १ २
नृभिर्द्धौतोविचा२३दाइ। औहो२उवा। त्वणा। औ

४ ५ ४
३होवा। होऽ५इ। डा(३)॥ २ *॥ [१]

३२ २ ४ ५ २
॥ यौधाजयम्॥ पुना३१। ना३ःसो। म। धा

२ ५ १२ १ २२ २ ५
रा२३४या। आपो३। वसा२। नआ३४५। षा२३४सी।

२२१ २१ १२ १ ३२ ३
आरात्नधाः। यो। निम्रता२। स्यसा३४५इ। दा२३

५ २ १ २१ २
४सी। उत्सा२ः। दाइवो२। हिरा३४५। एया२३४

२ ३२ २४ ५ २२ ५ १
याः॥(१) उत्सो३१। द३वो। हि। रण्या२३४याः। उ

२ १ २१ २ ५ २१ २
त्सो३। दाइवो२। हिरा३४५। एया२३४याः। दुहान

१ २ १ २२ २ ५ २
ऊ। धः। दिवियार२म्। मधू३४५। प्रीर२३४याम्। प्र

१ २२ २ ५ ३
त्ना२म्। साधा२। स्थमा३४५। सा२३४दात्॥(२)प्र

* ऊ० गा० १प्र० १अ० २सा०।

Digitized by Google

१ १ ४ ५ २ ३ ५ १२
ना३१म्। सा३ध। स्थम्। आसा२३४दात्। प्राला
१ ३ १ ३ ५ २र १
३म्। सधा२। स्थमा३४५। सा२३४दात्। आपा
२ १ १ १ ३१ २ ५
क्रियाम्। ध। रूणंवा२। जिया३४५। षा२३४सौ।
२ १ ३ १ २ ५
नृभा२इः। धौतो२। विचा ३४५। चा २ ३ ४ णा (३)
॥ ३ *॥ [२]

१ २ १ २ १र
॥ ऐडमायास्यम् ॥ चायिपुना। नाःसो। मधार
र २ २र १ १
या। आपोवसा३१। नोऽर्षसी। भारत्नधा३१ः।
र २१र २ २ १
योनिम्तना। स्वसीदसी। ऊत्सोदेवा३१ः। हिरण्या२
२ १ २ १ २ १
३या३४३ः॥(१) आउत्साः। दायिवो। हिरण्ययाः। ऊ
२ २ १ र १
त्सोदेवा३१ः। हिरण्ययाः। दूहानऊ३१। धर्दिवियाम्।
२ १ २ २ १र १
मधुप्रियाम्। प्रालᳪसधा३१। स्थमासा२३दा३४३त्॥(२)
१ २ १ २ १र १
आयिप्रलाम्। साधा। स्थमासदात्। प्रालᳪसधा
२ १र २ १
३१। स्थमासदात्। आपृच्छिया३१म्। धरूणंवा। जि

* ऊ० गा० १प्र० १ख० २सा०।

१ १ ११ १ १
यर्षसायि। नृभिर्द्धौता२१ः। विचचा२३णा२४३ः। चो
२३४५ई। डा (३) ॥ २० * ॥ [३]

१२ २ २ २ १ १
॥ त्रिणिधनमायास्यम् ॥ पुनानःसोमधाराउवोवा।
१ १ २ ५ १ २ २ २ ५
रायाश्रा२३४पो। वसा२। नघा३४५। षा२३४सी।
१२ १ २२ ४२ ५ १ २ २ २ २
आरा३४। औहोवा। लधायोनिम्नता२। स्यसा३४५
२ ५ १ १ २२ ४२ ५ १
यि। दा२३४सी। उत्सा३४। औहोवा। दायिवो२
२ १ २ ५ १२ २२ २ २ १ १
हिरा३४५। ण्या२३४याः ॥(१) उत्मोदेवोहिराहाउवोवा।
१ २ २ ५ १ २ २ २
ण्यायाज२३त्माः। दायिवो२। हिरा३४५। ण्या२३४
५ १ १ २२ ४२ ५ १२ २ १
याः। दुहा३४। औहोवा। नऊधर्हिवियार्२म्। मधू
२ ५ १ १ २२ ४२ ५ १
३४५। प्रो२३४याम्। प्रत्ना३४। औहोवा। साधा
२ १ २ ५ २ २ २
२। स्थमा३४५। सा२३४दात् ॥(२) प्रत्नंसधस्थमाहाउ
१ २ १ २ २ ५ १ १ २
वोवा। सार्दत्प्रा२३४न्नाम्। सधा२। स्थमा३४५।

• ऋ० मा० १प्र० १ष० १०मा०।

२ ५ १र२ २र ४र १ १
सा२३४दात्। आपा३४। औ३होवा। ऋतन्धक्रृणंवार्२।
२ १ २ ५ १ १ २र ४र ५ १
जिया३४५। षा२३४सी। नृभा३४। औ३होवा। धौ
२ १ २ ५
तो२। विचा३४५। क्षा२३४णाः(३) ॥ १ * ॥ [४]

२र र १ २र १र १ १ २ १र
॥ कण्वरथन्तरम् ॥ पूनानःसोमधारया। अपोवसा।
२ १ २ २ र र र र २ ५र
नो३आर्षा३सी। आरत्नधायोनिमृतस्यसीदसा२३४ऐही।
२ १र ५ २ १ १ २
उत्सोदा२३४यिवाः। हिरा३१उवा२३। ए३। ण्यय
२ र र१र२र १ २ १ २१र र र २ १
आ ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययाः। उत्सोदेवो। हा३यिरा
१ २ र र २ ५र २ १
ण्या३याः। दुहानऊधर्दिवियम्मधुप्रिया२३४मैही। प्रत्न१ऽ
५ २ २ १ २ १ र
सा२३४धा। स्थमा३१उवा२३। ए३। सद्दा ॥ (२)प्रत्न१ऽ
१ २ १र २ १ २ १ २ १ १ २ र
सधस्थमासदात्। प्रत्न१ऽसधा। स्था३मासा३दात्। आ
र २ ५र २ १ ५ २
पृच्छ्यन्धरुणंवाजियर्षसा२३४ऐही। नृभिर्यो२३४ताः। वि
२ २ १ २
चा३१उवा२३। ए३। क्षणाआ (३) ॥ ४ † ॥ [५]

---

* ऋ० मा० २म० १ख० १सा०।

† ऋ० मा० ४प्र० १ख० ४सा०।

Digitized by Google

५ र १ ४र५ ४र ५ १
॥ गौङ्गवम् ॥ पुनानाइ:सोमधारया । आपो२ ।
१र ३र २ ४ ५ २र १ र र १
वसानोआ३ । षासायि । आरत्नधायोनिमा२३र्त्ता२ ।
३ २ ४ ५ २र १ र र ३ २ ४
स्यसा३यिदासायि । आरत्नधायोनिम्रत । स्यसा३यिदा
५ १ र र १ २ २ १ ५
सायि । ऊ‌त्सोई । वा । औ३हो । हिरो२३४वा ।
४ ५ ५ र २ ४र ५र ५ १
ण्णा५योई्हायि ॥(१) उत्सोदा३यिवोंहिरण्ययाः । ऊत्सो
१र र ३ २ ४ ५ २र १र १
२ । देवोहिरा३ । ण्णायाः । दुहानऊधर्द्दिवार३यारम् ।
३२ र ५ २र १र ३२ ४ ५
मधू३प्रायाम् । दुहानऊधर्द्दिवियम् । मधू३प्रायाम् ।
१ २ १ २ २ १ ५ ४
प्रात्नᳫस । धा । औ३हौ । स्थमो२३४वा । सा५दो
५ ५ २ ४५ ४र ५ १
ई्हायि ॥(२) प्रत्नᳫसा३धस्थमासदात् । प्रात्ना२म् ।
१ ३ २ ४ ५ २र १ १ ३ २
सधस्थमा३ । सादात् । आपृच्छ्यन्धरुणा२३वा२ । जिया
४ ५ १ २र १ २ २ १ ५
३र्षासायि । नृभिर्ह्रौ । ता । औ३हो । विचो२३४वा ।
४ ५
सा५णोई्हायि(३) ॥ ५ * ॥ [६]

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० ५गा० ।

४ र २ ४र १र४५र १
॥ द्विनिधनमायास्यम्* ॥ पुनानःसोमधारया । ए३ ।
२ ४ १ २ १ २२ २
औ३हो५वा॥ । आपो३ । वसा२ । नभा३४५ । षा
१ ११११ १ २१ २१ २ १
३सो२३४५ । आरत्नधाः । योनिमृता । स्यासा३भा ।
२ ४ ५ ११२ २ १
औ३हो३ । दा२३४सी । उत्सा औ३हो । दायिवो२ ।
२१ २ ११११ २४र र२र ४५
हिरा३४५ । ण्या३या२३४५ः ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययः ।
२ २४ १२ १ २२
ए३ । औ३हो५वा॥ । ऊत्सो३ । दायिवो२ । हिरा
२ १११११ ५ र ११ २१
३४५ । ण्या३या२३४५ः । दूहानऊ । धार्हिवियाम् ।
२ १ २४ ५ ११२२
माधू३भा । औ३हो३ । प्री२३४याम् । प्रत्ना औ३हो ।
१ २२ २ १११११ ४२ ४२४
साधा२ । स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् ॥(२)प्रत्नꣳसधस्थ
३र ४५ २ ४ ४ १२ १
मासदत् । ए३ । औ३हो५वा॥ । प्रा त्ना३म् । सधा२ ।
२२ २ १ ११११ १ २१
स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् । आपृच्छियाम् । धारु

* "निरधीन मायास्यम्"—इति क० पु० ।

२ १ २ १ ४ ४ ५ २ १ २

यांवा। जायाइश्वा। औइहोइ। षा२३४सौ। नृभाश्वौ

२ १ १ २ २ १ १ १ १ १

इषौ। धौतोर। विचा ३ ४ ५। स्वाइणा २ ३ ४ ५:(३)

॥ ६ * ॥ [७]

३ र २ ४र २र ३ ५र २ १

॥ उत्सेधम् ॥ पुनानःसोमधारया। पः। वसाइ४

३र ४र ५ २र १ २ ५

औहोवा। नोअर्षसाऽ२यि। हाइ१उवार३। ऊ२५पा।

३र २ ४ ५र ४ ५ १ २ १ २ र १

धाराइन्नधा। औहोवाहायि। योनिम्रता। स्यसीदा

२ २ ५ १ २ ४र ५र

सि। हाइ१उवार३। ऊ३४पा। उत्सोइदेवः। औ

४ ५ २ २ ४ २ ४र र ५र ४

होवाहायि। हिराइण्याप्५याई५६ः ॥(१) उत्सोदेवोहिर

५ ३र २ ५र ४र ५ २ १

ण्ययः। उत्सः। देवा३४औहोवा। हिरण्ययाऽ२ः।

२ ५ २ २ ४ ५र ४ ५

हाइ१उवार३। ऊ३४पा। दुहाइनऊ। औहोवाहायि।

१ २ १ २ १ २ २ ५

धार्हिवियाम्। मधुप्रायम्। हाइ१उवार३। ऊ३४पा।

२ २ ४ ५र ४ ५ २ २ ४

प्रत्नाइ९सध। औहोवाहायि। स्थमाइसाप्५दाई५तुन् ॥(२)

* ऊ० गा० ४प्र० १अ० ६गा०।

४ २ ४ २ ४ १र ४ ५ २ १ १र ४र ५ २
प्रत्नꣳसधस्थमासदत्। प्रत्नम्। सधा३४औहोवा। स्थ
१र २ ५ १र १ ४
मासदाऽ२त्। हा३१उवा२३। ऊ२३४पा। आपा३र्थि
५र ४ ५ १ २ १ २ १ २
याम्। औहोवाहायि। धारुणंवा। जियर्षासि। हा
२ ५ २ २ ४र ५र ४ ५
३१उवा२३। ऊ२३४पा। नृभा३यिर्धौतः। औहोवाहा
२ २ ४ २ १ १ १ १
वि। विपा३श्चापूपा६५६ः। ऊ२३४५(ह) ॥११*॥ [८]

४ २ ४ २ ४र ५
॥ यमाम्यमीयम् ॥ पुनाऽ५नः। सो३मा३धाराया।
१ र २ १ २ २ १र १ र र
आपोवसा। नो३आर्षा३सी। आरा२त्नधायोनिम्।
२ १ २ २ १ र र र
तस्या२३सा। इन्मायि। दा३सायि। उत्सोदेवोहिरा
२ २ १ २ १ २ १ २ २
ण्ययाउ ॥(१)उत्साः। दायिवो। हा३यिराण्या३याः।
१ १र २ १ १ २
दुहा२स्रजधह्निवि। यम्मार२३धू। इन्मायि। प्रा३याम्।
१ २ २ १ २ १ २
प्रत्नꣳसधस्थमा२सदाउ ॥(२)प्रात्नाम्। साधा। स्थाइ
१ २ २ १ १ ५ २
मासा३दात्। आपा२र्च्छन्नधरुणम्। वाजा२३या।

---

* ऋ० मा० ६म० १ख० ११पा० ।

१ २ १ १ ८ ८ २ २
इम्भायि। पा३सायि। नृभिर्ह्यौनोविषा२स्वाउ। वा
१ १ १
३४५ (३) ॥ १२* ॥ [८]

२८ ८ २८ १ २ १
॥ निषेधम् ॥ पुनानःसोमा३धारया। अपोवसा।
२८ १ १ १ १ २ ४ ५ २ २
नोअर्षसा२यि। इहा३। आरा३त्नाधाः। हाहो२३
५ १ १ १ २ ८ १ २ १ २ १
४हा। योनिमृता। स्सीदा२३सायि। इहा३। ऊ
२ ४ ५ २ २ ५ ३ २ ४
त्सो३दायिवाः। हाहो२३४हा। हिरा३ण्याप्५याइ५६ः ॥(१)
२ ८ ८८ २ १ २ ८ १ २ १
उत्सोदेवोहा३यिरण्ययाः। उत्सोदेवो। हिरण्यया२ः।
१ २ १ २ ४ ५ २ २ ५ १ २ १
इहा३। दुहा३नाऊ। हाहो२३४हा। धार्हिवियाम्।
२ १ २ १ २ १ २ ४ ५ २ २
मधुप्रा२३याम्। इहा३। प्रात्ना३ऽसाधा। हाहो२३
५ ३ २ ४ २ २८
४हा। स्थमा३सा५दाई५६त् ॥(२) प्रत्नऽसधस्था३मासदा
१ ११ १ ८ १ १ २ १
त्। प्रत्नाऽसधा। स्थमासदा२त्। इहा३। आ
२ ४ ५ २ २ ५ १ ११ २ १
पा३र्च्छायाम्। हाहो२३४हा। धारुणांवा। जियर्षा

२ १ १ १ २ ४ ५ २ १ ५
२३सायि। दूष्वा३। नुमा३यिष्णौता:। हाचो२३४ष्वा।

३ २ ४ ३ १ १ १ १
विचा३च्चा५णा६५६:। पे२३४५ (३) ॥ १२ * ॥ [१०]

२ ३र १ २र १र २ १ १ १र २र १
॥ समन्तम् ॥ पुनानःसोमधारया। अपोवसानोअ

र २ १ २ १ २
र्षसायि। आरत्ना२३धाः। योनिमृत। स्यसायिदासा।

२र २ ३र १ १ २ १ २
औहो३४वाहायि। उत। सोदा२३यिवा३ः। होवा३

२ १ १ र २र र २ १
हायि। हिरण्या२३या३४३:॥ १) उत्सोदेवोहिरण्ययाः।

र र ३१ र २ १ २
उत्सोदेवोऽहिरण्ययाः। दुहाना२३ऊ। धार्हिवियम्।

२ २ ३र २ ३र २ १ २
मधुप्रायाम्। औहो३४वाहायि। प्र। त्नाꣳसा२३धा

१ २ २ १र २ २१ ३१ २
३। होवा३हा। स्थमासा२३दा२४३त् ॥(२)प्रत्नꣳसधस्थ

१र २ १ २१ २ १र र २
मासदात्। प्रत्नꣳसधास्थमासदात्। आपृच्छा२३याम्।

१ १र १ २ ३र २ ३र २ १
धारुणंवाजियार्षासा। औहो३४वाहायि। नृ। भायि

---

* ऊ० गा० ६प्र० १ख० ११वा०।

Digitized by Google

हौ२३ता३ः। ह्वोवा३हायि। विचषा२३णा३४३ः। षो२३४५ई। डा (३) ॥ २ * ॥ [११]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ पुना३ना३ःसोमधारयोवा। आपोव सा। नोआर्षा१सा२यि। आरत्नधा३१२३४ः। योनि मृत। स्यसायिदा१सा२यि। उत्सोदा१यिवा२ः। हिरा ३ण्या२३४५। या२३४५ः ॥(१) उत्सोदे३वो ऽ हिरण्ययोवा। ऊत्सोदेवः। हिराण्या१या२ः। दूहानऊ३१२३४। ध हिंवियम्। मधुप्रा१या२म्। प्रत्नाꣳसा१धा२। स्थ मा३। सा२३४५। दा२३४५त् ॥(२) प्रत्ना३ꣳसा३धस्थमा सदोवा। प्रात्नꣳसध। स्थमासा१दात्। आपृच्छ्या ३१२३४म्। धरुणंवा। जियार्षा१सा२यि। नृभायि हौ१ता२ः। विचा३। षा२३४५। णा२३४५ः(३)॥ १ २ † ॥ [१२]

---

* ऊ० गा० ८प्र० १खं० २गा०।

† ऊ० गा० ८प्र० २खं० ११गा०।

५ ४ १ ४ ५ १ र
॥ ग्रभीवर्त्तम् ॥ उत्सो३दे३वो ऽ हिरण्ययोवा। उत्सो
२र १ १ १ र र ३ ४
देवः। हिराण्या१या२ः। दुहानऊ३१२३४। धर्दिवि
५ २१ १ १ २ १
वम्। मधूप्रा१या२म्। (२) प्रत्नाण्सा१धा२। स्थमा३।
१ २१ १ १ १
सा२३४५। दा२३४५त्. (३)॥ १४ *॥ [१३]

५ २ ४ ५ ४र ५ २ १
॥ महाकालेयम् ॥ प्रत्नण्सा३धस्थमासदात्। प्रत्ना
२१ २ ३र २ १ २र १ २ १
ण्सधा। स्थमासदा२३त्। आपृच्छियाम्। धा२३४।
३ ४र ५ २ १ १ ३र १ २
कुर्ष्वंवाजिय। पा३साथि। नृभायिर्ह्यौती। वा३४३पो
५ ४ ४
३४वा। विचा५सणाः। चो५ई। डा(३)॥ १५ †॥ [१४]

१ ३र र ३र ४ ५ २ १ २ ५
॥ वासिष्ठम् ॥ उत्सोदेवोहिर। पययाश्रो२३४वा।
४ ५ २१ १ र र र २
इयाहायि। कुवेहो२यि। उत्सोदेवोहिराण्या१या२ः।
१ र र १ १ ५ २ १
दुहानऊधर्द्दिवियम्। मधूप्रा१या२म्। ई३या॥ (२) प्रत्न

* क० ग्रा० प्र० १ ख० १४ ग्रा०।
† क० ग्रा० प्र० १ ख० १५ ग्रा०।

Digitized by Google

५ १ १४ २ १११
ंसार३४धा। स्थमासार३४५दाई५६त्। अवाङ्सार३
११
४५यि (३) ॥ १६* ॥ [१५]

१ र २ १ २ र १ २
॥ महावैष्टम्भम् ॥ पुनानःसोहायि। मधारयोवा।
१र २ र र १ २ १ २ २ र
आपोवसा। नोआर्षा१मार३यि। होवा३हायि। आं
१ १ २ १ २
रत्नधायोनिमृत। स्वसायिदा१सार३यि। होवा३हा
२ १ २ १ २ २ १
यि। उत्सोदा१यिवा२३ः। होवा३हायि। हिर। एषा
२ ५र र १ र२र १ २ १ २
२यार३४औहोवा ॥ (१) उत्सोदेवोहायि। हिरण्ययोवा।
१ र २र १ २ १ २ २ र
उत्सोदेवः। हिराण्या१या२३ः। होवा३हायि। दुहा
१र२ १२ १ २ १ २ २ १
नऊधर्हिवियम्। मधूप्रा१या२३म्। होवा३हायि। प्र
२ १ २ २ १र २
त्नाऽसा१धा२३। होवा३हा। स्थमा। सा२दा२३४
५र र २ १ २ र १ २ १
औहोवा ॥(२) प्रत्नऽसधोहायि। स्थमासदोवा। प्र
२ १ २ १ २ २ र १
त्नऽसध। स्थमासा१दा२३त्। होवा३हायि। आप्र

* ऋ० मा० ९म० २अ० १६वा०।

Digitized by Google

२ १ १ र १ २ १ २ २ १
च्छन्धरुणांवा। जियार्षा१सा२३यि। चोषा३चायि। नृ

२ १ २ २ १ २
भायिद्यौं१ता२३ः। चोवा३चायि। विच। षा२णा२३

५र र ३ ५
४औचोवा। दी२३४आः (३) ॥ १२ * ॥ [१६]

५ र २ ४र ५ ४र ५ २ १ २ १
॥ कालेयम् † ॥ पुनानाः३ःसोमधारया। अपोवसा।

२र १ २ १ २र २ २ १ २ ४
नोअर्षसा२३यि। आरत्नधाः३ः। यो२३४। निमृतस्य

५र २ २ १ २ र२ २ ५ ४
सो। दा३सायि। उत्सोदेवौ। वा३४३ओ३४वा। हि

५ र २ ४र ५ ४ ५ २ १ २र १
रा५ण्ययाः ॥(१) उत्सोदा३यिवोहिरण्ययाः। उत्सोदेवो।

२ ३ २ १ १ २र २ १ ३ ४ ५
हिरण्यया२३ः। दुहानऊ३। धा२३४ः। हिवियम्मधु।

२ २ १ २ २ २ ५ ४
प्रा३याम्। प्रत्ना१सधौ। वा३४३ओ३४वा। स्वमा५

५ २ ४ ५ ४र २ १ २ १
सदात् ॥(२) प्रत्न१सा३धस्थमासदात्। प्रत्ना१सधा।

२ ३र २ १ २र ३ २ १ ३र र
स्थामासदा२३त्। आपृच्छिया३म्। धा२३४। धरुणंवा

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० ११गा०।

† "महाकालेयम्"—इति क० पु०।

जिय। षा३सायि। नृभायिद्वौतौ। वा३४३ओ३४वा।
विचा५स्पणाः। ह्वो५ई। डा(३)॥ १२ *॥ [१७]

॥ वषट्कारणिधनम्॥ पुनानःसोमधारया। पुनाना
३ःसोमधारया। अपोवसानो३आर्षसा२यि। नोआर्षा
१सा२३यि। ओमो३वा। आरत्नधायोनिमृतस्या३सायि
दसा२यि। स्यसायिदा१सा२३यि। ओमो३वा। उत्सो
दे वोहो२राण्य१या२ः। हिराण्या१या२३ः। वोम्। ओ२।
वा२३४। औहोवा॥ ऊ२३४पा(१)॥ २० †॥ [१८]

॥ दैर्घश्रवसम्॥ पुनानःसोमधारयाओहाओहा३
ए। अपोवसानोअर्षसि। ओ३हा। ओ२हा३ए३४।
आरा३४त्नधाः। योनिमृ। तस्यासीदसायि। ओ३

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० १२गा०।

† ऊ० गा० १०प्र० १ख० २०गा०।

Digitized by Google

२ ꣵ २ २ ३ १ ३२ १ २ १ ५
हा। ओ३हा३ए३४। उत्सो३४देवाः। हिरो२३४वा।
४ ५ २र २ र र र र २
ण्या५योऽ६हायि॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययओहाओहा३ए।
१र २र१र २ १ १ ꣵ २ ꣵ २१ १२
उत्सोदेवोहिरण्ययः। ओ३हा। ओ३हाए३४। दुहा
३१ १ २ १ २ ꣵ १ ꣵ
३४नऊ। धाहिंवि। यन्माधुप्रियाम्। ओ३हा। ओ
२ २ ३ १ ३२ २ १ ५ ४
३हा३ए३४। प्रत्ना३४ऽसधा३। स्थमो२३४वा। सा५
५ २ र र र र २ १
दोऽ६हायि॥(२) प्रत्नऽसधस्थमासदोहाओहा३ए। प्रत्नऽ
२१ २१र २ ꣵ २ ꣵ २ २ ३र २
सधस्थमासदत्। ओ३हा। ओ३हा३ए३४। आपा३४
२ १ १ २ र १ २ ꣵ २
र्व्वियाम्। धारुणम्। वाजायर्षसायि। ओ३हा।
ꣵ २ २ ३२ ३र २ १ ५ ४
ओ३हा३ए३४। नृभा३४यिर्द्धौताः। विचो२३४वा। सा
५
पूणोऽ६हायि(३) ॥ १६ * ॥ [१९]

॥ मैधातिथम्॥ पुनानःसोहायि। मधा३रायां।
२र १ २ ३२ ४ ५
२ १र २ २ १ २ १ २
अपोवा२हो१यि। साओ३हो। नाआउवा। षासा

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १६सा०।

उवा। आरत्नधायोनिमृताऔ३हो। आसाउवा। दा
साउवा। उत्तमोदेवाऔ३हो। हिरा। औहो। वा
होर३४वा। ण्या५योई हायि ॥(१) उादेवोहायि। हि
रा३ण्यायाः। उत्तमोदा२हो१यि। वाऔ३हो। हायि
राउवा। ण्यायाउवा। दुहानऊधर्द्दिवियाऔ३हो।
माधाउवा। प्रायाउवा। प्रत्न९सधाऔ३हो। स्थमा।
औहो। वाहोर३४वा। सा५दोई हायि ॥(२) प्रत्न९सधो
हायि। स्थमा३सादात्। प्रत्न९सा२हो१यि। धाऔ
३हो। स्थामाउवा। सादाउवा। आपृच्छयन्धरुणंवा।
औ३हो। जायाउवा। सासाउवा। नृभिर्धौताऔ३
हो। विचा। औहो। वाहोर३४वा। सा५णोई हा
यि(३) ॥ ७ *॥ [२०]

* ऋ० मा० ११म० १सू० ७मा०।

१ र र र १ २ १ २
॥ वरुणसाम ॥ पुनानःसोमधारयोवा । ओवा ।
१ र२र र १ २ १ २ १
आपोवसा । नोआर्षा१वा२यि । आर२रा । तार२३
२ १र २ १ २ १ ऽ २ १ र
धाः । योनिमृत । स्वसार२३वायि । दसा३वा । उत्सो
१र१र २ १ २ १ २ १ र २ऽ २
देवोहिरण्ययः । ऊर२३त्साः । दायिवोहिरौ३ । हो३१
५ ४ ५ १ र रर १ २
२३४ । वा । ष्या५योऽ६हायि ॥(१)उत्सोदेवोहिरण्ययोवा ।
१ २ १ र २र १ २ १ २
ओवा । उत्सोदेवः । हिराण्या१या२ः । दूर२३वा ।
१ २ १ २ १ २ १ ऽ २
नार२३ऊ । धहिंवियम् । मधूर२३वायि । प्रिया३मा ।
१ २१२ १र २ १ २ १ २ ऽ
प्रत्नꣳसधस्थमासदत् । प्रार२३त्नाम् । साधस्थमौ३ ।
२ ५ ४ ५ २ २
हो३१२३४ । वा । सा५दोऽ६हायि ॥ (२)प्रत्नꣳसधस्थमा
१ २ १ २ १ २ १ २
सदोवा । ओवा । प्रात्नꣳसध । स्थमासा१दा२त् ।
१ २ १ २ १२ र १ २ १ऽ
आर२३पा । च्छोर२३याम् । धरुणंवाजियार२३वा । षसा
२ १ १र१र २१२ १ २ १ र १
३वा । नृभिर्धौतोविचक्षणः । नृर२३भीः । धौतोवि
ऽ २ ५ ४ ५
चौ३ । हो३१२३४ । वा । सा५णोऽ६हायि(३) ॥ १८* ॥[२१]

० ऊ० गा० १३प्र० १ख० १८गा० ।

२ र र र २ २१
॥ वैयश्वम् ॥ पुनानःसोमधारयाइए। अपोवसा२
र १ १ २ २ १र २१र र २ १
नोअर्षसा२३यि। ह्वोवा३ह्वायि। आरत्नधायोनिमृता
१ २ २ ३ ५ १र र र
२। स्यासा३हायि। दा२३४सायि। उत्सोदेवोहिरा२
१ २ १ २ ४ ५ ४
३ण्यो। एग्नया। औ३ह्वोवा। ह्वोपुइ। डा(१) ॥ १५* ॥[२२]
२४र र ३र ४ ५
॥ वषट्कारणिधनम् ॥ उत्सोदेवोहिरण्ययः। उ
र २ ४र ५४ ५ २र र र १ ७
त्सोदा३यिवोहिरण्ययाः। उत्सोदेवोही३राण्यया२ः। हि
१ २ १र ऽ २ र र १
राण्यया२३ः। ओमो३वा। दुहानऊधर्हिं वियम्मा३धू
७ १ २ १र ऽ २
प्रिया२म्। मधप्रा१या२३म्। औमो३वा ॥(२) प्रत्नऽस
१ ७ १ २ १र
धस्या३मासदा२त्। स्थमासा१दा२३त्। ओम्। ओ
२ १र र २ ५
२। वा२३४। औहोवा। ऊ२३४पा(३) ॥ १६† ॥[२३]
२१ ४र र र ५ २१र २र
॥ पृश्नि ॥ पुनाना२३ःसोमधारयाहाउ। अपोवसा

* ऊ० गा० १३प्र० २अ० १५गा०।

† ऊ० गा० १३प्र० २अ० १६गा०।

Digitized by Google

र १ २ १र २ १ २ १ १
नोअर्षसि। आराला१धा२३ः। होवा३हायि। योनि

२ १ २ १ २ २ १
मृत। असायिदा१सा२३यि। होवा३हायि। उत्सो

२ १ २ ० १ २ १
दा१यिवा२३ः। होवा३हायि। हायिरण्ययः। इडा

२ १र ४र र ५ १ र २र१र २
२३॥(१) उत्सोदा२३यिवोहिरण्ययोहाउ। उत्सोदे वोहिर

१ २ १ २ १ २ २ १ २
ण्ययः। दुहाना१ऊ२३। होवा३हायि। धाहिंवियम्।

१ २ १ २ २ १ २
मधूप्रा१या२३म्। होवा३हायि। प्रत्नाऽसा१धा२३।

१ २ २ १ र २ १ २ १
होवा३हा। स्यामासदत्। इडा२३॥(२) प्रत्नाऽसा२३

४ र ५ २ १ १ १ २ १र २ १र २
धस्थमासदहाउ। प्रत्नऽसधस्थमासदत्। आपाच्छा१

१ २ २ १ १र १ २
या२३म्। होवा३हायि। धारुणांवा। जियार्षा१सा

१ २ २ १ २ १ २
२३यि। होवा३हायि। नृभायिद्वौ१ता२३ः। होवा३

२ १ २ १ २ १
हायि। वायिचक्षणः। इडा२३भा३४३। ओ२३४५इ।

डा(३)॥ ३ *॥ [२४]

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० ३सा०।

१२ २ २ २
॥ आभीशवोत्तरम्॥ पुनानःसोमधारयाए। ए।
२ ३१२१ ७ २ २ ५ २ २ १ २
अपोवसा३नोअर्षसायि। आ२३४रा। हा३हा। त्नधा
२ २ २ २ ५ २ २
योन्मृतस्यासो१दसायि। ऊ२३४त्साः। हा३हायि।
१ २ २१ ५ ४ ५ १२२२
दायिवोहिरो२३४वा। षया५योई हायि॥(१) उत्सोदेवोहिर
२२ ९२ १ ७ २ २ ५ २
ण्यए। ए। उत्सोदेवो३हायिरण्ययाः। दू२३४हा। हा
२ १२ ७ २ २ ५ २
३हा। नऊधर्हिवियम्माधुप्रायम्। प्रा२३४त्नाम्। हा
२ १ २१ ५ ४ ५ १
३हायि। साधस्थमो२३४वा। सा५दोई हायि॥(२) प्रत्नॅ
२ १२ २ २
सधस्थमासदद्दे। ए। प्रत्नॅसधा३स्थामा१सदात्। आ
५ २ २ १ २ ७ २ २
२३४धा। हा३हा। आन्धरूपम्वाजायर्षासायि। न्हा२३
५ २ २ १९२१ ५ ४
४भीः। हा३हायि। धौतोविचो२३४वा। सा५णोई
५
हायि(३)॥ ४ *॥ [२५]

---

* ऊ० गा० १५प्र० २अ० ४गा०।

२ र १ १र १र २र र १
॥ पौरुमुद्गम् ॥ पुनानःसोमधारया। औहोवा। ए
२ र र १ र १ र २
हियां। हाउ। अपोवसा२नोअर्षसि। आरत्ना१धा
१ २ १ २ २ ५ १
२ः। योनिमृता३। स्थासायिदा२३४सायि। उत्सो।
२ ३ ५ २ २ ४
दायिवौवा३ओ२३४वा। हा३हायि। हिरा५ण्ययया: ॥(१)
१ र २र१र २ १ २ र १ २ र
उत्सोदेवोहिरण्ययः। औहोवा। एहियां। हाउ।
र १र १ २ १ २ १ २
उत्सोदेवो२हिरण्ययः। दुहाना१ऊ२। धार्द्दिविया३म्।
१ २ २ ५ १ २ २ ५ २
माधुमा२३४याम्। प्रत्नाम्। साधौवा३ओ२३४वा। हा
२ ४ २१ २१२ १र २ र
३हा। स्थमा५सदात् ॥(२) प्रत्नꣳसधस्थमासदत्। औ
१ १ र १ र१ २
होवा। एहियां। हाउ। प्रत्नꣳसधा२स्थमासदत्।
१र २ १ २ १ २ २ ५
आपाच्छ१या२म्। धारुणंवा३। जायषा२३४सायि।
१ २ ३ ५ २ ४
नृभायिः। धौतौवा३ओ२३४वा। हा३हायि। विचा५क्ष
४
णाः। हो५ई। डा(३) ॥ १० * ॥ [२६]

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० १०सा०।

५ र २ ४र ५र ४
॥ आष्कारणिधनं काण्वम्॥ पुनाना३ःसोमऽधार
५ १ र१ र र १ २ र १
या। आपोवसा। नोआ२३र्षसाउ। वा३२। आर
२ १ २र ३ ४ ५ २ १र ५ १ २
त्नधाः। योनिमृता। स्यसीदा२३४सायि। ज२३त्साः।
१र र २ १ ५ र २ ४र ५
देवोहि। रण्या२३४५याई५६ः॥(१) उत्सोदा३यिवोहिऽर
४ ५ १ र १र १ २
ण्ययाः। उत्सोदेवः। हिरा२३ण्ययाउ। वा३२। दु
१र २ १ १ ३ १ १ २१ ५ १ २
हानज। धर्हिवियाम्। मधुप्रा२३४याम्। प्रा२३त्ना
१ २ १र ५ २
म्। सधस्थम्। आसा२३४५दाई५ईत्॥(२) प्रत्न७सा
४ ५र ४ ५ १ २ १ २
३धस्थऽमासदात्। प्रात्न७सध। स्थमा२३सदाउ। वा
र १ १ १ २ ३ ४ ५ २ १ ५
३२। आपृच्छियाम्। धरुणंवा। जियर्षा२३४सायि।
१ २ १र र २ १ २ ११
न२३भोः। धौतोवि। चक्षा२३४५णाई५ईः। आ२३
११
४५ष(३)॥ ११ *॥ [२७]

१ र र १ १
॥ सोमसाम†॥ पुनानःसो२मधारया। आपो२वा

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० १सा०।

† "पुनानोसोमः"—इति ख० पु०।

सा२। नोअर्षसी। आरा२त्वाधा२ः। योनिमार्त्ता
२। स्वसीदसी। ऊत्सो२दायिवा२ः। हिरण्यार२३या
३४३ः॥(१) उत्सोदेवो२हिरण्यया:। ऊत्सो२दायिवो२।
हिरण्यया:। दूहा२नाऊ२। धर्हिवाया२म्। मधु
प्रियाम्। प्राला२७साधा२। स्वमासार२३दा३४३त्॥(२)
प्रत्न७सधा२स्वमासदात्। प्राला२७साधा२। स्वमा
सदात्। आपा२च्छाया२म्। धरुणावा२। जियर्ष
सायि। नृभा२यिर्द्धौता२ः। विचक्षा२३णा३४३ः। ओ
२३४५ई। डा(३)॥१६*॥ [२८]

॥ वाचंदुक्थ्यम्॥ पुनानःसोम। धा२रया। अपो
वसानोअर्षा२३सायि। आरत्नाधा२ः। योनिमार्त्ता२।
स्वसीदसायि। उत्सोदा२३यिवाः। हिरण्यार२३ या ३ ४

---

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० १६गा०।

१र २र१र २ १ र र र २१

इः ॥(१) उत्सोदेवोहि। रा२ण्यया:। उत्सोदेवोहिर

२ १ २ १ ७ १

ण्यार२३या:। दूहा१नाऊ२। धाहिंवाया२म्। मधु

२ १र २

प्रियाम्। प्रत्नꣳसा२३धा। स्थमासा२३दा३४३त्॥(२)

२१ २१ २ १ २ १र

प्रत्नꣳसधस्थम्। आ२सदात्। प्रत्नꣳसधस्थमासा२३

२ १ ७ १ ७ १

दात्। आपृच्छाया२म्। धारुणांवा२। जियषँसा

२ १ २ १

यि। नृभिर्द्यौ२३ताः। विचक्षा२३णां३४३:। ओ२३४५ई।

डा(३)॥७*॥ [२९]

५४ २ २र४ र५ १ र र र

॥पृष्ठम्॥ पुनाइनःसोम॰ रया। अपोवसानोअ

१ २र१ र र र

र्षसा२३यिहोइया। आरत्नधा२ निम्नतस्यसीदसा२३यि

१ २१र १ १ २

होइया। उत्सोदा२३यिवा:। हिरण्या२३या३४३:॥(१)

५४ २र२र ४ ५ १र र र १

उत्सा२३देवा।हिरण्ययाः। उत्सदेवोहिरण्यया२३होइया।

२र १र १ २१ २

दुहानऊधर्हिंवियम्मधुप्रिया२३ꣳहोइया। प्रत्नꣳसा२३धा।

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० ७गा०।

१र   २   ५४   २ ३ ४ र ५
स्थमासा२३दा३४३त् ॥(२)   प्रत्ना३ॡसधस्थमासदात्।
१   र   १   २र१   र
प्रत्नॡसधस्थमासदा२३ह्वो ह्वया। आपृच्छ्यन्धरुणं वाजियर्ष
१   २ १   २   १   २
सा२३यिह्वोह्वया। नृभिर्यौ२३ता:। विचर्षा२३णा३४३:।
१
ओ२३४५ई। डा (३) ॥ २० * ॥ [३०]

५ ४   २   ४र   ५र   १
॥ कौल्मलबर्हिषम् ॥ पुना३ना३:सोमधारया। अ
र र र   १   १र   र र   १   २   र
पोवसानोआ२र्षासा२३४यि। आरत्नधायोनिमार्त्ता। ऐ
१   १र   र र र   २   १
ह्वोयि। स्या२सीदसायि। उत्सदेवोहिरोवा३ओर३
५   ४   ५   ५४   २   ४र   ५
४वा। एस्था५योई ह्वोयि ॥(१) उत्सो३दा३यिवोहिरण्यया।
१र र र   १   २र   र   १ १
उत्सोदेवोहिरा२ण्याया२३४:। दुहानऊधर्हि वायाम्।
र १   १   २   १
ऐह्वोयि। मा२धुप्रियाम्। प्रत्नॡसधस्थमोवा३ओ२३४
५   ४   ५   ५४   २   ४   ५र
वा। सा५दोई ह्वायि ॥(२) प्रत्ना३ॡसा३धस्थमासदात्।
१   १   १र   १ १   र
प्रत्नॡसधस्थमा२सादा२३४त्। आपृच्छ्यन्धरुणांवा। ऐ

* ऋ० अ० ७प्र० १व० २०वा०।

१ १ २ २ २ १
होयि। आ२यर्षसायि। नृभिर्हौतोविचोवा३ओर२३४
५ ४ ४
वा। श्रा५णोई्हायि (३) ॥ २१ * ॥ [३१]

२ र १ १ १ र
॥ वाम्रम ॥ पुनानःसो। मधारा१या२। अपोव
र र २ १र र र २
सानोआर्षा१सा२यि। आरत्नधायोनिम्हतस्यसायिदा१सा
१र २ १ ३ ५र र
२यि। उत्सदा२३यिवा३ः। हा२यिरा२३४औहोवा।
२ ५ २ र र १ २
स्या२३४णाः ॥(१) उत्सदेवाः। हिराण्या१या१या२ः।
१ र र र २ १ र २
उत्सदेवोहिराण्या१या२ः। दुहानऊधर्दिवियम्मधूप्रा१या
१ १ २ ५र र २
२म्। प्रत्नꣳसार३धा३। स्था२मा२३४औहोवा। सा
५ २ १ २ १
२३४दात्॥(२) प्रत्नꣳसधा। स्थमासा१दा२त्। प्रत्नꣳ
र १ १र र २
सधस्थमासा१दा२त्। आपृच्छ्यन्धरुणंवाजियार्षा१सा२
१ २ १ २ ५र र २
यि। नृभिर्हौ२३ता३ः। वा२यिचा२३४औहोवा। सा
५
२३४णाः(३) ॥ ३ † ॥ [३२]

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० २१गा० ।

† ऊ० गा० १८प्र० २ख० १गा० ।

२ ४र ५ र २ २ ४र ५ ५
॥ माधुच्छन्दसम् ॥ पुनानःसो। हो। मधारयाइए।
२ १२ १ २ २ ५ २र १ र २र १ २
अपोवसा। नोअर्षा२३४ऽसायि। आरत्नधायोनिमृत।
१ २ २र २ २र २ १ २
स्यसायिदासा। औहो३४वाहायि। उत्सोदायिवा।
२र २ १ २ १
औहो३४वाहायि। हिरण्या२३या३४३ः। ओ२३४५इ।

डा (१) ॥ २० * ॥ [३३]

५ १र २ ४ ५
॥ गौरीवितम् † ॥ उत्सः। देवो३। हिरण्ययाः।
१ र र र १ र २ ४
उत्सोदेवोहिरण्यया२३ः। दुहानऊ३१२३। धहिर्वियन्म
१ २ ४ ५ ४
धू५प्रियाम्। प्रात्नꣳसधा३१२३। स्थमोवा। सा५दो
५
इहायि (२) ॥ १२ ‡ ॥ [३४]

२र र र र र
॥ उभयतस्तोभं गौतमम् ॥ हाउपुनानःसोमधारया
१ र२ र र १ ७ २र १
हाउ। आपोवसा। नोआर्षसा२३४यि। हाहोयि।

---

* ऊ० गा० १९प्र० १ख० २०गा०। † "महागौरीवितम्"—इति ख० पु०।

‡ ऊ० गा० १९प्र० २ख० १२गा०।

२ १ २ १२ १ २ १ २ २ ३२ १ १
आरत्नधायोनिम्रुतास्यासीदसा३४यि। हाहोयि। ऊ
२ २ ३२ १ २ १ ५ ४
त्सोदायिवा३४ः। हाहो३। हिरो२३४वा। ए्या५योई
५ ३२ २२२ २ १ २ ३२
हायि ॥(१) हाउत्सोदेवोहिरण्ययोहाउ। उत्सोदेवः।
१ ० ३२ १ २ १२१ १ १
हिरण्यया२३४ः। हाहोयि। दुहानऊधर्दिवियम्।
१ २ ३२ २ १ २ ३२ १
माधुप्रिया३४म्। हाहोयि। प्रात्नꣳसाधा३४। हाहो
२ १ ५ ५ ३२
३। स्थमा२३४वा। सा५दो६हायि ॥(२) हाउप्रत्नꣳ
२ १ २ १ ७
सधस्थमासदहाउ। प्रात्नꣳसध। स्थमासदा२३४त्।
३२ २ २ १ २१२ २ १ २ ३२
हाहोयि। आपृच्छ्यन्धरुणंवा। जायर्षसा३४यि। हा
२ १ २ ३२ २ २ १ ५
होयि। नृभिर्धौता३४ः। हाहो३। विचो२३४वा।
४ ५
ह्वा५यो६हायि (३) ॥ ११ * ॥ [३५]

२ १२ ४२ ५२
॥ द्विहिङ्कारं वामदेव्यम्॥ पुनाना२३:सोमधारया।
१२ २ २ २ २ २ २ २ ३२ १ १
आपोवसानोअर्षस्यारत्नधायोनिम्रुताःस्यसीदहो३। ऊआ

* ऊ० गा० २०प्र० २अ० ११खा०।

Digitized by Google

२ । दा२३साथि । उत्सोदेवोऽहिरौहो३ । ऊम्मा २ ।
ण्यया । औ३होवा ॥(१) उत्सोदा२३यिवोहिरण्ययाः ।
उत्सोदेवोहिरण्ययोदुहानऊधर्हिवियाम्मधौहो३ । ऊम्मा
२ । प्रा२३याम् । प्रत्नᳩसधास्थमौहो३ । ऊम्मा २ ।
सदात । औ२३होवा ॥(२) प्रत्नᳩसा२३धस्थमासदात् ।
प्रातनᳩसधस्थमासददापृक्कन्धरुणंवाऽजियौहो३ । ऊम्मा
२ । षा२३साथि । नृभिर्द्धौतोऽविचौहो३ । ऊम्मा २ ।
णा । औ३होवा । हो५इ । डा (३) ॥ १५ * ॥ [३६]

॥ दैगतम् ॥ पुनानाः सोमधारया । आपोवसा ।
नोआर्षा१सा२यि । आरा३ । हौ३हो३वा । त्नधायो
निम्रतस्यामौ१ढ्मा २यि । उत्सो२३ । दा२यिवा२३४औ
होवा । ए३ । हिरा २ण्यया२३४५: ॥(१) उत्सोदा३यि

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० १५सा० ।

४र५४ ५ १ र १र १ २ २ २
वोहिरण्ययाः। उत्सोदेवः। हिराण्या१या२ः। हुहा३।

५ २ २ १ र ० १
हौ३वो३वा। नऊधर्हिवियम्माधुप्राया२म्। प्रत्ना२३म्।

१ २ ५र र २ १ २१११११
सा२धा२३४औहोवा। ए३। स्थमा२सदा२३४५त्॥(२)

५ २ ४ ५ ४र ५ १ २ १ २
प्रत्नꣳसा३धस्थमासदात्। प्रात्नꣳसध। स्थमासा१दा

२र २ ५ २ १ १ र ०
२त्। आपा३। हौ३वो३वा। ऋतन्धरुणंवाजायर्षा

१ १ २ ५र र २
सा२यि। नृभा२३यिः। धौ२ता२३४औहोवा। ए३।

१ २११११
विचा२र्षणा२३४५ः (३)॥ १६ *॥ [३७]

१ र १ १र १र १र १
॥ सर्वपुष्याख्यम्॥ पुनानःसोमधारया। ऊवे२३।

२१र २र र १ १ २१रर २ १ २ र
अपोवसानोअर्षसि। ऊवे२३। आरत्नधायोनिमृतस्यसी

१ १ र २र१र १ २ १
दसि। ऊवे२३। उत्सोदेवोहिरण्ययः। ऊवे२३॥(१)

१ र २र१र २ १ २ १ १ र २र१र २ १ २
उत्सोदेवोहिरण्ययः। ऊवे२३। उत्सोदेवोहिरण्ययः।

१ २ र १ र २ १ २ १ २१
ऊवे२३। दुहानऊधर्हिव्यम्मधुप्रियम्। ऊवे२३। प्रत्नꣳ

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० १६गा०।

सधस्थमासदत्। हुवे२३। आपृच्छ्यन्धरुणंवाज्यर्षसि। हुवे२३। नृभिर्धौतोविचक्षणः। हुवे२३। हुवे२३। होवा३हा२। हा३४। औहोवा। अक्रोदेवानां२परमेवियो२मा२३४५न् (३) ॥ १७ * ॥ [३८]

॥ धौतानम् ॥ हा२। ओ३हा२। ओ३हा२। हायि। उत्सोदेवोर। हिरण्या२३४याः। उत्सोदेवो२। हिरण्या२३४याः। दुहानऊधर्दिवियार२म्। मधुप्रा२३४याम्। प्रत्नंसधार२। स्थमासा२३४दात्। हा३। ओ३हा२। ओ३हा२। हा३४। औहोवा। आहदे२३४५ (२) ॥ ८ † ॥ [३९]

॥ नौधसम् ॥ जर२३४त्। सोदेवोहिर। ण्यायाः।

---

* ऋ० मा० १०प्र० २ष० १७वा०।

† ऋ० मा० ११प्र० २ष० ८वा०।

१ १२र २ १ २ २ १ २ १ २
उत्सोदेवो। हाउयिराण्याउया:। दूरउहा। नाऊधः।
११ १ २ २१ ५ १ २ १
दिवि। याम्। माधुप्रार२३४याम्। प्रा२३त्नाम्। सा
२ १ ५ २ ५
धस्थमोर२३४वा। सा२३४दात्(२) ॥ ५ * ॥ [४०]

३ ४र र २र ४५ ३ २ ३र ४र ५
॥ श्यैतम् ॥ उत्सोदेवोहिर। ण्यया२३४औहोवा।
१ र १र १ ० ५ ५ १ र १ र
ऊत्सोद्वः। हिराण्यया२३४:। ओईहा। दुहानऊ
२ १ २ १ २ ५
धः। दायिवा२३याम्। मधूर्। प्रा२३४याम्। प्रत्नछ
२ २ १ २ ५र १ २
सधास्था३मा। ऊम्मायि। सा२दा२३४औहोवा। वा
५
२३४ह्(२) ॥ ८ † ॥ [४१]

१२र र २ १ २
॥ काण्वबृहत् ॥ औहोपुनानःसो३ए। मधारा१या२
३र २ १ र २र र १र २
३४। हाहोयि। आपोवसानोअर्षसि। आरात्ना१धा
३र २ १ २ १ २
२३४:। हाहोयि। योनिम्रुत। स्सायिदा१सा२३४

* ऊ० गा० २१प्र० १ख० ५सा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० ८सा०।

२र २ १ २ २र २ २
यि। हाहोयि। उत्सोदा१यिवा२३४ः। हाहौ। हि
२ १ ५ ५ २र र
राइ। ण्या२३४याः। उऊवा६हाउ। वा॥(१) औहो
२र र २ १ २र २ १ र
उत्सोदे वा३ए। हिराण्या१या२३४ः। हाहोयि। ऊत्सो
२र र १ २ २र २ १ २
दे वोहिरण्ययः। दुहाना१ऊ२३४। हाहो। धाहिंवि
१ २ २र २ १ र २ र
यम्। मधूप्रा१या२३४म्। हाहोयि। दूहानऊ।
१ २ २र २ १ २
धर्हायिवा१या२३४म्। हाहोयि। मधूप्रा१या२३४म्।
२र २ १ २ २र २ ३ २ १
हाहोयि। प्रत्नाꣳसा१धा२३४। हाहो। स्थमा३। सा
५ ५ २र र
२३४दात्। उऊवा६हाउ। वा॥(२) औहोप्रत्नꣳसधा
२ १ २ २र २ १ २
३ए। स्थमासा१दा१दा२३४त्। हाहोयि। प्रात्नꣳसध
र १र २ २र २ १
स्थमासदत्। आपाक्ष्री१या२३४म्। हाहोयि। धारु
२ र १ २ २र २ १ २
णंवा। जियार्षा१सा२३४यि। हाहोयि। आपृक्ष्रम्।
१ २ २र २ १ २
धरुणा१वा२३४। हाहोयि। जियार्षा१सा२३४यि।

Digitized by Google

२र १ १ २ ३र १ २ १
हाहोयि। नृभायिहौशिना२३४:। हाहो। विचाइ।
१ ५ ५
हा२३४णा:। उहुवाइहाउ। वा (३) ॥ ८ * ॥ [४२] ९

तृतीय-तृचे—प्रथमा।

१ २र३२३२ ३ १ २३१ २ ३ २ १ २र २ र
प्रतुद्रवपरिकोशन्निषीदनृभिःपुनानोअभिवाजमर्ष।
२ ३ १२ ३ १२३१२३१ २ ३१ २३१२
अश्वन्नत्वावाजिनंमर्जयन्तोच्छावर्हीरशनाभिर्नयन्ति ॥१†॥

हे सोम! "तु" चिप्रं "प्रद्रव" अस्मयज्ञं प्रकर्षेणागच्छ। गत्वा च "कोशं" द्रोणकलशं "परि निषीद" निषसो भव। "नृभिः" नेतृभिः "पुनानः" पूयमानः सन् "वाजम्" अन्नं हवीरूपं त्वम् "अभ्यर्ष" अभिगच्छ। "वाजिनं" बलवन्तं "अश्वं न" अश्वमिव तं यथा मार्जयन्ति। तद्वद्वाजिनं त्वां "मर्जयन्तः" शोधयन्तः अध्वर्यु-प्रमुखा ऋत्विजः "बर्हिः" "अच्छ" अस्मदीयं यज्ञं प्रति "रशनाभिः" रशनावदाय ताभिरङ्गुलीभिः "नयन्ति" ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० ८गा०।

† ऋ० था० ६, १, ४, १ (२भा० १०६ पृ०)=ऋ० ७, ३, २२, १। ऋ० त्रिष्टुप्। एवमेवोत्तरच।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजना रक्षमाणः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

पिता देवानां जनिता सुदक्षो

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः॥ २ *॥

"स्वायुधः" शोभनायुधः † "इन्दुः" "सोमः" देवः "पवते" ‡ स च देवः "अशस्तिहा" रक्षोहा ¶ "वृजना" वृजनानि उपद्रवाणि परिहृत्येति शेषः, "रक्षमाणः" § "पिता" "पालकः" "देवानां" "तथा" "जनिता" उत्पादकः "सुदक्षः" शोभन-बलः "दिवः" "विष्टम्भः" विशेषेण स्तम्भयिता "पृथिव्याः" च "धरुणः" धारकः ‖। एवं महानुभावः पवते। "वृजना"—"वृजन्" —इति पाठौ॥ २॥

---

* ऋ० वे० ७, ३, १२, १।

† 'स्वायुधः असि-खड्ग-परशु-प्रासादिभिरायुधैः स्वायुधः। अथवा वज्र-धनुर्धनुक्-अस्त्राद्य प्रभृतिभिर्शस्त्रायुधैः स्वायुधः'—इति वि०।

‡ 'पवते पूयते'—इति वि०।

¶ 'अशस्तिहा अशस्तयः शत्रवः। अथवा अशस्ता वाचः अशस्तानि वा कर्माणि ये कुर्वन्ति तेषां हन्ता'—इति वि०।

§ 'वृजना रक्षमाणः। वृजनं बलम् अथवा वृजनं विमर्दं कुत्सितं कर्म तेभ्यो रक्षमाणः'—इति वि०।

‖ अतएवोक्तं मनुना—"अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टि, र्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः (३अ० ७६श्लो०)"—इति।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ १ २ ३ १२ २र ३ १र २र ३ २ ३ १ १

ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ २

स चिद्विवेद निहितं यदासामपी

२ २ ३ २ ३ १ २

च्याऽ३ङ्गुह्यं नाम गोनाम्॥ २ *॥ १०

"ऋषिः" अतीन्द्रियद्रष्टा † "विप्रः" मेधावी "पुरएता" पुरतो गन्ता "जनानां" मनुष्याणां "ऋभुः" उरुभासमानः ‡ "धीरः" धीमान् ¶ "उशनाः" एतन्नामकः ऋषिः यः "सचित्" स एव § "काव्येन" स्तोत्रेण "विवेद" लभते। किमिति?

---

* ऋ० वे० ७, ३, २१, २।

† "साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान्त्सम्प्रादुरुपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदाङ्गानि च। बिल्मं भिल्मं भासनमिति वा एतावन्तः समानकर्माणो धातवः"—इति निरु० नै० १, २०।

‡ 'पुर एता जनानाम्। पुरतः अग्रतः एति सोमः अथवा पुरतः हेता-जनानां नेता। ऋभुर्विभुः'—इति वि०।

¶ 'धीर धैर्यसम्पन्नः'—इति वि०।

§ 'चित् शब्दः च शब्दस्यार्थे द्रष्टव्यः'—इति वि०। "चिदित्येषोऽनेककर्मा—आचार्यश्चिदिदं ब्रूयादिति पूजायाम्। ० ० ०। दधिचिदित्युपमार्थे। कुल्माषांश्चिदाहरेत्यवकुत्सिते। ० ० ०।"—इति निरु० नै० १, ४।

उच्यते। "आसां" "गोनां" गवां सम्बन्धि * "यत्" "अपीच्यम्" [अन्तर्हितनामैतत् †] अन्तर्हितं "नाम" नामक मुदकं पयो-लक्षणम्। कीदृशम्? "गुह्यं" गोपनीयम्॥ २॥ १०॥ ‡

१ २ १ २ २
॥ श्रौशनम् ¶ ॥ प्राह्व। द्रवापरिकोशाम्। निषीऽ
२ १ २ १ २ १ १ २ ३ ४ ५ १
दा। नृभाइःपुना। नोऽ३अभि। वाजमर्षा। अश्वन
२ २ ० २ १२ २ १ २ १ २
त्वावाजिनम्मा। जयाऽ२न्ताः। अच्छावर्हाइः। रशना।
२ २ ४ १ २ १
भाऽ३४ऽ३इः। नाऽ३याऽ५न्ताऽ६ऽ५ऽ६इ॥(१) सवा। युधाःप
२ २ २ १ २ १ १ १ २ २ ३ ४
वतेदाइ। वई३न्दूः। अयास्तिष्ठा। वृजना। रक्षमा
५ १२ २ २ २ ० २ १ १२
णाः। पितादेवानाञ्जनिता। सुदाऽ२क्षाः। विष्टम्भो
१ २ १ २ २ ४
दाइ। वोऽ३धरु। णाऽ३४ऽ३ः। पाऽ३र्थाऽ५पृइव्याऽ६ऽ५इः॥(२)

---

* "आसां गोनां गवा मादित्यरश्मीनां वा"—इति वि०। "गोः पादान्ते (७, १, ५७)"—इति नुडि रूपम्।

† "*, *. ० *, *, अपीच्यमिति निर्णीतान्तर्हितनामानि"—इति निघ० ३, २५। "निर्णीतं कस्मान्निर्णिक्तं भवति"—इति यास्ककृतं तद्व्याख्यानम् ३, १९। "अपीच्य मपगत मपचित मपिहित मन्तर्हितं वा"—इति निरु० नै० ४, २५।

‡ इदं माध्यन्दिनपवमानं तृतीयम्। "उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः"—इति वि०।

¶ "त्रिष्टुबौशनम्"—इति ख० पु०।

१ २ १ र २ २ १ १र १
आर्षा:। विप्रा:पुरएता। जना३नाम्। ऋभूर्धीरा:।
२ १ र २ १ ४५ १ र ७
उशना। काविये ना। सचिद्विवेदनिहितम्। यदा२३
२ १ २ १ १ २
साम्। अपाइचियाम्। गुह्यियम्। ना३४३। मा३
४
गो५नाई५इम् (३)॥ ४ *॥ [१]

२ १ २ १ र २ ३ ४
॥ वैश्वज्योतिषाद्यम्॥ प्रतुद्रवा। परिकोे। शनिषी
५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ २ १
दा। नृभि:पुना। नो३अभि। वाजमर्षा। अश्वन्नत्वा।
२ १ २ ३ ४ ५ २ १र २१ र
वा३जिनम्। मर्ज यन्ता:। अच्छाबर्हीयि:। रशना।
२ २ ४ २ १र २
भा३४३यि:। ना३या५न्ता६५६यि॥(१) सुवायुधा:। प
१ र २ ३ ४ ५ २ १ २ १ र २ ३४ ५
वते। देवइन्दू:। अशस्तिहा। वृजना। रक्षमाणा:।
२ १र र २ १ २ २ ४ ५ २ १ र
पितादेवा। ना३ञ्जनि। तासुदक्षा:। विष्टम्भोदायि।
२ १ २ २ ४ २ १
वो३धरू। णा३४३:। पा३र्थापृथिव्याई५६:॥(२) ऋषि
२ १ २ २ ३ ४ ५ २ १र २ १ र
र्विप्रा:। पुरएे। ताजनानाम्। ऋभुर्धीरा:। उशना।

---

० ऊ० गा० १प्र० १ख० ४सा०।

२ १ ४ ५   २ १   २ १   २ ३ ४ ५
काविर्येना । सचिद्दिवे । दाश्निहि । तंयदासाम् ।
२ १ र   २ १   २   २ ४
अपीचियाम् । गुहियम् । ना३४३ । मा३गो५ना६५
६म् (६) ॥ ७ * ॥ [२] १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य तृतीयः† खण्डः ।

अथ चतुर्थखण्डे,

प्रथम-सूक्ते—प्रथमा ‡

२ १ २   ३ १ २   ३ १ २
अभित्वाशूरनोनुमोदुग्धाइवधेनवः ।
१ २ ३१र २र ३ २३१२   ३ १
ईशानमस्यजगतःस्वर्दृशमीशानमिन्द्रतस्थुषः ॥ १‡ ॥

हे "शूर" विक्रान्तेन्द्र ! "त्वा" त्वाम् "अभि नोनुमः" वयं भृश मभिष्टुमः । तत्र दृष्टान्तः—"अदुग्धा इव धेनवः" अज्ञातदोहा गावः आदरेण वत्सान् प्रति हम्भारवं कुर्वन्ति तद्वत् वयं स्तुमः

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० ७सा० ।

† अत्र लोपो न विद्यते । एषां खण्डपर्यायाणां यथाक्रमेव पाठो व्यवह्रियते ।

‡ छ आ० ३, १, ५, १ (१ भा० ४७८ पृ०) = ऋ० वे० ५,३,११,२ । छ० बृहती । ऋ० वसिष्ठः । दे० इन्द्रः । एवमेवाग्रेऽपि ज्ञेयम् । 'इदानीं ऋच्यानि इन्द्रस्य निष्केवल्यानि, बार्हतान्येव मायनकानि'—इति वि० ।

Digitized by Google

इत्यर्थः। कीदृशम्? "अस्य" "जगतः" जङ्गमस्य "ईशानम्" ईश्वरं "तस्थुषः" स्थावरस्य "ईशानं" "स्वर्दृशं" सर्वदृशं सर्वज्ञमित्यर्थः॥१॥

अथ द्वितीया।

१र १र २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ १र २र
नत्वावाँ३अन्योदिव्योनपार्थिवोनजातोनजनिष्यते।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वायन्तोमघवन्निन्द्रवाजिनोगव्यन्तस्त्वाहवामहे॥२*॥११†

हे "मघवन्निन्द्र!" "दिव्यः" दिवि भवः "त्वावान्" त्वत्सदृशः "अन्यः" न जायते। "पार्थिवः" पृथिव्यां भवोऽपि त्वावान् "न जातः" जायते दिव्यः पार्थिवो वा त्वावान् न जातः न च "जनिष्यते" नोत्पत्स्यते लोकद्वयेऽपि त्रिष्वपि कालेषु‡ त्वादृशः कश्चिन्नास्ति त्वमेव समर्थो भवसीत्यर्थः। "अश्वायन्तः" अश्वानिच्छन्तः "वाजिनः" वाजमन्नमिच्छन्तः [इच्छाया मिन् प्रत्ययः] हविष्मन्तो वा "गव्यन्तः" गा इच्छन्तश्च वयं हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "हवामहे" आह्वयामः॥२॥११

---

* ऋ० वे० ५, ३, ११, ३। † 'रथन्तरं पृष्ठम्'—इति वि०।

‡ 'भूतभविष्ये छन्दसि वर्त्तमानमपि लभ्यते'—इति वि०।

Digitized by Google

२र १र २र १र २ १ २ १ र
॥ कण्वरथन्तरम् ॥ आभित्वाशूरनोनुमाः। अदुग्धा
२ १ २ १ र र २
याथि। वा३धायिना३वाः। ईशानमस्यजगतःस्वदृ। शा
५र १र२र ५ २ १ २
२३४मैही। ईशाना२३४मी। द्रघ३आउवा२३। ए३।
२ १ २ र २ १ २ १ २ १ १र१र
स्थुषघा॥(१) आयिशानमिन्द्रस्तुस्थुषाः। ईशानमायि।
२ १ २ २ र र र र र १ ५र
द्राइस्स्थु३षाः। नत्वावाऽन्योदिवियोनपार्थिवा२३४ऐ
२१र ५ २ २ २१
ही। नजातोर२३४ना। जना३१उवा२३। ए३। घ्यत
२ र र १र २ १ २१र र २
व्वा॥(२) नाजातोनजनिष्यतायि। नजातोना। जा३
१ २ २ र र र २ ५र
नायिष्या३नायि। अश्वायन्तोमघवन्निन्द्रवाजिना२३४ऐ
२ १ ५ २ २ २
ही। गव्यन्ता२३४स्त्वा। हवा३१उवा२३। ए३। म
२ १
हषा(३)॥ १८* ॥ [१]

१र १र २र १र २ १
॥ ककुबुत्तरेकण्वरथन्तरम् ॥ आभित्वाशूरनोनुमाः।
२ १ र २ १ २ १ र र
अदुग्धायायि। वा३धायिना३वाः। ईशानमस्यजगतः

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० १९गा०।

२ ५र २र १र ५ २ १
सुवर्हंआ२३४मैहो। ईशाना२३४मी। इन्द्र३आउवा२३।
२ १२१ २र र २ १२२ २ १
ए३। स्थुषश्चा॥(१) आयिशानमिन्द्रतुस्थुषाः। ना३त्वा
२ २ र र र २ ५र २१र
वा३९आन्। योदिवियोनपार्थिवा२३४ऐहो। नजातो
५ २ २ १२१ र
२३४ना। जना३१उवा२३। ए३। ष्यतश्चा॥(२) ना
र १र २ १ २ १ २ २ १
जातोनजनिष्यतायि। आ३श्वायाइन्ताः। मघवन्निन्द्र
र २ ५र २१ ५ २
वाजिना२३४ऐही। गव्यन्ता२३४त्वा। हवा३१उवा२३।
२ १२१
ए३। मघश्चा (३)॥ १ *॥ [२]

१ र र र १ २
॥ वारवन्तीयम्॥ अभित्वाशाओहोहायि। रानो
२ ५ २ र र१ ५ १ १र
नू२३४माः। अदुग्धाइवधेनावो२३४हायि। ईशानमस्य
२ २र ४ र५ १ २ ५ २ २
जगतःसुवर्हं३४। औहोवा। दृशा२३४हायि। उङ्कुवा
५ २र १र१ १ ० २ २र ४र
२३४आम्। ईशानम्। आयिन्द्रतस्थू३४। औहो
५ १ २ २र २ १ २ ५
वा। दृशा२३४हायि। औहोवा। दृशा२३४हायि।

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १गा०।

१र २ ५र ५ १र र र र
औहो३१२३४। षाः। एहियाईहा॥(१) ईशानमाश्रौ
१ २ २ ५ २ १ ५
होहायि। द्रास्वस्थू२३४षाः। नत्वावा९२३४हायि।
१ र र र २ १र ४र ५ १ २ ५
अन्योदिवियोनपार्थां३४। औहोवा। हुहा२३४हायि।
२ २ ५ १ १र १ ७ २ १र ४र ५
उक्रवा२३४वाः। नजातः। नाजनिष्या३४। औहोवा।
१ २ ५ १र २ ५र
हुहा२३४हायि। औहो३१२३४। तायि। एहियाई
५ २ र र र र १ २ २ ५
हा॥(२) नजातोनाश्रौहोहायि। जानायिष्या२३४ता
२ १ ५ १र र २ १र
यि। अश्वाया२३४हा। तोमघवन्निन्द्रवाजा३४। औ
४र ५ १ २ ५ २ २ ५ २ १ २
होवा। हुहा२३४हायि। उक्रवा२३४। नाः। गव्यन्तः।
१ ७र २ १र ४र ५ १ २ ५ १र २
त्वाहवामा३४। औहोवा। हुहा२३४हायि। औहो३
५र ५
१२३४। हायि। एहियाईहा (३)॥ १२ *॥ [३] ११

द्वितीय-तृचे प्रथमा।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ १ २ ३ १ २
कयानश्चित्रआभुवदूतीसदावृधःसखा।
२ ३ १ २ ३ २
कयाशचिष्ठयावृता॥ १ †॥

---

* ऊ० गा० २२प्र० १ख० १२सा०।

† छ० आ०२,२,३,५ (१ भा० ३८४ पृ०) = ऋ० वे० ३, ६, २४, १। 'गायत्र'

Digitized by Google

"सदावृधः" सदा वर्द्धमानः "चित्रः" चायनीयः पूजनीयः "सखा" मित्रभूतः इन्द्रः "कया" "ऊती" ऊत्या तर्पणेन "नः" अस्मान् "आ भुवत्" आभिमुख्येन भवेत्? "शचिष्ठया" प्रज्ञावत्तमया प्रज्ञासहितानुष्ठीयमानेन। "कयावृता?"—केन वर्त्तनेन कर्मणा च अभिमुखो भवेत्॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १२ ३१२ ३ २ १ २ ३ १ २
कस्त्वासत्योमदानाम्मꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
दृढाचिदारुजेवसु॥ २ †॥

"मंहिष्ठः" पूजनीयः "सत्यः" सत्यभूतः "मदानां" मादयितृणां मध्ये "कः" ‡ मदकरः? "अन्धसः" सोमलक्षणस्यान्नस्य रसः¶। "दृढाचित्" दृढ मपि "वसु" शत्रु-सम्बन्धि गवादिकं

साम। सर्वदैवत्यं वामदेव्यं वा; यत्कवतीषु तेन प्राजापत्यं, कोहि प्रजापतिः। यदनिरुक्तासु तेन प्राजापत्यं, अनिरुक्तोहि प्रजापतिः; यद् गायत्रीषु तेनाग्नेयं गायत्रीच्छन्दोह्यग्निः; यत्पृष्ठेषु त्र्यृचेषु तेनैन्द्रम्;—एवं सर्वदैवत्यं वामदेव्यम्'—इति वि० एवमेवात्रोत्तरत्र।

† ऋ० वे० ३, ६, २४, २।

‡ 'कः प्रजापतिः —इति वि०।

¶ 'अन्नस्य चरु-पुरोडाशादि-लक्षणस्य'—इति वि०।

Digitized by Google

धनं "आरुजे" आ समन्तात् भङ्क्तु * हे इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "मत्सत्" मादयेत् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १

अभीषुणःसखीनामविताजरितॄणाम्।

३ १ २ ३ १ २

शतम्भवास्यूतये ॥ ३ † ॥ १२ ‡

हे इन्द्र! "सखीनां" समानख्यातीनां "जरितॄणाम्" "अविता" रक्षिता त्वं "नः" अस्माकं "शतं" शत-सङ्ख्याकम् ऊतये रक्षायै ¶ "सु" सुष्ठु "अभि भवासि" अभिमुखो भव §। "शतम्भवास्यूतये"—"शतम्भवास्यूतिभिः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥१२

३ र ४ २ ४र

॥ महावामदेव्यम् ॥ काऽ५या। नआ३इत्रा३आभु

५ १ र २ १र २ १ १ र २

वात्। ऊ। तीसदावृधःस। खा। औ३होहाइ।

१ २ ३ र २ १

कया२३अचाइ। ष्ठयौहो३। ऊम्मा२। वा२र्त्तो३ऽ५

---

* 'हर्त्ता हर्त्तारि। चिदिति पूरणः। हर्त्तारि यानि वसूनि तान्येव हर्जे, वज्रो भर्ज्ञे। भक्त्वा, तानि मम प्रयच्छ'—इति वि०।

+ ऋ० वे० ३, ६, २४, २। ‡ 'मेधावरुणं पृष्ठम्'—इति वि०।

¶ 'ऊतये चतुर्थ्येकवचनमिदं तृतीया-बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् ऊतिभिः सम बहुभिः पालनैरित्यर्थः'—इति वि०।

§ 'शतम्भवासि शतशब्दो बहुवाची। एतस्मादेव पदात् यत् बहुदैवत्य मुत्तमं पदं तेन वैश्वदेव मित्युक्तम्। शतम्भवासि छान्दसं दीर्घत्वम्—शतं भवसि'—इति वि०।

२ ३ र ४ २ ४५ १
हाइ ॥(१) का ऽ५त्त्वा। सत्योश्माइदानाम्। मा।
२र १ २ २ र २ १ २
हिष्ठोमात्सादन्ध। सा। औ३होहाइ। द्दढार३चिदा।
३ र २ १ १ २ २
रुजौहो३। ऊम्मा २। वा ऽ ३सो३ ऽ ५हायि ॥(२) घा ऽ ५
र ४ २ ४५ १ २र १ २र
भी। षुणाइःसा३खीनाम्। भा। विताजरायित्
१ र २ १ २ २ र २
णाम्। औरहोहायि। ग्रतार३म्भवा। सियौहो३।
१ १ २
ऊम्मा २। ता ऽ २यो३ ऽ ५हायि ॥ ५ * ॥ [१]

२ र र २ ४र
॥ स्वारसौपर्णम्॥ कयानश्चित्रआ। भू३वात्। ऊ
३र ४र५ र १ २ ५ १ २ २
तीसदावृधाः। ऊम्। सा२३४खा। काया३उवा।
१ ११ ५ ४ ५ २ र
ग्रचि। ष्ठयो२३४वा। वा५र्तोई हायि ॥(१) कस्त्वास
र २ ३ ४र२ ४५र १ २
त्योमदा३नाम्। मꣳहिष्ठोमत्सदा। ऊम्। धा२३४
५ १ २ २ १र ११ ४ ४
साः। दार्ढा३उवा। चिदा। रुजो२३४वा। वा५सो
५ २ र २ ३ ४ ५र र
ईहायि ॥(२) अभिषुणःसखी३नाम्। अविताजरा।

* ऊ० गा० १प्र० १अ० ५सा०।

Digitized by Google

१ २ ५ १ १ १ १र २ १
ड्डम्। ह्,२३४भाम्। मानाइउवा। भवा। सियोर

५ ४ ५
३४वा। ताप्योह्हायि॥ ८*॥ [२] १२

अथ प्रमाथरूपे तृतीय सूक्ते—

प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र ३१र
तंवोदस्ममृतीषहंवसोर्मन्दानमन्धसः।

३ १ २ ३१र ३१र ३ २ ३ १ ३ २ १ २
अभिवत्सन्नस्वसरेषुधेनवइन्द्रङ्गीर्भिर्नवामहे॥ १ †॥

नोधा नाम ऋषिरिन्द्रं स्तौति। हे ऋत्विग्यजमानाः! "दस्म" दर्शनीयं "ऋतीषहम्" ऋतयो बाधकाः शत्रवः तेषा मभिभवितारं; पुनः कीदृशम्? "वसोः" वासयितुर्दुःखस्य विवासयितुर्निवारयितुः; यद्वा वसोः पार्श्वे निवसतः स्थितस्य तादृशस्यान्धसः सोम-लक्षणस्यान्नस्य पानेन "मन्दानं" मन्दमानं मोदमानं "वः" षष्ठ्यर्थत्वेन युष्मत्सम्बन्धिनं तं तादृश मिन्द्रं "गीर्भिः" स्तुतिलक्षणाभिर्वाग्भिः "नवामहे" [नु स्तवने, शब्दे वा] अभिष्टुमः। कुत्रेति "स्वसरेषु"। [अत्र यास्कः—"स्वसराण्यहानि स्वयं सारीण्यपिवा स्वरादित्यो भवति स एतानि सारयतीति] (निरु० नै० ५, ४) सूर्य-मेरकेषु दिवसेषु वयम् "अभिष्टुमः" अभितः

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ८गा०।

† ऋ० आ० २, १, ५, ४ (१भा० ४७५ पृ०) आ० वे० ६, ६, २, १। नोधाः काक्षीवत आर्षम्। इन्द्रो देवता।

Digitized by Google

शब्दयामः। तत्र दृष्टान्तः—"वत्सं न" यथा धेनवो नव-प्रसूतिका गावः स्वसरेषु सुष्टु अस्यन्ते प्रेर्यन्ते गावोऽत्रेति स्वसराणि गोष्ठानि तेषु वत्स मभिलक्ष्य शब्दयन्ति तद्वत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र३१ २
द्युक्षꣳसुदानुन्तविषीभिरावृतङ्गिरिन्नपुरुभोजसम्।
३ २ ३ १ २ ३ १ १ ३ १ २ ३१र २र
क्षुमन्तंवाजꣳशतिनꣳसहस्रिणंमक्षूगोमन्तमीमहे॥२*॥१३†

"द्युक्षं" दीप्तिमन्तं निवासस्थानम् अतिशयितदीप्ति मित्यर्थः। यद्वा, द्युक्षं दिवि द्युलोके क्षियन्तं निवसन्तं "सुदानु" शोभन-दानं "तविषीभिः" बलै"आवृतम्"आच्छादितम्‡। पुनः कीदृशम्? "पुरुमजसं" सोमादि-हविः-प्रदानेन बहुभिर्यजमानै र्भोजयितव्यम्। यद्वा, बहूनां पालयितारम् इन्द्रम्¶ "क्षुमन्तम्" [टु क्षु शब्दे] शब्दवन्तम् अनेन पुत्रादिकं लक्ष्यते; स्तोत्रादीनि कुर्वाणं "शतिनं सहस्रिणं" शत-सहस्र-सङ्ख्याक-धन-युक्तं "गोमन्तम्" गवादि-युक्तं "वाजम्" अन्नं "मक्षु" शीघ्रं "ईमहे" याचामहे। यद्वा, पूर्वार्द्धो वाज-विशेषणत्वेन योजनीयः—प्रदीप्तं शोभन-दान-योग्यं बलादियुक्तं बहुभिः पुत्रमित्रादिभि-र्भोक्तव्य-शब्दादि-युक्तम् अन्नम् इन्द्रं याचामहे इति ॥ २ ॥ १३

* ऋ० वे० ६, ६, २, २। † अत्र गौषसं साम।

‡ 'तविषीभिरावृतम्। तव बल इति बलनाम, बलवद्भिः पर्यायैरावृतम्। अथवा तविषीभिः स्तोतुमिच्छद्भिः मनुष्यजातिभिरावृतम्'—इति वि०।

¶ 'गिरिं न पुरुभोजसम्। न शब्द उपरिष्टादुपचारत्वादुपमार्थीयः, गिरिमिव बहुभोज्यम्। गिरौ पर्वते बहुभोजनं तृणकाष्ठान्युपजीवन्ति। अथवा गिरिर्मेघः तं सर्वं जगदुपजीवति'—इति वि०।

Digitized by Google

१ २ ५४ ५ २ ४ ५
॥ नौधसम् ॥ ता२३४म्। वोँदस्मम्तौ। षाहाम्।
२ १२ १ २ २ १ २ १ २
वसोर्म्मन्दा। नाऽ३माऽन्धाऽ३साः। आ२३भी। वात्सन्न।
१ २ १ २ ३ ५ १ १ १
स्वस। रायि। षूधेना२३४वाः। आ२३यिन्द्राम्। मा
२ १ ५ १ ५ १
यिर्भिर्न्नवो२३४वा। मा२३४द्दे ॥(१) आ२३४यि। द्रु
५२ ४ ५ २ ४ ५ २ १ २ १ १ २
क्षौर्भिर्न्नवा। माह्यायि। इन्द्रगोर्भायिः। ना३वामा३
२ १ २ १ २ २ १ २ १
हायि। द्यू२३क्षाम्। सुदानुम्। तवि। षायि।
२ ३ ५ १ २ १ २ १ ५
भायिरावा२३४र्त्ताम्। गा२३यिरीम्। नपुरुभो२३४वा।
२ ५ १ ५ ४२ ५
जा२३४साम् ॥(२) गा२३४यि। रिन्नपुरुभो। जासास्।
२ १ १ १२ २ १ २ १ २ २
गिरिन्नपू। रु३भोजा३साम्। चू२३मा। तंवाजम्।
१ २ १ १ २ ५ १ २ १
शति। नाम्। साहस्रा२३४इणाम्। मा२३च्चू। गो
२ १ ५ २ ५
मन्तमो२३४वा। मा२३४द्दे ॥ ६ *॥ [१]

५ ४ २ ४ ५२ ४ ५ १२
॥ अभीवर्त्तम् ॥ तंवो३दा३स्माऽम्तीषहोवा। वा

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ६गा०।

Digitized by Google

सोम्मिन्दा । नमाधा१सा २ः । पाभिवत्सा३१२३४म् ।
नस्वसरे । घुधायिना१वा २ः । इन्द्रा३ग्ना३यिर्भा २ः । न
वा३ । मा२३४५ । द्दा२३४५यि ॥ (१) इन्द्रा३ग्ना३यिर्भि
र्वामच्छोवा । प्रायिन्द्रगौर्भिः । नवामा१हा २यि । घू
ष२३सुदा३१२३ । नुन्तविषी । भिरावा१न्ता २म् । गि
रायिन्ना१पूर । रुभो३ । जा२३४५ । सा२३४५म् ॥(२)
गिरा३यिन्ना३पुरुभोजसोवा । गायिरिजपु । रुभोजा१
सा २म् । चूमन्तवा३१२३४ । ज०मतिनम् । सद्दा
द्दा१यिषा २म् । मचूगो१मार । तमा३यि । मा२३
४५ । द्दा२३४५यि ॥ १४ * ॥ [२]

॥ जनित्राद्यम् ॥ तंवोदा३स्मा५म्हतीषहाम् । ऊवे
च्छो २यि । वसोर्म्मान्दानमान्धा१सा २ः । पभिवत्समस्व

* ऊ० गा० ९प्र० २ख० १४सा० ।

२ १ २ ५ १ २ १ र
सरा२यि। पुर्धायिमार२३४वाः। इन्द्रा३९२होयि। गी
२ १ २ १र २ ५र र ५ ०
भोईयिर्वो। नवा। मा२हा२३४ओहोवा॥(१) इन्द्रभ्रा
४ ५ ४र ५ २ १ १ र २
३यिर्भिर्भवामघायि। इवेहो२यि। इन्द्रगोभिर्भवामा
१ र ३ २ २
१घा२यि। द्युम्नंदानुत्तविषा२यि। भिरावा२३४
५ १ २ १ २ १ २ १र
र्णाम्। गिरा३यिर्होयि। नपूहो। हभो। जा२
२ ५र र ५ २ ४ ५ ४र ५ २ १
सा२३४ओहोवा॥(२) गिरिन्ना३पुरुभोजसाम्। इवे
१ २ १ र
हो२यि। गिरिन्नपुरुभो१जासा२म्। द्युमन्तंवाज
३ २ २ ५ १ २ १ र
पतिना२म्। सहस्रा२३४यिणाम्। मख३होयि। गो
२ १ २ १र २ ५र र २ १ ११
मा३हो। तमी। मा२हा२३४ओहोवा। जनिना२३
११
४५म्॥ ५ *॥ [३]

१ र २ १ २र १ र
॥ ग्रामग्रहीयाद्यम्॥ तंवोदस्ममृतीषहाम्। वसो
र २ १ २ १ र २ १र २
र्मन्दानमन्धा२३साः। अभिवत्सन्नस्वसरेषुधेना२३वाः।

* छ० गा० १२प्र० १ख० ५सा०।

१ २ १ ३र २ ५र र २
इन्द्रङ्गार३यिर्भा३यिः । ना२ । वामा३४औहोवा । हा

१ १ १ १ १ २र १ २र १ र २ १र
२३४५यि ॥(१) इन्द्रगीर्भिर्नवामहायि । इन्द्रगीर्भिर्नवा

२ १ र र २ १र २
मार३हायि । द्युक्षꣳसुदानुन्तविषीभिरावार३न्तीम् । गि

१ २ १ ३र २ ५र र २ १ १ १ १ १
रिन्नार३पू३ । रु२ । भोजा२४औहोवा । सा२३४५म् ॥(२)

२ १ २ १र २ १ ५ १र २ १
गिरिन्नपुरुभोजसाम् । गिरिन्नपुरुभोजा२३साम् । क्षु

र २ १ २ १र २
मन्तवाजꣳशतिनꣳसहस्रा२३यिणाम् । मक्षूगो२३मा३ ।

१ ३र २ ५र र २ १ १ १ १
ता२म् । ई२मा३४औहोवा । हा२३४५यि ॥ ८ * ॥

३ ४र २ ४ ५र २ २ ४ र
॥ जनित्रोत्तरम् ॥ तवोदस्ममृती । षहा३म् । वसो

र १ र ७ २
र्मा । होयि । होयि । दानामन्धामा२३४ः । अभि

४ २ ४ ५र २ २ ४ ५ १ २र ६
वत्सन्नस्वसरे । षुधा३यिनावाः । आयिन्द्रङ्गीर्भिर्नवौ३ ।

२ ३ ५र र २ ४ र २ ४ ५र
हो३१यि । मा२हा२३४औहोवा ॥(१) इन्द्रङ्गीर्भिर्नवा ।

२ २ ४ ५ १ २
महा३यि । इन्द्रङ्गायि । होयि । होयि । भिर्नावा

---

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ८सा० ।

Digitized by Google

२ ४ १र ४ २ ४ ५र २ २ ४ ५
१माद्धार२३४यि । द्युक्ष९सुदानुन्तविषी । भिरा३वार्त्ताम् ।
१ २ ऽ २ २ ५र र
गायिरिन्नपुरुभौ३ । द्धो३१यि । जा२सा२३४औद्धोवा ॥(२)
४ २ ४५र २२ ४ ५ १
गिरिन्नपुरुभो । जसा३म् । गिरिन्ना । चोयि । ह्वोयि ।
२ ४ २ ४ १र ४ २ ४ ५ २ २
पुरुभो१जासा२३४म् । सुमन्तंवाज९पतिनम् । सद्धा३
४ ५ १ र २र ऽ २ २
द्धायिणाम् । मान्गोमन्तमौ३ । द्धो३१यि । मा२द्धा
५र र २ १११११
२३४औद्धोवा । जनौ३त्त्वा२३४५म् (३) ॥ १० * ॥ [५]
५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १ र
॥ सौभरम् ॥ तंवो३दा३स्मा ऽ म्हतीषद्धोवा । वसोर्म
र र १ ७ १ २
न्दानमन्धसोभिवत्सन्नस्वसा२रायिषुधा२३ । द्धोयि । ना
५ १ र ऽ २ १ २
२३४वाः । इन्द्रङ्गीर्भिः । नवा३द्धा३यि । मा२हा२३४
५र र ५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १ र
औहोवा ॥(१) इन्द्रा३ङ्गा३यिभिर्न्नवामद्धोवा । इन्द्रङ्गी
र र र १ ७ १
र्भिर्न्नवामहेद्युक्ष९सुदानुन्तवा२यिषायिभिरा२३ । द्धो ।
२ ५ १ ऽ २ १ २
वा२३४र्त्ताम् । गिरिन्नपु । रुभो३द्धा३यि । जा२सा२

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० १०सा० ।

Digitized by Google

५र र १ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
३४औहोवा ॥(२) गिरा३विन्ना३पुरुभोजसोवा। गिरि

र र १ ० १
न्नपुरुभोजसंद्युमन्तंवाजꣳशता २यिनाꣳसहा२३। हो।

२ ५ १ र र ३ १ १ २
हा२३४यिणाम्। मक्षूगोम। न्तमा३हा३यि। मा२हा

५र र २ १ १ १ १
२३४औहोवा। ज२३४५ (३) ॥ ४ * ॥ [६]

५ र २ ४ ५र ४ ५
॥ आष्कारणिधनं काण्वम्॥ तंवोदा३स्मृऽतीषहा

१ र २ र १ २ १ २ १
म्। वासोमीन्दा। नमा२३न्धसाउ। वा३२। अभिवत्साम्।

२ ३ १ १ २ १र ५ १ २ १र
नस्वसरायि। धुधेना२३४वाः। आर३यिन्द्राम्। गीर्भि

२ १र ५ २ ४
र्न। वामा२३४५हाई५ईयि ॥(१) इन्द्रङ्गा३यिर्भिर्न

५र ४ ५ १ १र १ २
वामहायि। आयिन्द्रङ्गीर्भिः। नवा२३महाउ। वा३२।

१ २ १ २ १ २ १ २१र ५
द्युक्षꣳसुदा। नुन्तविषायि। भिरावा२३४र्त्ताम्।

१ २ १ २ १र
गा२३यिरीम्। नपुरु। भोजा२३४५साई५६म् ॥(२)

१ २ ४ ५र ४ ५ १ २ १ २
गिरिन्ना३पुरुऽभोजसाम्। गायिरिन्नपु। रुभो२३जसा

* ज० गा० २१प्र० १ख० ४सा०।

उ। वा३२। सुमन्तंवा। ज८प्रतिनाम्। सहस्रा
२३४यिणाम्। मा२३खू। गोमन्तम्। ईमा२३४५षा
६५६यि। आ२३४५ष् (३) ॥ ८ * ॥ [७]

॥ ककुबुत्तरनौधसम् ॥ ना२३४म्। वोदस्मन्ती।
षाहाम्। वसोर्म्मन्दा। ना३मान्धा३साः। आ२३
भी। वात्सन्न। स्वस। रायि। धूधेना२३४वाः। षा
२३यिन्द्राम्। गायिर्भिर्न्नवो२३४वा। मा२३४हे ॥(१)
आ२३४यि। न्द्रक्षीर्भिर्नवा। माहायि। द्युक्षा८ख
३दा। नू२३न्ता। वि। षायि। भायिरावा२३४र्त्ताम्।
गा२३यिरीम्। नपुरुभो२३४वा। जा२३४साम् ॥(२)
गा२३४यि। रिन्नपुरुभो। जासाम्। नू३मान्ता३वा।

---

* क० मा० २१प्र० १ख० ८सा०।

Digitized by Google

जा२३ऽ५आ। ति। नाम्। सार्व्व२३४यिणाम्। मा
२३त्सू। गोमन्तमो२३४वा। मा२३४हे(३)॥ १७* ॥ [८]

॥ वाज्रिधनं कौञ्चम्॥ तंवोदास्मा३१२३४म्। ऋती।
षहा३म्। वसोर्म्मन्दा३१२३४। नम्। धसाइः। अ
भीवात्सा३१२३४म्। नस्वसरेषुधे। नवाइः। इन्द्राग्ना
यिभी३१२३यिः। नवापुमहाउ॥(१) इन्द्राग्नायिभी३१
२३४यिः। नवा। महाइयि। इन्द्र ग्नीभी३१२३४यिः।
नवा। महाइयि। द्युन्नाऽ५सूदा३१२३४। सुन्तविषी
भिरा। वृता३म्। गिरायिन्नापू३१२३। त्भोपुजसा
उ॥(२) गिरायिन्नापू३१२३४। त्भो। जसा३म्।
गिरिन्नपू३१२३४। त्भो। जसा३म्। नुमान्तंवा

क० गा० २१प्र० १ख० १७गा०।

२ ४५ १२ २१ २
३१२३४। ज॒अतिनॐसह। स्विणाश्म्। मचूगोमा
४
३१२३। तमापुयिमद्दाउ ३॥ १४ *॥ [९] १३

चतुर्थे प्रगाथे—प्रथमा ॥

१२ ३१२३ १२ ३१ २३१२
तरोभिर्वोविदद्वसुमिन्द्रॐसबाधऊतये।
३१र २र ३१२ ३१२३उ३ २३ १२
बृहद्गायन्तःसुतसोमे अध्वरे हुवे भरन्नकारिणाम् ॥ १ † ॥

हे ऋत्विजः! "वः" यूयं "तरोभिः" वेगैरश्वैरुपेतं वेगैरेव वा "विदद्वसुं" वेदयद्वसुं धनावेदकम् "इन्द्रं" "सबाधः" बाधासहिताः "ऊतये" रक्षणाय "बृहद्गायन्तः" बृहन्नामकं साम गायन्तः सन्तः परिचरतेति शेषः। कुत्र? इति, तदुच्यते—"सुतसोमे" अभिषुत-सोमके "अध्वरे" यज्ञे सोम-यागे; अहञ्च स्तोता युष्मदर्थं "हुवे" आह्वयामि। कमिव? "भरं न" भरं भर्त्तारं कुटुम्बपोषकं "कारिणं" स्वहित-करण-शीलं यथा स्वहित-करणायाह्वयन्ति पुत्रादयस्तद्वत्, तथा भूतमिन्द्रं हुवइति॥ १॥

अथ द्वितीया।

२उ ३१र २र ३१ ३२उ ३ १२ ३१र २र
नयन्दुध्रावरन्तेनस्थिरामुरोमदेषुशिप्रमन्धसः।
१ ३ १२ ३ १ २ ३१र २र ३२ ३र २र
यआहत्याशशमानायसुन्वतेदाताजरित्रउक्थ्यम् ॥२‡॥१४¶

* ऊ० आ० ३२प्र० १ख० १४सा०।

† छ० आ० ३, १, ५, ५ (१भा० ४९९ पृ०)=ऋ० वे० ६, ४, ४७, १।

‡ ऋ० वे० ६, ४, ४७, २। ¶ "अत्र कालेयं साम"—इति वि०।

Digitized by Google

"सुशिप्रं" शोभन-हनुकं शोभन-नासिकं वा ["शिप्रे हनूनासिके वा (६,१७)—इति यास्कः] "यम्" इन्द्रं "दुध्राः" दुर्धराः असुरादयः "न वरन्ते" सङ्ग्रामे न वारयन्ति, तथा "स्थिराः" देवाः "न" वरन्ते, किञ्च "मुरः" मरणशीला मनुष्याः न वरन्ते, "यः" च इन्द्रः "अन्धसः" सोमलक्षणस्यान्नस्य "मदे" मदाय सोमपान-जनिताय* "आदृत्य"†, "शशमानाय" शंसमानाय‡ "सुन्वते" अभिषवं कुर्वते "जरित्रे" स्तोत्रे च¶ "दाता" भवति। किम्? "उक्थ्य" स्तुत्यं धनम् §, तं हुवे इति पूर्वेण सम्बन्धः॥

"मदेषुशिप्रं"-"मदेसुशिप्रम्"—इति षकार-सकारौ पाठौ॥ २ ॥ १४

---

* मूले "मदेषुशिप्रम्"—इति संहितापाठः, तत्र सायणेन 'मदे' इत्येकं पदं छित्वा सुशिप्रमिति द्वितीयं स्वीकृतं मत एव 'मदे' मदाय, 'सुशिप्रं' शोभनहनुक मित्यादि व्याख्यातम्। विवरणकारस्तु "मदेषु" इति छित्वा शिप्रमिति द्वितीयं चिच्छेद, तथाहि—'मदेषु मदनीयेषु सोमेषु सन्निधानभूतेषु, सन्निधान-सम्बन्धे वा, अथवा मदेषु पुरतोऽवस्थितेषु'—इति वि०। पदकारकृत-पदपाठोऽपि विवरण-कार-मत-पोषकः।

† संहितापाठस्तु "आदृत्या"—इति, तत्र "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः। आदृत्य आदरं कृत्वेत्यर्थः।

‡, ¶ वैदिकी स्तुतिस्तु द्विधा भवति, शस्त्रैर्मन्त्रैः स्तोत्रैर्मन्त्रैश्च, तथा च अप्रगीतमन्त्रात्मक-शस्त्रैः स्तुतिं कुर्वाणः शंसमान उच्यते, तस्मै; किञ्च प्रगीतमन्त्रात्मक-स्तोत्रैः स्तुतिकारी स्तोता, तस्मै चेति विवेकः।

§ 'उक्थ्यो नाम क्रतुः, तमुक्थ्यम्; अथवा उक्थ्यानि सामानि तैर्यः सम्भजते स उक्थ्यः, तमुक्थ्य-सामवन्तं क्रतुमित्यर्थः'—इति वि०।

Digitized by Google

५ र १ ४र ५ ४ ५ १ १
॥ महाकालेयम् ॥ तरोभा३इर्वोविदद्वसुम् । इन्द्रा१

२ १ २ १र २ १ २ १ र २ १ २
सबा । धजतया२३इ । बृहद्भाया३ । ता२३४ः । सुत

४र ५र २ २ १ ३ २ २ ५ ४
सोमेच । ह्वा३राइ । ऊवाइभरौ । वा३४३ओ३४वा । न

५ र २ ४ ५ ४र ५ १ १ २
का५५रिणाम् ॥ (१) ऊवेभा३रन्नकारिणाम् । ऊवाइभ

१ २ ३र २ १ १२ २ १ र
राम् । नकारिणा२३म् । नयन्दुभा३ः । वा२३४ । रन्ते

३ ४ ५र २ २ १ ३ २ २ ५
नस्विराः । मू३राः । मदाइषुमौ । वा३४३ओ३४वा ।

४ ५ र २ ४ ५ ४ ५ १ १ २ १
प्रमा५५न्धसाः ॥ (२) मदेषू३माइप्रमन्धसाः । मदाइषुमा

२ ३ २ १ १ २र २ १ र १र
इ । प्रमन्धसा२३ः । यच्चाहत्या३ । मा२३४ । ममाना

४ २ २ १र ३ २ २ ५ ४
यत्तु । न्वा३ताइ । दाताजरौ । वा३४३ओ३४वा । च

४
ज५५क्रियाम् । चो५५इ । डा(३) ॥ ७ * ॥ [१]

२र र र १ २
॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ तरोभिर्वाओदोहायि । वा

---

* ऊ० १गा० १प्र० १ख० ७डा०

Digitized by Google

३ ५ १ र र १ ५ १
यिदद्दा२३४द्दम्। इन्द्र९ सबाधजतायो२३४हायि। वृ

र र र १ ३र ४र १ २ ५
हद्गायन्तःसुतसोमेअध्वा३४। औहोवा। इहा२३४हा

२ ३ ५ २ १र १ १ ७ र २ ३र
यि। उऊवा२३४रायि। ऊवेभ। रान्नकारा३४। औ

४र ५ १ २ ५ ३र र ५र
होवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। णाम्। एहि

५ २र र र १ २ ३ ५
याइहा॥(१) ऊवेभराऔहोहायि। नाकारा२३४यिणाम्।

२र २ १ १ र र र १
ऊवेभरन्नकारायिणो२३४हायि। नयन्दुध्नावरन्तेनस्थिराम्

३र ४र ५ १ २ ५ २ ३ ५
३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उऊवा२३४राः।

२ १र १ १ ७ २ ३र ४र ५ १ २ ५
मदेषु। ग्रायिप्रमन्धा३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

७र २ ५र ५ २र र र १
औहो३१२३४। साः। एहियाइहा॥(२) मदेषुग्राऔहो

२ ३ ५ २र १ ५
हायि। प्रामन्धा२३४साः। मदेषुग्निप्रमन्धासो२३४हायि।

१र र र र २ ३र ४र ५ १ ३र ५ २
यन्नाहत्याभ्रममानायसुन्वा३४औहोवा। इहा३हायि। उ

३ ५ २र १र २ १ ७ २ ३र ४र
ऊवा२३४तायि। दाताज। रायिन्नउक्था३४। औहो

५ १ २ ५ ३र २ ५र
वा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। याम्। एहि

५ ४
याइहा। होपुइ। डा(३)॥ १५ *॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य
चतुर्थखण्डः † ॥ ४ ॥

पञ्चमखण्डे ‡,

प्रथम तृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया।
१ २ ३ १ २ ३ १
इन्द्रायपातवेसुतः॥ १ ¶॥

हे "सोम!" "इन्द्राय" "पातवे" पातु "सुतः" अभिषुतः त्वं "स्वादिष्ठया" स्वादुतमया "मदिष्ठया" अतिशयेन मादयित्र्या "धारया" "पवस्व" क्षर॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० १५सा०।

† 'इदानीं माध्यंदिनः पवमानः। तत्र बहूनि छन्दांसि—गायत्रीककुबुष्णिगनुष्टुब्जगतीति छन्दांसि। पुष्कलोऽग्निः संचितः ऋषयः श्यावाश्वः अग्नीषोमावित्यादीनि। सोमः सोमदेवता। सामदेवता नोच्यते विस्तरभयात्'—इति वि०।

‡ 'उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि०।

¶ छ० आ० ५, १, ४, २ (२भा० ७ पृ०)=ऋ० वे० ७, ७, १६, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ १ २ १ २ ३ १२ ३ १ २
रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते।
१ २ ३ २ ३ १ २
द्रोणेसधस्थमासदत्॥ २ *॥

"रक्षोहाः" रक्षसां हन्ता "विश्वचर्षणिः" विश्वस्य द्रष्टा सोमः "अयोहते" अयसा हिरण्येन हते [तथा च श्रूयते—"हिरण्यपाणिरभिषुणोति"—इति] "द्रोणे" द्रोणकलशेन अधिषवण-फलकाभ्यां वा† "सधस्थं" सहस्थानं "योनिम्" अभिषवस्थानम् "अभ्यासदत्" आभिमुख्येनासीदति॥

"अयोहते"—"अयोहत", "द्रोणे"—"द्रुणा"—इति च पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ १ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वरिवोधातमोभुवोमंहिष्ठोवृत्रहन्तमः।
२ ३ १ २ ३ १ २
पर्षिराधोमघोनाम्॥ ३ ‡॥ १५

---

* ऋ० वे० ७, ७, १९, २।

† सोमाभिषवे प्रथमं तावत् चतुष्कोणमुष्ट×रत्याकारं फलकद्वयं स्थाप्यते, तदुपरि कृष्णचर्मं विस्तीर्य तत्र सोमोऽभिषूयते। ये अधिकृत्य सूयते सोम ऋत्विग्भिः, ते अधिषवणे, अधिषवणे च ते फलके, ताभ्याम्; अभिषवणनामक-फलकाभ्या मित्यर्थः। सप्तमी तत्र चेयं तृतीया।

‡ ऋ० वे० ७, ७, १९, ३।

Digitized by Google

हे सोम ! त्वं "वरिवोधातमः" अतिशयेन धनानां दाता* "भुवः" भव † ['वेदः', 'वरिवः'—इति धननामसु (निघ०२, १०,४-५) पाठात्] "मंहिष्ठः" दातृतमश्च ‡ भव [सर्वदातृत्व मनोच्यते इत्यपुनरुक्तिः] "वृत्रहन्तमः" अतिशयेन शत्रूणां हन्ता च भव। किञ्च "मघोनां" धनवतां शत्रूणां ¶ "राधः" धनञ्च "पर्षि" अस्मभ्यम् प्रयच्छ § ॥

"भुवः"-"भव'—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १५

१र २र १ २
॥ सꣳहितम् ॥ स्वादिष्ठयाम। दा२इष्ठया। पवा
१ २ १ १ २
२। स्वा२इसो। मधा२राया। आ२३इन्द्रा। या२
१ ७ २ ५ १र १र
पा। तवा२३। हाउवा३। सु२३४ता: ॥(१) रक्षोहा
१ २ १ २
विश्व। चा२र्षणाई:। अभा२इ। यो२३नीम्।
१ ६ २ १ ०
अयो२हाताइ। द्रो२३णे। सा२धा। स्थमा२३।

* 'वरिवः वरिष्ठं धनम्। धातमः धेट् पाने, पाननतमः। एकः पानभूतः, द्वि पानतरः, अन्यः पानतमः। अथवा धाता दाता, स्थापिता वा'—इति वि०।

† 'भुवः भूर्लोकस्य'—इति वि०।

‡ 'मंहिष्ठः मंहनीयतमः'—इति वि०।

¶ 'मघोनां धनवतां यजमानानाम्'—इति वि०।

§ 'पर्षि परिषिञ्चते'—इति वि०।

Digitized by Google

हाउवा३। सा२३४दात्॥(२) वरिवोधात। मो२भुवाः। मᳫंहा२इ। ष्ठोर३वा। चहा२न्तामाः। पा२३र्षो। रा२धो। मा२३। हाउवा३। घो२३४५नाम्(३)॥८*॥[१]

॥ तुम्रकवैष्टम्भम्॥ स्वादाऽ५यिष्ठ। या३मदिष्ठया। पावस्वसो। मधारा१या२३। होवा३हायि। इन्द्राया१पा२३। होवा३हा। तवे। सू२ता२३४औहोवा॥(१) रक्षोऽ५हा। वा३यिश्वचर्षणायिः। आभियोनिम्। अयोहा१ता२३यि। होवा३हायि। द्रोणे सा१धा२३। होवा३हा। स्थमा। सा२दा२३४औहोवा॥(२) वराऽ५यिवः। धा३तमोभुवाः। माᳫंहिष्ठोवृ। चहान्ता१मा२३ः। होवा३हायि। पर्षायिरा१धा२३ः। होवा३

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ८सा०।

२ १ २ ५र र २ ५
ह्वायि। मघोर। नार२३४औहोवा। दी२३४आः (३)

॥ २० * ॥ [२]

१र १ २ १ २१ २
॥ जराबोधीयम्॥ स्वादिष्ठयोवा। मादिष्ठया। प

१ २ र१ २ ४ ५र
वास्वार२३सो। मधाराया। इन्द्राया१पार२३ताऽ। वे।

२ २ १र र १ २ १ २१
सुतो३४५ई। डा॥(१) रक्षोहावोवा। स्वाचर्षणायिः।

२१ २ र१ र २ ४
अभायियोर३नीम्। अयोहातायि। द्रोणेमा१धार३स्था

५र २१ २ र१ २
म्। आ। सदो३४५ई। डा॥(२) वरिवोधोवा।

१र२१ २१ २ १
तामोभुवाः। मꣳहायिष्ठोर३वा। वृहन्तामाः। पर्षा

२ ५ २र २
यिरा१धार३ः। म। घोनो३४५ई। डा(३)॥ १०†॥ [३]

१र र रर १ २ १
॥ हाविष्कृतम्॥ स्वादिष्ठयामदाहाउष्ठाया। पव

१ र २ १ २
स्वसो। मधारार३या। इन्द्रा२हो१। यार३पा। त

१र २ ५र र २र र र र १
वे। सुरता२३४औहोवा॥(१) रक्षोहाविश्वचाहाउर्षा

* ऊ० गा० ८प्र० २ख० १०सा०। † ऊ० गा० १०प्र० २ख० १०सा०।

१ १ र र १ १र
याथिः । अभियोनायिम् । अयोहाा२३तायि । द्रोणे२

१ १र १ ११र र
होश्यि । सा२३धा । स्थमा । सा२दा२३४औहोवा ॥(२)

१ र र र र १ १ १ र
वरिवोधातमोहाउभूवाः । मंहिष्ठोवा । वृहन्ता२३

१ १ १ १
मा२३माः । पर्षा२होश्यि । रा२३धाः । मघो२ ।

१ ५र र र १ १ १ १ १ १
ना२३४औहोवा । हविष्कृते२३४५ (३)॥ ७ * ॥ [४]

१र १ र १ १ र १र
॥ दक्षिणिधनं मौक्षम् ॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठया । औ

१र १ १ १ १ १र र
होवा । इहश्रुधायि । पवस्वा२३सो । मधारया । इन्द्रा

१ १ १ १ १र
या२३पा३ । होवा३हा । नवेसू२३४५ता६५६ः ॥(१)

१ र १र १ १ १ १र १र १ १ १
रक्षोहाविश्वचर्षणिः । औहोवा । इहश्रुधायि । अभि

१ १र र र १ १ १
योर३नीम् । अयोहतायि । द्रोणेसा२३धा३ । होवा

१ १र १ र १र १र
३हा । स्थमासा२३४५दा६५६त् ॥(२) वरिवोधातमो

१र १र १ १ १ १
भुवः । औहोवा । इहश्रुधायि । मंहिष्ठो२३वा ।

---

* ऊ० गा० ११प्र० २अ० ७सा० ।

१ २ १ १ २ १
चक्रमाः। पर्षिरा२३धाइः। होवा३हायि। मघो

१ १ १ १ १ १ १
२३४५मा६५६म्। दत्ताइया२३४५ (३) ॥ ४ * ॥ [५]

१र १ र १ र र २
॥ गौषूक्तम्॥ स्वादिष्ठयामदौ। हौहोवाहायि।

१ र २ १ १
ष्ठया। पवस्वसोमधौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। रा

१ र र १ १ १
या२। इन्द्रायपातवौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। सु

१ २ ५र २ २ १र१२ १ १
ता २ ३ः। हो२वा २ ३ ४ औहोवा। अग्निराऊता २ ३

१ १
४ ५ः(१)॥ ८ † ॥ [६]

२ र १र १ २ १
॥ वासूपोत्तरम्॥ रचोहावौहो२। इया। अचर्षा

२ १र १ २ र १
णा२यिः। अभियोनौहो२। इया। अयोहता२यि।

१र र १ १ १र २ १
द्रोणेसधौहो२। इया। स्थमासा२३दा३४३त्। औ२

३४५ई। डा(२)॥ १२ ‡ ॥ [७]

---

* ऊ० गा० २प्र० २ख० ४सा०। † ऊ० गा० १३प्र० १ख० ८सा०।

‡ ऊ० गा० १६प्र० २ख० ११सा०।

५र २ ४र ५ १ १ २ १ १
॥ काक्षीवन्तम् ॥ स्वादिष्ठा३यामदिष्ठया। पवास्व

१र २ १ ऽ २ ३र २ १ २
सो। मधारया३। श्रो३४। हाहोयि। इन्द्रायार३पा।

३र २ ३र १ ५ ४ ५ ५ र
तवौहोयि। औहोर३४वा। सू५तोई्हायि॥(१) रक्षो

२ ४ ५ २ १ ३र १ २ र १ ऽ
हा३विश्वचर्षणायिः। अभायियोनिम्। अयोहता३यि।

२ ३र २ १र ऽ २ ३र २
ओ३४। हाहोयि। द्रोणेसार३धा। स्थमौहोयि।

३र १ ५ ४ ५ ५ २ ४र ५र
औहोर३४वा। सा५दोई्हायि॥(२) वरिवो३धातमो

२ १ २र१ २ १ ऽ २
भुवाः। मꣳहायिष्ठोवृ। त्रहन्तमा३ः। श्रो३४।

३र २ १ २ ३र २ ३र १
हाहोयि। पर्षायिरार३धाः। मश्नौहोयि। औहोर३

५ ४ ५
४वा। श्रो५नोई्हायि(३)॥१५*॥[८]

५र २ ४ऽ ५ ४ ५ १
॥ भासम॥ स्वादि। ष्ठा३यामा। दीया। दायि

२ १ १ र ऽ ३र ३र १ १
ष्ठा१या२। पावस्वसो। म। धौ३हो। वाहायि। र

१ १ २ ५र र २२ १२
या२। इन्द्रा२३। या२पार३४औहोवा। तवेसुना१॥(१)

---

* ऋ० गा० १८म० १ख० १५गा०।

रक्षः । हाऽ३वायि । श्वा । ईया । चार्षा१णा२यिः ।
आभियोनिम् । अ । यौ३चो । वाहायि । हता२
यि । द्रोणे२३ । सा२धा२३४औहोवा । स्थमासदा
१त् ॥(२) वरि । वो३धा । ता । ईया । मोमू१वा२ः ।
मा॒ऌंहिष्ठोवृ । त्र । चौ३हो । वाहा । तमा२ः । पर्षा
२३वि । रा२धा२३४औहोवा । मघोना१म्(३) ॥ १६* ॥[९]

॥ ग्रैष्मवम् ॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठाया । पवस्वसोमधा
रया । इन्द्राया२३४पा । तवा३यिह्व५ता६५६ः ॥(१)
रक्षोहाविश्वचर्षणायिः । अभियोनिमयोहतायि । द्रो
णेसा२३४धा । स्थमा३सा५दा६५६त् ॥(२) वरिवोधात
मोभ्रवाः । मऌंहिष्ठोवृत्रहन्तमाः । पर्षिरा२३४धाः।
मा३घो५ना६५६म् (३) ॥ १८ † ॥ [१०]

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १६सा० । † ऊ० गा० १९प्र० २ख० १८सा० ।

Digitized by Google

॥ आश्वसूक्तम् ॥ आश्रौहोवाहायि। स्वादिष्ठया। म दायि। ष्ठया। ऐहीयैहो१। पावस्वसोमधारया। ऐ हीयैहो१। आ२यि। पायिन्द्रा२यापा२। तवे। सू २ता२३४औहोवा। सुक्रआऊता२३४५ः (१) ॥ २०* ॥ [११]

॥ सत्रासाहीयम् ॥ वरा३४यि। वोधातमोभुवः। ओ६वा। मꣳहिष्ठोवृत्रहन्ता२माः। पा२र्षायि। रा २३धाः। मघौहो। वाहा३४३यि। घो२३४नो६हा यि(३) ॥ ६ † ॥ [१२]

॥ स्वारकौत्सम् ‡॥ स्वादौषिष्ठा२३। यामदिष्ठयाई था। पवस्वसोमधारया। पावस्वसो। मधारा२३या। पायिन्द्रा३हा। यापा३हा। तवेसू२३ता२३४३ः ॥(१) रक्षो हौहा२३। विश्वचर्षणिरोया। अभियोनिमयोहते। आ

---

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० १०साम। † ऊ० गा० ११प्र० १ख० ६गा०।
‡ "ऐडकौत्सम्"—इति क० पु०।

भियोनिम्। अयोहा२३तायि। द्रोणेइहायि। साधा

इहा। स्थमासा२३दा३४३त्॥(२) वरीहोवो२३। धा

तमोभुवईया। मꣳहिष्ठोवृत्रहन्तमः। माꣳहिष्ठोवृ।

त्रहन्ता२३माः। पार्षा३यिहायि। राधो३हायि। मघो

२३ना३४३म्। ओ२३४५ई। डा (३)॥ २० *॥[१३]१५

अथ प्रगाथरूपे द्वितीय-सूक्ते—

प्रथमा।

पवस्वमधुमत्तमइन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमदः।

महिद्युक्षतमोमदः॥ १ †॥

हे "सोम!" "मधुमत्तमः" अतिशयेन माधुर्योपेतस्त्वम् "इन्द्राय" इन्द्रार्थं "मदः" मदकरः सन् "पवस्व" क्षर। कीदृशः? "क्रतुवित्तमः" अत्यन्तं प्रज्ञायाः कर्मणो वा लम्भकः, "महि" मंहनीयः "द्युक्षतमः" अत्यन्तं दीप्तः "मदः" मद-हेतुः॥ १॥

---

* ऊ० गा० ११प्र०१ख० १० सा०।

† छ० आ० ६, २, ४, १ (१भा० ११११पृ०)=ऋ० वे० ७, ४, १७, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१२ ३१ २३१२३१२ ३ २ ३२ ३ १२
यस्यतेपीत्वावृषभोवृषायतेस्यपीत्वास्वर्विदः।

२ ३१२ ३क२र ३ २र २ २ ३१२
ससुप्रकेतोअभ्यक्रमीदिषोच्छावाजन्नैतशः॥ २ *॥ १६

"वृषभः" कामानां वर्षकः इन्द्रः, हे सोम! "यस्य" यं "ते" त्वां "पीत्वा" "वृषायते" वृषभ इवाचरति, किञ्च "स्वर्विदः" सर्वं जानतः "अस्य" तव † "पीत्वा" पाने सति "सु प्रकेतः" शोभन-प्रज्ञः ‡ "सः" इन्द्रः वृषभः शत्रूणाम् अन्नानि "अभ्यक्रमीत्" अभिक्रामति। तत्र दृष्टान्तः—"न" "एतशः" [—इत्यश्वनाम (निघ० १, १४, १०)] यथा अश्वः "वाजं" सङ्ग्रामम् अभि गच्छति तद्वत्॥

"स्वर्विदः"—"स्वर्दृशः"—इति पाठौ ¶॥ २॥ १६

१ १ २ ४५ २१ ५ १ १र २
॥ सफम्॥ पवस्वा३मधु। मत्ता२३४माः। इन्द्राय

१ १ २ ४ २ ५ २१
सोमा२। क्रतुवाइत्ता३मो३। मा२२३४दाः। महाइ।

२ ४ २ ५ २ ११ ४५
द्युत्ताता३मो३। मा३४५दोईहाइ॥(१) महिद्यू३त्तव।

---

* ऋ० वे० ७, ५, १७, २। † 'अस्य सोमस्य'—इति वि०।

‡ 'सुप्रकेतः सुप्रज्ञः'—इति वि०।

¶ "पीता"—इति "शर्वतः"—इति, "स्वर्द्दृशः"—इति च ऋग्वेदीयपाठाः।

Digitized by Google

२ ३ ५ २ १ २र१ १ २ ४
मोमार२३४दाः। यस्यतेपा२इत्वा२। वृषभोवा३र्षा३।
२ ५ २ १ र २ ४ २
या३२३४ताइ। अस्या। पीत्वा२३वा३ः। वा३४५इदो
५ १ १ २ ४र५ २ ३ ५ २ १ १
ईचाइ॥(२) अस्यपी३त्वास्व। वर्वा२३४इदाः। सस्त्र
१ १ २ ४ २ ५
काइतो२। अभियाक्रा३मी३त्। आ३२३४इषाः।
२ १ र २ ४ २ ५
यच्छा। वाजाम्बा३ए३। ता३४५ओ६हाइ(३)॥ ८* ॥[१]

१२ १र १
॥ ग्रङ्कुसाम॥ पवस्वमा। ए२। धुमा। तमाः।
र र २ १र २ १ १
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमा२३दाः। माची२ह्यू२वा२३।
२ १ ५ ४ ५
तमो२३४वा। मा५दो६चायि (१)॥ ६ † ॥ [२]

१२ १र १
॥ ग्रङ्कु॥ पवस्वमा। ए२। धुमा। तमाः।
र र २ १र २ १ १
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमा२३दाः। माची२ह्यू२वा२३।
२ १ ५ ४ ५ १ २ १र
तमो२३४वा। मा५दो६चायि॥(१) महिद्यु२क्षा। ए२।
१ र र र र २१र २ १
तमाः। मदो। यस्यतेपीत्वावृषभोवृषाय२३तायि। आ

* ऊ० गा० १प्र० १ध० ८सा०। † ऊ० गा० २प्र० १ध० ६सा०।

१ २ १ ५ ४ ५
स्था२पायित्वा२३। सुवो२३४वा। वा५यिदो६हायि॥(२)
२ १ १२ १२ १ २ २
अस्यपीत्वा। ए२। सुवाः। विदाः। सनुप्रकेतोअ
२ १२ २ १ १ २ १
भियक्रमीदा२३यिषाः। वाच्छा२वाजा२३म्। नवो२३४
५ ४ ५
वा। ता५ओ६हायि(३) ॥ ८ * ॥ [३]

२ २ ५
॥ सत्रासाहीयम्॥ पवा३४। स्वमधुमत्तमः। ओ
५ १ २ २ २ १ १
६वा। इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमा२दाः। मा२हायि।
२ १ ऽ १२ १२ २ १ ५
द्यु२३वा। तमौ३हो। वाहा३४३यि। मा२३४दो६
२ २ २ ५ ५
हायि॥(१) महा३४यि। द्युक्षतमोमदः। ओ६वा।
१ २२ २ २ २ १ १
यस्यतेपीत्वावृषभोवृषाया२तायि। आ२स्या। पा२३यि
२ १ ऽ १२ १२ २ १ ५ ५
त्वा। सुवौ३हो। वाहा३४३यि। वा२३४यिदो६हा
२ २ २ २ ५ ५ १
यि॥(२) अस्या३४। पीत्वास्वर्विदः। वो६वा। सनु
२ २ २ १ १ २
प्रकेतोअभियक्रमीदा२यिषा। आ२च्छा। वा२३जाम्।

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ८सा०।

१ ऽ १र ३र २ १ ऽ २र ३र १
नश्रौ३हो । वा२३जाम् । नश्रौ३हो । वाहा३४३यि ।
१ ५ ५
ता२३४श्रो६हायि(३) ॥ ७ * ॥ [४]

२र र १ १
॥ इडानांसङ्कारम् ॥ श्रौहोयिङ्वा३होयि । पव
४ २ १ ५ २ १ ४ १र १ ५
स्वमा३धू३मत्तमः । इन्द्राय सोमक्रतुवा३यित्ता३मोमदः ।
२र र १ २ १ २ ५ २ १र १
श्रौहोयिङ्वा३होयि । महायिद्यु२३४त्ता । तमोमदः ।
१ १ ४ ५ ४
इडा२३भा३ । एहीडा । होपृइ । डा ॥ ५ † ॥ [५]

५ १ ४ ५ ४ ५ १ १ १ १
॥ कालेयम्‡ ॥ पवस्वा३मधुमत्तमाः । इन्द्राय सो ।
२ २ १ ५ २ १
मा२३ । क्रतू३ । वा२३४यित् । तमः । मा३दाः ।
१ २ १ १ ५ ४ ५
महायिद्युक्षौ । वा३४३श्रो३४वा । तमोपृमदाः ॥(१) म
२ ४ ५ ४र ५ २ १र १ १
हिद्यु३क्षतमोमदाः । यस्यतेपायि । त्वा२३ । वृषा३ ।
१ ५र १ १ १ ३र २
भो२३४ । वृषा । या३तायि । अस्यापीत्वौ । वा३४३

* ऊ० गा० ८प्र० २ख० ७ सा० ।　† ऊ० गा० १०प्र० ५सा० ।
‡ "महाकालेयम्"—इति ख० पु० ।

Digitized by Google

२ ५ ४ ५ २ ४र ५ ४ ५
योऽ३४वा । सुवापुर्विदाः ॥(२) अस्यपीऽ२त्वासुवर्विदाः ।
२ १ २ १ २ १ ५र
सस्तुप्रकायि । तोऽ२३ । अभाऽ३यि । आऽ२३४ । क्रमीत् ।
२ २ १ २र २ २ ५ ४
आऽ३यिषाः । अच्छावाजो । वाऽ३४ऽ३यो३४वा । नए५त
४
शाः । होऽ५इ डा(३) ॥ ५ * ॥ [६]

२ ५ २ २
॥ च्यावनम् ॥ पवाऽ२३४ । स्वम । धुमाऽ२३४त्तमा
५ २ २ ५ २ र १
इः । हाउ । आयिन्द्रायाऽ२३४सो । मक्रतुवितमोमा
५ १ २ २ १ २
दोऽ२३४हायि । मद्दायिद्यूऽ२त्ताऽ३ । तामाऽ२ऽ३हाऽ३४ऽ३यि ।
१ ५ ५
माऽ२३४दोऽ६हायि(१) ॥ ४ † ॥ [७]

१ २ १
॥ प्रतीचीनिडङ्काशीतम् ॥ पवस्वमधु । माऽ२त्तमाः ।
र २ र १ ७ १र २
आयिन्द्रायसोमक्रतुवित् । तमोमदाऽ२३४ः । हाहोयि ।
१ २ २ १ ४ ५ १ २
मद्दियुत्ताताऽ३माः । मदा । औऽ३होवा ॥(१) मद्दियुत्तत ।
१ २र र र १ ७
मोऽ२मदाः । यास्यतेपीत्वावृषभः । वृषायताऽ२३४यि ।

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० ५सा० । † ऊ० गा० ११प्र० १ख० ४सा० ।

३र २ १ र २ १ १ १ ४ ५
हाहोयि। अस्यपीत्वामद३वाः। विदा। औ३होवा॥(२)

२ १ २र १र २ १ २र र
अस्यपीत्वास्व। वा२र्विदाः। सास्वप्रकोतोषभिय। क

१ ० ३र २ १ र र २ १
मायिद्विषार२३४ः। हाहोयि। अच्छावाजान्नाः३ए। त

१ २ ४ ५ ४ ४
मा। औ३होवा। ई३डा (३)॥ १८ *॥ [८]

१ २ ऽ २
॥ धुरासाकमश्वम्॥ पवस्वमा३। हौ३हो३१। धुम

२ ऽ २ र २ ऽ २
त्तमा३ः। हौ३हो३१यि। इन्द्रायसो३। हौ३हो३१।

र २ ऽ २ १ २
मक्रतुवित्तमोमदा३ः। हौ३हो३१यि। मंहिष्ठ्यु्वा३।

ऽ २ र २ ऽ २
हौ३हो३१। तमोमदा३ः। हौ३हो३१२३४५ई।
डा(३)॥ ८ †॥ [९] १६

तृचात्मके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा।

२ ३१ २ ३ २ ३१ २र ३ १२
इन्द्रमच्छसुताइमेवृषणांयन्तुहरयः।

३ १२ ३ २३१ २ ३ १ २
श्रुष्टेजातासइन्दवःस्वर्विदः॥ १ ‡॥

● ऊ० गा० १३प्र० २ख० १८गा०। † ऊ० गा० १४प्र० १ख० ८गा०।
‡ छ० आ० ६. २, ३, १ (२भा०२०१पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, ९, १।

Digitized by Google

"स्रुष्टे" [स्रुष्टीति क्षिप्रनाम (निरु० ६, १२)] क्षिप्रं "जातासः" जाताः "इन्दवः" पात्रेषु चरन्तः "स्वर्विदः" सर्वज्ञाः "हरयः" हरितवर्णाः "सुताः" अभिषुताः "इमे" सोमाः "ऋवणं" कामानां सेक्तारम् "इन्द्रम्" "अच्छ यन्तु" अभिगच्छन्तु॥

"स्रुष्टे"-"स्रुष्टि"—इति पाठौ॥१॥

अथ द्वितीया।

२ १ २र १ १ २र १ २
अयम्भरायसानसिरिन्द्रायपवतेसुतः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमोजैत्रस्यचेततियथाविदे॥ २ *॥

"भराय" सङ्ग्रामाय "सानसिः" भजनीयः† "सुतः" अभिषुतः "अयं" "सोमः" "इन्द्रार्थं" "पवते" क्षरति ग्रहादिषु क्षरति। ततः सोमः "जैत्रस्य" ["क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (१, ४, ३२वा०)"—इति कर्मणः सम्प्रदान-सञ्ज्ञा, चतुर्थ्यर्थे षष्ठी (२, ३, ६२)] जयशील मिन्द्रं "चेतति" जानाति। "यथा" इन्द्रः "विदे" लोकैर्ज्ञायते तथा जानाति॥२॥

---

* ऋ० वे० ७, ५, ८, २।
† 'सानसिः दाययिता'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ २३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अस्येदिन्द्रोमदेष्वाग्राभङ्गृभ्णातिसानसिम् ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

वज्रञ्चवृषणम्भरत्समप्सुजित् ॥ ३ * ॥ १७

"अस्येत्" अस्य सोमस्यैव "मदेषु" सञ्जातेषु† "सानसिं" सर्वैः सम्भजनीयं‡ "ग्राभं" ग्रहीतव्यं धनुः "गृभ्णाति" गृह्णाति ["हृग्रहोर्भश्छन्दसि"—इति भत्वम्] किञ्च "अप्सुजित्" उदकार्थं वृत्रस्य जेता¶ । यद्वा, 'आपइत्यन्तरिक्षनाम (निघ०१,३,८) अन्तरिक्षे अहिनामकस्य जेता "इन्द्रः" "वृषणं" वर्षितारं "वज्रं च" स्वकीय मायुधं "सम्भरत्" सम्बिभर्त्तिः§ [विभर्त्तेरड़ागमः ॥

"गृभ्णाति"—"गृह्णीत"—इति पाठो ॥ ३ ॥ १७

१ २ २ ४ ५ १ २ ५

॥ पौष्कलम् ॥ इन्द्रमाउच्छत्तु । ताँई २ ३ ४ माइ ।

२ १ २ १ २ ३ ५ २ १ २ ७

वृषाणंया । हवाराउ४याः । अ्रुष्टाइजाता । सई२

---

* ऋ० वे० ७,५,८,३ ।

† 'मदेषु निमित्तभूतेषु'—इति वि० ।

‡ 'सानसिं शत्रुसम्भजनीयम्'—इति वि० ।

¶ § विवरणकारस्तु यथाश्रुतं 'समप्सुजित्'—इत्येव पदं व्याख्यातवान्, न तु अजिति अरहितया आतेन अप्सुजिदिति पृथगिति । तथाहि—'समप्सुजित् वज्रा मेषु जेता'—इति ।

२ १ १ २ १ १ १ १ २
न्दा २ ३ ४ ५ वा ६ ५ ६ः। सुवर्विदा २ ३ ४ ५ः॥(१) य
१ १ ४र ५ २ २ ५ २ १र २ १ २
यम्भा३राय। साना २ ३ ४ साइः। इन्द्रायपा। वाता
२ ५ २र १ र ० २
इह २ ३ ४ ताः। सोमोजै। त्वा। स्यचार्२इता २ ३ ४ ५
२र १२११११ २ १र २ ४र ५ २
ताई५६इ। यथाविदे२३४५॥(२) अस्येदी३न्द्रोम। दा
२ ५ २र १ २ १ २ २ ५
इषू२३४वा। ग्राभङ्गृभ्णा। ताइसाना२३४साइम्।
२ १ ० २ २ १२११
वज्राञ्चवा। षणा२भ्मा२३४पूराई५६त्। समप्सुजी२३
१ १
४५त्(३)॥ १० *॥ [१]

२ २ १ २ १
॥ सुघ्नानम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमायि। वृषणं
१ २ र १ १ २
या२। तुझरयाः। अष्टेजाता२। सइ। दा२वा२
५र र १ २ १११२
३४औहोवा। सुवर्विद्ए३उपा२३४५ (१)॥ ७ †॥ [२]

१ २ १ २ १र र
॥ रोहितकुलीयाद्यम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमे।
२ १र २ १ २ १ २
वृषणंयन्तुहरयःअष्टेजा२३ता। सा२३ई। दावःसुवा३१

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १०गा०। † ऊ० गा० १प्र० १ख० ७गा०।

Digitized by Google

५ १ २ १ र
उवा२३ । वी२३४द्रः ॥(१) अराभरा । यस्रानसिः ।
र र २र १र २ १ २ १
इन्द्रायपवतेसुतःसोमोजा२३यिवा । स्या२३वे । ताति
२ ५ १ २र १ २
यथा२३१उवा२३ । वी२३४दे ॥(२) अस्येदिन्द्राः । मदे
र र र र २१ २ १ २
ष्वा । ग्राभङ्गृभ्णातिसानसिंवज्रम्वा२३वा । धा२३णाम् ।
१ २ ५
भारत्नमा३१उवा२३ । ए२३४जीत् (३) ॥ १७ ॥ [३]

२ र१ २ १
॥ सुज्ञानम् ॥ इन्द्रमच्छा । सुताइमायि । वृषणां
१ २र१ १
या२ । तुङ्गरयाः । अष्टेजाता२ । सइ । दा२वा२३
५रर १ २ २ र१
४औहोवा । सुवर्विदए३ ॥(१) अयम्भरा । यस्रानसा
१र१ र१ २र र १
यिः । इन्द्रायापा२ । वतेसुताः । सोमोजायिवा२ ।
१र २ ५रर १र २ २ र
स्यवे । ता२ता२३४औहोवा । यथाविदए३ ॥(२) अस्ये
र१ २र १ २ १
दिन्द्राः । मदेष्वा । ग्राभङ्गाभ्णा२ । तिसानसायि

* ऊ० गा० ६प्र० १ख० १७गा० ।

२ १ १ २ ३२ २
म । वज्ञञ्चा२ । षणम् । भा२रा२३४औहोवा ।
१ १ १११
समप्सुजिदे३उपा२३४५ (३) ॥ ८ * ॥ [४]

१ ० १ २१२
॥ स्रुध्यम् ॥ इन्द्रमच्छा२ह । ताइमोवा । वृषणं
१ २२२१ २२२१२२१ २ १
या । तुहरयाः । श्रुष्टेजातासइन्दवःसु । वा२३ः । वि
२ १२ १ २ १
दाउवा । अधिया२ ॥(१) अयम्भरा२य । सानसोवा ।
२ १२१ १२२२१ २ २२२ २ २ १
इन्द्रायपा । वतेसुताः । सोमोजैत्रस्यचेततिय । था२३ ।
२ १२ १२ २ १२
विदाउवा । अधिया२ ॥(२) असेदिन्द्रो२म । देषुवोवा ।
१२१२ १ २२२ २१ २१२ १
ग्राभङ्गृभ्णा । तिसानसायिम् । वज्रञ्चवृषणम्भरत्सम् ।
२ १२ १ २
था२३ । प्सुजाउवा । अधिया२ । ए२३हिया३४३ ।
१
औ२३४५ई । डा (३) ॥ २० † ॥ [५]

१ २ १ २१२
॥ ऐडमायास्यम् ॥ आइन्द्राम् । आच्छा । सुता

● ज० गा० ८प्र० २ख० ८सा० । † ज० गा० ८प्र० १ख० २० सा० ।

Digitized by Google

२ ११ २ १र
द्रमायि। वार्षगांया३१। तुहरयाः। श्रूष्टा३१यि। जा
१ २ २१ २
ता। सादून्दवा३१ः। सुवर्वा२३यिदा३४३ः(१)॥ १६ † ॥[६]

२ १र
॥ औपगवाद्यम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताद्रमायि। वृष
२ र १र २ १
णां२३या। तुहरयःश्रुष्टेजाता। सइन्दा२३वाः। सुव
२ २ १र र
र्वा२३यिदाः॥(१) अयम्भरा। यसानसायिः। इन्द्राया
२ र र र१र र २ १र
२३पा। वतेसतःसोमोजैत्वा। स्यचेता२३तायि। यथा
२ र १र र
वा२३यिदायि॥(२) अस्येदिन्द्राः। मदेषुवा। ग्राभङ्गृ
२ र १ २
२३भ्णा। तिसानसिंवज्रम्बवा। र्षणम्भा२३रात्। स
१ २ र १ २२ ५रर
मप्स२३जीत्। ऐ। हियारयि। हिया३४औहोवा।
२ १२ ११११
ए३। उपा३१२३४५ (३)॥ १ * ॥ [७]

२२ २२
॥ दैवोदासम्॥ इन्द्रा३१म्। अच्छा३१२३४। सु
५र २ २ २१ ३२ ५
ताः। आ३यिमायि। वृषा३१। णांया३१२३४। तुह।

* ऋ० गा० १०प्र० १ख० १६गा०। † ऋ० गा० १०प्र० २ख० १गा०।

Digitized by Google

रा३याः । अ॒ष्टा३१यि । जाता३१२३४ । सइ । दा३
वाः । सुवा३१ । विदा३ः । ओ२३४वा ॥(१) अया३१
म् । भरा३१२३४ । यसा । ना३सायिः । इन्द्रा३१ ।
यपा३१२३४ । वते । ऋ३ताः । सोमो३१ । जैत्रा३१
२३४ । स्यचे । ना३तायि । यथा३१ । विदा३ । ओ
२३४वा ॥(२) अस्ये३१त् । इन्द्रो३१२३४ । मदे । षू३वा ।
ग्राभा३१म् । गृभ्णा३१२३४ । तिसा । ना३सायिम् ।
वज्रा३१म् । चवा३१२३४ । षणम् । भा३रात् । समा
३१ । प्सुजी३त् । ओ२३४वा । ऊ२३४पा(३) ॥१०*॥[८]

॥ विश्वोविश्वीयम् ॥ इन्द्रमच्छसुम् । ऋ३ताइमा
यि । वा३र्षाणा३या । तुहर । यःशू२३ष्टायि । ऊम्मा
यि । जा३ता३ । सा२३४इवायि । ओ । ऊवायि ।

* ऊ० गा० १२प्र० १अ० १०गा० ।

५ १ २ २ १
दा२३४वाः । ऊम्मायि । सू३वा३ः । वा२३४यिदाः ।
५र ५ २ रर २र
एहियाद्द्दा ॥(१) अयम्भराङ्कम् । या३सानसायिः । आ
१ २ २ १र २ १
३यिन्द्रायाशपा । वतेसु । तःसो२३माः । ऊम्मायि ।
२ २ १ र५ १ १२ ३
जा३यित्वा३ । स्या२३४चेद्दायि । औ । ऊवायि । ता
१ २ २ १
२३४तायि । ऊम्मायि । या३था३ । वा२३४यिदायि ।
५र ५ २र रर २र १२
एहियाद्द्दा ॥(२) यस्येदिन्द्रोऊम्मा३देषुवा । ग्रा३भाङ्गा३
२ १र २ १ २
भ्णा । तिसान । सिंवा२३ग्राम् । ऊम्मायि । चा३
२ १ ५ १ ३२ ३
वा३ । षा२३४णूहायि । औ । ऊवायि । भा२३४
५ १ २ २ १ ५र
रात् । ऊम्मायि । सा३मा३ । षू२३४जीत् । एहिया
५
ईद्दा । द्दो५ई । डा(३) ॥ १ * ॥ [९]

२ १र ४र ५
॥ आश्वसूक्तम् ॥ औ३औद्दोवाद्दायि । इन्द्रमच्छ ।
२१ र २र१२र२ १ १
सुताः । इमे । ऐहोयैद्दो१ । वार्षणंयन्तु हरयःअ्रुष्टा

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० १गा० ।

र १र र ३र२ १
यिजाता। ऐहीयैह्नौ१। आ२यि। साम्रा२यिन्दावा

१ २ ५र र १ १ र १ २
२:। सुवः। वा२यिदा२३४औहोवा। ग्युक्षाकृता

१ १ १ १
२३४५: (१) ॥ १० * ॥ [१०]

२ १ २ १ र २ १
॥ जराबोधीयम्॥ इन्द्रमच्छौवा। सुताइमायि।

२ १ १ र १र २
वृषाणां२३या। तुच्छरयः अछेजाता। सचायिन्दा१वा२३:

४ ५ ५ २ २ २ १ २ १
सू। वः। विदो३४५ई। डा ॥(१) अयम्भरोवा। या

र २ १ २ १ २ र र र १र
सानसायिः। इन्द्राया२३पा। वतेसुतःसोमोजैत्रा। स्य

२ ४ ५र ३ १ २
चायिता१ता२३यिया। था। विदो३४५ई। डा ॥(२) अ

र १ २ १ र २ १ १र १ २ र
स्येदिन्द्रोवा। मादेषुवा। ग्राभाङ्गा२३४भ्णा। तिसान

१ २ ४ ५ ३ २
सिंवज्रम्वा। षणाभ्मा१रा२३त्माम्। अ। सुजो३४५

ई। डा(३) ॥ ११ † ॥ [११]

५ १ १ १र ४
॥ आस्तारम्॥ इन्द्रम्। अच्छा३४। औहो५सु

---

* ऊ० गा० १३प्र० १ख० १०गा०। † ऊ० गा० १४प्र० १ख० ११गा०।

Digitized by Google

र ४ १ २ १ १ ३ २ ३र
ताइमायि । वृषणं यन्तु हरा२३या३४ः । अष्टा३४यिजा
२ १ २ ४ ५ ३ १ १ १ १ ५
ना । सइन्दवाः । सू३ववि । दा२३४५ः ॥(१) अयम् ।
३ २ ३र ४ र ४ १ र २ १र २
भरा३४ । औहोवा५यसानसायिः । इन्द्रायपवतेहा२३ता
३र २ ३र२ र १ २ ४र५ २
३४ः । सोमो३४जैत्रा । अचेततायि । या३थावि । दा
१ १ १ १ ५ र ३ र ३र ४ र ४
२३४५यि ॥(२) अस्येत् । इन्द्रो३४ । औहोवा५मदेषुवा ।
१र र २ १र २ ३ २ ३ २
याभङ्गृभ्णातिसाना२३सा३४यिम् । वज्रा३४ञ्चवा । षण
१ ४ ४ ५ ३ १ १ १ १
भारात् । सा३मप्सु । जी२३४५त्(३) ॥ १७ * ॥[१२]१७

अथ चतुर्थसूक्ते—प्रथमा ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरोजितीवो अन्धसः सुतायमादयिन्तवे ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
अपश्वानꣳश्नथिष्टनसखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥ १ † ॥

हे "सखायः" सखिभूताः समानख्याना वा हे स्तोतारः ! "वः" यूयं "पुरोजितीः" [पूर्वसवर्णदीर्घः (७, १, ३८)] पुरः-

---

* ऊ० गा० १४प्र० १आ० १७गा० ।

† छ० आ० ६, २, १, १ (२भा० ३५१ पृ०)—ऋ० वे० ७, ५, १, १ ।

Digitized by Google

श्रित-जयस्य "अन्धसः" अदनीयस्य सोमस्य स्वभूताय "सुताय" अभिषुताय "मादयित्नवे" अत्यन्तं मदकराय रसाय "दीर्घजिह्व्यः" दीर्घा जिह्वा यस्य सः ["दीर्घजिह्वी च छन्दसि (४, १, ५९)"—इति ङीषन्तत्वेन निपातितः] तादृशं श्वानम् "अप श्नथिष्टन" अपश्नथत अपबाध, यथा श्वा राक्षसा वा सुतं सोमं न लिहन्ति तथा कुरुतेत्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २

योधारयापावकयापरिप्रस्यन्दतेसुतः।

२ ३ १ ३ २र

इन्दुरश्वोनकृत्व्यः॥ २ *॥

"सुतः" अभिषुतः "कृत्व्यः" [कृत्वीति कर्मनाम (निघ०२, १, २०)] कर्मणि साधुर्यः † इन्दुः सोमः "पावकया" पापानां शोधयित्र्या "धारया" "परि प्रस्यन्दते" परितः चरति। कथमिव? "अश्वोन" यथा अश्वो वेगेन प्रगच्छति तद्वत्॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २

तन्दुरोषमभीनरःसोमंविश्वाच्याधिया।

३ १ २ ३ १ २

यज्ञायसन्त्वद्रयः॥ ३ ‡॥ १८

* ऋ० वे० ७, ५, १, १। † 'कृत्व्यः कृतिवान् वेगवानित्यर्थः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १, ३।

"नरः" कर्मनेतार ऋत्विजः "दुरोषं"* [रोषतेर्हिंसार्थस्य (भ्वा० प०) रेफलोपे दीर्घाभावे, घोषतेर्दाहार्थस्य (भ्वा० प०) वा षलि रूपमिति, सन्देहादनवग्रहः] "तन्दुः" बधं दुहं वा सोमम् "अभि" लक्ष्य "विश्वाच्या" सर्वान् कामानञ्चित्वा, कामान् प्रापयित्वा† "धिया" बुद्धा "यज्ञाय" यज्ञार्थम् "अद्रयः सन्तु" अदारणयुक्ताः‡ भवन्तु॥

"यज्ञायसन्त्वद्रयः"-"यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः"—इति पाठौ॥३॥१८

॥ आवास्वम्॥ पुरो३१। जौ३तो। वोअ। धा३सः। एहिया। ह्व। तायमादा। यि। त्वा२इ। एहिया२। अपस्वानाᳲस्था३थो३। ष्टा२३४ना। ऐहा२इ। एहि या२। सखायोदाइर्घो३जी३। ह्वा३४५ यो६हाइ ॥(१) सखा३१। यो३दी। घजि। ह्वा३यम्। एहिया। यो। धारयापा। व। कया२। एहिया२। परिप्र

---

* 'दुरोषम् अरोषमित्यर्थः'—इति वि०।

† 'विश्वाच्या विश्वगामिन्या'—इति वि०।

‡ 'अद्रयः मेघाः वर्षस्वभावाः, अथवा अद्रयः अभिषवग्रावाणः'—इति वि०।

२ ४ ५ १र १र
स्यान्दा३ता३इ। ष्व१२३४ताः। ऐहा २इ। एहिया २।
१ २ ४ २ ५ ३ २
इन्दुरश्वोना३का३। त्वा३४५योई्हाइ ॥(२) इन्दू३१ः।
२ ४ ५ २ ४ ५ १ र
आ३श्वो। नक्त। त्वा३यः। एहिया। ताम्। दुरो
२र १ १र र १ १ ४
षमा। भी। नरा २ः। एहिया २। सोमंविश्वाची३या
५ २र १र र १ २
३। धा२३४या। ऐहा २इ। एहिया २। यज्ञायसान्त
४ २ ५
३वा३। द्रा३४५योई्हाइ(३) ॥ ११ * ॥ [१]

१र र १ १र
॥ आन्धीगवम्॥ पुरोजितीवो१न्धासाः। सुताय।
र २ १ १र र २ ३१
मादा२३या। ऊम्मा २१ऽ२। त्वनेश्वपश्वानंश्नथिष्टना२
१११ १ २ २ १ १ १
३४५। साखा३उवा। यो २दो। घार३जी। क्षियाम्।
४५ १ र र र २ १र र
मौर२३ष्वोवा ॥(१) सखायोदीर्घजाऽ१यिह्वायाम्। योधा
र २ १ १ र २ १ २र २ १
र। यापा२३वा। ऊम्मा २१ऽ२। कयापरिप्रस्यन्दतेसुता१ः।
२ २ १ १ २ १ २
आइन्दा३उवा। आ २श्वो। ना२३का। त्विया। औ

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ११सा०।

४ ५ २ र २ १ र
३ह्वोवा ॥(२) इन्दुरश्वोनकाऽ१त्वीया:। तन्दुरो। षमा

२ १ र २ १ र १र २ १
२३भी। ऊम्मा२ऽ१२। नरःसोमंविश्वाचियाधियाऽ१।

१ १ १ १ १ २ ४ ५
याज्ञा३उवा। या २स। त्व२३वा। द्रया। औ३ह्वोवा।

४
होऽ५इ। डा (३) ॥ १२ † ॥ [२]

४ १र ४ ५र र ३ १ १
॥ नानन्दम् ॥ पुरोजितीवोन्न। धसा३:। सू२३४।

र ५ र ४ ५ ३ ४ ३र ४ ५ ३
तायमादयि। त्नावायि। अपश्वानᳩश्नथि। ष्टनोर२३

५ ४ ३र ४ ५ ३ ५ १ २
४ह्वायि। अपश्वानᳩश्नथि। ष्टनोर२३४ह्वायि। सखा

१ २ १ ५ ४ ५ ३ ४र ५र र
योदी। घजो२३४वा। क्रा५योई६ह्वायि ॥(१) सखायोदी

३ २ १ र ५ र ४ ५
र्घजि। क्रिया३म्। यो२३४। धारयापाव। काया।

३ ४ ३ ४ ५ र ३ ५ ४ ३ ४ ५र ३
परिप्रस्यन्दते। सुतो२३४ह्वायि। परिप्रस्यन्दते। सुतो

५ १ २ १ २ १ ५ ४
२ ३ ४ ह्वायि। आयिन्दूराश्वाः। नको२३४वा। त्वा

† ऊ० गा० १प्र० १ख० १२गा०।

५ २ ४ २ ४र ५ २ २ १
५योऽ६हायि ॥(२) इन्दुरश्वोनक्त। त्वियाऽ३ः। तार३२४म्।

र ५ र ४ ५ ३र ४३ ४र ५ र २ ५
दुरोषमभी। नाराः। सोमंविश्वाचिया। धियो२३४हा

४र ३र ४ ५र ३ ५ १ २ १ २
यि। सोम विश्वाचिया। धियो२३४हायि। याआयास।

१ ५ ४
तुवो२३४वा। द्रा५यो६हायि(३) ॥ १८ * ॥ [३]

५ २ १ ४र ५
॥ गौरीवितम् † ॥ पुरः। जिता३यि। वोअन्धसाः।

१ र र १ र २ ४
सुमायमादयित्नवा२३यि। आपश्वाना३१२३म्। अथा

१ र र २ ४ ५ ४
५यिष्टना। साखायोदा३१२३यि। घजोवा। क्रा५यो

५ ५ र ३र २ ४ ५ १र र
६हायि ॥(१) सखा। योदा३यि। घजिक्रियाम्। योधा

र १ २ ४
रयापावकया२३। पारिप्रस्था३१२३। दता५यिसुताः।

१ २ ४ ५ ४ ५
आयिन्दुरश्वा३१२३ः। नकोवा। त्वा५यो६हायि ॥(२)

३ २ ४ ५ १ र र
इन्दुः। अश्वो३। नक्तत्वियाः। तन्दुरोषमभीनरा२३ः।

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० १८गा०। † 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

१ २ ४ १ र २
सोम विश्वा३१२३ । चिया५धिया । याज्ञायसा३१२३ ।

४ ५ ४ ५
तुवोवा । द्रा५योई२हायि(३) ॥ १३ * ॥ [४]

२ र र २ ५ २र
॥ कार्त्तयशम् ॥ पुरोहाहाउ । जा२३४यिती । वो

१ २ २ ४ ५ २ १ २ ४ ५
आऔ३हो३ । धासाः । सुताऔ३हो३ । यामा६ ।

५ २ १ १ १ १ र २ २
हाउवा । दयिन्वे२ । उपा । अपस्वान्न३स्वथा१यिष्टा

२ १ २ २ ४ ५ ५ २
३ना । सखाऔ३हो३ । योदा६ । हाउवा । धजि

१ २ १ १ १ १ २ र र २ ५
क्रियम् । उपा२३४५ ॥(१) सखाहाहाउ । यो२३४दी ।

२ १ २ २ ४ ५ २र १ २ २ ५ ५
घजाऔ३हो३ । क्षायाम । योधाऔ३हो३ । राया६ ।

५ २र १ १ २ १ २ २
हाउवा । पावकया२ । उपा । परिप्रस्यन्दता१यिष्ट३

२ १ र २ ४ ५ ५ २
ताः । इन्दुरौ३हो३यि । आस्वा६ः । हाउवा । नक्त

१ २ १ १ १ १ १ र २ ५
त्वियः । उपा२३४५ ॥(२) इन्दुर्हाहाउ । आ२३४स्वाः ।

---

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० १३गा० ।

Digitized by Google

१ १ १ २ ४ ५ २ १ ७ २ ४ ५
नक्काऔ३हो३। त्वावाः। तन्दूऔहो३। रोषा६म्।
५ २ र र १ २ १र र २ १
हाउवा। अभीनरा२ः। उपा। सोमंविश्वाचिया१धा
२ १ २ २ ४ ५ ५ २ १
३या। यज्ञाऔ३हो३। यासा६। हाउवा। तुवद्रयः।
१ १ १ १
उपा२३४५ (३) ॥ १४ * ॥ [५]

४ १र ४ ५र २ ३र ४
॥ तृतीयं चैचम्॥ पुरोजिता। हायि। वोअन्ध
५ ५ १ १ ३ १ २ ५
सा६ए। सुता२यमा२। दया३४५यि। ना२३४वे।
१ २ १र १ २ १ १ १ १ २ १र २ १
अपश्वानꣳश्नथिष्टना२३४५। सखायो२३दी। घजिह्वा२
२ २ ४र ५र र २ २ ४ ५ ५
३या३४३म्॥(१) सखायोदा। हो। घजिह्विया६मे।
१ १ ३र २ ३ ५ २ १
योधा२रया२। पावा३४५। का२३४या। परिप्रस्यन्द
२र ३ २ २ १ २ १ २
तेसुता१ः। इन्दुरा२३श्वाः। नक्षत्वा२३या३४३॥(२)
२ ३ ५ र २ २ ४ ५ ५ १ १र
इन्दुरश्वाः। हो। नक्षत्विया६ए। तान्दू२रोषा२म।

* ऋ० मा० ४प्र० १व० १४सा०।

२ १ २ ५ १र २१र २र २ १
अभा२३४५यि। ना२३४राः। सोमंविश्वाचियाधिया१।
२ १र २ १ २ १
यज्ञायार२३सा। तुवद्रार२३यां२३४३ः। ओ २ ३ ४ ५ ई।
डा(२) ॥ ९* ॥ [६]

२ र १र र १ २ १
॥ ऊर्ध्वेडत्वाष्ट्रीसाम ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः। सुता
२ १ २ ५ १ १ १र २
२यमा२। दया२३४५यि। त्ना२३४वे। अपश्वान१अथि
२ १ १ १ १ २ र २र १ २ १ २
ष्टना२३४५। साखायोदायि। घजिह्वा२३या२३४३म॥(१)
१ र २र र १ २ १ १ २र १
सखायोदीर्घजिह्वियाम्। योधा२रया२। पावा२३४५।
२ ५ २ १ १ २ २ २ २१ २ १
का२३४या। परिप्रस्यन्दतेसुता१ः। इन्दुरश्वाः। नक्त
२ १ २ १ २र १ २ १ १र
त्वा२३या२३४३ः॥(२) इन्दुरश्वोनक्तवियाः। तान्दू२रोषा
२ १ २ ५ १र २ १र २र २
२म्। अभा२३४५यि। ना२३४राः। सोमंविश्वाचियाधि
२ २ र २ १ २ १ २ १
या१। यज्ञायसा। तुवद्रार२३या२३४३ः। ओर२३४५ई।
डा(२) ॥ १० ॥ [७]

---

* ऊ० गा० ६प्र० २ख० ९सा०। † ऊ० गा० ७प्र० २ख० १०सा०।

॥ मधुश्चुन्निधनम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसा३ए । सुता
यमा३दायित्नवा३ । हा३हा । औ३हो३वा । आयिही
२ । अपश्वाना३श्नाथिष्टना३ । हा३हा । औ३हो३
वा । आयिही२ । साखायोदा३ । हा३हायि । औ
३हो३वा । आयिही२ । र्धजि । कार्या२३४औहो
वा ॥(१) सखायोदीर्घजिह्विया३मे । योधारया३पावकया
३ । हा३हा । औ३हो३वा । आयिही२ । परिप्रस्या
३न्दातेसुता३ः । हा३हा । औ३हो३वा । आयिही२ ।
आयिन्दुरश्वा३ः । हा३हायि । औ३हो३वा । आयि
ही२ । नक्र । त्वार्या२३४औहोवा ॥(२) इन्दुरश्वोन
कृत्विया३ए । तन्दुरोषा३माभोनरा३ः । हा३हा । औ
३हो३वा । आयिही२ । सोमंविश्वा३याया धिया३ ।

२ २ ऽ २ २ १ १ र २
हाउहा। औ३हो३वा। आयिही२। याम्नायसा३।
२ २ ऽ ३ २ १ १
हा३हायि। औ३हो३वा। आयिही२। तुव। द्रा
२ १र र २ १ २११११
२या२३४औहोवा। मधस्वन्नतार२३४५:(३)॥ १५ *॥ [८]

४ ३ ३ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ पुरोऽ५जि। ता३यिवो३अन्धा
५ १ र २ १ २ २ १ १र
साः। स्ुतायमा। दा३यायित्ना३वे। अपा२श्वा। न९
२ १ २ २ १ र र र
श्ना२३था। ऊम्नायि। ष्टा३ना। साखायोदीर्घजा२
३ २ १ २ १र र र र २
यिह्वियाउ॥(१) साखा। योदीर्घजिह्वायोधारया। पा
१ २ २ १ १ २ १
३वाका३या। परा२यिप्र। स्यन्दा२३ता। ऊम्नायि।
२ २ १ २ ३ २ १ २
हु३ताः। आयिन्दुरश्वोनका२त्वियाउ॥(२) आयिन्दूः।
१र र २ १ २ १ १र
अश्वोनकृत्व्यस्तन्दुरोषाम्। आ३भायिना३राः। सोमा
१ र २ १ २ २ १ र
२वि। श्राचा२३या। ऊम्नायि। धा३या। याम्नाय
३ २ १११
सन्तुवा२द्रयाउ। वा३४५(३)॥ १६ *॥ [९]

* ज० गा० ८प्र० २ख० १५गा०। † ज० गा० ८प्र० २ख० १६गा०।

॥ बृहदाग्नेयम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसः । इयइयाहा
यि । सुताय । मा । दायित्ना२३४वायि । आओ३४
वो । इयाहायि । अपश्वा । नाम् । श्नथा२यिष्टा२३
४ना । आओ३४वो । इयाहायि । सखा२उवा । यः ।
दायि । घाजिह्वा२३४याम् । आओ३४वो । इयाहा ॥(१)
सखायोदीर्घजिह्वियम् । इयइयाहायि । योधार ।
या । पावका२३४या । आओ३४वो । इयाहायि ।
परिप्र । स्या । दता२यिसु२३४ताः । आओ३४वो ।
इयाहायि । आयिन्दा३उवा । य । स्वो । नाकृत्वार
३४याः । आओ३४वो । इयाहा ॥(२) इन्दुरश्वोनकृ
त्वियः । इयइयाहायि । तन्दुरो । धाम् । आभायि
ना२३४राः । आओ३४वो । इयाहायि । सोमंवि । श्वा ।

Digitized by Google

७ २ १ १ २ ५ ४ ५ १ २
चियार२धार२३४या। आऔ३४हो। इयाहायि। यासा

२ १ २ २ ५ १ २ ५ ४
३उवा। य। सा। त्वद्रा२३४याः। आऔ३४हो। इया

५ ४
हा। होप्ई। डा(३)॥ १७ *॥ [१०]

१ २र १ २ २
॥ औदलम्॥ पुरोजितायि। वोअ्रा२न्धसाः। सु

१र २ १ २ २ ५ १ २ र १
तायमा३। दायित्ना२३४वायि। अपश्वानाम्। श्नथा

१ १ १र ० १ ४ २
२यिष्टना। सखायो२३दी३। घार३जा३यि। का३४५

५ १ १र र १ १
योईहायि॥(१) सखायोदायि। घाजा२यिक्रियाम्।

२र१र २ १ २ २ ५ १ २ १
योधारया३। पावका२३४या। परिप्रस्या। दाता२

१ २ १ २ १ ४ २
यिस्तुताः। इन्दुरा२३स्वा३ः। ना२३का३। त्वा३४५यो

५ १ २ १ १ २ १ र २
ईहायि॥(२) इन्दुरश्वाः। नाका२त्वियाः। तन्दुरोषा

१ २ २ ५ १र २ १
३म्। आभायिना२३४राः। सोमंविश्वा। चाया२

* ऋ० मा० ८म० २अ० १७सा०।

१ १ १र २ १ ४ २
धिया। यज्ञायार२३सा३। ढर२३वा३। द्रा३४५योई

५
हायि(३)॥ २ *॥ [११]

१ २ १ २र १
॥ ऐड़मायास्यम्॥ आयिपुराः। जायितायि। वोअन्ध

र १ २ १ २ १
साः। घ्नतायमा३१। दयिज्ञवायि। आपश्वाना३१म्।

२ १ र र २ २ १ २
अथिष्टना। साखायोदा१यि। घजिक्का२३या३४३म्॥(१)

१ २ १ २ १ र २
आयिसखा। योदायि। घजिक्कियाम्। योधारया३१।

२र १ २ २ १र २
पावकया। पारिप्रम्ना३१। दतेसुताः। आयिन्दुरश्वा

२ १ २ १ २ १ २
३१ः। नक्तत्वा२३या३४३॥(२) आइन्दूः। आश्वो। न

१ र २ २ १र २
क्तत्वियाः। तान्दुरोषा३१म्। अभीनराः। सोमंविश्वा

२ १र र २ २ १ २
३१। चियाधिया। याज्ञायसा३१। तुवद्रा२३या३४३ः।

१
ओ२३४५ई। डा(३)॥ १७ *॥ [१२]

* ऋ० मा० १०प्र० १ख० ३सा०। † ऋ० मा० १०प्र० १ख० १७सा०।

Digitized by Google

१ ८ ८ २ १ २ १
॥ निषेधम्॥ पुरोजितीवोऽ३अन्धसाः। सुतायमा।
२ १ १ २ १ २ ४ ५ २ ३
दयित्नवा२यि। इहा३। आपा३श्वानाम्। हाहोऽ२३
५ २ १ २ १ २ १ २ ४ ५
४हा। श्नथिष्टा२३ना। इहा३। साखा३योदायि।
२ ३ ५ ३ १ ४ १८ ८
हाहोऽ२३४हा। घजा३यिद्दा५या६५६म्॥(१) सखायो
८ १ ८ १ २ १ २८ १ १ २
दीर्घा३जिह्वियाम्। योधारया। पावकया२। इहा३।
१ २ ४ ५ २ ३ ५ २८१ २ १ २
पारा३यिप्रास्था। हाहोऽ२३४हा। दतेह्र२३ताः। इहा
१ २ ४ ५ २ ३ ५ ३ १ ४
३। आयिन्दू३रास्वाः। हाहोऽ२३४हा। नका३र्त्वा५
२ ८ २ १ १८ १
या६५६ः॥(२) इन्दुरश्वोना३क्त्वियाः। तन्दुरोषाम्।
२८ १ १ २ १ २ ४ ५ २ ३
अभीनरा२ः। इहा३। सोमा३ँवायिश्वा। हाहोऽ२३४
५ १८ १ १ ११ १ २ ४ ५ २ ३
हा। चियाधा२३या। इहा३। याज्ञा३यासा। हाहो
५ ३ २ ४ ३ १ १ १ १
२३४हा। तुवा३द्रा५या६५६ः। हे२३४५ (३)॥ ६ *॥ [१३]
१ २ १ २ ८ ५८ १
॥ आनूपवाध्यम्॥ पुराःपुराः। जितीवोऽ३आ

---

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ६गा०।

२ १ २ १ २ १ २ १
न्धा१सा२ः । सूतायमा । दयायित्ना१वा२यि । आपा

१ १ १ २ १ २
२यि । आपा२श्वाना२म् । अयिष्ठा२३ना । सखायो

२ १ ४ २ ५ १ २
३दी३ । घा२३जा३यि । क्षा३४५योई६वायि ॥(१) सखा

१ २ २ २ १ २ १ २ १ २ २
सखा । योदीर्घा३जायिक्षा१या२म् । योधारया । पा

१ २ १ १ १२ १ १
वाका१या२ । पारा२यिप्रास्या२ । इतेसू२३ताः । इ

२ २ १ ४ २ ५
न्दूरा३श्वा३ः । ना२३का३ । त्वा३४५योई६वायि ॥(२)

१ २ १ २ २ १ २ १ १२
इन्दुरिन्दुः । अश्वोना३कात्त्वा१या२ः । तान्दुरोषम् ।

१ २ १ १ १२
अभायिना१रा२ः । सोमा२ंवायिश्वा२ । धियाधा२३

१ १ १ २ १ ४ २ ५
या । यज्ञाया३सा३ । ह्व२३वा३ । द्रा३४५योई६वायि(३)

॥ ११ * ॥ [१४]

२ २ ४ २
॥ वैतहव्यमोकोनिधनम् ॥ पू५५रोजि । ता३यिवो

४ ५ १ २ ० २ ५ १
३अन्धसाः । सूतायमा । दयारयित्ना२३४वायि । प

* ऊ० गा० १२प्र० १अ० ११सा० ।

पा२र्श्वा२३४नाम्। आ३थायिष्टा३ना। साखायौंदीर्वं। जायि। क्का२या२३४औहोवा॥(१) सा॥५खायः। दा२यिर्वा३जिक्कियाम्। योधारया। पावा२का२३४या। परा२यिप्रा२३४स्या। दा३तायिस३ना:। आयिन्दुरश्वो न। का। त्वा२या२३४औहोवा॥(२) आऽ५यिन्दुर। श्वो३ना३क्त्वियाः। तान्दुरोषाम्। अभा२यिना२३४ रा:। सोमा२वा२३४यिश्वा। चा३याधा३या। याश्वा यसन्तु। आ। द्रा२या२३४औहोवा। ओ३का२३४५ः(३)॥१२*॥[१५]

॥सोमसाम†॥ पुरोजिता२यिवोअन्धसाः। सूता२ यामा२। दयित्नवायि। आपा२श्वाना२म्। अयि ष्टना। साखा२योदा२यि। र्वजिक्का२३या३४३म्॥(१)

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० ११गा०। † 'बृहत्सोम साम'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

१ र र १ १ र १
सखायोदा२यिर्घंजिह्नियाम्। योधा२राया२। पाव
१ १र
कया। पारा२यिप्रास्या२। दतेसुताः। आयिन्दू२
१ १ २ १ १
रास्वा२ः। नक्षत्वा२३यां३४३ः ॥(२) इन्दुरश्वो२नक्षत्वि-
१ १र १
याः। तान्दू२रोषां२म्। अभीनराः। सोमा२ंवा
१र १ १
यिश्वा२। चियाधिया। याम्रा२यासा२। तुवद्रा२३
२ १
यां३४३ः। ओ२३४५ई। डा (३) ॥ १२ * ॥ [१६]

१ ५ २
॥ त्रासदस्यवम्॥ पू२३४। रः। जितायि। वों
१ १ र ५ १र १ १
अन्धसा२३ः। सू२ ३ ४। ता। यमा। दायित्नवा २ ३
१ र ५ १र १ १
यि। षा२३४। प। स्वानाम्। स्वायिष्टना२३। सा२
र र ५ १र १ १ १ १
३४। खा। योदायि। घाजिह्नियाउ३माउ ॥(१) सा
र र ५ १र १ १
२३४। खा। योदायि। घाजिह्निया२३म्। यो२३४।
र ५ १र १ १ ५
धा। रया। पावकया२३। पा२३४। रि। प्रस्या।

† ऋ० मा० ११म० २ऋ० १२सा०।

२र १र १ ५ १र १
दातेसुता२३:। षा२३४ यि। दुः। अस्वाः। नाक्त
२ १ र ५ २र १र
त्विया२३ः। ता२३४म्। दु। रोषाम्। आभीनरा
१ ५ १र १र १
२३ः। सो२३४। मम्। विस्वा। चौयाधिया२३। या
र ५ १र१ १ ११११
२३४। धा। यसा। द्वत्र्या३१उ। वा२३४५(३)॥१४*॥[१७]

४ ३र ४ ५र र २ १ ४
॥ जनित्रोत्तरम्॥ पुरोजितीवोअ। धसा३ः। सु
र ५ १ र ७ २
ताया। होयि। होयि। मादायित्नावा२३४यि। अ
४ ५र १ २ ४ ५ १ र २र र ५र १
पस्वानम्। अथा२यिष्टाना। साखायोदीर्घजी३। हो
१ ५र र १ ४र ५र र
३१यि। आ२या२३४औहोवा॥(१) सखायोदीर्घजि।
२ १ ४र र ५ १ र ७
ह्रिया३म्। योधारा। होयि। २। यापावकाया२३४।
२ ४ ५ २ १ ४ ५ १ २ ११र ५र १
परिप्रस्य। दता३यिद्धताः। आयिन्दुरस्वोनकौ३। हो
२ ५र र २ ४ २ ४र ५ २
३१। त्वा२या२३४औहोवा॥(२) इन्दरस्वोनक्त। त्वि
२ ४ ५र १ र १
या३ः। तन्दुरो। होयि। होयि। षामाभी१नारा२३

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १४सा०।

३र ४ ५ र २ २ ४ ५ १ र २ ५
४ः। सोमंविश्वा। चियाऽधाया। याम्नायसन्तुवौ३।
२ ३ ५र र २ १ १ १
हो ३ १। द्रा २ या २ ३ ४ औहोवा। जनी ३ वा २ ३
१ १
४५म् (३) ॥ ६ * ॥ [१८]

५ र २ ४र ५र ४ ५
॥ जागतसोमसाम ॥ पुरोजा ३ यितीवोम्नन्धसाः।
२ र १ र १ ० र २ ३र १
सुतायामा२। दायायित्नवे। ओ३४। हाहोयि। प
र १ ० २ ३र १ र र
पश्वानम्श्ना३थायिष्टन। ओ३४। हाहोयि। सखायो
र १ २ १ ५र र ५
दीर्घजिह्वियम्। दुरा२। तिना३४औहोवा ॥(१) स
र १ ४र५ ४ ५ १र र १ र १ ०
खायो३दीर्घजिह्वियाम्। योधाराया२। पावाकया।
२ ३र १ १ ० २
ओ३४। हाहोयि। परिप्रस्यन्दाऽतायिसुतः। ओ३४।
३र १ र १ २ १ ५र
हाहोयि। इन्दरश्वोनकृत्वियः। दुरा२। तिना३४औ
र ५ २ ४र५४ ५ २ १र
होवा ॥(२) इन्दुरा३श्वोनकृत्वियाः। तन्दुरोषा२म्।
र १ ० २ ३र १ र
आभायिनरः। ओ३४। हाहोयि। यम्नायसन्त्वद्रयः।
१ २ १ ५र र २ ५
दुरा२। तिना३४औहोवा। उ२३३पा(३)॥ ६† ॥ [१९]

* ज० गा० १३प्र० १ख० ६गा०। † ज० गा० १३प्र० २ख० ६गा०।

Digitized by Google

२ १र २र र १ २ १
॥ मधुश्चाच्छन्दीयाद्यम् * ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः। सु
र र२ १ १ १ र २१ २
तायमादयित्नार२३वायि। अपश्वानञ्श्नथिष्टार२३ना। स
१र १ १ १ १ ५र र २ १११११
खायोर२३दीर। घार। जिह्वा३४औहोवा। यार२३४५
१र २र र१ २१ र र र र२१
म्॥(१) सखायोदीर्घजिह्वियाम्। योधारयापावकार
२ १ १२र २ १ २ १
२या। परिप्रस्यन्दतेसु२३ताः। इन्दुरा२३श्वाऽ३ः। नार
२ १ ५रर २ ११११ १ २ १२र१ २
त्क्वा३४औहोवा। या२३४५ः॥(२) इन्दुरश्वोनकृत्वि
१ र २१र २ १र र२१र
याः। तन्दुरोषमभीनार२३राः। सोमंविश्वाचियाधार२
२ १र २ १ २२ ५र र २
या। यज्ञायार२३साऽ३। हुर। अद्रा३४औहोवा। या
१११
२३४५ः(३)॥ ३† ॥ [२०]

२१र ४र५ २ २ ५
॥ आकूपारम्॥ पुरोजार२३ईतीवः। अन्धार३४साः।
१ १ २ १ २ १ १
सुता२यमा। दयित्नवायि। अपश्वाना२म्। श्नथिष्ट
२र १ १ ४ २ ५
ना। सखायोदीर२३। घार२३जा३यि। ह्वा३४५योऽ६हा

* 'मधुश्चाच्छन्दीयम्'—इति क० पु०। † ऊ० गा० १६प्र० १ख० ३सा०।

Digitized by Google

२ १र ४र५ २ १ ५ १र
यि ॥(१) सखायो३दीर्घ । जिह्वा२३४याम् । योधा२
१ ३र १ २ १ र१ २
रया । पावकया । परिप्रास्या२ । न्दतेसुताः । इन्द्
१ १ ४ २ ५ २१
रास्वा२३ः । ना२३का३ । त्वा३४५यो६हायि ॥(२) इन्द्
४र५ २ ३ ५ १ १र २र १
रा३स्वोन । कृत्वा२३४याः । तन्दू२रोषाम् । अभीनराः ।
१र १ र १ २र १ १
सोमंवायिस्वा२ । चियाधिया । यज्ञायासा२३ । व्वर
४ १ ५
३वा३ । द्रा३४५योई२हायि(३) ॥ ८ * ॥ [२१]

५र २ ४र५र४ ५ २१ २१
॥ साध्रम् ॥ पुरोजा३यितीवोअन्धसाः । सुतायमा
३१ ३ ५ ११ १र २ २११
२ । दया३४५यि । न्ना२३४वे । अपस्वानᳪम्रथिष्टना२३
११ १ २ ३ ५ १ २ ३ ५ ४
४५ । साखाओ२३४वा । योदाओ२३४वा । घजा५यि
५र २ ४र५ ४ ५ २र १२१
च्चियाम् ॥(१) सखायो३दीर्घजिह्वियाम् । योधारया२ ।
३र २ २ ५ २ १ १र३२
पावा३४५ । का२३४या । परिप्रस्यन्दतेसुता१ः । आयि
२ २ ५ १ २ २ ५ ४
न्दाओ२३४वा । आस्वाओ २ ३ ४ वा । नका५त्त्वि

* ऊ० गा० १६प्र० १ख० ८सा० ।

Digitized by Google

याः ॥(२) इन्दुरा३श्वोनक्त्वियाः। तन्दुरोषा२म्। अ
भा३४५यि। ना२३४राः। सोमंविश्वाचिया। धिया१।
यामाओ२३४वा। यासाओ२३४वा। तुवा ५ इयाः।
चो५इ। डा (३) ॥ ८ * ॥ [२२]

॥ क्षुल्लककालेयम्॥ पुरोजितीवो१न्धासाः। सुता
यमा३। दया२यित्ना३३४वायि। अपा। अपा३१उ।
वा२। श्वानꣳश्नथिष्टना२३४५। सखाचोयियो२३दी।
घाजिह्नियम्। इडा २ ३ ॥(१) सखायोदीर्घजा१यिह्वा
याम्। योधारया३। पावा२का२३४या। परायि।
परा३१उ। वा२। प्रस्यन्दतेसुना१ः। इन्दुर्ह्वाआ२३
श्वाः। नाक्त्वियः। इडा२३ ॥(२) इन्दुरश्वोनका१र्त्वी
याः। तन्दुरोषा३म्। अभा२यिना२३४राः। सोमाम्।

* ऊ० गा० १६प्र० १खं० ८सा०।

२र   १र १र २ २   २ १र
सोमा३१उ । वा२ । विश्वाचियाधिया१ । यज्ञाहोयि

     २   १   २   १   २   १
यार३सा । त्ववद्रयः । इडा२३भा३४३ । घोर३४५ई ।

डा (३) ॥ ६ * ॥ [२३]

                   २ र १ र   १र १
॥ कौञ्चाद्यम् ॥ पुरोजितीहोयि । वोअन्धसाः ।

१ र   १ २   ४   १ १र र
सुतायमा३ । दाया३यित्ना५वा६५६यि ॥(१) अपश्वानौ

     २र १   २ र र   १ २   ४
हो । आथिष्टना । सखायोदा३यि । घाजा३यिक्षा५या

           १ र १र र   १र १   १र र
६५६म् ॥(१) सखायोदौहो । घाजिक्षियाम् । योधा

      १ २   ४   २ १ र   १र १र
रया३ । पावा३का५या६५ई । परिप्रस्रौहो । दातेसु

     २   १ २   ४   २
ताः । इन्दुरश्वो३ । नाका३ल्वा५या६५६ः ॥ (२) इन्दु

१ र   १र १   २   र   १ २
रश्वौहो । नाक्त्वियाः । तन्दुरोषा३म् । आभा३यि

४   १र   १ र   १र १र   २ र
ना५रा६५६ः । सोमंविश्वौहो । चीयाधिया । यज्ञाय

     १ २   ४
सा३ । तूवा३द्रा५या६५६ः (३) ॥ २ * ॥ [२४]

* ऊ० गा० १६प्र० २ख० ६साम । † ऊ० गा० १०प्र० १ख० ३सा० ।

Digitized by Google

॥ गौतमम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः। सुतायमा।
दयित्नवार्२यि। अपा। औहोर२३४वा। श्वानश्नथि
ष्टनार२३४५। सखा। औहोर२३४वा। योदा। औहो
२३४वा। धजा५यिक्रियाम् ॥(१) सखायोदीर्घजिक्रिया
म्। योधारया। पावकयार२। परा। औहोर२३४वा।
प्रस्यन्दतेसुता१ः। इन्दा। औहोर२३४वा। अश्वा। औ
होर२३४वा। नका५र्त्वियाः ॥(२) इन्दुरश्वोनकृत्वियाः।
तन्दूरोषाम्। अभीनरार२ः। सोमा। औहोर२३४वा।
विश्वाचियाधिया१। यज्ञा। औहोर२३४वा। यसा।
औहोर२३४वा। तुवा५द्रयाः। होऽ५इ। डा (३) ॥ ४*॥[२५]

॥ आग्नेयम् ॥ पुरोजितायि। वोअन्धा२३साः। सु
तायमा। दयित्ना२३वायि। अपश्वानम्। श्नथिष्टा

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० ४सा०।

१ २ ॰ ४ ५ ४ ५
मा॑२ । सखायो३दी३ । घजोवा । ह्वा५योई्हायि ॥(१)

२ र र १ २ १र र १ र १र २
सखायोदायि । घजिह्वार३याम् । योधारयापा । व

१ २ १ ७र १ २ २
का२३या । परिप्रस्य । दातेह्वता॑२ः । इन्दूरा३स्वा३ः ।

४ ५ ४ ५ २ १
मकोवा । त्वा५योई्हायि ॥(२) इन्दुरस्वाः । नक्षत्वा२३

२ १ २र१ १ १र २ १र र
याः । तान्दुरोषम् । अभीना२३राः । सोमविश्वा ।

७र १ २ २ ४ ५ ४ ५
चायाधाया॑२ । यज्ञाया३सा३ । तुवोवा । द्रा५योई्हा

यि (३) ॥ १७ * ॥ [२६]

२ र र र २
॥ घृह्वाघृह्वीयाद्यम् ॥ पुरोजितीवोअन्धा३साः । सु

१र २ १ १ २ २
तायमा । दयि । त्नावा॑२यि । अपास्वा३ना३म् ।

१ २ ५ २ १र २ १ २
अथा॑२यिष्टा२३४ना । सखायो२३दी । घाजिह्वियम् ।

१ २ र र र २ र १र २
इडा२३ ॥(१) सखायोदीर्घजिह्वा३याम् । योधारया ।

र १ १ २ २ १ २
पाव । काया॑२ । परायिप्रा३स्या३ । दता॑२यिष्ट २ ३ ४

* ऊ० गा० १७प्र० १ख० १७सा० ।

ताः। इन्दुरा२३श्वाः। नाक्तत्वियः। इडा२३॥(२) इन्दु
रश्वोनक्तत्वा३याः। तन्दूरोषाम्। अभी। नारा२ः।
सोमांवा३यिश्वा३। चिया२धा२३४या। यच्छाया२३सा।
तूषद्रयः। इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई। डा(३॥१८*॥[२७]

॥ द्विरभ्यस्तत्वाष्ट्रीसाम॥ पुरः। जिता३यि। हा३
हायि। वोअन्धासा२३४ः। सुता। यमा३। हा३हा।
दयित्नावा२३४यि। अप। श्वाना३म्। हा३हा। श्न
थिष्टाना२३४। सखा। योदा३। हा३हायि। वजा३
हो२३४। वा। हा५योऽहायि॥(१) सखा। योदा३।
हा३हायि। वजिच्छाया२३४म्। योधा। रया३। हा३
हा। पावकाया२३४। परि। प्रस्या३। हा३हा। द
तेक्षता२३४ः। इन्दुः। अश्वा३ः। हा३हा। नका३हो

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १८गा०।

Digitized by Google

२३४। वा। त्वा५योई२हायि॥(२) इन्दुः। अश्वा३ः।
हा३वा। नकुत्वाया२३४ः। तन्दु। रोषा३म्। हा३हा
यि। अभीनारा२३४ः। सोमम्। विश्वा३। हा३वा।
चियाधाया२३४। यज्ञा। यसा३। हा३हा। तुवा३
हो२३४। वा। द्रा५योई२हायि(३)॥१२*॥ [२८]

॥ आ२३निधनत्वाष्ट्रीसाम्॥ पुरोजितीवोअन्धसः। सु
ताहाउ। यमा३दायित्नावा२यि। यमा३हो। दया
२यित्ना२३४वायि। अपश्वाना२३श्नाथिष्टाना२। श्वाना
३२३हो। दया२यिष्टा२३४ना। सखायोदी३र्घाजिह्वाया
२म्। सखा३होयि। योदो२३४हायि। घा२जा२३४
औहोवा। ह्वया३मा२३४५॥(१) सखायोदीर्घजिह्वि
यम्। योधाहाउ। रया३पावकाया२। रया३हो।

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० ११गा०।

७र २ ५ २ १ ७र ३१ १
पावा२का२३४या। परिप्रस्या३न्दातेसुता२ः। प्रस्या३हो।
० २ ५ २ २ऽ १ ० ३ १
इता२यिसु२३४ताः। इन्दुरश्वो३नाक्त्वाया२ः। इन्दू
१ ३ ५ १ २ ५र र २
३र्वोयि। अश्वो२३४वायि। ना२का२३४औहोवा। त्वि
१ १११११ १ २११२र१ २ १ १ र
या३आ२३४५॥(२) इन्दुरश्वोनक्त्वियः। तन्दूवाउ। रो
रऽ १ २ ३र२ १ ० २
षा३माभी१नारा२ः। रोषा३ऽहोयि। अभा२यिना२३
५ २र रऽ १ ७र ३ २ १ ०
४राः। सोमंविश्वा३चायाधाया२। विश्वा३होयि। चि
२ ५ २ १० ३ २ १
या२धा२३४या। यज्ञायसा३न्तूवद्राया२ः। यज्ञा३हो
३ ५ १ २ ५र र २ १
यि। यसो२३४वा। तू२वा२३४औहोवा। द्रया३आ
१११
२३४५(३)॥ १३ *॥ [२९]

२र र र र
॥क्रौञ्चम्॥ सखायोदायि। सखायोदायि। षजि
१ २र र १ र १ १ १
क्षियाम्। योधाराया२। पावकंया। परिप्रास्या२।
१ २ १ २ १ २
ओन्दाता१यिसुता२ः। ओइन्दुरा२३श्वाः। नाक्त्वियः।
१ २ १
इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई। डा(२)॥ १ †॥ [३०]

* ऊ० मा० १०प्र० २ष० १३या०। † ऊ० गा० २१प्र० २ष० १या०।

४ २ ४ २
ककुबुत्तरं अायश्रीयम्॥ पुरोऽ५जि। ता३यिवो३
४ ५ १ र २ १ २ २ १
अन्धासाः। सुतायमा। दा३यायित्ना३वे। अपा २
१र २ १ २ २ १ऽ र र
श्वा। नञ्श्वा२३था। ऊम्मायि। ष्टा३ना। सास्वायो
र १ २ १ २ १र २ १
दीर्घजार्२यिक्कियाउ॥(१) यांथाः। धार्या। पा३वा
२ २ १ १ २ १ २
का३या। परा२यिप्र। स्यन्दा२३ता। ऊम्मायि। सु
२ १ र १ २ १ १
३ताः। अायिन्दुरश्वोनकार्२त्वियाउ॥(२) यास्ताम्।
१ र २ १ २ २ १र १ र
दुरोषाम्। अा३भायिना३राः। सोमा२वि। श्वाचा
२ १ १ २ १ऽ र २ २
२३या। ऊम्मायि। धा३या। याश्वायसन्तुवा२द्र्या
१ १ १
उ। वा३४५(५)॥ २ *॥ [३१]

४ १र ४ र र ५ १
॥ अभ्यासाकूपारम्॥ पुरोजितीवोअन्धसः। पू२३४।
र र र ४ २ र ४ र १र १
रोजितौहोपूयिवोअन्धसाः। सुतायमादयित्नवे। सु२३४।
र र ४ २ ४ २र ४ ५ १
तायमौहो५दयित्नवायि। अपश्वानञ्श्नथिष्टनम्। अा

* ऊ० गा० ११प्र० २अ० १षा०।

२ २ ४ ३ २ ४२ २ ५
२३४। पश्वानौ हो ५ स्मथिष्टना। सखायोदीर्घजिह्वियम्।
१ २ २ २ ४ ५ १ २
सा२३४। खायोदौ हो ५ र्घजि। ह्वा ५ योई हायि॥(१) सखा
४२ २ ५ १ २ २ २ ४
योदीर्घजिह्वियम्। सा२३४। खायोदौ हो ५ र्घजिह्विया
३२ २ ४ २ २ ५२ १ २ २ २
म्। योधारयापावकया। यो२३४। धारयौ हो ५ पा
४ १ ४ १ ४ २ ५ १ २
वकया। परिप्रस्यन्दतेसुतः। पा२३४। रिप्रस्यौ हो ५ न्द
२ ४ ३ ४ ३ ४२ ५ १ २
तेसुताः। इन्दुरश्वोनकृत्वियः। आ२३४यि। दुरश्वौ
४ ५ ३ ४ ३ ४ ५
हो ५ नकृ। त्वा ५ योई हायि॥(२) इन्दुरश्वोनकृत्वियः।
१ २ ४ ३ ४ ३२ ४ २ ५
आ२३४यि। दुरश्वौ हो ५ नकृत्वियाः। तन्दुरोषमभीनरः।
१ २ २ २ ४ ३२ ४ ३२ २ ४
ता२३४म्। दुरोषौ हो ५ अभीनराः। सोमंविश्वाच्याधि
५२ १ २ २ ४ ३२ ४
या। सो२३४। मंविश्वौ हो ५ चियाधिया। यज्ञायसन्त्व
५ १ २ २ ४ ५
द्रयः। या२३४। ज्ञायसौ हो ५ न्तुव। द्रा ५ योई हा

यि(३)॥ ६ *॥ [३२]

* ऊ० गा० २१प्र० १खं० ६सा०।

Digitized by Google

४ १र ४ ५र र २ २ ३र ४र ५ १
॥ श्यैतम्॥ पुरोजितीवोअ। धसा३४औहोवा। सू
र २ र १ ० ५ ५ १
तायमा। दयायित्नवा२३४यि। श्वोऽश्वा। अ। पाश्वा
२ १ २ ५ १ र र २
२३नाम्। अथा२यि। ष्टा२३४ना। सखायोदायिर्घा३
२ १ २ ५र र
जा। ऊम्मायि। श्वा२या२३४औहोवा(३)॥ ७ *॥[३३]

१ र ५र र ४ ५
॥ नौधसम्॥ पू२३४। रोजितीवोअ। धासाः।
२ १र २ १ २ १ १ २ १र
सुतायमा। दा३यायित्ना३वे। श्वा२३पा। श्वा। नाम्।
२ ३ ५ १ २ १ २ १ ५ ३
श्नाथिष्टा२३४ना। सा२३खा। योदीर्घजो२३४वा। श्वौ
५
२३४याम्(३)॥ ८ †॥ [३४]

१ १ १ १र १
॥ महादैर्घतमसम्॥ हाउपुराः। जायिती। वो। अन्ध
२ १ २ १र र र र
सा३ः। अन्धसाः। सुतायमादयित्नवेअपश्वानᳪश्नथा
२ १ १ र र २
यि। ष्टा१ना२। ष्टाना२। सखायो। दीर्घजा३यि।
१ ३ ५र र १ १ १ १र १
श्वा२या२३४औहोवा॥(१) हाउसखा। योदी। घा।

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० ७गा०। † ऊ० गा० ११प्र० १ख० ८गा०।

जिह्निया३म् । जिह्वियाम् । योधारयापावकयापरिप्र स्यन्दताथि । सू१ता२ः । सूता२ः । इन्दुरा । श्वोनका ३ । श्वोनका३ । त्वा२या२३४औहोवा ॥(२) ह्याविन्दूः । आश्वः । ना । कत्विया३ः । कत्वियाः । तन्दुरोषम भीनरस्सोमंविश्वाचिया । धा१या२ । धाया२ । यन्ना या । सन्तुवा३ । सन्तुवा३ । द्रा२या२३४औहोवा । ई२३४५(३) ॥ १२ * ॥ [३५]

॥ मरायम् ॥ पूराः । जायितीवोअन्धसः । सः । सः । सूता । यमा । दयित्नवेअपश्यानश्शुथिष्टननन । सा खा । योदीर्घंजिह्वियम् । यम् । यम् ॥(१) साखा । योदीर्घंजिह्वियम् । यम् । यम् । योधा । रया । पावकयापरिप्रस्यन्दतेसुतः । तः । तः । आयिन्दूः । अ

* ऊ० गा० १९प्र० २ख० १२सा० ।

Digitized by Google

१ २ १ २ १
स्वो । नक्षत्विय: । य: । य: ॥(२) श्वायिन्द्र: । अस्वो ।
२ १ २ १ २र र र
नक्षत्विय: । य: । य: । तान्द्र । रोषमभीनरस्सोमंविस्वा
र र र र १ २ १ २
श्याधिया । या । या । याश्मा । यसा । तुवद्र्यः । य: ।
ऽ ऽ ऽ १ १ १ १
य: । हाउहाउहाउ । वा३ । ई२३४५(३) ॥ १५ * ॥ [३६]
२र र र १
॥ महावात्सप्रम् ॥ हाउहाउहाउ । श्वो । होहो
२ १र २ १ र र
वा । (एवन्त्रिः) । पुरोजितायि । वो । अन्धसो । धसो ।
र र २ऽ १ र र
धस: । सुतायमा । दा । यित्नवे । यित्नवे । यित्न
र र २ऽ १
वे । अपस्वानम् । श्वा । थिष्टन । थिष्टन । थिष्टन ।
र र र २ऽ १
सखायोदी । घा । जिह्मियम् । जिह्मियम् । जिह्मि
र र र २ऽ १
यम् ॥(१) सखायोदी । घा । जिह्मियम् । जिह्मि
र र र २ऽ १ र
यम् । जिह्मियम् । योधारया । पा । वकया । वक
र र २ऽ १र र र
या । वकया । परिप्रस्य । दा । तेसुत: । तेसुत: । ते

* ऊ० गा० २२प्र० २ख० १५सा० ।

Digitized by Google

२ऽ १
स्तुतः। इन्दुरश्वः। ना। क्तत्वियः। क्तत्वियः। क्तत्वि
२ २ऽ १
यः ॥(२) इन्दुरश्वः। ना। कृत्वियः। कृत्वियः। कृ
२ २ऽ १२ २ २
त्वियः। तन्दुरोषम्। भा। भीनरः। भीनरः। भी
२ २ २ऽ १२ २ २
नरः। सोमंविश्वा। चा। याधिया। याधिया। या
२ २ऽ १ २ २ २२
धिया। यज्ञायस। ह्व। अद्र्यो। द्र्यो। द्र्यः। हा
१ २ १ २
उ३। ओ। होहोवा। २। ओ। हो। होर। वार
५२ २ ३१११११
३४। औहोवा। ई२३४५(३)॥ ८ * ॥[३७] १८

अथ पञ्चमसूक्ते—

प्रथमा।

२ १३१ २ ३१२ ३
अभिप्रियाणिपवतेचनोहितो
१ २ ३१उ ३१२३१२
नामानियह्वोअधियेषुवर्धते।
१ २२ ३१२२उ ३
आसूर्यस्यबृहतोबृहन्नधि
२३१२ ६२
रथंविष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः॥ १ † ॥

---

* उ० गा० २२प्र० १ख० ८सा०।

† छ० आ० ६, २, १, १ (२ भा० १७१ प०) = ऋ० वे० ७, १, ११, १।

"चनोहितः" [चन इत्यन्ननाम, चायतेरसुनि चन इत्यौणादिक-सूत्रेण निपातितः] चनसे अन्नाय हितः, यद्वा आहितान्नः सोमः "प्रियाणि" जगतः प्रीणयितॄणि "नामानि" नमनशीलानि, तान्युदकानि "अभि पवते" अभितः करोति। "येषु" अन्तरिक्षस्थितेषु उदकेषु "यह्वः" महानयं सोमः "अधि-वर्द्धते" अधिकं प्रवृद्धो भवति, अपां मध्ये सोमो वसति खलु। ततः "बृहत्" महान् सोमः "बृहतः" महतः परिवृढस्य "सूर्य्यस्य" विष्वञ्च" विष्वग् गमनम् "अधि रथम्" उपरि रथं "विचक्षणः" सर्वस्य विद्रष्टा "अरुहत्" आरोहति "अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्य मुपतिष्ठते (मनु० ३अ०७६श्लो०)"-इति॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १२ ३१ २ ३१२३१
ऋतस्यजिह्वापवतेमधुप्रियं

३१ ३२ ३१ ३१ ३२
वक्तापतिर्धियोअस्याअदाभ्यः।

१२ ३२ ३१२३ २ १२
दधातिपुत्रःपित्रोरपीच्याऽ३न्नाम-

२३ १ २ ३१ ३ २
तृतीयमधिरोचनन्दिवः॥ २ * ॥

---

* ऋ० वे० ७, २, ३३, २।

"ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "जिह्वा" मुखत्वेन जिह्वा-स्थानीयः सोमः "प्रियं" प्रियकरं "मधु" मदकरं रसं * "पवते" चरति । कीदृशः ? "वक्ता" शब्दकृत् ; यद्वा, स्तोतृभिः क्रियमाणाः स्तुतयः साधीयस्य इति प्रतिश्रवणस्य कर्त्ता "अस्या धियः" एतस्य कर्म्मणः "पतिः" पालयिता "अदाभ्यः" रक्षोभिर्हिंसितु मशक्यः "पुत्रः" यजमानः "पित्रोः" पिता माता उभयोः † "अपीच्यम्" अन्तर्हितं यत् "नाम" तौ न जानीते नाम कर्मवेलायां तस्मात्तयोरपरिज्ञायमानं "दिवः" द्युलोकस्य "रोचनं" दीप्यमानं "तृतीयं" नाम सोमेऽभिषूयमाणे हिरण्मयेति "अधि दधाति" अत्यन्तं धारयति ; "नक्षत्र-व्याव-हारिक-नाम्नी प्रभाष्य सोमयाजी तृतीय मस्य नाम"—इति भगवता बोधायनेनोक्तम् ॥

"अधिरोचनम्"--"अधिरोचने"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २   २ ३ १ १ २   २
अवद्युतानःकलशाँ अचिक्रद
१ २   २ १ ३   २ १   २ १ १ २
नृभिर्येमाणःकोशआहिरण्यये ।

---

* 'मधु स्वादुतमं द्रवम्'—इति वि० ।

† 'मातापित्रोर्नाम, अथवा मातापित्रोः पृथिव्यन्तरिक्षयोः'—इति वि० ।

Digitized by Google

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभीऋतस्यदोहनाअनूषताधि
३ २ ३ २ १ १ २
त्रिपृष्ठउषसोविराजसि ॥ ३ * ॥ १९

"द्युतानः" [द्युतदीप्तौ (भ्वा० आ०)] दीप्यमानो "नृभिः" कर्म्मनेतृभिरृत्विग्भिः "हिरण्यये" हिरण्मयकोशे अभिषवण-चर्म्मणि; तस्य हिरण्मयत्वं "हिरण्यपाणिरभिषुणोति"—इति हिरण्य-सम्बन्धात्; तादृशे "कोशे" "येमानः" [छान्दसे कर्म्मणि लिटि कानचि रूपम्] नियम्यमानः सोमः † "कलशान्" द्रोणाभिधान् प्रति "अवाचिक्रदत्" अवक्रदति शब्दायते। ततः "ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "दोहनाः" दोग्धार ऋत्विजः "इमं" सोमम् "अभ्यनूषत" अभिष्टुवन्ति ["ग्रावाणो वत्सा ऋत्विजो दुहन्ति"—इति तैत्तिरीयक-ब्राह्मणे एषां दोग्धृत्व मभिहितम्] "त्रिपृष्ठः" त्रीणि सवनानि तान्येव पृष्ठानि यस्य स तथोक्तः ‡ [त्रिषु च सवनेषु सोमस्य विद्यमानत्वात्। त्रिचक्रादित्वादुत्तरपदान्तोदात्तत्वम्] हे सोम! तादृशस्त्वम् "उषसः अधि" यागाहनि "विराजसि" ["अधिशीङ्स्थासाम्

* ऋ० वे० ७, २, ११, ३।

† 'येमानः सूयमानः'—इति वि०।

‡ 'त्रिपृष्ठः त्रिस्थाने त्रिलोकावस्थानः; अथवा त्रिपृष्ठः ऋग्यजुःसामभिः; अथवा त्रिभिर्वेदैः; सवनैर्वा।'—इति वि०।

Digitized by Google

(१,४,४६)"—इति द्वितीया] तेष्वहस्सु विशेषेण दीप्यसे। यद्वा राजिरन्तर्णीतण्यर्थः ; अहानि प्रकाशयसि ॥

"येमाणः"-"येमान"—इति, "अभीकृतस्य"-"अभीमृतस्य"—इति, "विराजसि"-"विराजति"—इति पाठाः ॥ ३ ॥ १९

॥ कावम् * ॥ अभ्योवा। प्रियाणिपवताइ। चनोहा इता२ः। नामानियह्वोअधियाइ। षुवर्द्धाता२इ। आ सूर्य्यस्यबृहतो। बृहन्नाधी२३। राया२वाइस्वा। चमरू हा२३त्। वाइचा३त्ताऽ५णा६५६ः ॥(१) ऋतोवा। स्यजि ह्वापवताइ।० मधुप्राया२म्। वक्तापतिर्द्धियोअस्याः। अदाभाया२ः। दधानिपुत्त्रःपित्रोः। अपीचाया२३म्। नामा३तार्त्तौ। यमधाइरो२३। चाना३न्दाऽ५यिवा६५ ६ः ॥(२) अवोवा। द्युतानःकलशा९। अचिक्रादा२ त्। नृभिर्य्येमाणकोशआ। हिरण्याया२इ। अभीकृ

* 'सारकावम्'—इति ख० पु०।

तय्यदोहना:। अनूषातार२३। आधीहवाइपा। छउवा
से२३। वाहूराइजा५सुवाई५ईइ(३)॥ १२ *॥ [१]

॥ ऐडकावम्॥ ए५। अभिप्रिया२। णिपवताथि।
ए५। चनोहिता:। ए५। नामानियार२। यह्वोअधिया
यि। ए५। युवर्द्धताथि। ए५। आसूरियार२। अवृ
ह्नता:। ए५। बृहन्नधी। ए५। रथंविश्वार२। अरु
हात्। ए५। विचक्षणा:॥(१) अतद्यजा२यि:। द्युा
पवताथि। ए५। मधुप्रियाम्। ए५। वक्तापता२यि:।
धियोअस्या:। ए५। अदाभिया:। ए५। दधातिपूरत्।
च:पित्रो:। ए५। अपीचियाम्। ए५। नामतृता२
यि। यमधिरा। ए५। अनन्दिवा:॥(२) ए५। अवद्यु

* ऋ० मा० १प्र० १ष० १२सा०।

२ ४ ५ ४ ४ ५ ४ ४
ता२। नःकणश्रा५। ए५। श्वित्रदात्। ए५। नृभि
५र २ ४र ५ ४ ४ ५ ४ ४
र्येमार२। पः कोशया। ए५। हिरण्ययायि। ए५। अ
५ २ ४र ५ ४ ४ र५ ४ ४
भिष्ठतार२। स्मदीधनाः। ए५। अनूषता। ए५। अ
५ २ ४ ५ ४ ४ र ५ ४
धित्रिपार२। ष्ठउषसाः। ए५। विराजसायि। हो५
ई। डा(३)॥ २ *॥ [२]

५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ २
॥ वैखानसम्॥ अभिप्रो२याणिपवतायि। चनोहि
१ २र २र २ १ २र २ २ १ २ १
ताः। नामानियार२३। यौग्रधियायि। युवाईतायि।
२र २ २ १ ० १ २ २ २ १
आसूरिया। अवृ२हतो२३। बृहत्सधायि। रथांवि
१ २ २ २ १ २ २ २ ५ २
घा। अमरूता२३त्। विचक्षणा३४३ः॥(१) आतक्षा३
४ ५र४ ५ २ १ २ १ २ २र २ १ २ २र
जिह्वापवतायि। मधूप्रियाम्। वक्तापता२३यिः। धियो
२ १ २ १ २ २र २ १ ० १
अस्याः। अदाभियाः। दधातिपूत्। त्रःपा२यिनो२३ः।

* ऊ० गा० ८प्र० १ख० २गा०।

१ २र २ २ १ २ १ १ १ २ १ १२
अपोचियाम्। नामाह्वतायि। यमधिरो२३। चनन्दि

२ ५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ २ १
वा३४३: ॥(२) अवद्यू३तानःकलशान्। अचायिक्रदात्।

२ १ २र १ २ २र २ १ २ १ २ २र २
नृभिर्य्येमार२३। णःकोशआ। हिराण्ययायि। अभीक्ष

१ ० १ २ २र २ १ २ १ २
ता। स्वदो२हना२३ः। अनूषता। अधायित्रिपा। ष्ठ

३ २ १ २ २र २ १
उषसो२ ३। विराजसा ३ ४ ३ यि। ओ २ ३ ४ ५ ई।

डा(३) ॥ १८* ॥ [३]

४ ३ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ अभा५पुयिप्रि। या३णा३यिपव

५ १ २ २ २ २ २ २ १
तायि। चा५नोहितोनामानियाह्वोअधियायि। यू३वा

२ २ १२ १ २ २
र्ह्वो३तायि। आसू२र्यस्यबृहतोबृहन्न। धिरा२३याम्।

१ २ २ १ १ २ १
ऊम्मायि। वा३यिश्वा। च। मह्हद्दिचा२क्षणाउ॥(१) पा

२ १ २ २ २ २ २
आ। तस्यजिह्वापवतेमधुप्रियंवक्तापतिर्द्दियोअस्याः। आ

---

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० १८गा०।

Digitized by Google

१ २ १ १ १ २ २
दाभा३याः । दधा२तिपुत्त्रःपित्रोरपीचि । यज्ञा२३

२ १ १ २ १ २ १ २
मा । ऊम्मायि । ता३र्मा । यामधिरोचना२न्दिवाउ ॥(२)

१ २ १ २ २ २ २ २
वाषा । वद्युतानःकलशा॰ऽभ्यचिक्रदन्नृभिर्य्येमाणःकोशआ ।

२ १ २ २ १ १ २ २ २
ह्वा३विराण्या३यायि । अभी२ऋतस्यदोहनाअनूष । त

२ १ २ २ १ २ २
आ२३धा । ऊम्मायि । वा३यिपा । ष्ठाउषसोविरा२ज

२ १ १ १ १
साउ । वा२३४५ (३) ॥ १५ * ॥ [४]

१ २ १ १
॥ वैधृतवासिष्ठम् ॥ अभिप्रियाणी२ । प । वता२यि ।

२ २ २ ५ २२१२ २ १ १
चनोहा२३४यिताः । नामानियाह्वो२ । अ । धियार

३ २ २ ५ २२१२ २ १ १
यि । षुवर्द्धा२३४तायि । आसूरियास्या२ । बृ । हतो

२२ २ ५ २१ २ १ १
२ । बृहन्ता२३४धायि । रथंविष्वाञ्चा२म् । अ । रुहा

२ ४ २ १
२३त् । विचा३क्षा५णाई ५ ईः ॥(१) ऋतस्यजायिह्वा२ ।

* ऊ० गा० १६प्र० १ख० १५गा० ।

Digitized by Google

१ २१२ ५ २१र २१
प। वतार्थि। मधुप्रा२३४याम्। वज्रापतायिद्वो२।

१ २१२ ५ २१र ११
यः। अस्थार:। मदाभार२३४याः। दधातिपूत्रा२:।

१ २१ २ ५ २र१ २१
पि। चोर:। अपायिचार२३४याम्। नामहतायिया२

१ २ ४ २
म्। अ। धिरो२३। चनाउन्दा५यिवा६५६: ॥(२) प

१ १ २१ २ ५
वद्युताना२:। क। लप्राु२। अपायिक्रार२३४दात्।

२ १२र१ र १ २१२ ५
नृभिर्य्यमाणा२:। को। भ्राअं२। हिरण्यार२३४यायि।

२१र११ र १ २१ २ ५ २
अभीकृतास्या२। दो। इनार:। अनूपार२३४ता। अ

१ २१ १ २ ४
धित्रिपार्ष्ठा२:। उ। यसौर२३। विरा३जा५सा६५६

यि(३) ॥ १४ * ॥ [५]

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

---

* ऋ० मा० १८प्र० १अ० १४सा०। † 'उत्तर आर्चिकः'—इति वि०।

अथ षष्ठे खण्डे,

प्रथमसूक्ते प्रगाथे—प्रथमा ।

१ १ २　　१ १ २ ३१ २ ३१ १

यज्ञायज्ञावोअग्नयेगिरागिराचदक्षसे ।

१ २३ २ ३ १ २ ३ १ २　　३ १ ३ १ २र

प्रप्रवयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशंसिषम् ॥ १ * ॥

हे स्तोतारः! "वः" यूयं "यज्ञायज्ञा" यज्ञे यज्ञे सर्व्वेषु यागेषु "दक्षसे अग्नये" प्रवृद्धाग्नये "गिरा गिरा" स्तुतिरूपया वाचावाचा स्तोत्रं कुरुतेति शेषः। च शब्दो भिन्नक्रमो वः-इत्यस्मात् परो द्रष्टव्यः। यूयं "च" स्तोत्रं कुरुत। "वयम्" अपि "प्रप्रशंसिषम्" ["प्रसमुपोदः पादपूरणे (८, १, ६०)"—इति प्र-शब्दस्य द्विरुक्तिः पादपूरणार्था; व्यत्ययेनैकवचनम् (३, ४, ९८); छान्दसोलुङ् (७, १, ३९)] प्रशंसाम कीदृशम्? "अमृतम्" मरणरहितं "जातवेदसम्" जातानां वेदितारं जातप्रज्ञं जातधनं वा "मित्रं न" सखिभूतमिव "प्रियम्" अनुकूलम्। यद्वा, व्यत्ययेन (३, ४, ९८) त्वमित्यस्य वसादेशः; अग्नय इति च कर्म्मणि चतुर्थी, "क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम्"—इति कर्म्मणः सम्प्रदानत्वात्; च-शब्दस्य चणिति निपातः, चेदर्थे वर्त्तते; दक्षस इति च दक्षेर्वृद्धिकर्म्मणः (भ्वा० आ०) असु-

---

* ऋ० चा० १, १, ४, १ (१ भा० १४७ पृ०) = ऋ० वे० ४, ८, १, १। 'अग्निर्वैश्वानरार्षं अग्निः स्तोत्रदेवता'—इति वि०।

Digitized by Google

भाविततस्यर्वाग्भक्ति रूपम्; चण्-योगात् "निपातैर्य्यद्यदिहन्त० (८, १, ३०)"—इति निघात-प्रतिषेधः। तथाय मर्थः—हे स्तोतः! त्वं यज्ञे यज्ञे इम मग्निं गिरा गिरा स्तुत्या स्तुत्या च दक्षसे च वर्द्धयसि चेत् वयमपि अमृतत्वादिगुणकं तं प्रशंसामः॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ १र २र२ २ ३ १र २र३१र ३र ३ १ २
ऊर्ज्जोनपातꣳसहिनायमस्मयुर्दाशेमहव्यदातये।
२३१ २ ३१र २र३१३१३ २ ३१ २
भुवद्वाजेष्ववितभुवद्वृधउतत्रातातनूनाम्॥२*॥२०†

"ऊर्जः" अन्नस्य बलस्य "नपातं" पुत्रं प्रशंसिष मित्यनुषङ्गात् प्रशंसामेत्यर्थः ‡। "हिना" [—इति निपात-द्वय-समुदायो हीत्यस्यार्थे ¶] "सः" खलु "अयम्" अग्निः § "अस्मयुः" अस्मान् कामयमानो भवति। वयञ्च "हव्यदातये" हव्यानां हविषां देवेभ्यो दात्रे तस्मा अग्नये "दाशेम" हवींषि दद्याम।

* ऋ० वे० ४, ८, १, २। † 'यव अग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'ऊर्जः अन्नानि। न पातं, न शब्द उपमार्थोऽत्र: यथा, अन्नानि। पिबन्तं पाचयन्तं भक्षयन्तं वा'—इति वि०।

¶ 'हिनः, हिनो मनुष्यः; दीर्घायुर्वा मन्त्रविद्वा मनस्वी वा'—इति वि०।

§ 'अयं यजमानः'—इति वि०।

Digitized by Google

तम् "उत" अपिच "तनूनाम्" तनयानां मस्मत्पुत्राणाञ्च*
"त्राता" रक्षिता "भुवत्" भवतु ॥ २ ॥ २०

४ २ ४ २ ५ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ यज्ञाऽ५य। ज्ञा२वो३ग्नायाइ।
१ र २ १ २ २ १ १
आइराइरा। चा३दा चा३साइ। प्रप्रो२वयममृतम्।
र २ १ २ २ १
जाता२३वा। ऊम्माइ। दा३साम्। प्रायमित्रꣳसुश्रा
३ २ १ २ १ २ १ २
२ꣳसिषाउ ॥(१) प्रायाम्। माइत्राम्। सू३श्राꣳसी
२ र १र १ र २ १
३षाम्। ऊर्ज्जोनपा२तꣳसहि। नाया२३मा। ऊम्मा
२ २ १ र ३ २ १ २ १
इ। स्मा३यूः। दाशेमहव्यदा२तयाउ ॥(२) दाशे। मा
२ १ २ २ १ र १ र २
हा। व्या३दाता३याइ। भुवद्वाजे२ष्ववि। ताभू२३वा
१ २ २ १ र र
न्। ऊम्माइ। वा३र्द्धाइ। ऊतत्रातातन्२नाउ। वा
१ १ १
३४५(३) ॥ १४ † ॥ [१]

२ र र र २
॥ विश्नोविश्नीयम्॥ यज्ञायज्ञाऽम्। वो३अग्नयायि।

---

* 'तनूनां शरीरिणाम्'—इति वि०।

† ऊ० गा० १प्र० १ख० १४सा०।

Digitized by Google

इराइरा। चा३दाश्वा३साथि। पप्रो२वयममृतम्। जा
तार३वा। ऊम्मायि। दा३सा३म्। प्रा२३४यꣳसायि।
षो। ऊवायि। मा२३४यित्राम्। ऊम्मायि। सू३
त्रा३। सा२३४यिषाम्। एह्रियाई३हा॥(१) प्रियम्मित्रम्।
न्नम्। सू३श्रꣳसिषाम्। ऊ३र्जोना३पा। तꣳसहि। ना
या२३मा। ऊम्मायि। स्मा३यू३ः। दा२३४ग्नेहावि।
षो। ऊवायि। मा२३४हा। ऊम्मायि। व्या३दा३।
ता२३४यायि। एह्रियाई३हा॥(२) दाग्नेमहाह्नम्। व्या३
दातयायि। भू३वाद्वा३जे। षवि। ताभू२३वात्। ऊ
म्मायि। वा३र्द्धा३यि। ऊ२३४तहायि। षो। ऊवा
यि। त्रा२३४ता। ऊम्मायि। ता३नू३१२३४नाम्।
एह्रियाई३हा। होप्र्इ। डा(३)॥ ५ *॥ [२]

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ५सा०।

Digitized by Google

२र र र १ २
॥ वारवन्तीयोत्तरम्॥ यज्ञायज्ञाऔहोहायि। वौ

३ ५ १र र १ १ १र
श्वग्ना२३४यायि। इराइराचदक्षासो२३४हायि। पप्रौं

र र २ ३र ४र ५ १ २ ५
वयमम्तञ्जातवेदा३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

२ २ ५ २१ २ १ ० २ ३र
उज्वा२३४साम्। प्रियम्मि। त्रा२सुष्र२सा३४। औ

४र ५ १ २ ५ ३र २ ५र
होवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४५। षाम्। ए

५ २ र र १ र २
हियाइहा॥(१) प्रियम्मित्राऔहोहायि। सूष२सा२३४

५ २र १ ५ १र र २
यिषाम्। ऊर्ज्जोना२३४हा। पात२सहिनायमस्मा३४।

३र ४र ५ १ २ ५ २ २ ५ १र१र२
औहोवा। इहा२३४हायि। उज्वा२३४यः। दाशेम।

१ ० र २ ३र ४र ५ १ २ ५ ३र
हाव्यदाता२३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औ

२ ५र ५ २र र र र १
हो३१२३४। यायि। एहियाइहा॥(२) दाशेमहाऔहो

२ २ ५ २१ ५ १र
हायि। व्यादाता२३४यायि। भुवाहा२३४हा। जेष

र २ ३र ४र ५ १ २ ५ २ २
विताभुवहा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उज्वा

Digitized by Google

५ २१२र १ १ ३र ४र५ १२
२३४हायि। उतत्वा। तातन् २३४। औहोवा। हुहा

५ ३र २ ५र ५
२३४हायि। औहोर१२३४। नाम्। एहियाहहा३)

॥ ११ *॥ [३]

१ ४ ५ ४
॥ महावैश्वामित्रम्॥ हयायि। हया३। ओहाओ

५ १ ४ ५ ४ ५ १
हा। हयायि। हया३। ओहाओहा। हयायि। ह

४ ५ ४ ५ १र ३र२१
या३। ओहाओहा। यज्ञायज्ञा। वोअग्नाया२यि।

र २ २ १ र २२र
इराइरा। चदक्षासा२यि। पप्रीवयममृतञ्जा। तवे

१ २ २ १
दासा२म्। प्रियम्मित्राम्। सुश५सायिषा२म्॥(१)

२ २ २ १ र १
प्रियम्मित्राम्। सुश५सायिषा२म्। ऊर्ज्जः। नापा

१ २ २ १ र र
२। नापा२। त५सहिना। यमस्माय्२ः। दाशेम

१ २र१ र र ३२र १
हा। व्यदाताया२यि॥(२) दाशेमहा। व्यदाताया२

१ ३२१
यि। भुवत्। वाजा२यि। ष्वविता। भुवद्वार्धा२यि।

---

* ऊ० गा० १३प्र० १ख० ११सू० ।

Digitized by Google

उतत्वाता। तनूनारम्। उतनूा। तातनूनारम्।

हयायि। हया३। ओहाओहा। हयायि। हया३।

ओहाओहा। हयाहि। हया३। ओहाओहा।

हो४इडा। हो४इडा। होर३४५ई। डा(३) ॥ २० * ॥[४]

॥ दैर्घश्रवसम् ॥ यज्ञायज्ञावोअग्नयओहाओहा३ए।

इराइराचदक्षसे। ओ३हा। ओ३हा३ए३४। पप्रो ३४

वयाम्। अमृतम्। जातावेदसाम्। ओ३हा।

ओ३हा३ए३४। प्रिया३४म्मित्रा३म्। सुश्रो२३४वा।

सा५यिषो६हायि ॥(१) प्रियम्मित्रᳩसुश्रᳩसिषमोहाओ

हा३ए। ऊर्ज्जोनपा। ओ३हा। ओ३हा३ए३४। तᳩ

सा३४चिना। यामस्मयुः। ओ३हा। ओ३हा३ए३४।

दाश्वा३४यिमहा३। व्यदो२३४वा। ता५योई६हायि ॥(२)

* छं० गा० ११प्र० २ख० २०गा०।

Digitized by Google

२र र र र र र १ १ र १ ५
दाग्निमहव्यदातयओहाओहा३ए। भुवद्वाजायि। ओ

२ ५ २ २ ३२ ३२ १ १र ५
३हा। ओ३हा३ए३४। पुवा३४विता। भुवद्वृधे। ओ

२ ५ २ २ १२ ३२ १ ५
३हा। ओ३हा३ए३४। उता३४त्नूाता३। नो२३४वा।

४ ५
नू५नो६हायि(३)॥ २१*॥ [५]

२र र र १ र १ १
॥ कण्वबृहत्॥ औहोयग्नायग्ना३ए। वोआग्ना१या

२र २ १ र२र र १ २
२३४यि। हाहोयि। आयिराडुराचदक्षसे। पप्रीवा१

२र र २ र १ ५
या२३४म्। हाहो। सुमा३। सा२३४यिषाम्। उ

५ २र र २ १ २
ऊवा६हाउ॥(१) औहोप्रियम्मित्राश्मे। सुमा९सा१यि

२र २ १ र२र १ २
षा२३४म्। हाहोयि। ऊर्ज्जोनपा। त९साहा१यिना

२र २ १ २ २र १ १र
२३४। हाहोयि। यमास्मा१यू२३४ः। हाहोयि। दा

२ २र२ ३२ १
ग्नायिमा१हा२३४। हाहो। व्यदा३। ता२३४यायि।

५ ५ २र र र र १ १
उऊवा६हाउ। वा॥(२) औहोदाग्नेमहा३ए। व्यदा

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० ११सा०।

२　　　　　　१र २　　　　१ १र र　　　　१ १
ता१या२३४यि। हाद्दोयि। भूवद्वाजे। पुत्राश्रा१यिता

　१र २　　　　१ २　　　　　　　१र २　　　१
२३४। हाद्दोयि। भुवाद्दा१र्द्धा२३४यि। हाद्दोयि। उ

२　　　　　१र २　　२ २　　　　　　५
तात्रा१ता२३४। हाहो। तनू३१२३४नाम्। उझ्वा६

५
हाउ। वा(३)॥८*॥ [६] २०

अथ तृचात्मक-द्वितीये सूक्ते†—प्रथमा।

२ ३ १　१र ३१२३१　१२　१ २
एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः।

२ १ १　३ १ २
एभिर्वर्द्धास इन्दुभिः॥ १ ‡॥

हे "अग्ने!" "एहि" आगच्छ "ते" तुभ्यं च तदर्थं "गिरः" स्तुतीः "इत्था" इत्थमनेन प्रकारेण "सु ब्रवाणि" सुष्ठु ब्रवाणीत्याशास्यते। ताः स्तुतीः शृणिवत्यर्थः। "ऊ"—इत्येतत् पूरकम्। "इतराः" असुरैः कृताः स्तुतीः शृणिवति शेषः। तथा च ब्राह्मणम्—"अग्निरित्थेतरा गिर इत्यसुरा हि वा इतरा-गिरः"—इति। अपिच आगतस्त्वम् "एभिः" एतैः इन्दुभिः सोमैः "वर्द्धसे" वर्द्धस्व॥ १॥

* ऊ० गा० १९प्र० १ख० ८गा०।

† 'उक्तोऽग्निष्टोम इदानीं मुक्थोऽभिधीयते'—इति वि०।

‡ छ० आ० १, १, १, ७ (१ भा० १०४ पृ०) = ऋ० वे० ४, ५, १४, १। ऋ० शाकमश्वः। छ० गायत्री। एवमेवोत्तरत्र।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २क २र २ २ ३ १ २ २ १ १
यत्रक्वचतेमनोदक्षन्दधसउत्तरम् ।

२ ३ १ २
तत्रयोनिङ्कृणवसे ॥ २ * ॥

हे अग्ने ! "ते" तव "मनः" अनुग्रहात्मक मन्तःकरणं "यत्र" यस्मिन् देशे "क्वच" कस्मिंश्चिद् यजमाने वर्त्तते, "तत्र" तस्मिन् यजमाने वर्त्तमाने "उत्तरम्" उन्नततरं श्रेष्ठं "दक्षं" बलकर मन्नं वा "दधसे" धारयसि तथा "योनिं" स्थानं च "कृणवसे" तस्मिन् यजमाने करोषि ।

"तत्र योनिं"-"तत्रासदः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २र३ १ १ ३ २ २र ३
नहितेपूर्त्तमक्षिपद्भुवन्नेमानाम्पते ।

२ ३ १ २
अथादुवोवनवसे ॥ ३ † ॥ २१

हे अग्ने ! "ते" त्वदीयं "पूर्त्तं" पूरकं तेजः ‡ "अक्षिपत" अक्ष्णोः पातकं विनाशकं "न हि भुवत्" न भवतु सर्व्वदा

---

* ऋ० वे० ४, ५, २४, २ । † ऋ० वे० ४, ५, २४, ३ ।

‡ विवरणमते "पूतम्"—इति पाठः । अतएव 'पूतं पावनात्मकम्'—इति व्याख्यातम् ।

Digitized by Google

अस्माकं दर्शनसामर्थ्यं करोतु। हे "नेमानां पते" नेमशब्दोऽल्पवाची, मनुष्याणां मध्ये कतिपयानां यजमानानां * पते पालक! "अथ" अतः कारणात् "दुवः" [दुवस्यतिः परिचरणकर्मा (निघ० ३, ५, ५)] अस्माभिर्यजमानैः कृतं परिचरणं "वनवसे" सम्भजस्व ॥ ३ ॥ २१

५र र १ ४ र ५ ५ १ र
॥ साकमश्वम् ॥ एह्यूषू३ब्रवाणा६इताइ। अग्रइत्थे
र १ २र १ २ १
तरागा२इराः। एभा२इर्वर्भा। सया२३हा३४३इ। दू२
५ ५ ५ २ ४ र ५ ५ १
३४औ६हाइ। यत्रकू३वचतेमा६नाः। दत्वन्दधसउत्त
१ २ १र ० २ १
२राम्। तत्वा२यीनाइम्। कृणा२३हा३४३इ। वा२३
५ ५ ५ २ ४र ५ ५ १ र
४सो६हाइ ॥(२) नहिता३इपूर्त्तमत्वाइइपात्। भुवन्ने
र र १ २ १ १
मानाम्पा२ताइ। अथा२दुवाः। वना२३हा३४३इ। वा
५ ५
२३४सोईहाइ(३) ॥ १५ † ॥ [१]
५र र र र १ २ २
॥ साकमश्वम् ॥ एहियूषाऔहोहायि। ब्रावाणा२
५ २ १ ५ १र र २ ३र
३४यिनायि। अग्नाआ२३४यिहायि। थेतरागा३४। औ

* 'नेमानां अरौ रक्षाम इन्द्रियाणां वा'—इति वि०।

† ऊ० गा० १प्र० १अ० १५सा०।

४र ५ १ २ ५ २ २ ५ २र१ २
होवा । इहा२३४हायि । उक्कवा२३४राः । एभिर्व ।
१ ७ २ २र ४र ५ १ २ ५ २र २
र्धसइन्दू३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । औहो३१२
५र ५ २ र र १ २
३४ । भोः । एहियाइहा ॥(१) यत्रकुवाऔहोहायि ।
२ ५ २ १ ५ १ २
वार्तायिमा२३४नाः । दद्वान्दा२३४हा । धसउत्ता३४ ।
२र ४र ५ १ २ ५ २ २ ५ १ १
औहोवा । इहा२३४हायि । उक्कवा२३४राम् । तन्
२र १ ७ २ २र ४र ५ १ २ ५
वो । नायिक्लणवा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि ।
२र २ ५र ५ २ र र र
औहो३१२३४ । सायि । एहियाइहा ॥(२) नहितेपूर्वो
१ २ २ ५ २ १ ५
होहायि । तामत्ता२३४यिपात् । भुवान्ना२३४यिहायि ।
१र र २ २र ४र ५ १ २ ५ २ २
मानापा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उक्कवा२३
५ २ १र १ १ ७ २ २र ४र ५ १ २
४तायि । मयादु । वोवनचा३४ । औहोवा । इहा
५ २र २ ५र
२३४हायि । औहो ३१२४५ । साई । एहियाइ
५
हा(३) ॥ १२ * ॥ [२] २१

* ज० गा० ३प्र० १ख० ११गा० ।

अथ तृतीयसूक्ते, प्रगाथे—

प्रथमा ।

३ १ २ ३ १ २   ३ १ २   ३ १ २   ३ १ २
वयमुत्वामपूर्व्यस्थूरन्नकच्चिद्भरन्तोवस्यवः ।

१ २ ३ १ २
वज्रिञ्चित्रᳲहवामहे ॥ १ * ॥

हे "अपूर्व्य" सिषु सवनेषु प्रादुर्भूतत्वादभिनव ! हे "वज्रिन्" वज्रवन्निन्द्र ! "भरन्तः" सोमलक्षणैरन्नैस्त्वां पोषयन्तः "वयम्" "चित्रं" चायनीयं विविधरूपं वा "त्वामु" त्वामेव "अवस्यवः रक्षणमात्मन इच्छन्तः सन्तः "हवामहे" आह्वयामः । तत्र दृष्टान्तः—"स्थूरं न" यथा भरन्तः ग्रीष्मादिभिस्तप्तं परयन्तो जनाः स्थूरं स्थूलं गुणाधिकं "कच्चित्" कञ्चित् पुरुषं यथाह्वयन्ति तद्वत् ।

"वज्रिन्"-"वाजः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २   ३ १ २ ३ २
उपत्वाकर्मन्नूतयेसनोयुवोग्रश्चक्रामयोधृषत् ।

१   २र ३ १ २   ३ २ ३ १ २   ३ १
त्वामिद्ध्यवितारंववृमहेसखायइन्द्रसानसिम् ॥२†॥२२

* ऋ० आ० ५, १, २, १ (१ भा० ८३० पृ०) = ऋ० वे० ६, २, १, १ ।

† ऋ० वे० ६, २, १, २ ।

Digitized by Google

प्रथमपादः प्रत्यक्षकृतः। हे "इन्द्र!" "कर्मन्" अग्निष्टोमादि कर्मणि* "ऊतये" रक्षणाय "त्वा" त्वाम् "उप" गच्छामः†। द्वितीयः पादः परोक्षकृतः। "यः" इन्द्रः "धृषत्" धृष्णोति शत्रूनभिभवति ["ञि धृषा प्रागल्भ्ये (स्वा० प०), "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शप्रत्ययः] "युवा" तरुणः "उग्रः" उद्गूर्णः स इन्द्रः "नः" अस्मान् प्रति "चक्राम" आगच्छतु; यद्वा, चक्राम अस्मानुत्साहयुक्तान् करोतु [क्रमतेः सर्गार्थे व्यत्ययेन परस्मैपदम्]॥ परोऽर्द्धर्चः प्रत्यक्षकृतः। "सखायः" समानख्याना बन्धुभूता वा वयं "सानसिं" ["वनषण सम्भक्तौ (भ्वा० प०] सम्भजनीयम् "अवितारं" सर्वस्य रक्षितारं "त्वामित्" त्वामेव "ववृमहे" वृणीमहे सम्भजामहे। "हि" प्रसिद्धौ [हि-प्रयोगादनिघातः (८, १, ३४)॥ २॥ २२

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ २र १
॥ सौभरम्॥ वयाऽमूऽत्वामपूर्विंयोवा। स्थूरन्नक
७ १ ७ १ २ ५ १
च्चिद्भराऽन्ताअवाऽ२३। हो। स्याऽ२३४वाः। वज्रिञ्चित्रम्।
ऽ २ १ २ ५र २ ४ २
हवाऽमहाऽइ। माऽहाऽ२३४औहोवा॥(१) वयाऽइन्द्राऽ
४ ५र ४ ५ १ र र १ ७
इन्द्रंहवामहोवा। उपत्वाकर्म्मन्नूता२याइसना २ ३ः।
१ २ ५ १ र ऽ २ १
योऽइ। यू२३४वा। उग्रश्चक्रा। मयोऽहाऽइ। धाऽ

* 'कर्मन्, कर्मणा यः सम्भजते तस्य सम्बोधनं हे कर्मन्'—इति वि०।

† 'उप, समीपे स्थिता'—इति वि०।

Digitized by Google

२ ५र र ५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १र
र्षा२३४औहोवा ॥(२) उग्रा३स्वा३क्रामयोधृषोवा । त्वा
१ १ २ ५ १ र
मिध्यविता २रांववा२३ । हो । मा२३४हाइ । सखाय
ऽ २ १ २ ५र र २ १ १
इ । द्रसा३हा३इ । ना२सा२ ३ ४ औहोवा । ऊ २ ३
१ १
४ ५(३) ॥ १६ * ॥ [१]

५ २ ४र ५ ४र ५ २र १ २ १
॥ कालेयम् ॥ वयमू३त्वामपूर्विया । स्थूरान्नकात् ।
२ १ २ १ ५ २ २ १
चिद्भरा२३ । ता३ः । भा२३४ । व । स्या३वाः । वज्रा
२ २ २ ५ ४ ५
यिञ्चित्रौ । वा ३ ४ ३ ओ३४वा । हवा५महायि ॥(१) व
२ ४ ५ ४र ५ २ १ २र १ २र १
ज्रिञ्चा३यित्र७उहवामहायि । उपात्वाका । मन्नूता२३ ।
२ १ ५ २ २ १ २ २
या३यि । सा२३४ः । नः । यू३वा । उग्रास्वक्रौ । वा
२ ५ ४ ५ २ ४र ५ ४
३४३ओ३४वा । मयो५धषात् ॥(२) उग्रस्वा३क्रामयो
५ २ १ २ १ २ १ २ १
धृषात् । तुवामिद्धायि । अविता२३ । रा३म् । वा
५ २ २ १ २ २ २
२३४ । वृ । मा३हायि । सखायऔ । वा३४३ओ ३ ४
५ ४ ४
वा । द्रसा५नसायिम् । हो५इ । डा(३) ॥ १० † ॥[२]२२

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १६गा० । † ऊ० गा० २१प्र० १ख० १०गा० ।

Digitized by Google

अथ चतुर्थर्चे—प्रथमा।

१ ३क २र २ १ २ ३ १ २३१२ ३१ २
अधाहीन्द्रगिर्वणउपत्वाकामईमहेससृग्महे।

३२ ३ १ २ ३२ २
उदेवग्मन्तउदभिः॥ १ *॥

"अधाहि" सम्प्रति हि "त्वा" त्वां "कामे" काम मभिलषित-मर्थम् "ईमहे"। यद्वा, "कामे" कामान् कमनीयान् स्तोमान् "उपससृग्महे" उपसृजामः त्वां प्रापयाम इत्यर्थः। तत्र दृष्टान्त माह—"उदेव" यथा उदकेन "ग्मन्तः" गच्छन्तः पुरुषाः "उदभिः" अञ्जलिनोत्क्षिप्योदकैः समीपस्थान् पुरुषान् क्रीडार्थं संसृजति तद्वदित्यर्थः॥

"कामईमहेससृग्महे"-"कामायहससृज्महे"—इति च पाठाः। "उदेवग्मन्तः"-"उदेवयन्तः"—इति च पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २र३ २ ३ १ २ ३ १ २
वार्णत्वायव्याभिर्वर्द्धन्तिशूरब्रह्माणि।

३ १ २ ३ १ २
वावृध्वाꣳसञ्चिदद्रिवोदिवेदिवे॥ २ †॥

* ऋ० सा० ५, १, २, ८ (१ भा० ८२६ पृ०) = ऋ० वे० ६, ७, २, १।
† ऋ० वे० ६, ७, २, २।

हे "अद्रिवः" वज्रिन्! "शूर" इन्द्र! "वार्ण" यथोदकमुदकस्थानं "यव्याभिः" नदीभिः ['अवनयः', 'यव्या'—इति (निघ० १,१३, १-२) नदीनामसु पाठात्] "वर्धन्ति" वर्द्धयन्ति, तथा "ब्रह्माणि" स्तोत्रैः* "वावृध्वांसं" "चित्" यथा निरुदकं देशं नदीभिः तथा न किन्तु प्रवृद्धमेव "त्वा" त्वां "दिवेदिवे" अन्वहं वर्द्धयन्ति स्तोतारः॥ २॥

अथ तृतीया।

२ १ २ १ २ ३ १ २ १ २ १ १ २र २ १ २ २ १ २
युञ्जन्तिहरीइषिरस्यगाथयोरौरथउरुयुगेवचोयुजा।

२ १ २ ३ १ २
इन्द्रवाहास्वर्विदा॥ ३ †॥ २३ ‡

"इषिरस्य" गमनशीलस्येन्द्रस्य "उरुयुगे" महायुगे "उरौ" महति "रथे" "इन्द्रवाहा" इन्द्रस्य वाहनभूतौ "वचोयुजा" वचनमात्रेणैव युज्यमानौ "स्वर्विदा" स्वर्गाख्य मिन्द्रस्य स्थानं आनन्तौ "हरी" एतन्नामकावश्वौ "गाथया"¶ स्तोत्रेण स्तोतारः "युञ्जन्ति" योजयन्ति॥

---

* 'ब्रह्माणि धनानि, वेदविधानवचनानि वा, स्तोत्र-शस्त्राणि कर्म्माणि वा'—इति वि०।

† ऋ० वे० ६, ७, २, २। ‡ "बल मार्मेधम्"—इति वि०।

¶ 'गाथया, एकवचनं बहुवचनस्य स्थाने दृष्टव्यम्, गाथाभिः'—इति वि०।

Digitized by Google

"उतयुगेवचोयुजाइन्द्रस्यवाहास्वर्विदा"--"इन्द्रवाहावचोयुजा"
—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २३

१ २ २ २ १ १ १
॥ नार्म्मधम् ॥ अधाहीन्द्रगिर्वणा३ए। उपात्वा३का ।
१ २ ५ २ १ २ १२ २ ५
मई२मार३४हाई। सह्यमाहा। औहोहो२३४वा।
१ २ ५ २ १ २ १२ २ ५ १
ऊ२३४देहाइ। वम्मान्ताऊ। औहोहो२३४वा। दा२
५२ ५ २२ २ २ १ १
३४भोः। एहियाइहा ॥(१) वार्षात्वायव्यामी३रे। वर्ह्वी
१ २ १ ३ ५ २२१ १ १२ २
न्ती३भू। रब्रार२ह्मा२३४णी। वावृध्वा३सा। औहोहो
५ ३ ५ २ १ १ १२ २
२३४वा। चा२३४इदहाइ। द्रिवोदाइवा। औहोहो
५२ ५ २ २ २
२३४वाइ। एहियाइहा ॥(२) युञ्जतिहरीइषिरा३स्य।
१ २ १ २१२ २ १ २
स्य। गा। थ। या। उरौरा३याइ। उरु३यू२३४
५ २१ १ १२ २ ५ १ ५
गाइ। वचोयूजा। औहोहो२३४वा। आ२३४इन्द्रवा
२१ १ २ १२ २ ५ १
हू। वाहावा। औहोहो२३४वा। वा २ ३ ४ इदा।
५२ ५ ४
एहियाइहा। होऽ५इ। डा(३) ॥ १० * ॥ [१]

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १०साम।

॥ द्यौतानम् ॥ हा३। ओ३हा३। ओ३हा३। हा
यि। अधाह्यिारयि। द्रगिर्वा२३४णाः। उपत्वाका२।
मईमा२३४हायि। सा३। हम्मा२३४हायि। उदेवग्मा
२। तऊदा२३४भायिः॥(१) वार्णत्वार। यवीया२३४
भीः। वर्द्धन्तिभूर२। रब्राह्मा२३४णी। वा३। वृध्वा
२३४९साम्। चिदद्रिवोर२। दिवदा२३४यिवायि॥(२)
युञ्जन्तिहार२। रीआयिषा२३४यिरा। स्रगाथया२।
उरौरा२३४थायि। उरुयुगे२। वचोयू२३४जा। इन्द्र
वाहार२। सुववा२३४यिदा। हा३। ओ३हा३। ओ
३हा३। हा३४। औहोवा। आऔ३हो२३
४५॥ ८*॥ [२] २३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य
षष्ठः खण्डः †।

---

* ज० गा० १०प्र० २अ० ८सा०।

† 'अग्निष्टोम उक्थ्योक्तः। षोडशी च ब्राह्मण-समाम्नायेन छन्द-समाम्नायेन चाम्नातः। इदानीं मतिरात्रो वक्तव्यः'—इति वि०।

Digitized by Google

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ १ ॥

॥ इत्युत्तरार्च्चिके प्रथमस्यार्द्ध-प्रपाठकः ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीरबुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे प्रथमोऽध्यायः* ॥

* मूले त्वमार्धप्रपाठकः समाप्तः, नतु प्रपाठकः ; विवरणग्रन्थेऽपि तथैव ।

Digitized by Google

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्म्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥

तत्र,

पान्तमाव इति प्रथम-खण्डे—

द्व्यचात्मके प्रथमे सूक्ते,

प्रथमा ।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र ३र
पान्तमावोअन्धसइन्द्रमभिप्रगायत ।
२ ३ २ ३१२३१ २ ३ २
विश्वासाहꣳशतक्रतुम्मꣳहिष्ठञ्चर्षणीनाम् ॥ १* ॥

हे ऋत्विजः! "वः" युष्मदीयं "अन्धसः" सोमलक्षणमन्नं "आ पान्तम्" आभिमुख्येन पिबन्तं [पा पाने (भ्वा० प०); छान्दसः शपोलुक् (२, ४, ७३); 'सर्वे विधयश्छन्दसि विकल्प्यन्ते'—इति "न लोकाव्यय (२, ३, ६५)"—इति षष्ठी-प्रतिषेधाभावः; ततोऽन्धस इत्यस्य "कर्तृकर्मणोः (२, ३,

* ऋ० षा० २, २, २, १ (६ भा० २५५ पृ०) = ऋ० वे० ६, ६, १५, १।

Digitized by Google

६५)"—इति षष्ठी। षष्ठी] सोम माभिमुख्येन पिबन्त मेतादृशम् "इन्द्रम्" "अभि प्रगायत" प्रकर्षेण अभिष्टुत। कीदृशम्? "विश्वासाहं" सर्वेषां शत्रूणामभिभवितारं सर्वेषां भूतजातानां वा, अतएव "शतक्रतुं" बहुविधप्रज्ञानं बहुविध-कर्माणं वा "चर्षणीनां" मनुष्याणां "मंहिष्ठं" धनस्य दातृतमम्। यद्वा, यजमानानां यष्टव्यत्वेन पूजनीय मिन्द्रं प्रगायतेत्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ १ २ २ १ १ २ २ १ २
पुरुहूतम्पुरुष्टुतङ्गाथान्या३ऽ२३ऽ५सनश्रुतम्।
१ २ १ २
इन्द्रइतिब्रवीतन॥२*॥

हे ऋत्विग्यजमानाः! "पुरुहूतं" यज्ञेषु बहुभि राहूतं "पुरुष्टुतं" बहुभिः स्तोत्रशस्त्रादिभिः स्तुत मतएव "गाथान्यं" गानयोग्यं गातव्यं† "सनश्रुतं" सनातनया प्रसिद्धम्,‡ एवंविधं देवम् "इन्द्रइति" यूयं "ब्रवीतन" ब्रुवीध्वम् ['ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा० उ०)'—इत्यस्य लङि व्यत्ययेन (३, ४, ९८) ध्वमस्तनबादेशः, अतएव गुणः॥ २॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, १५, २।

† 'गाथानि स्तोत्र-शस्त्र मन्त्राणि, ताभिः नीयते यः स गाथान्यः तं गाथान्यम्'—इति वि०।

‡ 'सनशब्दः सदावाची, सदैव विश्रुतम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ १ २ ३१ २ ३१र २र ३१

इन्द्रइन्नोमहोनान्दातावाजानान्नृतुः।

३१ २ ३ १ २

महाँ अभिज्ञ्वायमत्॥ ३*॥ १

"इन्द्रइत्" पूर्वोक्तलक्षण इन्द्रएव "नः" अस्मभ्यं "महोनां" मघोनां धनवतां पश्वादि-लक्षण-धन-युक्तानां "वाजानाम्" अन्नानां "दाता" भवतु। कीदृशम्? "नृतुः" ["नृतिशृध्योःकूः"—इति कूप्रत्ययः, ह्रस्वश्छान्दसः] सर्वस्य नर्त्तयिता†; यद्वा [नृ नये, (क्र्या० प्० प०) औणादिक-तु-प्रत्ययः, धातोर्ह्रस्वश्छान्दसः] स्तोतृभ्यो गवादिनेता; अतएव "महान्" स इन्द्रः "अभिज्ञु" अभिगत-जानुकम्‡ अस्मभ्यम् "आ यम त्" आयच्छतु ददातु¶। यद्वा स इन्द्रः अभिज्ञु अस्मदभिमुख मागच्छत धनं स्वहस्तयोः परिगृह्य अस्मान् नयतु,—धनं गृहीत्वा अस्मभ्यं ददात्वित्यर्थः॥

"मघोनाम्"-"महोनाम्"—इति पाठौ॥ ३॥ १

२ ४ २

॥ वैतहव्यमोकोनिधनम्॥ पाऽपुन्तम्। आ३वो

४ ५ १र ० २ ५ १

३अन्धसाः। आइन्द्रामभाइ। प्रगारयार३४ता। विश्वा

---

* ऋ० वे० ६, ९, १५, ३।

† 'नृतुः नृत्योचितः'—इति वि०।

‡ 'अभिज्ञु सर्वस्य ज्ञाता'—इति वि०।

¶ 'आयमत्—यमु बन्धने, सर्वं जगत् कर्मभिः मायैर्नं ज्ञाति'—इति वि०।

२ ५ १ १ २ २ १ १ १ २

२सार२३४त्वाम्। आ३ताक्रा३त्नुम्। मᳪस्विष्ठञ्चर्ष

१ २ ५२२ ३ २ ४ २

णाइ। ना२मा२३४औहोवा॥(१) पूऽ५रुहू। ता३म्पू३

४ ५ १ २ ७ २ ५ १२

रुहू ताम्। पूरुहूताम्। पुरुहू२हू२३४ताम्। गाथा

२ ५ २ १ २ २ १ २ १ २ १

२ना२३४याम्। सा३नाश्रु३ताम्। आइन्द्रइतिब्र। वा

२ ५२२ २ ४

इ। ता२ना२३४औहोवा॥(२) आऽ५इन्द्रइत्। नो३

२ ४ ५ १ ३ ५ १२

मा३होनाम्। माइन्द्रइनो। मा२हो२३४नाम्। दा

२ ५ २ २ १ १ २२ १ २ १२

ता२वा२३४जा। ना३१ना३र्त्तूः। मादाᳪसभिज्ञु। आ।

२ ५२२ २ १११

या२मा२३४औहोवा। ओ३का२३४५ः॥ १८*॥ [१] १

अथ द्वितीयर्च्चे, प्रथमा।

२३१२ २१ २२ १२

प्रवइन्द्रायमादनᳪहर्यश्वायगायत।

१२ २१२

सखायःसोमपाव्ने॥ १†॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १८गान।

† ऋ० आ० १, ७, २, १ (१आ० ३५८पृ०) = ऋ० वे० ५, १, १५, १।

हे "सखायः" स्तोतारः! "वः" यूयं "हर्यश्वाय" हरिनामकाश्वोपेताय "सोमपाव्ने" सोमानां पात्रे "मादनं" मदकरं हर्षकरं स्तोत्रं प्रगायत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२उ   १ २   १ १ २   १ १ २ २उ ३ १ २
श꣡ꣳसे꣢दुक्थꣳसुदानवउतद्युक्षंयथानरः ।
२ ॰ ३ १ २
चकृमासत्यराधसे ॥ २* ॥

"उत" अपिच हे स्तोतः! "सुदानवे" शोभन-दानाय "सत्यराधसे" सत्यधनायेन्द्राय† "उक्थं" स्तोमं‡ "यथा नरः" अन्ये स्तोतारः¶ "द्युक्षं" दीप्तेः साधनभूतं स्तोत्रं शंसति, तद्वत् त्वमपि "शंस" उच्चारय। इदिति पूरणः§। वयमपि "चकृम" स्तोत्रं करवाम ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ५, ३, १५, २ ।

† 'सत्यराधसे—राधः अन्नं धनं वा, सत्यं वा। सत्यान्नाय, सत्यधनाय, सत्यस्वाय वा'—इति वि० ।

‡ 'उक्थं—उक्थानि सामानि, हे उद्गातः! गायस्व सामानि। अथवा उक्थं शस्त्रमुच्यते तच्छंस होतः! एकवचनं जात्यपेक्षम्, उक्थजातिं शंस।'—इति वि०।

¶ 'यथा नरः—यथा मनुष्याः। प्रथमैषा षष्ठीस्थाने द्रष्टव्या यथा मनुष्यस्य स्तुतिः क्रियते'—इति वि० ।

§ "अथ ये प्रवृत्तेऽर्थेऽमिताक्षरेषु ग्रन्थेषु वाक्य-पूरणा आगच्छन्ति पद-पूरणास्ते मिताक्षरेष्वनर्थकाः कमीमिद्विति"—इति निरु० नै० १, ९ ।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ १२उ १ १ २
त्वन्नइन्द्र वाजयुस्त्वङ्गव्यु:शतक्रतो।
१ १ २ १ २
त्वꣳहिरण्ययुर्वसो॥ ३ *॥ २ †

हे "इन्द्र!" "त्वं" "न:" अस्माकं "वाजयु:" अन्नकामो भव। हे "शतक्रतो" बहुविध-कर्म्मवन्निन्द्र! ‡ "त्वं" "न:" अस्माकं "गव्यु:" गोकामो भव। हे "वसो" वासयितरिन्द्र! त्वं हिरण्ययु:" हिरण्यकामोऽपि भव। ["छन्दसि परेच्छायामपि दृश्यते (वा० ३, २, ८)"—इति क्यच्॥ ३॥ २

॥ शात्यम्॥ प्रवइन्द्रा२। यमादा२३४नाम्। प्रवा २इन्द्रा। औ३र्वो। या२३४मा। दा३नाम्। हरा २अश्वा। औ३हो। या२३४गा। या३ता। सखा२ यासो। औ३होर। मायो२३४वा। आऽ५वोद्दा इ॥(१) शꣳसीदुक्या२म्। सुदाना२३४वाइ। शꣳसा

---

* ऋ० वे० ५, ३, १५, ३।

† 'गौरीवितेः तदेवार्षम्'—इति वि०।

‡ 'शतक्रतो—बहुभिः क्रतुभिरिष्टवान् यः स शतक्रतुः। अथवा क्रतुरिति कर्मनाम प्रज्ञानाम वा, बहुकर्मा बहुप्रज्ञोवा'—इति वि०।

Digitized by Google

१ २ १ २ ५ २ १
२इदुक्था। औ३होइ। ह्व२३४दा। ना३वाइ। उ
१ २ १ २ ५ २ १ १
ता२ह्युत्ता। औ३होइ। या२३४था। मा३राः। च
१ २ १ १ ५ ४ ५
क्ष्म। सा। औ३होइ। त्यारो२३४वा। धा५सोइहा
१ २१ २ ५ १ १
इ ॥(२) तुवन्नआ२इ। इवाजा२३४यूः। तुवा२न्नआ।
१ २ २ ५ १ २ १ २
औ३होइ। द्रा२३४वा। जा३यूः। तुवा२क्ष्व्यूः। औ
२ २ ५ २ १ १ १
३होइ। भा२३४न। का३ताउ। तुवा२ज्ञिहिरा। औ
२ १ ५ ४ ५
३होइ। त्यायो२३४वा। वा५सोइहाइ(३) ॥१८*॥[१]२

अथ तृतीयतृचे, प्रथमा।

३१२ २ १२३१ २३ २१ १२
वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तःसखायः।
१२ ३२ ३१२
कण्वाउक्थेभिर्जरन्ते ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र!" "त्वायन्तः" त्वामात्मन इच्छन्तः "सखायः" समानख्याना वयं "तदिदर्थाः" यद्विषयं स्तोत्रं तत्तदित्, तदेवार्थः

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १८गा०।

† छ० आ० २, १, २, २ (१भा० ८३० पृ०)=ऋ० वे० ५, ७, १०, १।

प्रयोजनं येषां ; तादृशाः सन्तः “त्वा” त्वां “जरामहे” स्तुमहे। “उ”—इति पूरणः। “कण्वाः” कण्वगोत्रोत्पन्नाः अस्मदीयाः पुत्रादयश्च “उक्थेभिः” उक्थैः शस्त्रैः “जरन्ते” त्वां स्तुवन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ १ ३ १ २
नघेमन्यदापपनवज्रिन्नपसोनविष्टौ।
२उ ३र १ २
तवेदुस्तोमैश्चिकेत ॥ २ * ॥

हे “वज्रिन्” वज्रवन्निन्द्र! “अपसः” अपस्विनः कर्मवतः† “तव” सम्बन्धिनि‡ “नविष्टौ” अभिनवे यागे वर्त्तमानोऽहं “अन्यत्” त्वद्विषयादन्यत् स्तोत्रं “नघेम्”¶ नैव “आपपन” अभिष्टौमि [पनतेः स्तुतिकर्म्मणः (भ्वा० आ०) उत्तमे णलि रूपम्]; “तवेदु” तवैव “स्तोमैः”§ स्तोमं स्तोत्रं “चिकेत” अभि जानामि‖ त्वामेव सर्वदा स्तौमीत्यर्थः ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ५, ७, २०, २।

† “अपस्”—इति कर्मनामसु प्रथमं नैघण्टुकम् (२, १, १)।

‡ ‘तव—षष्ठी वा द्वितीयार्थे दृष्टवा त्वां ० • • चिकेत’—इति वि०।

¶ ‘अ, घ, ईम्’—इति त्रयोऽप्येते उपसर्गाः’—इति वि०।

§ ‘स्तोमैः—ऋतुभिः’—इति वि०।

‖ ‘चिकेत—चेतनां कुर्म्मः’—इति वि०।

अथ तृतीया।

२१ २३१ २ २ ३ १र २र
इच्छन्तिदेवाःसुन्वन्तन्नस्वप्नायस्पृहयन्ति।

१ २३१ ३११
यन्तिप्रमादमतन्द्राः॥ ३ *॥ ३ †

"सुन्वन्तं" सोमाभिषवं कुर्वन्तं यजमानं "देवाः" इन्द्रादयः सर्वे "इच्छन्ति" रक्षितुम्, "स्वप्नाय न स्पृहयन्ति" स्वप्नायस्थालस्य सुन्वतो नेच्छन्ति सर्वदा प्रवृद्धमेव कुर्वन्तीत्यर्थः ["स्पृहेरीप्सितः (१, ४, ३६)"—इति कर्म्मणि चतुर्थी; स्पृहईप्सायां चुरादिरदन्तः]। यतएव मतः कारणात् "अतन्द्राः" अनलसा देवाः "प्रमादं" प्रकर्षेण मदकरं‡ तदीयं सोमं "यन्ति" शीघ्रं प्राप्नुवन्ति॥ ३॥ ३

५ २ ३र ५ १र
॥ काण्वम्॥ वयमूइत्वातदिदर्थाः। ऐहिहा२

१ र र र २१ २ ३
इ। वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तःसखार३याः। कार

५ १ २१ ५ १
३४यवाः। ऊ। क्याइ। भिउर्जी२३४वा। रन्ता३या

१११ ५र२ ४र ५ १र १र
र३४५॥(१) नघेमा३न्यदापपना। ऐहिहा२इ। नघे

* ऋ० वे० ५, ७, २०, ३।

† 'अथ काण्वं साम। कण्वस्यार्षम्'—इति वि०।

‡ 'प्रमादं—मदमोदतृप्तावित्यस्येदं रूपम्। प्रकर्षेण तप्यम्'—इति वि०।

र र २१ २ ३ ५
मन्यदापपनवज्रिन्नपसोनवा२३इष्टाउ। ता२ ३ ४ वेत्।
१ र २र१ ५ २र १ १ १ १
ऊ। स्तो। मैष्वो२३४वा। वोता ३ या २ ३ ४ ५॥(२)
५ २ ४र र ५ १र १ र र
इच्छन्ता३इदेवाःसुन्वन्ताम्। ऐहिया२इ। इच्छन्तिदेवाः
र २१ २ ३ ५ १ र
सुन्वन्तन्नस्वप्नायस्पृहया२३न्तो। या२३४न्तो। प्रा। मा।
२१ ५ २ १ १ १ १
दमो२३४वा। तन्द्रा३या२३४५(३)॥ २० *॥ [१] ३

अथ चतुर्थऋचे, प्रथमा।

१२ ३१२ ३१र २र ३ १र
इन्द्रायमद्वनेसुतम्परिष्टोभन्तुनोगिरः।
३१२ ३ १२
अर्कमर्चन्तुकारवः॥ १ †॥

"मद्वने" [माद्यतेः (दि०, प०) क्वनिप्] मदनशीलाय "इन्द्राय" तदर्थं "सुतं" सोमं "नः" अस्मदीयाः "गिरः" स्तुतिलक्षणा वाचः परिष्टोभन्तु [स्तोभतिः स्तुतिकर्म्मा (निघ० ३, १४, ४)] सोमं स्तुवन्तु। ततः "कारवः" स्तुतिकारिणः स्तोतारश्च "अर्कं" सर्वैरर्चनीयं सोमम् "अर्चन्तु" पूजयन्तु॥ १॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० २० सा०।

† ऋ० चा० २, ३, २, ४ (१भा० ३६२ पृ०)—ऋ० दे० ६, ६, १८, ४।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
यस्मिन्विश्वा अधिश्रियोरणन्तिसप्तसꣳसदः ।

१ २ ३ १ २
इन्द्रꣳसुतेहवामहे ॥ २ * ॥

"यस्मिन्" इन्द्रे "विश्वाः" सर्वाः "श्रियः" कान्तयः "अधि" अधिकं भवन्ति अतिशयेन तेजस्वीत्यर्थः† । किञ्च "सप्त" सप्तसङ्ख्याकाः "संसदः" सम्यग् यज्ञेषु कर्म्मकरणार्थं सीदन्तीति संसदो होत्रकाः‡ यस्मिन् "रणन्ति" सोमप्रदानार्थं रमन्ते; यद्वा यं शब्दयन्ति स्तुवन्ति तं पूर्वोक्तलक्षणम् "इन्द्रं" "सुते" सोमेऽभिषुते सति "हवामहे" वयं सोमपानायाह्वयामः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिकद्रुकेषुचेतनन्देवासोयज्ञमत्नत ।

१ २र ३ १ २
तमिद्वर्द्धन्तुनोगिरः ॥ ३ ¶ ॥ ४ §

---

* ऋ० वे० ६, ६, १८, ५ ।

† 'अधिश्रियः—ये अधिश्रिताः मनुजाः'—इति वि० ।

‡ 'सप्तसंसदः—सप्तर्त्विजः ; यथ उद्गातारः, होता, मैत्रावरुणः, ब्राह्मणाच्छंसि, अच्छावाकः—एते ऋत्विजः'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ६, ६, १९, १ ।

§ 'अत्र श्रौतकक्षं साम'—इति वि० ।

"देवासः" देवाः इन्द्रादयः "त्रिकद्रुकेषु" आभिप्लविकेष्वहःसु ज्योतिर्गौरायुरिति त्रिकद्रुकाः,* तेषु "चेतनं" [चिती संज्ञाने (भ्वा०, प०)] चेतन्ति जानन्ति अनेन स्वर्गादिकमिति चेतनो ज्ञानसाधनो यज्ञः तम् "अतत" अतन्वत स्वैः स्वैः कर्मभिः पालनैश्च विस्तारितवन्तः [तनु विस्तारे (तना०, उ०) लङि "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति विकरणस्य लुक्, "तनिपत्योश्छन्दसि (६, ४, ९९)"—इति उपधालोपः "तमित्" तमेव यज्ञं "नः" अस्माकं "गिरः" स्तुतिलक्षणा वाचः "वर्द्धन्तु" वर्द्धयन्तु ॥ ३ ॥ ४

१ र २ १ २र १ २र १ १
॥ श्रौतकक्षम् ॥ इन्द्रायमद्वनेसुतम्। इन्द्रायमोवा।
१ २ १ १ २र १ २ १
हा३नायिह्व३ताम्। परिष्टो। भार२। हा३हा३।
१ २ ५ १ २ २ २ १र
ह्वनोरेंगार२३४इराः। आमश्चर्को३। हा३हा। तुका
२ १ २ १ र २ १ २ १
रा२३वा३४३ः ॥(१) यस्मिन्विश्वाअधिश्रियः। यस्मिन्विश्वो

* ज्योतिर्गौरायुरितीति चतुर्थ-पञ्चम-षष्ठानां नाभिप्लविकानां मध्ये नाम्नां प्रतीकमात्रम्। अस्ति गवामयनादिकं सत्रम्; तत्र, एकषष्ठ्युत्तरत्रिशतदिननिर्वर्त्यं भवति। तत्र, प्रायणीयोऽतिरात्रनाम प्रथममहः, चतुर्विंशनाम द्वितीयमहः, उक्थ्यनाम तृतीयम्, ज्योतिर्गौः चतुर्थमहः, आद्गौः पञ्चममहः, आयुर्ज्योतिरितिनामकं षष्ठमहः, एतान्येव षडहानि आभिप्लविकान्युच्यन्ते; तेष्वेषु शेषाख्यानि चतुर्थादीनि त्रीणि त्रिकद्रुकाणीति।

Digitized by Google

वा। आ३धायिआ३याः। रणन्ति। सा२३। हा३हा

३। प्रासा२९सा२३४दाः। आइन्द्र९सुते३। हा३हा

यि। प्रवामा२३हा३४३यि॥(२) त्वकङ्कुकेषुचेतनम्*।

त्व†कङ्कुकोवा। पू३र्व्यायिता३नाम्। देवासः। या२३।

हा३हा३। मामा२र्त्ता२३४ता। तामिद्दर्त्ता३। हा३

हा। तुनोगा२३यिरा३४३ः। औ२३४५इ। डा॥(३)॥१‡॥[१]४

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

प्रथमः¶ खण्डः॥ १॥

---

*, † "त्वि"—इति ख० पु० पाठः।

‡ ऊ० गा० २प्र० १अ० १सा०।

¶ 'उक्तः प्रथमपर्य्यायः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीयखण्डस्य*—

प्रथम-तृचे, प्रथमा ।

२१ २ ३ २ ३ १२३ १ २३१ १ २

अयन्तइन्द्रसोमोनिपूतोअधिबर्हिषि ।

१ २ ३ २उ ३ १ २

एहीमस्यद्रवापिब ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र !" "ते" तुभ्यं त्वदर्थम् "अयं सोमः" "बर्हिषि अधि" वेद्यामास्तीर्णे दर्भे "निपूतः" नितरां दशापवित्रेण शोधितः अभिषवादिसंस्कारैः संस्कृत इत्यर्थः । "ईम्" इदानीम् "अस्य" इमं सोमं प्रति "एहि" आगच्छ । आगत्य च यत्र रसात्मकः सोमो ह्रियते तं देशं "परिद्रव" शीघ्रं गच्छ, तदनन्तरं सोमं "पिब" ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २३ १ २ ३ १र २र ३ २

शाचिगोशाचिपूजनायꣳरणायतेसुतः ।

१ २ ३ १ २

आखण्डलप्रहूयसे ॥ २‡ ॥

"शाचिगो" [शाचयः शक्ता गावो यस्यासौ शाचिगुः; यद्वा, शच् व्यक्तायां वाचि (भ्वा०,आ०), अस्मादौणादिक इञ् प्रत्ययः]

* 'इन्द्र मौ मध्यमोऽभिधीयते'—इति वि० ।

† ऋ० आ० २, २; २, ५ (१भा० ३६५पृ०)=ऋ० वे० ६, ८, २४, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, १, २४, २ ।

अध्रयः व्यक्ताः प्रख्याता गावो रश्मयो वा यस्य तादृश ! * हे "अध्रिपूजन" [पूज्यतेऽनेनेति पूजनम्] स्तोत्रादि-प्रख्यात-पूजन ! † "ते" तव "रणाय" रमणाय सुखजननाय "अयं" सोमः "सुतः" अभिषुतः ; अतः कारणात् हे "आखण्डल" शत्रूणामाखण्डयितः इन्द्र ! ‡ "अह्वयसे" प्रकृष्टाभिः स्तुतिभिराह्वयसे। इत आगत्य इमं सोमं पिबेत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २　　　　३ १ २　　　　३ १ २
यस्तेशृङ्गवृषोणपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः ।
२र　　३ १र　२र
न्यस्मिन्दध्रआमनः ॥ ३ ¶ ॥ ५ §

हे "शृङ्गवृषोणपात्" [शृङ्गवृषनामा कश्चित् ऋषिः तस्य चेन्द्रः स्वयमेव पुत्रतया जज्ञे—इत्याख्यायिका। नपादित्यपत्यनाम] हे शृङ्गवृष-पुत्र ! [शृणन्ति हिंसन्तीति शृङ्गाणि-रश्मयः, तैर्वर्षतीति शृङ्गवृडादित्यः, तस्य न पातयितः स्वकीये
१ ऽवस्थानेऽवस्थापयितः !] । "सुबामन्त्रिते (२, १, २)"—इति षष्ठ्यन्तस्य पराङ्गवद्भावेनामन्त्रितानुप्रवेशात् समुदायस्याष्टमिकं

---

* 'अध्रीति कर्मनाम, कर्मणि प्रयुक्ता गावः प्रदीयन्ते यस्य असौ अध्रिगुः'—इति वि०।

† 'अध्रिपूजनः—कर्मणि पूज्यते अध्रिपूजनः'—इति वि०।

‡ 'आखण्डलः—इन्द्रस्य नामैतत्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, १, २४, ३।

§ 'अत्र दैवोदासौर्द्ध सप्तमौ। दैवोदासमशौचे, और्द्धसद्मनं सत्रे एकारे।' —इति वि०।

Digitized by Google

सर्वानुद्रावत्वम्। ईदृश!] हे इन्द्र! "ते" तव सम्बन्धि "प्रणपात्" प्रकर्षेण नपातयिता रक्षिता, "कुण्डपाय्यः" [कुण्डैः पीयते अस्मिन् सोम इति कुण्डपाय्यः क्रतुविशेषः। "क्रतौ कुण्डपाय्य-सञ्चाय्यौ (३, १, १३०)"—इति पिबतेरधिकरणे यत्-प्रत्ययो युगागमश्च निपात्यते—एतत्संज्ञो यः] क्रतुरस्ति; "अस्मिन्" कुण्डपाय्य-क्रतौ "मनः" स्वान्तं "आ नि दध्रे" अभितो वर्त्तमानाः कुण्डपायिनामान ऋषयः पुरा निदधिरे सम्यक् त्वद्देवत्यं क्रतुमनुष्ठितवन्त इत्यर्थः। [दधातेर्लिटि "इरयोरे (६, ४, ७६)"—इति रे-भावः*॥ ३ ॥ ५

४ ३ ४ ३ ५ १
॥ रात्रिर्दैवोदासम् † ॥ अयन्तइन्द्रसो ऽ४मः। नार३

२५र ४ ५ ४५ १ र र २ १ २
४यि। पूतोअधिवर्हिषी। निपूतोअधिवर्हा २ ३ षिषी।

२ १ १ १र ३र ४
ऐहीयिमार३स्या। द्रवापार३४५यिवाई५६ ॥(१) आचि

र ३र ४५र ३ २ १ ५र र ४ ५
गोआचिपू। जना३। आ२३४। यच्छरणायतेसुताः।

---

* अथैवं व्याचष्टे विवरणकार-माधवः—"यः" "ते" तव हे सोम! "नपात्" न पिबति तस्य हवा अन्न; "प्रणपात्" प्रणिपत्य श्रद्धया पातव्यः। "कुण्डपाय्यः" अथ कुण्डाख्यमत्राः कुण्डप्रतिरूपाः तैः पीयते कुण्डपाय्यः। अथवैतानीन्द्र-विशेषणानि। प्रकृष्टान् हयः प्रधानभूतो गौः, तादृश इन्द्रः; तस्य यः प्रकर्षेण सोमपानं कल्पयति कुण्डाकारैश्चमसैरितरैश्च। नि अस्मिन् दभ्रे, नि-शब्दो न-शब्दस्यार्थे द्रष्टव्यः; न अस्मिन् यजमाने दभ्रे धारयति इन्द्रः आत्मीयं मनः अनुपदाय?"—इति।

† 'रात्रीं वा दैवोदासम्'—इति क० पु० पाठः।

Digitized by Google

२१ र २१र २ र १ २ १र
अयᳪं रणायतेह्य२३ता: । आखण्डा२३ला । प्रहूया२३४५

२४र ५ २२ १
साई५ई यि ॥(२) यस्तेश्टङ्गवृषः । नपा३त् । प्रा२३४ ।

५र र ४५ १ र २१र १ १
णपात्कुण्डपायियाः । प्रणपात्कुण्डपाया२३याः । निय

१ १र २
स्मा२३ यिन्दा । ध्र्वामामा २३४५ना ई ५ ६ः । ई२

५
३४ द्वा३) ॥ २ * ॥ [१]

२१ १ १र १ १ १
॥ और्ध्वसद्मनम् ॥ अयन्तइन्द्र सोमः । उवाद्धायि ।

१रर १ रर
निपूतोअधिबर्हिष्युवा२३द्धोयि । निपूतोअधिबर्हिष्युवा२३

१ २र १ २ ३
द्धोयि । आयिद्धोमस्या । द्रावापा२३४५यिवाई५ई ॥(१)

१र १र १र २र १ १ १ र र
आचिगोआचिपूजन । उवाद्धायि । अयᳪं रणायतेसुत

१ २ १ २ १
उवा२३द्धोयि । (वार२) । आखण्डला । प्राहूया२३४५

१र २ र र १ २ १
साई५ई यि ॥(२) यस्तेश्टङ्गवृषोणपात् । उवाद्धायि । प्रण

र र १ २ १
पात्कुण्डपाय्यउवा२३द्धोयि । (वार२) । नायस्मिन्दा ।

---

* ऊ० गा० १प्र० २ख० २सा०

२ ३ १ १ २ १२ २ १ ३ २
धाआमा२३४५ना६५६:। सुवृक्तिभिर्न्मादनम्भरे२षुवा
१ऽ(३)॥ ३ *॥ [२] ५

अथ द्वितीयतृचे, प्रथमा।

१२ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ १२
आतूनइन्द्रक्षुमन्तञ्चित्रङ्ग्राभंसङ्गृभाय।
३ १२ १२
महाहस्तीदक्षिणेन॥ १ †॥

हे "इन्द्र!" त्वं "महाहस्तो" महाहस्तवान्, तदानीमेव "नः" अस्मदर्थं "क्षुमन्तं" शब्दवन्तं स्तुत्यमित्यर्थः। "चित्रं" चायनीयं "ग्राभं" ग्राहकं ग्रहणार्हं वा धनं "दक्षिणेन" हस्तेन "तु" क्षिप्रं "आ सङ्गृभाय" आभिमुख्येन सङ्गृहाण॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १२ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
विद्माहित्वातुविकूर्मिन्तुविदेष्णन्तुवीमघम्।
३ १२ १२
तुविमात्रमवोभिः॥ २‡॥

---

* ऊ० गा० १प्र० २ख० ३सा०।

† ऋ० आ० १, २, ३, ३ (१भा० ३०९ पृ०)=ऋ० वे० ६, ५, २७, १।

‡ ऋ० वे० ६, ५, २७, २।

हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "विद्म हि" जानीमः खलु। कीदृशम्?—इति, "तुविकूर्म्मिं" बहुकर्म्माणं, * "तुविदेष्णं" बहुप्रदेयं, † "तुविमघं" बहुधनं "तुविमात्रं" बहुप्रमाणम् "अवोभिः" रक्षणैर्युक्तम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २र ३ १र २र ३ १ २
नहित्वाशूरदेवानमर्त्तासोदित्सन्तम्।
३ १उ ३ १ २
भीमन्नगांवारयन्ते ॥ ३ ‡ ॥ ६ ¶

हे "शूर!" "दित्सन्तं" दातुमिच्छन्तं "त्वा" त्वां "देवाः" "न हि वारयन्ते" न निवारयन्ति खलु; तथा "मर्त्तासः" मनुष्या अपि न वारयन्ते "भीमं न गां" भयजनकं दृप्तं वृषभं यव्से प्रवृत्तमिव, तं यथा वारयितुं न शक्नुवन्ति तद्वत् ॥ ३ ॥ ६

१र र २१ २ १
॥ आकूपारम् § ॥ आहुनइ। इन्दुमाइन्ताम्। चि

---

* 'तुविकूर्म्मिं' तुविशब्दो बहुवाची, कूर्म्मिशब्दो मनुष्यवाची कर्म्मवाची वा इति वि०। "तुवि"—इति निघण्टौ बहुनामसु द्वितीयं पदम् (३, १)। कूर्म्मिशब्दस्तु मनुष्यनामसु कर्म्मनामसु वा पठितो न दृश्यते।

† 'तुविदेष्णं'—देष्णं दानं बहुदानम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ५, ३७, ३।

¶ 'अवाकूपारं साम। आकूपाराङ्गिरसी गोधा च आर्षम्'—इति वि०।

§ 'राज्ञाकूपारम्'—इति ख० पु० पाठः।

Digitized by Google

१ र १ १ १ र १
त्वङ्ग्राभꣳसङ्गृभा २या। चित्वङ्ग्राभꣳसम्। गृ। औ३

२ २ ५ २र १ र र १
होयि। भा२३४या। ऐहोयि। महाहस्तीदक्षा२३हो

२र १ ३र ५ ४ ५
यि। औहो। वाहो२३४वा। णाऽ५यिनोऽ६हायि॥(१)

१ १र र १ १ १र र १
विद्माहित्वातुवि। कू३र्मीम्। तुविदेष्णन्तुवीमा २घाम्।

१ १ र २ २ ३ ५
तुविदेष्णन्तु। वा। औ३होयि। मा २ ३ ४घाम्। ऐ

१ र १ २र १ १र
होयि। तुविमात्रमार३होयि। औहो। वाहो २ ३

५ ४ ५ १ र र २
४वा। वोऽ५भोऽ६हायि॥(२) नहित्वाशूर। दा३यि

२ १ र र १ र १
वाः। नमर्त्तासोदित्सा २न्ताम्। नमर्त्तासः। दा। औ

२ २ ५ २र १ र र १
३होयि। त्सा२३४न्ताम्। ऐहोयि। भीमन्नगांवारा२

१ २र १ १र ५ ४
३ होयि। औहो। वाहो २ ३ ४ वा। याऽ५ न्तो ६

५
हायि(३)॥ ४ *॥ [१] ६

---

* ज० गा० १प्र० २ख० ४सा०।

अथ तृतीयतृचे, प्रथमा।

२ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २

अभित्वावृषभासुतेसुतꣳसृजामिपीतये।

३ १ २ ३ १ २

तृम्पाव्यश्नुहीमदम्॥ १ *॥

हे "वृषभ" हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "सुते" सोमेऽभिषुते सति "सुतम्" अभिषुतं सोमं "पीतये" पानाय "अभिसृजामि"। "तृम्प" तृप्य। "मदं" मदकरं सोमं "व्यश्नुहि" च॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ २ २ ३ १ २

मात्वामूराअविष्यवोमोपहस्वानआदभन्।

१ २ ३ १ २

माकींब्रह्मद्विषंवनः॥ २ †॥

हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "मूराः" मूर्खा मूढाः, मनुष्याणाम‡ "अविष्यवः पालनकामाः "मा दभन्" मा हिंसन्तु। "उपहस्वानः" उपहसनपराश्च "मा" भवन्तु। "ब्रह्मद्विषं" ब्राह्मणानां द्वेष्टारं "मा कीं वनः" मा भजेथाः ¶॥

"ब्रह्मद्विषं"-"ब्रह्मद्विषः"—इति पाठौ॥ २॥

---

* छ० आ० १, २, २, ७ (१भा० ३३८ पृ०)=ऋ० वे० ६, ३, ४६, १।

† ऋ० वे० ६, ३, ४६, २।

‡ आत्मपरिवारमात्राणामिति भावः।

¶ 'वनः—यद्यपि वनतिः स्तुति-कर्मा तथाप्यत्र सम्भजने द्रष्टव्यः; मा यष्टेन सम्भज्यताम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

२ १ ३ १ २ २ १ २ २ १ २
इहत्वागोपरीणसम्महेमन्दन्तुराधसे।
१ २ ३ १२ १२
सरोगौरोयथापिब॥ ३ *॥ ७ †

हे इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "इह" अस्मिन् यज्ञे "गोपरीणसं" गव्येन पयसा सम्मिश्रं सोमं ‡ "महे" महते "राधसे" धनाय ¶ "मन्दन्तु" मनुष्या मादयन्तु। त्वञ्च सोमं "यथा" "गौरः" मृगः "सरः" § पिबति, तथा "पिब" ‖॥

"परीणसं"-"परीणसा"—इति पाठौ॥ ३॥ ७

२ १ २र र १र २ १ २
॥ आर्षभम्॥ अभित्वावृषभासुते। सुतꣳसृजामि पी
र १ १ २र १र २ १
मिपीतायाꣳरयि। सुतꣳसृजामि। पीताऽ३यायि। त्वा

---

* ऋ० वे० ६, ३, ४६, ४। † 'अथ आर्षभं साम'—इति वि०।

‡ 'गोपरीणसम्—गावः परि समन्तात् नीयन्ते दक्षिणा यस्य स गोपरीणस इन्द्रः'—इति वि०।

¶ राधसे—राधः अन्नं सोमलक्षणं तस्मिन् सन्निधानभूते सोमे—इति वि०।

§ 'सरः सरणं कृत्वा'—इति वि०। "सरः"—इति निघण्टौ उदकनामसु षड्विंशतमं पदम् (१, १२)।

‖ 'गौरः यथापिब—तथाच ब्राह्मणे—"गौरमृगो ह स्म भूत्वा ऽरण्याद्धाकानं पिबति"—इति'—इति वि०।

२ १ १ २ ५ र २ र १ र १ १ १ १
२३म्या३। वा२या२३४औहोवा। श्रुद्दीमदा२३४५म् ॥(१)

१र र २र१र २ १ २र १ २ र १
माल्वामूराअविष्यवः। मोपह्खोवा। नआदाभा२न्।

१र२ १ १र १र २ १ २ १
मोपह्खानः। आदा२३भान्। मा२३की३म्। आ२

२ ५र र २ १२१११११ २१ २र१र २र
आ२३४औहोवा। द्विषवना२३४५ः॥(२) इह्त्वागोपरो

र १ २ र १ १र २
णसम्। मह्मेमन्दोवा। तुराधासा२यि। मह्मेमन्दन्तु।

१र २ १ २ १ २ ५र र
राधा२३सायि। सा२३रा३ः। गौ२रा२३४औहोवा।

२ र १ २ १ १ १ १
यथापिवा२३४५(३) ॥ ५ * ॥ [१] ७

अथ चतुर्थखण्डे—प्रथमा।

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इदंवसोसुतमन्धःपिबासुपूर्णमुदरम्।

१ २ ३ १ २
अनाभयिन्नरिमाते ॥ १ † ॥

हे "वसो" वासयितरिन्द्र! "इदं" पुरोवर्त्तमानं "सुतम्" अभिषुतम् "अन्धः" अन्नं सोमलक्षणं "पिब"। यथा—"उदरं"

---

* ऊ० गा० १प्र० २ख० ५गा०।

† छ० आ० २, १, ३, १० (१भा० २०५ पृ०)=ऋ० वे० ६, ७, १७, १।

"त्वदीयं" जठरं "सुपूर्णम्" अतिशयेन सम्पूर्णं भवति तथे-त्यर्थः। हे "अनाभयिन्" [आ समन्तात् बिभेति—इत्याभयी; बिभेतेरौणादिक इनिः; न आभयी अनाभयी तादृश!] हे इन्द्र! "ते" तुभ्यं त्वदर्थं "ररिम" उक्तलक्षणं सोमं दद्मः [रादाने (अदा०, प०) छान्दसो (३,२,१०५) लिट्॥१॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १उ ३ १ २ २ १ ३ १ २
नृभिर्धौतःसुतोअश्नैरव्यावारैःपरिपूतः।
२ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
अश्वोननिक्तोनदीषु॥२ *॥

"नृभिः" अध्वरस्य नेतृभिः ऋत्विग्भिः "धौतः" तृणाद्य-पनयनेन शोधितः [यद्वा; धौतः धूतः आधूतः, अदाभ्यग्रहे† आधूननेन संस्कृतः, तदनन्तरम् "अश्नैः" अश्मभिर्ग्रावभिः करण-भूतैः "सुतः" अध्वर्युभिष्षुतः ततः "अव्यावारैः" अविमेष-

* ऋ० वे० ५, ७, १७, १।

† ग्रहः=गृहीतसोमं सोमपात्रपात्रम्। ते च प्रातःसवने उपांश्वन्तर्यामादयः, माध्यन्दिने सवने मरुत्वतीयादयः, तृतीयसवने आदित्यादयः। किञ्चैतदतिरिक्ताः षोडश्यादि-यागविशेषे निगृह्यन्ते सन्ति ग्रहाः षोडश्यादयः। तत्सर्वातिरिक्त एकोऽदाभ्यनामकः; स च यजमानोदुम्बरे पात्रे अंशूंस्त्रीनवधाय सोमगृहीतस्थाने निधायाधूनन्नेव गृह्यते। तत्र अभिषवस्थाने मन्त्रैः क्रमेण गृह्यते विधिरयमेतत् कात्यायनेन "अदाभ्यं गृहीत्वाधिभवने निधायाधः पात्रे अंशूनवधायाध्वर्यवे त्वा गायत्रच्छन्दसमिति (श० ब्रा० ८, ४७) प्रतिमन्त्रमुपयामः सर्वत्राविशेषात् (१२, ५, १२-१५)"—इति।

Digitized by Google

तत्सम्बन्धिभिः वालैः "परिपूतः" शोधितः, दशापवित्रस्य नाभिपूततया अग्रीसुकया हि सोमः परिपूयते ; तदुक्तम् भगवता आपस्तम्बेन—"शुक्लामूर्णास्तुकां यजमानाय प्रयच्छति तां प्रकटे दशापवित्रस्य नाभिं कुरुते शुक्लस्य लक्ष्णः पवित्र मोतं भवति"—इति *। "नदीषु" नदनाखण्डु † "अश्वोन" अश्व इव "निक्तः" निर्णिक्तः शोधितः ‡ ; यथा अप्सु स्नातो अश्वः अपगतमलः सन् दीप्तो भवति, एवं वसतीवर्याख्याभिरद्भिरभिषुतः सोमो दीप्तो भवतीत्यर्थः। ईदृशो यः सोमः "तन्तेयवम्"—इत्युत्तरया सम्बन्धः॥

"धौतः"-"धूतः"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २   ३ १ २

तन्तेयवंयथागोभिःस्वादुमकर्मश्रीणन्तः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २

इन्द्रत्वास्मिन्त्सधमादे॥ २ ¶ ॥ ८ §

"तं" पूर्वोक्तगुणं सोमं हे इन्द्र! "ते" त्वदर्थं "यवं यथा" यवमयं सवनीय-पुरोडाशमिव "गोभिः" गवि भवैः क्षीरादिभिः

---

* स्पष्टचैतत् समस्तं यजुर्वाजसनेयि-संहितायां सप्तमाध्यायचतुष्टये।

† 'नदीष—वसतिवरीभूतासु'—इति वि०।

‡ 'निक्तः—स्नातः'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ५, ७, १७, २।   § 'अव गारं धाम'—इति वि०।

Digitized by Google

अपअद्रव्यैः "श्रीणन्तः" मिश्रीकुर्वन्तः "स्वादुं" रसवत्त्वेनास्वादनीयम् "अकर्म्म" अकार्ष्म * [करोतेर्लुङि "मन्त्रे घस (२, ४,८०)"—इति च्लेर्लुक्]। यस्मादेवं तस्मात् हे "इन्द्र!" "त्वा" त्वां तादृशं सोमं पातुम् "अस्मिन्" वर्त्तमाने "सधमादे" सहमादने यज्ञे आह्वयामीति शेषः॥ ३॥ ८

१ र २ र रऽ १
॥ गारम् ॥ इदंवसोसुतमन्धा३ए। पिबासुपू३र्णा

० २र २ १ र र ० २र २ १
मुदरौ। हो३वा। पिबासुपूर्णामुदरौ। हो३वा। आ

२ २ १ २र १ २ ४ ५ २ र
नाभा३यीन्। ररिमाता। औ३होवा॥(१) नृभिर्धौ

र २ र र रऽ १ ७र २र २
तःसुतोअश्ना३यिरे। अव्यावारै३ःपारिपूतौ। हो३वा।

१ र र र ७ र २र २ १ २ २ १र
अव्यावारैःपारिपूतौ। हो३वा। आश्वोना३नौ। क्तो

२र १ १ ४ ५ १ र र र २ र
नदीषू। औ३होवा॥(२) तन्तेवयंयथागोभी३रे। स्वा

१ ७र २र २ १र ७र २र
दुमका३र्माश्रीणन्तौ। हो३वा। स्वादुमकर्माश्रीणन्तौ।

* 'यवं यथा गोभिः स्वादुम् अकर्म्म श्रीणन्तः। गोभि रिति तृतीया-बहुवचनं चतुर्थी-बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्। गोभ्यः यवं यथा, गोभ्यः स्वादुमाघासयति तद्वत् तथापि सोमम् अकर्म्म करवाम। श्रीणन्तः मेलयन्तः, अथवा...।'— इति वि०।

  २   १   १ २   १ २र १   २ ४
होवा। आइन्द्रात्वा३स्मीन्। सधमादा। औहो
 ५   ५
वा। होऽ५ई। डा॥६*॥[१]८

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य
द्वितीयः खण्डः॥२॥

अथ तृतीय-खण्डे—

प्रथमतृचे, प्रथमा।

२ १र   २र ३ १ २
इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानाम्पते।
२ ३ २   १ २
पिबात्वाऽ३स्य गिर्वणः॥१†॥

हे "राधानां पते" धनानां स्वामिन्! "गिर्वणः" गीर्भिः स्तुतिभिः वननीय! हे इन्द्र! "ओजसा" बलेनावहितः त्वम् "इदम् अनु" अनेनानुक्रमेण उद्देशानुक्रमेणेत्यर्थः; "सुतम्" अभिषुतम् "अस्य" इमं सोमं "नु" क्षिप्रं "पिबहि"॥१॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० ६गा०।

† ऋ० चा० १, २, ३, १ (१भा० २०५पृ०)=ऋ० वे० ३, ३, १६, ५।

अथ द्वितीया।

१ २ १ २ ३ १र २र ३ १र २र ३क २र
यस्तेअनुस्वधामसत्सुतेनियच्छतन्वम्।
१ २
सत्वाममत्तुसोम्य* ॥ २ † ॥

हे इन्द्र! "ते" त्वदर्थं "यः" सोमः "स्वधाम्" अन्नम् "अनु" स्तुत्य ग्रावभिः अभिषुतः "असत्" भवेत् [अस्तेर्लेटाडागमः। यद्वृत्तयोगाच्च निघातः (८,१,६६), आगमस्यानुदात्तत्वे धातुस्वरः (६,१,१६२)]। "सुते" तस्मिन् सोमे "तन्वं" ‡ स्वकीयं शरीरं "नियच्छ" प्रेरय "सः" सोमः हे "सोम्य" सोमार्ह ¶! "त्वा" त्वां "ममत्तु" मादयतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
प्रतेअश्नोतुकुक्ष्योःप्रेन्द्रब्रह्मणाशिरः।
३ २ ३ १ २ १
प्रबाहूशूरराधसा ॥ ३ § ॥ ९ ‖

---

* "सोम्यम्"—इति क-पाठः। † ऋ० वे० ६, ७, १६, ६।

‡ "छन्दस्युभया (६, ४, ८६)"—इति सूत्रेण "तन्वादीनां छन्दसि बहुलम्"—इति वार्त्तिकवचनेनोवङोवैकल्पिकत्वं बोध्यम्।

¶ "सोम्य—सोमानां स्वामिन् पते!"—इति वि०। "सोममर्हति यः (४, ४, १३७)"—छान्दसो योऽत्र साधवमते प्रयुज्यते।

§ ऋ० वे० ६, २, १६, ७।

‖ 'अत्र ब्रह्मप्राग्निधनं साम'—इति वि०।

Digitized by Google

हे "इन्द्र !" "सः" सोमः "ते" तव "कुक्ष्योः" कुक्ष्योरुभयोः पार्श्वयोः "प्राश्नोतु" प्रकर्षेण व्याप्नोतु [अशू व्याप्तौ विकरणस्य (स्वा०,आ०) लोटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् (३,१,८५) निघातः (८,१,७०)] तथा "ब्रह्मणा" स्तोत्रेण सहितः * स सोमः "शिरः" शरीरम् [अवयविना अवयवो लक्ष्यते] त्वच्छरीरं प्राप्नोतु। हे "शूर" विक्रान्तेन्द्र ! "राधसा" धनेन निमित्तेन तव "बाहू" अपि प्राप्नोतु॥

"राधसा"–"राधसः"—इति पाठौ॥ ३॥ ९

॥ घृतश्चुन्निधनम्॥ इदꣳह्यन्व३ओजसा। सुतꣳ राधा। नाम्पातौ। होवा३हायि। पिबातुव। स्यगा यिर्वाणौ। होवा३हायि। पिबातुवौ। होवा३हा। स्यगायिः। वा२ना२३४औहोवा॥(१) यस्ते अनुस्वा२धा मसात्। सुतायिनिय। च्छतानुवमौ। होवा३हायि।

---

* 'ब्रह्मणा अन्नेन, शिरः; अथवा ब्रह्मणा वैविध्यलक्षणेन शिरः। ०·०·०। बाहू०·०·०। प्राप्नोतु०·०·०। एतदुक्तं भवति समन्तात् महीयेन अन्नेन'— इति वि०।

१ १ १ १र र १ १ १र
सत्वामम। तुसोमायौ। होवा३हायि। सत्वाममौ।
र १ १र १ ५र र १ र
होवा३हा। तुसो। मा२या२३४औहोवा॥(२) प्रतेअ
र १ १ १ १ १र र
श्नोतु३कुक्षियोः। प्रायिन्द्रब्र। ह्मणाआयिरौ। होवा
१ १ १ १ १र र १
३हायि। प्रवाअश्न। रराधासौ। होवा३हायि। प्र
१ १र र १ १र १ ५र र
वाअश्नौ। होवा३हा। ररा। धा२सा२३४औहोवा।
१ १ १ १ १ १ १ १
घृतश्नु२ता२३४५ः(३)॥ ७ *॥ [१] ९

अथ द्वितीय-तृचे, प्रथमा।

२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र १र
आत्वेतानिषीदतेन्द्रमभिप्रगायत।
१ २ ३ १ २
सखायस्तोमवाहसः॥ १ †॥

"तु"[-शब्दः क्षिप्रार्थो निपातः, आभ्या माङ्भ्याम् एतमिति शब्दोऽध्यसनीयः]। हे "सखायः" ऋत्विजः! क्षिप्रम् अस्मिन्

---

* ऊ० गा० १प्र० २अ० ७गा०।

† ऋ० आ० २, २, २, १० (१भा० ३७२ पृ०)=ऋ० वे० १, १, १९, १।

Digitized by Google

कर्मणि आगच्छत आगच्छत [आदरार्थोऽभ्यासः]। आगत्य च "निषीदत" उपविशत। उपविश्य च "इन्द्रम्" "अभिप्रगायत" सर्वतः प्रकर्षेण स्तुत। कीदृशाः सखायः? "स्तोमवाहसः" त्रिवृत्पञ्चदशादिस्तोमानस्मिन् कर्मणि वहन्ति प्रापयन्तीति॥ ["अर्त्ति-स्तु-सु-हु-सृ धृ-क्षि-क्षु-भा-या-वा-पदि-यक्षि-नीभ्यो मन् (उ०,१,१४०)"—इति स्तौतेर्मन्-प्रत्ययान्तः स्तोमशब्दो नित्वादाद्युदात्तः (६,१,१९७)। स्तोमं वहन्तीति स्तोमवाहसः "वहि-हा-धाञ्-भ्यश्छन्दसि"—इत्यसुन् प्रत्ययः, तत्र णिदित्यनुवृत्तेः "अत उपधायाः (७,२,११६)"-इत्युपधाया वृद्धिः; कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वे (६, २, १३९) प्राप्ते "गतिकारकयोरपि पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (उ०, ४, २२६)"—इत्यौणादिकसूत्रात् समासस्याद्युदात्तः॥ १॥

अथ द्वितीया।

३　१ २　३ १र　२र ३ १ २
पुरूतमम्पुरूणामीशानं वार्य्याणाम्।
१ २　२ ३ १ २ ३ २
इन्द्रꣳसोमेसचासुते॥ २ *॥

सखायोऽभिप्रगायतेति पदद्वयमत्रानुवर्त्तते। हे "सखायः" ऋत्विजः! "सचा" यूयं सर्वे सह यद्वा सचा परस्परसमवायेन

* ऋ० वे० १, १, १९, २।

Digitized by Google

"सुते" अभिषुते सोमे प्रवृत्ते सति "इन्द्रम्" अभिप्रगायत। कीदृशमिन्द्रम्? "पुरूतमं" पुरून् बहुन् शत्रून् तामयति ग्लापयतीति पुरूतमः [तमु ग्लानौ (दि०,प०)—इति धातोर्ण्य-न्तात् पचाद्यचि चित्वादन्तोदात्तेऽपि (६, १, १६३) तदुत्तरपद-प्रकृतिस्वरं (६, २, १३) बाधित्वा "परादिश्छन्दसि बहुलम्* (६, २, १९९)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्], "पुरूणां" बहूनां "वार्याणां" वरणीयानां धनानाम्† "ईशानं" स्वामिनम्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १र २ ३ २ ३ १र २र
सघानोयोगआभुवत्सरायेसपुरन्ध्या।
२ ३ १ २ ३ १र २र
गमद्वाजेभिरासनः॥ ३ ‡॥ १० ¶

घ-शब्दोऽवधारणार्थोनिपातः,§ सर्वैस्तच्छब्दैः सम्बध्यते। "स घ" स एवेन्द्रः पूर्वमन्त्रोक्तगुणविशिष्टः "नः" अस्माकं‖ "योगे" पूर्वमप्राप्तपुरुषार्थस्य सम्बन्धे** "आ भुवत्" आभिमुख्येन

* अनेन सूत्रेण तु सक्थ-शब्दस्यैवाद्युदात्तो विकल्प्यते, परमत्र पठितवार्त्तिक-श्लोकेनैवान्यत्रापि सर्वत्र दृष्टानुविधः कल्प्यते। तथाच—"परादिश्च परान्तश्च पूर्वान्तश्चापि दृश्यते। पूर्वादयश्च दृश्यन्ते व्यत्ययो बहुलन्ततः"—इति।

† 'वार्याणाम् उदकानाम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, १९, २।

¶ 'अत्र देवातिथं साम'—इति वि०।

§ 'घ—इति पदपूरणः'—इति वि०।

‖ 'नः—अस्माकम्'—इति वि०।

** 'योगे—यत्र देवता युज्यन्ते असौ योगः यज्ञे'—इति वि०।

Digitized by Google

भवतु पुरुषार्थं साधयत्वित्यर्थः [भवते राप्रीर्लिङि परतो "लिङ्याशिष्यङ् (३, १, ८६)"—इत्यङ् प्रत्ययः, तस्य ङित्वेन गुणाभावात् उवङादेशः], स एव "राये" धनार्थम् "आभुवत्" आभवतु; स एव "पुरन्ध्या" योषित्या * भुवत् [यद्वा, बहुविधायां बुद्वावाभुवत् "पुरन्धिर्बहुधीः"—इति यास्कः (६, १३)] स एव "वाजेभिः" देवैः अन्नैः सह "नः" अस्मान् † "आगमत्" आगच्छतु [गमेर्लेट् तिप्, "इतश्चलोपः परस्मैपदेषु (३, ४, ९७)"—इति इकार-लोपः, "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शपोलुक्, "लेटोडाटौ (३, ४, ९४)"—इत्यडागमः, आगमाश्चानुदात्ताः इति तस्यानुदात्तत्वे धातुस्वरएव (६, १, १६२) शिष्यते ॥ ३ ॥ १०

॥ दैवातिथम् ॥ आ३४। एतानि। पीदा६ता। इन्द्रमभायि। प्रगायता। साखायस्तोम। वा। औ३हो। व३ा२हा२३४साः। ह्याया। साखायःस्तोम। वा। औ३हो। ऊम्मा२३। हा३४५सो६हायि ॥(१)

* 'पुरन्ध्या—रय्या'—इति वि०। "पुरन्धिर्बहुधीस्तत्कः पुरन्धिर्भगः पुरस्तान्नस्याध्यादम इत्येक मिन्द्र इत्यपरं स बहुकर्मतमः पुराञ्च दारयितृतमो वरुण इत्यपरम्"—इति निरु० नै० ६, १३।

† 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि०।

२ २ ५ ५ २र र १ २ १र
पुरु३४। तम्पु। रु६णाम्। ईशानंवा। रियाणा

१ १र २र१ २ १ १ २
म्। इन्द्र१सोमेस। चा। औ३हो। ववा२हु२

५ २ १ २ १र२र१ २ १
३ ४तायि। हयायि। इन्द्र१सोमेस। चा। औ३हो।

१ १ ५ २ १ र र र
ऊम्मा२३। हु३४५तो६हायि॥(२) सखा३४। नोयोगे।

५र ५ १ र १र २ १ १ १र ५र १
आभू६वात्। सरायेसाः। पुरन्धिया। गमद्वाजेभिः।

२ १ १ २ ११ २
आ। औ३हो। ववा२सा२३४नाः। हयायि। गम

१र२र १ २ १ १
द्वाजेभिः। आ। औ३हो। ऊम्मा२३। सा३४५

५
नो६हायि(३)॥ ८ *॥ [१] १०

अथ तृतीयदृचे, प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
योगेयोगेतवस्तरंवाजेवाजेहवामहे।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
सखायइन्द्रमूतये॥ १ †॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १अ० ८सा०।

† ऋ० सा० १, २, १, ९ (१भा० ३७१ पृ०)=य० वे० ११, १४ = ऋ० वे० १, ३, २९, १।

"योगेयोगे" प्रवेशे प्रवेशे तत्तत्कर्मोपक्रमे [युजिर् योगे (रु०, उ०) "हलश्च (३, ४, १२१)"--इति घञ्, "चजोः कुघिण्ण्यतोः (७, ३, ५२)"—इति कुत्वम्, घञोञित्वादाद्युदात्त-त्वम् (६, २, १९७), "नित्यवीप्सयोः (८, १, ४)"—इति वीप्सायां द्विर्भावे सति, आम्रेडितानुदात्तम् (८, १, ३)] "वाजे वाजे" कर्मविघातिनि तस्मिन् सङ्ग्रामे "तवस्तरं" अतिशयेन बलिनम् "इन्द्रम्" "ऊतये" रक्षार्थं "सखायः" सखिवत् प्रियाः वयं "हवामहे" आह्वयामः* ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २र २र ३ १ २ ३ १र २र
अनुप्रत्नस्यौकसोहुवेतुविप्रतिन्नरम् ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
यन्तेपूर्वम्पिताहुवे ॥ २ † ॥

---

* कात्यायनेन त्वयं मन्त्रोऽश्वप्रचयनेऽश्वाभिमन्त्रणे नियुक्तः (१६, २,१०) महीधरस्त्वेवं व्याचख्यौ—"इन्द्रदेवत्या गायत्री शुनःशेपदृष्टा, अश्वं मन्त्रयते । "सखायः" परस्परसख्यं प्राप्ता ऋत्विग्यजमाना वयम् "इन्द्रम्" इन्द्रियवन्तं वीर्यवन्त मिन्द्रियप्रदं वा अश्वम् "ऊतये" अवनाय रक्षणाय "हवामहे" आह्वयामः ह्वः अपि सम्प्रसारणम् (६, १, ३४)। क्व सति ? "वाजे-वाजे" तत्तदन्ने मनुष्याणां देवानाञ्च सामर्थ्ये सति तत्तदन्न-प्राप्ति-निमित्तं वा । किम्भूतमश्वम् ? "योगे-योगे तवस्तरं" युज्यते अनुष्ठीयत इति योगः कर्म, तस्मिन् तत्तत्कर्मणि तवस्तरं बलवत्तरमुत्साहवन्तम् । तव इति बलनाम (निघ० २, ९, ४,)। तवो बलमस्यास्तीति तवस्वी । अस्मायेत्यादिना विन् (५, २, १२१)। अत्यन्तं तवस्वी तवस्वितरस्तम् अतिशये तरप् विन्मतोर्लुगिति (५, ३, ६५) तरपि विनो लुक् ॥"—इति ॥

† ऋ० वे० १, २, २९, २ ।

"प्रत्नस्य" पुरातनस्य "ओकसः" स्थानस्य स्वर्गरूपस्य* सकाशात् "तुवि प्रतिं" बहून् यजमानान् प्रतिगन्तारम्† [अत्र प्रतिशब्दो भीमसेनो भीमइतिवत् प्रतिगन्तृ-शब्दं लक्षयित्वा तद्द्वारा तदर्थं लक्षयति, अतः प्रति प्रतिनिधि-प्रतिदानयोरिति-वत् सत्ववचनत्वेनानिपातत्वादनव्ययत्वे "पूरणगुणेत्यादिना (२, २, ११) न षष्ठी-समास-निषेधः]। "नरं" पुरुष-मिन्द्रम् "अनुहुवे" अनुक्रमेण कर्मस्वाह्वयामि [ह्वेञोलिटि "बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति पूर्ववत्। सम्प्रसारण-पर-पूर्वत्वे द्विर्वचन-प्रकरणे "छन्दसि वा (६, १, १ वा०)"—इति वक्तव्यमिति द्विर्वचनाभावः। "यद्वृत्तयोगादनिघातः (८, १, ६६)]। "यं" "ते" त्वामिन्द्रं "पिता" अस्मदीयो जनकः "पूर्वं" पुरा स्वकीयानुष्ठानकाले "हुवे" आहूतवान्, तमाह्वया-मीति पूर्वत्रान्वयः‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आघागमद्यदिश्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
वाजेभिरुपनोहवम् ॥ ३ ¶ ॥ ११ §

* 'ओकसः—स्थानस्य, उदकस्य, बहुस्थानस्य वा'—इति वि०।

† 'तुविप्रतिं—तुविपुर्विति बहुनाम, बहुप्रतिम्, प्रतिशब्देनात्र भवतो स्तुवन्तो, बहुवन्तुमिन्द्रम्'—इति वि०।

‡ 'यं ते पूर्वं पिता हुवे—अस्मदादीनामयम्, हे मदीयान्नरान्! तम् इन्द्रं हुवे, यं ते सब पूर्वतने काले त्वदीयः पिता आह्वयते।'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० १, १, २९, ४। § 'अत्र सौमेधं साम'—इति वि०।

Digitized by Google

"यदि श्रवत्" यद्ययमिन्द्रो "नः" अस्मदीयं "हवम्" आह्वानं शृणुयात्, तदानीं स्वयमेव "सहस्रिणीभिः ऊतिभिः" बहुभिः पालनैः "वाजेभिः" अन्नैश्च "उप" समीपे "आ घ" अवश्यम्* "आगमत्" आगच्छेत् ॥ ३ ॥ ११

१र र र र र र १ २ १ र
॥ सौमेधम् ॥ योगेयोगेतवाद्दाउस्तारम्। वाजे
२र र १ २ ५
वाजे। हवा२माहायि। हवायि। औ३हो२३४वा।
१ २र १ १ २
साखायइ। द्रमू२तायायि। हवायि। औ३हो२३४
५ २ र २ १ ऽ
वा। सखायआ। हवा२यि। औ३हो२३४५वा६५६।
२ १ १११ २ र र १ २ १ र २
द्रमू३तये२३४५ ॥(१) अनुप्रत्नस्यौहोवाउकासाः। हुवेतु
१ २ ५
वि। प्रता२यिन्नाराम्। हवायि। औ३हो२३४वा।
१ २र १र २ १ १ २
यान्तेपूर्वम्। पिता२हवायि। हवायि। औ३हो२३४
५ २ र २र १ ऽ
वा। यन्तेपूर्वाम्। हवा२यि। औ३हो२३४५वा६५६।
२ १ १ १ १ १ २र र र र १ २
पिता३हुवे २३४५ ॥(२) आघागमद्यदीहाउआवात्।

---

* 'आ घ—इति पदपूरणौ'—इति वि०। मन्त्रे "घा"—इति दीर्घपाठः। तत्र "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दीर्घः।

१ २ २ १ २
साहस्रिणी। भिह्र२तायिभायिः। इवायि। औ३हो

५ १ २र १ १ २
२३४वा। वाजेभिह्। पनो२हावाम्। इवायि। औ

५ २र २ १ १ ६
३हो२३४वा। वाजेभिह्। इवा२यि। औ३हो२३४५

२ १ १११
वा६५६। पनो३हवा२३४५म्(३)॥ ८ *॥[१] ११

अथ चतुर्थर्चे, प्रथमा।

१ २ ३ १ ३ १ २ १ १ २ ३क २र
इन्द्रसुतेषुसोमेषुक्रतुम्पुनीषउक्थ्यम्।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
विदेवृधस्यदक्षस्यमहाꣳहिषः॥ १†॥

"सोमेषु" "सुतेषु" अभिषुतेषु सत्सु हे "इन्द्र!" त्वं तान् पीत्वा "क्रतुं" कर्मणां कर्त्तारम् "उक्थ्यम्" स्तोतारञ्च "पुनीषे" शोधयसि। यद्वा सोमेष्वभिषुतेषु उक्थ्याख्यं "क्रतुं" यागं तैः सोमैः पुनीषे यजमानैः पूतं कारयसि। किमर्थम्? "वृधस्य" वर्द्धकस्य "दक्षस्य" बलस्य "विदे" लाभाय "सः" तादृशस्त्वं "महान्" "हि" खलु; अतएव कर्त्तुं शक्नोषीत्यर्थः॥

"इन्द्रसुतेषु"-"इन्द्रःसुतेषु"—इति, "पुनीषे"-"पुनीते"—इति, "दक्षस्यमहाꣳहिषः"—"दक्षसोमहान्हिषः"—इति च पाठौ॥ १॥

* ऊ० गा० १प्र० २ख० ८सा०।

† ऋ० आ० ४, ३, ५, १ (१ भा० ७८२ पृ०) = ऋ० वे० ६, १, ७, १।

अथ द्वितीया ।

१२३१ २　　३१२　　१२ ३२
सप्रथमेव्योमनिदेवाना॒ꣳसदनेवृधः ।
२　१ ३१२　३ १२३१ २
सुपारःसुश्रवस्तमःसमप्सुजित् ॥ २* ॥

"सः" इन्द्रः "प्रथमे" प्रथिते विस्तीर्णे मुख्ये वा † "व्योमनि" विशेषेण रक्षके च "देवानां" "सदने" सीदन्त्यस्मि-न्निति सदनं स्थानं स्वर्गाख्यं तत्र ‡ स्थितः सन् "वृधः" यजमानानां वर्द्धयिता च भवति । तथा "सुपारः" सुष्ठु पारयिता प्रारब्धस्य सम्यक् परिसमापयिता ¶ "सुश्रवस्तमः" अतिशयेन शोभनं श्रवोऽन्नं यशो वा यस्य स तथोक्तः, "समप्सुजित्" सम्यक् अप्सूदकेषु प्राप्येषु सत्सु यत् तद्विघातनो वृत्रादेर्जेता ; यद्वा, आप इत्यन्तरिक्षनाम (निघ० १, ३, ८) अन्तरिक्षे वर्त्तमानानामसुराणां जेता § तमु हुवे इत्युत्तरत्र सम्बन्धः ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ६, १, ७, २ ।

† 'प्रथमे श्रेष्ठे'—इति वि० ।

‡ 'देवानां सदने स्थाने यज्ञे'—इति वि० ।

¶ 'सुखेन पार्यते यष्टुं यः सः सुपारः'—इति वि० ।

§ 'समप्सुजित्—सङ्ग्रामेषु जेता'—इति वि० । "समत्सु"—इति सङ्ग्रामनामसु निघण्टौ दृश्यते (२, १७, २१) तदेव पाठभेदात् समप्सु—इत्येवाच विवरणकाराशयः ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ १
तमुह्वेवाजसातयइन्द्रम्भरायशुष्मिणम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
भवानःसुम्नेअन्तमःसखावृधे ॥ ३* ॥ १२ †

"तमु" पूर्वोक्तगुणमेव "शुष्मिणं" बलवत्तम् "इन्द्रं" "वाजसातये" बलाना मन्नानां वा साति र्लाभो यस्मिन् तादृशाय "भराय" सङ्ग्रामाय ; यद्वा, [ध्रियन्ते तस्मिन् हवींषीति भरो यज्ञः, प्रायेण सङ्ग्रामनामानि यज्ञनामत्वेन च दृश्यन्ते] भराय यज्ञार्थं "हुवे" आह्वयामि। हे इन्द्र ! त्वं "सुम्ने" सुखे धने वा लिप्सिते सति "नः" अस्माकम् "अन्तमः" अन्तिकतमः सन्निकृष्टतमो भव [तमेतादेश्वेति अन्तिकशब्दस्य तादि लोपः] ; "वृधे" वर्धनार्थञ्च "सखा" समानख्यानो मित्रभूतो भव ॥

"तमुहुवे"—"तमुह्वे—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १२

१ २ २ १ २ १ १ २
॥ कौत्सम् ॥ इन्द्रसुतेषुसोमेषू । क्रतुंपुनायि । य
१ २ ३ १ १ २ २ १
उक्थियाम् । विदेवार्धा२ । स्यदक्षस्या । महाऽहा
१ २ २ २ २ १
यिषा२ः । महाऽ२३हिषा३४३ः ॥(१) सपृथमेवियोमा

* ऋ० वे० ६, १. ७, ३ ।
† 'अत्र कौत्सं साम'—इति वि० ।

Digitized by Google

२ १र १र २र१ २र १
नी। देवा२ना౮सा। दनवृधाः। सुपाराःसु२। अ
१ २ १ १ २
वस्तमाः। समप्सुजो२त। समार२३८प्सुजो३४३त॥(२)
२ रर र१ १ १ २ १
तमु ऊवेवाजसातायायि। इन्द्रा२भरा। यप्शुष्मिणाम्।
२र १ र १ २र१ १
भवाजाःह्व२। स्नेअन्तमाः। सखावार्द्धा२यि। स
र १ १ २ १
खावार्द्धा२यि। सखार२३वृधा३४३यि। ओ२ ३ ४ ५ई।
डा(३)॥ १० *॥ [१]

१ २१र२ १र २र१ र
॥ उद्व౮शीयम्॥ इन्द्रसुतेषुसोमेषा। क्रतुम्पुनीषउक्था
१ १ २ १ १ २
२३याम्। विदा२होश्यि। वार२३र्द्धा। स्यदा१चा३
२ र २ ५ १ ऽ २ २
स्या। मद्दा౮चा२३४यिषाः। मादा३उवा३। उप्।
१ १ १ ११रर २१ रर र
हा२यिषो३५चायि॥(१) सपृथमेव्योमनिया। देवाना౮
र २ १ २ १ २ २
सदने वार२३र्द्धाः। सुपा२रो१। रा२३ःह्व। अवा१स्ता
२ २ ५ १ ऽ २ २ १
३माः। समप्स्व२३४जीत। सामा३उवा३। उप्। एह्व

* ज० मा० १प्र० २अ० १०सा०।

ऽ२जो३५वायि ॥(२) तमुक्वेवाजसातयआ। इन्द्रभरा

यघुआर३यिणाम्। भवा२वो१ नार३ःवृ। स्नेआ

१न्ता३माः। सखावा २३४ र्हायि। साखा३उवा३।

उप्। वाऽ२र्हो३५वायि(३) ॥ २ * ॥ [२] १२

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

तृतीय-खण्डः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थे खण्डे, प्रगाथरूपे—

प्रथमसूक्ते, प्रथमा।

एनावोअग्निन्नमसोर्जोनपातमाहुवे।

प्रियञ्चेतिष्ठमरतिंस्वध्वरं विश्वस्यदूतमम्तृतम्॥ १ † ॥

---

* ऊ० गा० १९प्र० १अ० २सा०।

† छ० आ० १, १, ५, १ (१ भा० १९७ पृ०) = ऋ० वे० ५, २, २१, १।
'इहाग्नी सम्भिर्वन्तवः, एष ब्र-देवत्यः अग्निरग्निनाविति'—इति वि०।

Digitized by Google

"ऊर्जः" बलस्य "नपातं" [नपादित्यपत्यनाम (निघ०२, २,१३)] पुत्रं "प्रियम्" अस्माकम् "चेतिष्ठम्" अतिशयेन ज्ञातारं प्रज्ञापकं वा "अरतिं" गन्तारं स्वामिनं वा "स्वध्वरं" शोभनयज्ञं "विश्वस्य" सर्वस्य यजमानस्य "दूतम्" "अमृतं" नित्यम् "अग्निम्" "एना" एतेन "नमसा" स्तोत्रेण हे ऋत्विग्यजमानाः ! "वः" युष्मदर्थम् "आहुवे" आह्वयामि॥१॥

अथ द्वितीया।

१ २   २ २ ३ १ २   ३ १ २ ३क २र

सयोजतेअरुषाविश्वभोजसासदुद्रवत्स्वाहुतः।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २   ३ २उ   ३ १ २

सुब्रह्मायज्ञःसुशमीवसूनान्देवꣳराधोजनानाम् ॥२*॥१३†

"सः" अग्निः "अरुषा" आरोचमानो "विश्वभोजसा" विश्वस्य पालयितारा वह्नी "योजते" स्वकीये रथे "युनक्तु" [यद्वा, "विश्वभोजसा" विश्वस्य रक्षकेण "अरुषा" आरोचमानेन तेजसा "योजते" अयुज्यत]। तदनन्तरं यः अग्निः "स्वाहुतः" स्तोतृभिः सुष्ठु आहुतः सन् "दुद्रवत्" आनेतुं देवान् प्रति भृशं द्रवतु गच्छतु। कीदृशः ? सुब्रह्मा शोभनस्तुतिकः शोभनान्नो वा "यज्ञः" यष्टव्यः "सुशमी" शोभनकर्मा च भवति ; ततः "वसूनां" वासकानां "जनानां" यजमानानां सम्बन्धि "राधः" हविर्लक्षणं धनं "देवं" द्योतमानमग्निम्प्रति गच्छत्विति शेषः॥ २॥ १३

---

* ऋ० वे० ५,२,२१,२।   † 'अथ वारवन्तीयम्'— इति वि०।

Digitized by Google

१र र र र २ र १ र
॥ वारवन्तीयम् ॥ एनावोअ। औहोहायि। ग्रा

२ ५ १र र र र १ ५ १
यिन्नामार३४सा। ऊर्ज्जोनपातमाङ्कवोर३४हायि। प्रिय

र १ २र ४र ५ १ २ ५
श्वेतिष्ठमरतिꣳसुवध्वा३४। औहोवा। हुहार३४हायि।

२ २ ५ २ १ २ १ ० २ २र ४र ५
उङ्कवा२३४राम्। विश्वस्य। दूतममा३४। औहोवा।

१ २ ५ २र २ ५र
हुहार३४हायि। औहो३१२३४। ताम्। एहियाꣳ

५ २ र र १ २ २ ५
हा ॥(१) विश्वस्यदूऔहोहायि। तामामार३४त्ताम्।

२ १ ५ १र र र २ २र ४र ५
सयोजार३४हा। तेअरुषाविश्वभोजा३४। औहोवा।

१ २ ५ २ २ ५ २ १ २ १ ० र १
हुहार३४हायि। उङ्कवार३४सा। सदुद्र। वात्सुवाꣳ

२र ४र ५ १ २ ५ २र २ ५ऽ
३४। औहोवा। हुहार३४हायि। औहो३१२३४। ताः।

र ५ २ र र १ २ २ ५
एहियाꣳहा ॥(२) समुद्रवाऔहोहायि। सुवाꣳर३४ताः।

२ १ ५ १ र २ २र ४र ५
सुब्राह्मार३४हायि। यज्ञःसुप्रमीवसू३४। औहोवा।

१ २ ५ २ २ ५ २र १ २र १
हुहार३४हायि। उङ्कवार३४नाम्। देवꣳरा। धोज

ना३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४।
नाम्। एहियाईहा(३)॥ ८॥*॥ [१]

॥ महावामदेव्यम्†॥ आऽ५यिना। वोआ३आ३यिन्न
मसा। ऊ। जोनपातमाऊवेप्रियञ्चेतिष्ठमरतिऌसुवध्व।
राम्। औ२३होहायि। विश्वा२३स्यदू। तमौहो३।
ऊम्मा२। माऽ२त्तों३५हायि॥(१) वाऽ५यिश्व। स्यदू३ना
३मन्तताम्। सा:। योजतेअरुषाविश्वभोज। सा।
औ३होहायि। सदू२३द्रवात्। सुवौहो३। ऊम्मा२।
ऽऽ२तो३५हायि॥(२) सा५ऽदु। द्रवा३त्सू३वाऊता:।
ह। ब्रह्मायज्ञःसुशमीवस्। नाम्। औ२३होहायि।
देवा२३ऌराधाः। जनौहो३। ऊम्मा२। नाऽ२मों३५
हायि॥ ११ ‡॥ [२]

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० ८सा०। † 'वामदेव्यम्'—इति ख० पु० पाठः।
‡ ऊ० गा० ११प्र० २ख० ११सा०।

Digitized by Google

१२ २ १ २र १र
॥ अध्यम्॥ एनावोआ२ग्निम्। नमसोवा। ऊर्ज्जो
२१ २ ३र २ १ २ १ २र १ २ १
नपा। तमाहुवायि। प्रियञ्चेतिष्ठमरतिँस्वध्वरं विश्व
२ र १ २ १र १
स्यदूतम्। आ२३। ऋताउवा। अधिया२॥(१) वि
१ २ १र २ १ २ १ १र १
श्वस्यदू२तम्। अमृतोवा। सयोजते। अरुषावायि।
र २ र १ २ १ २ १र
अभोजमासन्दूद्रवत्। आ२३। ऊताउवा। अधिया
१ र १ २ १ २र १ २
२॥(१) सदुद्रवा२त्सु। आहुतोवा। सुब्रह्माया। यः
२ १ १ र १र र १ र १र १ २
सुम्नमायि। वसूनान्देवँराधोज। ना२३। नाउवा।
१र
अधिया२॥ १४ *॥ [३] १३

अथ द्वितीय-प्रगाथे—

प्रथमा।

१२ ३ १ १ २ ३ १ ३ २
प्रत्युअदर्श्यायत्यू३च्छन्तीदुहितादिवः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अपोमहीवृणुतेचक्षुषातमोज्योतिष्कृणोतिसूनरी॥ १ †॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १४गा०।

† उ० आ० ४, १, २, १ (१भा० ६११ प०)=ऋ० वे० ५, ६, १, १।

"आयती" आगच्छती "उच्छन्ती" तमांसि विवासयन्ती वर्जयन्ती "दिवः" द्युलोकस्य सूर्य्यस्य वा "दुहिता" पुत्री, एवम्भूता उषाः "प्रति अदर्शि" सर्वैः प्रति दृश्यते; "उ"—इति पूरणः; सैषा "मही" महत् "तमः" नैशमन्धकारं "चक्षुषा" दर्शनेन "अप उ" [—इति निपातद्वय समुदायः अपेत्यस्यार्थे] "वृणुते" निवारयति। एवं कृत्वा "सुनरी" जनानां सुष्ठु नेत्री उषाः "ज्योतिः" प्रकाशं "कृणोति" करोति॥

"वृणुतेचक्षुषा"-"व्ययतिचक्षुषे"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ ३ १ २   ३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १

उदुस्रियाःसृजतेसूर्यःसचाउद्यन्नक्षत्रमर्च्चिवत्।

१ २र३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ १

तवेदुषोव्युषिसूर्य्यस्यचसम्भक्तेनगमेमहि॥ २*॥ १४ †

"सूर्यः" सर्वस्य प्रेरकआदित्यः "उस्त्रियाः" रश्मीन् "सचा" सह युगपदेव "उत्सृज्यते" उद्गमयति। तथा "उद्यत्" उद्गच्छत् प्रादुर्भवन् "नक्षत्रं" नभसि दृश्यमानं ग्रहनक्षत्रादिकम् "अर्च्चिवत्" दीप्तिमत् करोति; ["सौरेण तेजसा हि नक्तं चन्द्रप्रभृतीनां नक्षत्राणि भासन्ते", "सुषुम्नः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः"—इति हि निगमान्तरम्। एवञ्च सति हे "उषः"

* ऋ० वे० ५, ६, १, २। † नयोदशसूक्ते यन्नामसामानि दृष्टापितन्नाभान्येव।

उषोदेवते ! "तव" "सूर्य्यस्य" च "व्युषि" विवासने प्रकाशने सति "भक्तेन" अन्नेन "सङ्गमीमहि" वयं गच्छेमहि। "इत्"-शब्दः पूरकः॥ २॥ १४

२ २ २ १ २ २
॥ वारवन्तीयम्॥ प्रत्युवदाऔहोहायि। श्रीआया२३४
५ १ २ २ १ ५ १ २ २
तायि। उच्छन्तीदुहितादायिवो२३४हायि। अपोमही
२ २ १ ३२ ४२ ५ १ २ ५ २
वृणुतेचक्षुषाता३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उच्छ
२ ५ ३२ १ २ १ ७२ २ ३२ ४२ ५
वा२३४माः। ज्योतिष्कृ। णोतिसूना३४। औहोवा।
१ २ ५ ३२ २ ५ २
इहा२३४हायि। औहो३१२३४। रायि। एहियाई
५ ३२ २ २ १ २ ३ ५
हा॥(१) ज्योतिष्कृणोऔहोहायि। तायिसूनार३४रा
२ १ ५ १२ २२ २ ३२
यि। उद्रस्रौ२३४हा। याःसृजतेसूरियःसा३४। औ
४२ ५ १ २ ५ २ २ ५ २ १ २
होवा। इहा२३४हायि। उच्छवार३४चा। उद्यन्न।
१ ० २ ३२ ४२ ५ १ २ ५ ३२ २
क्षात्रमर्च्चा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३
५२ ५ २ २ २ १ २
१२३४। वात्। एहियाईहा॥(२) उद्यन्नक्षाऔहोहा

२ ५ २१ ५ १र
यि। वामर्त्या२३४यिवात्। तवेदू२३४हायि। षोविषु

र २ २र ४र ५ १ २ ५ २
षिस्ूरियस्या३४। औहोवा। दूहा२३४हायि। उऊ

२ ५ २ १ १र १ ० र २ २र ४र ५ १
वा२३४चा। सम्भक्ते। नागमेमा३४। औहोवा। दू

२ ५ २र २ ५र
हा२३४हायि। औहो ३१२३४। हायि। एहिया६

५
हा(३)॥ ८*॥[१]

२ ४ २ ४र ५ १
॥ वामदेव्यम् ॥ प्रा५त्यु। श्रदा३र्शा३यतायि। ऊ।

र र र र र र २र१ २
च्छन्तीदुहितादिवोश्रपोमहीवृणुतेचचुषात। मा। औ३

र २ २र २ २र २ १
होहायि। ज्योता२३यिष्कृणो। तिसीहो३। ऊम्मा

१ २ २ ४ २
२। ना५२रो३५हायि॥(१) ज्यो५ुतिः। कृणो३ता३यि

४र ५ १ र रर २ १ २
सूनरायि। ऊत्। उस्रियाःसृजतेसूरियस्साचा। औ

र २ १ २ २ र २ १
३होहायि। उद्या२३न्नक्षा। त्रमीहो३। ऊम्मा२।

१ २ २ ४ २ ४ ५
चा५२यिवो३५हायि॥(२) ऊ५द्यत्। नक्षा३त्रा३मर्चिवात्।

---

* ऊ० गा० २१प्र० २ष० ८सा०।

१ २ २ २ १ १ २ २ २
ता। वेऽऽषोवियुषिस्‌रियस्य। चा। औऽ३होवायि।
१ २ २ ३ २ १ १ १
सम्भा२३क्तेना। गमौहो३। ऽऽम्मा२। मा२हो३५
२
वायि(३)॥ १२ *॥ [२]

१ २ १ २ १
॥ अध्यम्॥ प्रत्युवदा२र्शि। आयतोवा। उच्छ
२२ १ २ २२ २ १ २ १ १२ २२ १ १२१ १२ १२
न्तीदू। हिताद्दिवाः। अपोमहीवृणुतेचक्षुषातमोज्यो
१ २ १ २ १२
तिष्कृणोति। स्‌२३। नरावा। अधिया२॥ (१)
१२ २ १ ११ ११ १ १ १२
ज्योतिष्कृणो२ति। स्‌नरोवा। उदुस्त्रियाः। सृजत
१ १२ १ २१ २
स्‌। रियःसचाउद्यन्नक्षत्रम्। आ२३। विवाउवा।
१२ १ १ ११२ ११
अधिया२॥ उद्यन्नक्षा२त्रम्। अर्चिवोवा। तवेदुषो।
१ १२ २ १ २ १ १२ १ २
वियुषिस्‌। रियस्यचसम्भक्तेनग। मा२३यि। महाउ
१२
वा। अधिया२(३)॥ १५ †॥ [३] १४

* ऊ० गा० २१प्र० २अ० १२सा०।

† ऊ० गा० २१प्र० २अ० १५सा०।

अथ तृतीये प्रगाथे—

प्रथमा ।

२१ २ ३ १२ २१ १
इमाउवान्दिविष्टयउस्राहवन्ते अश्विना ।
३१२ ३ १२ ३ १२ ३ १र २र
अयंवामह्वेवसेशचीवसूविशंविश ँ हिगच्छथः ॥ १ * ॥

"इमाः" "दिविष्टयः" दिवमिच्छन्त्यः प्रजा ऋत्विजोऽपि "उ"—इति चार्थे ; हे "अश्विना !" "उस्रा" वासकौ उस्रौ वा "हवन्ते" आह्वयन्ति "अयं" स्तोतापि हे "शचीवसो" कर्म्मधन ! "वां" युवाम् "अवसे" अस्मद्रक्षणाय युवयोस्तर्पणाय वा "अह्वे" आह्वयामि। किमर्थम् ? एवं प्रजा अपि, अयमपीत्यादरोक्तिरिति "विशं विशं हि गच्छथः" सर्व्वाः स्तुतिकर्त्रीः प्रजाः प्रति युवां गच्छतः खलु, तस्मादेवमुच्यत इति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३२ १ १ २ ३१ २ ३१ २ ३१ २
युवञ्चित्रन्ददथुर्भोजनन्नराचोदेथा ँ सूनृतावते ।
२ १उ ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र
अर्वाग्रथ ँ समनसानियच्छतम्पिबत ँ सोम्यम्मधु॥२†॥१५‡

* ऋ० आ० ४, १, ९, २ (१भा० ६१३पृ०)=ऋ० वे० ५, ५, २१, १ ।

† ऋ० वे० ५, ५, २१, २ । ‡ त्रयोदश-चतुर्द्दशस्तक्षयोर्यन्नामानि सामानि] इहापि तन्नामान्येव ।

Digitized by Google

हे "नरा" नेतारावश्विनौ ! "युवं" युवां "चित्रं" चायनीयं "भोजनं" धनं "ददथुः" धारयेथे, तद्धनं "सूनृतावते" स्तुतिमते स्तोत्रे "चोदेथां" प्रेरयतम्,* तदर्थं "समनसा" समानमनस्कौ सन्तौ "रथं" युवयोः सम्बन्धिनम् "अर्वाग्" अस्मदभिमुखं "नियच्छतं" नियमतम्, तथा कृत्वा "सोम्यं" सोमसम्बन्धिनं "मधु" मधुरसञ्च † "पिबतम्" ॥ २ ॥ १५

१र र र १ २ ३
॥ वारवन्तीयम् ॥ इमाउवाऔहोहायि । हायिविष्टार
५ २ र १ ५ १ २ र
३४याः । उस्राहवन्तेअस्वायिनो२३४हायि । अयंवामङ्के
र र २ २र ४र ५ १ २ ५ २
अवसेप्रचोवा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उक्ष
२ ५ २ १ २ १ ० २ ३र ४र ५
वा२३४सू । विशंवि । आऽ२हिगच्छा३४ । औहोवा ।
१ २ ५ २र २ ५र ५
इहा२३४हायि । औहो३१२३४ । थाः । एहियाईहा ॥(१)
२ र र १ २ २ ५ १ २
विशंविशाऔहोहायि । हायिगच्छा२३४थाः । युवाञ्चा

---

* 'चोदेथां सूनृतावते—एवं चोदनां कुरुतां यथा सुनृता वयं भवेम !'—इति वि० ।

† 'सोम्यं मधु—सोमे भवं स्वादुद्रव्यम्'—इति वि० । "मये च (४, ४, १३८)—इति पा० । "सोमशब्दाद्यः स्यान्मयडर्थे । सोम्यं मधु सोममयमित्यर्थः ॥"—इति च तत्र दीक्षितः ।

Digitized by Google

५ १ र २ ३र ४र ५ १२
२३४यिह्वायि। चन्ददयुर्भोजनन्ना३४। औहोवा। हुह्वा
५ २ २ ५ २र१र२र १७र१
२३४ह्वायि। उङ्क्वा२३४रा। चोदेथाम्। छनृतावा३४।
३र४र५ १२ ५ ३र१ ५र
औहोवा। हुह्वा२३४हायि। औह्वो३१२३४। तायि। एहि
५ १र२र र२१ २ ३ ५
याई्ह्वा॥(२) चोदेथा॰सूऔह्वौह्वायि। नार्त्तावा२३४तायि।
२१ ५ १ र २ ३र४र५
अर्वाग्रा२३४हा। थ॰समनसानियच्छा३४। औहोवा।
१२ ५ २ २ ५ २११ १ ०
हुह्वा२३४ह्वायि। उङ्क्वा२३४ताम्। पिबतम्। सौमि
२ ३र४र५ १२ ५ ३र१
यम्ना३४। औह्वोवा। हुह्वा२३४ह्वायि। औह्वो३१२३
५र ५ ४
४। धू। एहियाई्ह्वा। ह्वो५ई। डा(३)॥१०*॥[१]

२ र ४ २ ४ ५
॥वामदेव्यम्॥ आऽ५यिमाः। उवा३न्दा३यिविष्टयाः।
१ र र र र र र २११
ऊ। सावन्तेअश्विनाअयंवामङ्के अवसेशचीव। ह्व।
२ र२ १ २ २र२ १
औ३ह्वोह्वायि। विश्वा२३ंविश्वाम्। हिगौह्वो३। ऊम्मा
१ २ २ ४
२। क्वाऽ२थो३५ह्वायि॥(१) वाऽ५यिश्वाम्। विश्वा३॰

* ऋ० मा० २१म० २भ० १०भा०।

२ ४ ५ १ र २ १
हाऽ३यिगच्छथाः। यू। वच्चित्रन्ददथुर्भोजनन्न। रा।
२ र २ १र र २ २ र १ १
औ३होहायि। चोदे२३थाॅसू। नृतौहो३। ऊम्मा
१ २ २ र ४ १
२। वाऽ२तो३५हायि॥(२) चोऽ५दे। थाॅसू३ना३
४र ५ १ र र २ १
त्तावतायि। आ। वोग्रयॅसमनसानियच्छ। ताम्।
र २ १ २ ३ र २ १
औ२३होहायि। पिबा२३तॅसो। मियौहो३। ऊम्मा
१ २
२। मा२धो३५हायि ३॥ १२ *॥ [२]
१र १ २१र
॥ अध्यम् ॥ इमाउवा२न्दि। विष्टयोवा। उत्ता
२ १ २र ३ २ १ २ १र २ १र २र १ र २ २ १ २
हवा। तेअश्विना। अयवामक्केवसेशचीवह्वविशंविशॅ
१ २ १र १
हि। गा२३। च्छथाउ। वा। अधिया२॥(१) वि
१ १ १ २ १ २ १ २ १
शंविशा२ॅहि। गच्छथोवा। युवच्चित्राम्। ददथुर्भो।
२ र १र र २र र १ २ १र
जनन्नराचोदेथाॅहन्। ता२३। वताउवा। अधिया
१र र र र १ २ १र २ १
२॥(२) चोदेथाॅम२न। तावतोवा। अर्वाग्रथाम्।

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १२गा०।

२ ३ १ २ १ २ १ २ ३ १ १ २
समनसा। नियक्तमपिबतॐसोमि। या२३म्। मघा
१र १ २ १
उवा। ऊधिया२। ए२३ह्यिया ३४ ३। ओ२३४५ई।
डा॥ १६ *॥[३] १५

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डे‡—

अस्यप्रत्नेति नवर्चसूक्ते, प्रथमा।

३ १ २ ३ १उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्यप्रत्नामनुद्युतॐशुक्रन्दुदुह्रे अह्रयः।
१ २ ३ १र २र
पयःसहस्रसामृषिम् ॥ १¶ ॥

"अस्य" सोमस्य "प्रत्नां" पुरातनां "द्युतं" द्योतमानां तनुम् "अनु" "शुक्रं" दीप्तं "सहस्रसां" अभिलषितस्यापरि-

---

* ऊ० गा० १प्र० २अ० १६सा०।

† 'समाप्ता 'चग्निः। अथ षोड़शिकोऽतिरात्रो ब्राह्मण-समाम्नायेऽथ छन्दःसमाम्नाये न तथा क्रमप्रकारः तत्क्रमो ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रः षोड़शिकः। तथा च तत्प्रकारः—अतिरात्रो ० ० ०'—इति वि०।

‡ 'इदानीं द्वादशाहस्य प्रथममहस्तस्य बहिष्पवमानम्'—इति वि०।

¶ छ० आ० ६, १६=ऋ० वे० ७, १, १, १।

Digitized by Google

मितस्य फलस्य दातारम् "ऋषिम्" अतीन्द्रियकर्म्मफल-द्रष्टारं "पयः" पातव्यं * "अह्रयः" कवयः † "दुह्रे" दुहन्ति ‡ ॥ १ ॥

---

* 'पयः—क्षीरम्'—इति वि०।

† 'अह्रयः—अह्रीकाराः'—इति वि०।

‡ अत्र महीधरः—"गायत्र्यवत्सारदृष्टा गोऽग्निपयोदेवत्या। अस्याग्नेः प्रत्नां चिरन्तनकालभवां घृतमनु दीप्तिमनुलक्ष्य। अह्रयः नास्ति ह्रीर्येषामीदृशा लज्जारहिता दोग्धारः ऋषिं गां शुक्रं शुद्धं पयो दुदुह्रे दुदुहिरे। दुहेर्लिटि इरयो रे इति रे आदेशे रूपम्। ऋष गतौ। अर्षति दोहनस्थाने गच्छतीति ऋषिर्गौः। तां होमार्थं दुग्धवन्तः। सायं दोहनकालेऽग्निप्रकाशाभावे दुह्यमानं पयो भूमौ पतिष्यतीति शङ्कया दोग्धृणां लज्जा भवति। सत्यामग्निदीप्तौ स्कन्दशङ्कानुदयाल्लज्जाभावादह्रयो दोग्धारः। किम्भूतामृषिं सहवसाम्। षोऽन्तकर्म्मणि। सहवसङ्ख्याकानि कर्म्माणि स्यति समापयति क्षीरदध्याज्यहविःप्रदानेनेति सहवसा ताम्। स्यतेः क्विप्। तहाख्या ऋषोऽर्थान्तरम्। गाम्प्रकृत्याग्निहोत्रब्राह्मणे श्रूयते। तामु हाग्निरभिदध्यौ मिथुन्येऽनया स्यामिति तां सम्बभूव तस्यां रेतः प्रासिञ्चत्तत्पयोऽभवदित्यादि (२,२,४,१५)। तदभिप्रायमेषा ऋगवदति। अह्रयः गावः नास्ति ह्रीर्लज्जा यासां ता अह्रयः अलज्जा उन्मत्ताः प्रगल्भा इत्यर्थः। मत्तिनो हि लज्जते। अह्रयो गावोऽस्याग्नेः प्रत्नां चिरन्तनीमात्मानुषक्तां घृतं दीप्तिं शुक्रं शुक्ररूपापन्नां घृतमेव पयो दुग्धं दुदुह्रे दुहन्ति धारन्ति। अग्निना शुक्ररूपेण सिक्तां स्वकान्तिमेव गावो दुग्धरूपेण क्षरन्तीत्यर्थः। सहवसामृषिमिति विशेषणद्वयं पयसः। सहवं सनोति सहवसास्तम्। चातुर्मास्यपशुसोमानां सम्भक्तारम्। पुंस्त्वमार्षम्। जनसनखनक्रमगमो विडिति विट्प्रत्यये विड्वनोरनुनासिकस्यादित्याकारे वेर्लोपे सहवसा इति रूपम्। तथा ऋषिं द्रष्टारम्। अपि वर्णनाम दृष्टत्वं पयसुपपद्यते। सा देवेनानुदोह्य हिङ्कारेत्युपक्रम्य ते देवा विदाञ्चक्रुरेष साम्नो हिङ्कार इत्यादिना मन्त्रेण गोभिर्हिङ्कारो दृष्ट इति प्रत्यपादि। यद्वा सहवसामृषिमिति विभक्तिलिङ्गवचनव्यत्ययेन अह्रय इत्यस्य विशेषणद्वयम्। किम्भूता अह्रयः सहवसाः ऋषयः। पूर्ववदर्थो वा"—इति॥

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ १   २ १र   १ २ ३ १र   २र
अयं सूर्य्य इवोपदृगयं सरांसि धावति।
३ २३ १र२   १र २र
सप्त प्रवत आदिवम्॥ २*॥

"अयं" सोमः "सूर्य इव" यथा सूर्यः सर्वस्य लोकस्योपद्रष्टा, तथा कर्म्मणाम् "उपदृक्" उपद्रष्टा; अपिच "अयं" सोमः "सरांसि" त्रिंशत् उक्थपात्राणि [—इति केचिद् वदन्ति, अपरेतु त्रिंशदहोरात्राणि सरांसीति], तानि "धावति" प्रति गच्छति [तथाच यास्कः—"तत्रैतद् याज्ञिका वेदयन्ते त्रिंशदुक्थपात्राणि, माध्यन्दिने सवने एकदेवतानि, तान्येतस्मिन् काल एकेन प्रतिधानेन पिबन्ति, तान्यत्र सरांस्युच्यन्ते—त्रिंशदपरपक्षस्याहोरात्राः त्रिंशत् पूर्वपक्षस्येति नैरुक्ताः (५, ११) इति †]। अपिचायं सोमः "दिवम्" अधिकृत्य "सप्त प्रवत" सप्त नदीरातिष्ठति‡॥ २॥

---

* ऋ० वे० ७, १, २, २।

† "तथा एतायान्द्रमस्य आगामिन्य आपो भवन्ति रश्मयश्ता अपरपक्षे पिबन्ति। तथापि निगमो भवति। यमक्षितिमक्षितयः पिबन्तीति तं पूर्वपक्ष आप्याययन्ति। तथापि निगमो भवति। यथा देवा अंशुमाप्याययन्तीति"—इति च तच्छिष्टांशः।

‡ 'सप्त प्रवत—सप्त लोकान् प्रवत। अथवा सप्त छन्दांसि'—इति वि०।

अथ तृतीया ।

१ १२ १२ १ १२ १२३११
अयंविश्वानितिष्ठतिपुनानोभुवनोपरि ।
१ २ ३१२ १२
सोमोदेवोनसूर्यः ॥ ३* ॥ १६ †

"पुनानः" पूयमानः "अयं" "सोमः" "विश्वानि" सर्वाणि "भुवना" भुवनानि सर्वेषां भुवनानाम् "उपरि" "तिष्ठति"। तत्र दृष्टान्तमाह—"देवो न सूर्यः" यथा सूर्यो देवः सर्वेषां भुवनानामुपरि तिष्ठति तद्वद्यं सोमोऽपीत्यर्थः ॥ ३ ॥ १६

१ २ २
॥ सत्रासाहीयम् ॥ अया२३ । पुनामनुद्युतम् ।
५ ५ १ २ १ १
ओ६वा । घुक्रन्दुहे अह्ना२याः । पा२याः । सा२३
२ १ ऽ २२ १२ २ १ ५ ५
हा । स्वसौ२हो वाहा३४३यि । आ२३४र्षो६हायि ॥
२ १ २ २ ५ ५ १
(१) अया३४म् । सूर्य्यइवोपद्दक् । ओ६वा । अयं
२ २ १ १ १ १ ऽ
सरांसिधावा२तायि । सा२प्ता । प्रा२३वा । तथौ
२२ ३२ १ १ ५ ५ ३ १
३हो । वाहा३४३यि । दा२३४यिवो६हायि ॥ (२) अया

* ऋ० वे० ७, १, १, ३ ।

† मूलेत्येतदन्त मेव षोडशं सूक्तम्, विवरणादि-मतेप्येवमेव । 'उक्तः प्रवक्तपर्य्यायः'—इति वि० ।

Digitized by Google

२ ५ ५ १ २ २ २
३४म्। विश्वानितिष्ठति। ओ६वा। पुनानोभुवनो
१ १ २ १ ५ १२ १२
पा२रायि। सो२मो। दा२३यिवाः। नसौ३रो। वा
२ १ ५ ५
हा३४३यि। रा२३४योई्हायि(३)॥ ८*॥ [१]

५ २ ४२ ५ २
॥ आमहीयवम्॥ अस्यप्रा३लामनुद्युताम्। शु
१ २ १२ २ १ ११
क्रान्दू१दू२। दु आ२३दुयाः। पयःसहा। ससा२३
२ ५ २ ४ ५२ २१ २
मृषाउ। वा३॥(१) अयऽसू३र्य्यइवोपहक्। अयऽसा
१ २ १२१ २
१रा२। सिधा२३वतायि। सप्तप्रवा। तआ२३दिवाउ।
५ २ ४२ ५ २ १ २ १
वा३॥(२) अयंवा३यिश्वानितिष्ठतायि। पुनानो१भू२। व
२ २ १२१२१ २
नो२३परायि। सोमोदेवाः। नसू२३रियाउ। वा३।
२२ १ १ १ १
स्तोषे३४५ (३)॥ २ †॥ [२]

२ १ २ १ २ १
॥ जराबोधीयम्॥ अस्यप्रतोवा। आनुद्युताम्।
१ १ २ २ २ ४ ५२ २ २
शुक्रान्दू२३दू। दुयाःसा१हा२३सा। साम्। कषो३

● ऊ० गा० ८प्र० १अ० ८सा०। † ऊ० गा० ८प्र० १अ० ३सा०।

२ २ १ १ १ २ १ १
४५ई। डा॥(१) अयꣳसूर्य्योवा। भायिवोपहक्।
२ १ २ २ १ २ ४
अयाꣳसार३रा। सिधावातायि। सप्ताप्रा१वार३ताः।
५२ २ १ १ १ १ १
आ। दिवो३४५ई। डा॥(२) अयंविश्वोवा। नायि
२१ २१ २ २१ २ २
तिष्ठतायि पुनानोर३भू। वनोपारायि। सोमोदा१
४ ५२ २ १
यिवार३ना। सू। रियो३४५ई। डा(३)॥ १० ॥ [३]
१२ २ १
॥ हाविश्मतम्॥ हावस्यप्रत्नामनुद्युतꣳहाउ। शुक्र
२ १ २ २ ५ २ २ १
न्दुदू३। क्रे अद्रा२३४याः। ऐ२हो१आ२३यिही। प
२ २ १२ २ ५२ २ २२
याःसा३हा। स्साम्। आ२र्षा२३४औहोवा॥(१) हा
२ २ १ १ १ २१
वयꣳहर्य्यंद्वोपहग्घाउ। अयꣳसरा३। सायिधावार३
५ १ १ १ १ १२
४तायि। ऐ२हो१आ२३यिही। सप्ताप्रा३वा। तथा।
२ ५२ २ २२ २
दा२र्यिवा२३४औहोवा॥(२) हावयंविश्वानितिष्ठतिहाउ।
१२ २ २ १ २ २ ५ २
पुनानोभू३। वानोपार३४रायि। ऐ२हो१आ२३यिही।

॰ ऋ॰ सा॰ ९म॰ १अ॰ १०सा॰।

१र　२　२　१र　२　५र र　२ १
सोमोदा३यिवाः । नद्व । रा२या२३४औहोवा । इवि

२ १ १ १ १
यते२३४५ ॥ ८ * ॥ [४]

१ १ १ १र　२　२
॥ आभ्रुभार्गवम् ॥ अस्यप्रत्नाम । नुद्यू३ताम् ।

१　२　१　२　५　१　२
शुक्रन्दुदू३ । द्रे आ२ह्रा२३४याः । पया:सा१हा२ ।

२ २　१　५ ५　२ १ र　१र
स्तसा३म् । भा२३४र्षीइ हायि ॥(१) अयᳶसूर्य्यः । दृवो

२　१　२　१　२　५　१
पा३हक् । मायᳶसरा३ । सायिधा२वा२३४तायि । स

२　२ २　१　५ ५　२ १
प्राप्रो१वा२ । तन्मा३ । दा२३४यिवोई हायि ॥(२) अयं

र　२　२　१ र र २　१　२
विश्वानि । तिष्ठा३तायि । पूनानोभू३ । वानो२पा२३

५　१र　२　२ २　१　५ ५
४रायि । सोमोदा१यिवा२ः । नद्व३ । रा२३४योई हा

यि ॥ १९ † ॥ [५]

१ र १ २　१　२
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ अस्यौहोवा । प्रत्ना२म् । अ

२ २　५　२ १ २ र १ २　१
नूद्यू२३४ताम् । शुक्रन्दुदू । द्रे आह्रा१या२ः । पयः ।

* ऊ० गा० ११प्र० २षा० ८गा० ।　　† ऊ० गा० १४प्र० १षा० १९गा० ।

२ १ २ ५ १ २ ५र र
हा । औ३होयि । सा२३४हा । सा२सा२३४औहो

१ १ ११११ २ र १ २ १
वा । ए३ । ऋषा२३४५यिम् ॥(१) अयौहोवा । सू

२ १ ३ ५ २ १ २र १ २
र्य्या२ः । द्रुवोपा२३४हक् । अयःसरा । सिधाबा१ता२

१ २ २ ३ ५ १ २
यि । सप्त । हा । औ३होयि । प्रा२३४वा । ता२आ

५र र २ १ ११११ २ २ १ १
२३४औहोवा । ए३ । दिवा२३४५म् ॥(२) औयौहोवा ।

१ ३ २ ३ ५ १ र २र १
वायिस्वा२ । निता॑यिष्ठा२३४तायि । पुनानोभु । बनो

२ १र २ २ २
पा१रा२यि । सोमः । हा । औ३होयि । दा२३४यि

५ १ २ ५र र २ १ १ १
वाः । ना२स२३४ औहोवा । ए३ । रिया२३

१ १
४५ः(३) ॥ २० * ॥ [६]

२ र २ १
॥ सौमित्रम् ॥ अस्यप्रत्नामनुद्युता३मे । शुक्रन्दु

१र २ १ २
दुह्रे । आ२१२३ । ह्रया३४३ः । पा२३याः । सहा

१ ४ ५ ४ ५ २ र
२ओ२३ । स्रसोवा । आ५र्षीर्६हायि ॥(१) अयःसूर्य्यं

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० २०गा० ।

Digitized by Google

र १ १ १र २
द्रुणोपहइगे। अयध्सराध्सि। धा२१ऽ२३। वना३४

१ १ १ ४ ५ ४
३यि। सा२३ना। प्रवा२श्रो२३। नषोवा। दा५यिवो

५ २ र २ १र १र
६हायि ॥(२) अयंविश्वानितिष्ठता३ए। पुनानोभुव।

२ १ १ र १
नो२१ऽ२३। परा३४३यि। सो२३माः। देवा२षो२

४ ५ ४ ५
३। नषोवा। रा५योई६हायि(३) ॥ १ * ॥ [७]

१२ १ २ र
॥ ऐटतम् ॥ षख्य। एषास्या। प्रत्नाम। नू३।

१ २ ३र र २ ५ २१ २ ५
षा२न्नू२३४औहोवा। द्यू२३४ताम्। प्रुक्रान्दू२३४दु।

३र २ १ २ ५र र २ ५ २
ह्र षा३। ह्र २ष्रा२३४औहोवा। द्रुा२३४याः। पयाः

२ ५ २१ १ २ ५र र २
सा२३४हा। सुसा३। सा२सा२३४औहोवा। षा२३

१२ १ २ र
४र्षीम् ॥(१) अयम्। एषायाम्। सूर्य्यइ। वा३।

१ २ ५र र २ ५ २ २
षा२यिवा२३४औहोवा। पा२३४हक्। पयाध्सा२३४

* ऋ० मा० १४म० १ष० १सा०।

Digitized by Google

रा । मिधा३ । सा२यिधा२३४औहोवा । वा२३४ती ।
सम्राप्रा२३४वा । तआ३ । ता२आ२३४औहोवा । ट्टी
२३४वाम् ॥(२) अयम् । एआयाम् । विश्वानि । ता
३यि । ना२यिता२३४औहोवा । ष्ठा२३४ती । पुनानो
२३४भू । वनो३ । वा२नो२३४औहोवा । पा२३४री ।
सोमोदा२३४यिवाः । नस् ३ । ना२स् २३४औहोवा ।
री२३४याः ॥ २ * ॥ [८]

॥ धुरासाकमश्वम् ॥ अस्यप्रत्ना३म् । हौ३हो३१यि ।
अनुद्युता३म् । हौ३हो३१यि । शुक्रन्दुदू३ । हौ३हो
३१ । ह्रे अह्नया३ः । हौ३हो३१यि । पयःसहा३ । हौ
३हो३१ । सहस्रसामृषा३यिम् । हौ३हो३१२३४५ई । डा ॥(१)

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० २गा० ।

Digitized by Google

अयꣳसूर्य्या३ः । हौ३हो३१यि । इवोपदृ३क् । हौ३हो
३१ । यि । अयꣳसरा३ । हौ३हो३१ । सिधावता३
यि । अयꣳसराꣳसिधा । हा३हा३यि । वा२३४ता
यि । साप्ता३उवा३ । प्रा२वा२३४औहोवा । तआदि
यि । हौ३हो३१यि । सप्तप्रवा३ । हौ३हो३१ । तआ
दिवा३म् । हौ३हो३१२३४५ई । डा ॥(२) अयंविश्वा३ ।
हौ३हो३१ । निर्तिष्ठता३यि । हौ३होयि । पुनानोभू
३ । हौ३हो३१ । वनोपरा३थि । हौ३हो३१यि । सो
मोदेवा३ः । हौ३हो३१ । नसूरिया३ः । हौ३हो३१२
३४५ई । डा ॥ ३ * ॥ [९]

॥ विलम्बसौपर्णम् ॥ अस्यप्रत्नामनुद्युतम् । ईयइ
याहायि । शुक्रन्दुदुह्रे आ । हा३ हा३ । ह्रा २ ३ ४

* आ० गा० १४प्र० २ अ० २ वा० ।

५ १ १ २ १ ३ ५र र १ र
याः। पाया३उवा३। सा२र्वा२३४औहोवा। स्वसाम्ने
३ १ १ १ १ १ २ १ र २र १ २१ २
षा२३४५यिम्॥(१) अयत्सूर्य्यइवोपदृक्। ईयइयाहा
४ ३ ४र ५र २ २ १ ५
यि। अयत्सरात्सिधा। हा३हा३यि। वा२३४तायि।
१ २ २ १ ३ ५र र २ र
साप्रा ३ उवा ३। प्रा २ वा २ ३ ४ औहोवा। तन्नादि
३ १ १ १ १ १ २१ र २ १ १ १ २
वा२३४५म्॥(२) अयंविश्वानितिष्ठति। ईयइयाहायि।
४र ३र ४५र २ २ १ ५ १ २
पुनानोभुवनो। हा३हा३यि। पा२३४रायि। सोमा३
२ १ ३ ५र र २र ३
उवा ३। दा २ यिवा २ ३ ४ औहोवा। नसूरिया २ ३

४ ५ः॥ ४*॥ [१०] १६

अथ चतुर्थी†।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २
एषप्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यःसुतः।
१ २ ३ १ २
हरिःपवित्रेअर्षति॥ १‡॥

---

* ऊ० आ० १४प्रा० २प० ४खा०।

† मूलेऽलियं पञ्चदशसूक्तस्य प्रथमा, विवरणादि-मतेष्वेवमेव। तथैवासोत्तरस्य बोध्यम्।

‡ इयमतेव पुनः ओजनात्र पञ्चम-द्वितीय-द्वितीय-ममनी। छ० वे०६, ७, ११, ४।

"हरिः" हरितवर्णः "देवः" द्योतमानः "एषः" सोमः "प्रत्नेन" पुराणेन "जन्मना" जननेन* "देवेभ्यः" देवार्थं "सुतः" अभिषुतः सन् "पवित्रे" "अर्षति" आरोचते ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी ।

२ १ २ २ २ १ २   १ २ २ १ २ १ २
एषप्रत्नेनमन्मनादेवोदेवेभ्यस्परि ।
२ १र २र
कविर्विप्रेणवावृधे ॥ २ ॥

"प्रत्नेन" पुराणेन "मन्मना" साधनेन स्तोत्रेण युक्त इति शेषः† "देवः" द्योतमानः "एषः" सोमः "देवेभ्यः" देवार्थं "कविः" मेधावी सन् "विप्रेण" मेधाविना यजमानेन ऋत्विजा "परिवावृधे" परिवर्द्धते ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी‡ ।

२ २ २ १र   १र ३ २ २ १ २
दुहानःप्रत्नमित्पयःपवित्रे परिषिच्यसे ।
१ २ ३ १ २
क्रन्दन्देवाँ अजीजनः ॥ ३ ¶ ॥ १७

* 'जन्मना—कर्मणा, नाम्ना वा'—इति वि० ।

† 'मन्मना—मन्म बलमभिधीयते, बलेन'—इति वि० ।

‡ मूले त्वेतदन्तमेव सप्तदशं सूक्तम्, विवरणादि-नयेऽप्येव मेव ।

¶ ऋ० वे० ६, ८, ११, ४ ।

"प्रत्नमित्" पुराणमेव "पयः" रसं * "दुहानः" हे सोम! पवित्रे परिषिच्यसे। हे सोम! त्वं "क्रन्दन्" शब्दं कुर्वन् "देवान्" इन्द्रादीन् "अजीजनः" स्वसमीपे जनयति। यत्र सोमोऽभिषुते तत्र देवा नियतं प्रादुर्भवन्तीत्यर्थः॥

"अजीजनः"-"अजीजनत्"—इति पाठौ †॥ ६॥ १७

अथ सप्तमी ‡।

१ २ २ १ २ ३ २ ३ १ १ २ ३ १ २
उपशिक्षापतस्थुषोभियसमाधेहिशत्रवे।

१ २ ३ १ ३ २
पवमानविदारयिम्॥ १ ¶॥

हे "पवमान" सोम! "उपशिक्ष" त्वं समीपे कुरु। कान्? "उपतस्थुषः" उपक्रम्य स्थितानस्मदभिमतानित्यर्थः। "शत्रवे" शत्रुषु अस्मद्विरोधिषु "भियसं" भयम् "आधेहि" कुरु जय। किञ्च तेषां शत्रूणां "रयिं" धनं "विदाः" § अस्मभ्यं विद्धि देहीत्यर्थः॥ ७॥

---

* 'पयः—स्वादुद्रव्यम्, अथवा पय उदकं क्षीरं वा'—इति वि०।

† "सिच्यसे"-"सिच्यते"—इत्यपि पाठभेदः।

‡ मूले नियमहादशसूक्तस्य प्रथमा, विवरणादिसतेऽप्येव सेव। तथैवाग्रोऽपरत्र बोध्यम्।

¶ ऋ० वे० ६, ८, ९, ५।

§ 'विदन्ताते, विद्ज्ञाभे, विदसत्तायामित्यसेदं रूपम्'—इति वि०।

अथ अष्टमी-नवम्योर्ऋचोः प्रतीकमेव माम्नातम्—"उपोषु-जातमप्तुरम्"—इति, "उपास्मैगायतानरः"—इति च॥

तेष्वष्टमी प्रदेशान्तरे* आम्नाता—

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
उपोषुजातमप्तुरं(गोभिर्भङ्गम्परिष्कृतम्।

१ २ ३ १ २
इन्दुन्देवाअयासिषुः) ॥ २ † ॥

"जातं" सम्यक् प्रादुर्भूतम् "अप्तुरम्" वसतीवरीभिः अद्भिः प्रेरितं "भङ्ग" शत्रूणां भञ्जकं "गोभिः" गोविकारैः पयोभिः "परिष्कृतम्" अलङ्कृतं संस्कृतम् "इन्दुं" सोमं "देवाः" इन्द्रादयः "उप उ"—इति निपातद्वयसमुदायः उपेत्यस्यार्थे वर्त्तते सुष्ठु "उप अयासिषुः" उपागच्छन्ति॥ ८॥

नवमीत्वेव मन्यत्राम्नाता‡—

१ २ ३ १ २ ३ १ २
उपास्मैगायतानरः(पवमानायेन्दवे।

३ १ ३ १ २र
अभिदेवाँइयक्षते) ॥ ३ ¶ ॥ १८

---

* अत्रैव पञ्चमे इति बोध्यम्। परमाश्चर्यमेतत्—भविष्यत्पाठस्य पूर्वम्प्रतीक-प्रदर्शनमिति।

† छ० आ० ६, १, १, १ (२भा० ४३ पृ०)—अत्रैव ५, २, १०, १—ऋ० वे० ७, १, २०, ३।

‡ उत्तराप्रन्थारम्भे एव।

¶ अत्रैव १, १, १, १ (१भा० ४पृ०)—ऋ० वे० ६, ७, ३९, १।

हे "नरः" नेतारः! यज्ञस्य "देवाम्" इन्द्रादीन् "अभि इयक्षते" आभिमुख्येन यष्टुमिच्छते यजमानाय चरते "अस्मै" अभिषूयमाणाय "इन्दवे" सोमाय "उप गायत" उपगानं कुरुत ॥ ६ ॥ १८

॥ अध्यम् ॥ उपोषुजा२तम्। अप्तु रोवा। गोभिर्भङ्गाम्। परिष्कृताम्। इन्दुदेवाय। या२३। सिषाउवा। अूधिया२ ॥(१) तमिद्वर्द्धा२न्तु। नोगिरोवा। वत्सꣳसꣳशायि। स्वरीरिवा। यइन्द्रस्यहृ। दा२३म्। सनाउवा। अूधिया२ ॥(२) अर्षानःसो२म। शङ्गवोवा। धुक्षस्वपायि। प्युषीमिषाम्। वर्द्धासमुद्रम्। ऊ२३। क्थियाउर्वा। अूधियार। ए२३धिया३४३। ओ२३४५ई। डा॥ ५ * ॥ [१]

॥ प्रतीचीनेडक्काशौ ँ॥ उपोषुजातम्। आ२प्त

---

* ऊ० आ० ६प्र० १ख० ५गा०।

राम्। गोभिर्भङ्गम्। परायिष्कृता२३४म्। हाहो
यि। इन्दुन्देवाअ्आ३या। सिषू। औ२३होवा॥(१)
तमिद्दर्ह्नन्तु। नो२गिराः। वात्स५सं५शि। श्वरायि
रिवा२३४। हाहोयि। यद्रन्द्रस्याचा३र्हीम्। सनायिः।
औ२३होवा॥(२) अर्षानःसोम। शा२ङ्गवायि। धू
त्वस्वपि। प्युषायिमिषा२३४म्। हाहोयि। वर्षास मूद्रा
३मू। क्षियशा। औ३होवा। ईंडा(३)॥ ११॥ [२]

॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ उपा५५स्मै। गा३या३तानाराः।
पा३वामा३ना। या२३आ। ऊम्मायि। दा३वायि।
आभिदेवा२इयारक्षताउ॥ ते(१)आ। भितेमा। धू३
नापा३याः। आथा२र्वा। णोआ२३शा। ऊम्मायि।
आ३यूः। दायिवन्देवायदा२यिवयाउ॥ यू(२)साः। नः

* ऋ० मा० १८म० २अ० ११वा०।

Digitized by Google

२ १ २ २ १ १२ २
पवा। स्वा३ग्नाक्ना३वायि। ग्नन्ना२ना। यग्ना२३मा।
१ २ २ १ २ २ १ १
ड्म्यायि। वाँ३तायि। ग्ना२ राजन्नोषधा२यिभ्यग्नाउ।

॥ ११ * ॥ [३]

२ १ २ ४२५ २ २ ५ २ १
॥ सफम् ॥ उपग्नी३ग्नाप। तस्यू२३४षाः। भिया
२ १ २ ४ २ ५ २ १
सा२म्। ग्नाधायिष्टी३ग्नाइ। चा३२३४वायि। पवा।
२ २ ४ २ ५
मानावी३दाइः। रा३४५योइहायि॥ २ † ॥ [४] १८

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः ‡ ॥ ५ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० ११गा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० २गा०।

‡ 'प्रथमस्याध्यायस्य समाप्तम्। नूतनौभिन्नावेतयोः प्रथमयोर्भिन्नोपक्रमो भिन्न परिसमाप्तम्'—इति वि०।

Digitized by Google

षष्ठे खण्डे*—

प्रथमतृचे, प्रथमा ।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रसोमासोविपश्चितोपोनयन्तऊर्मयः ।
१ २ ३ १ २
वनानिमहिषाइव ॥ १† ॥

"विपश्चितः" मेधाविनः "ऊर्मयः" प्रहृष्टाः "सोमासः" सोमाः "अपः" वसतीवर्याख्याः "प्र नयन्ते" प्राप्नुवन्ति । तत्र दृष्टान्तः— "वनानि महिषा इव" यथा प्रहृष्टा मृगा वनानि प्राप्नुवन्ति तद्वत् ॥

"अपोनयन्ते"-"अपांनयन्ति"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ ३र ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ १ २
अभिद्रोणानिबभ्रवःशुक्राऋतस्यधारया ।
३ २ ३ १ २
वाजङ्गोमन्तमक्षरन् ॥ २‡ ॥

---

* 'इदानीं माध्यन्दिन पवमानो वक्तव्यः, स च त्रिच्छन्दा उक्तः । स च उच्यते—प्रसोमास इति'—इति वि० ।

† ऋ० सं० ५, २, ५, २ (छन्दआ० ६।१पू०)=ऋ० वे० ९, ८, ३३, १ ।

‡ ऋ० वे० ९, ८, ३३, २ ।

Digitized by Google

"अभि" चरन्तीति शेषः अभि शब्दश्रुतेरुचित-क्रियाध्याहारः। किम्प्रति? "द्रोणानि" द्रोणकलशान् * [यद्यपि द्रोणकलश एक एव तथापि तत्प्राधान्यादितराण्यपि पात्राणि द्रोणानीत्युच्यन्ते। अथवैकस्मिन्नेव पूजार्थं बहुवचनम्। के "बभ्रवः" बभ्रुवर्णाः सोमाः "शुक्राः" दीप्ताः। केन प्रकारेण? "धारया" धाराकारेण। कस्मै प्रयोजनाय? † ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ १ १र २ १२ १ १ २ १ १
सुताइन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः।

१ २ ३ १ २
सोमाअर्षन्तुविष्णवे ॥ ३ ‡ ॥ १९ ¶

"सुताः" अभिषुताः सोमाः इन्द्रादिदेवार्थम् "अर्षन्तु" गच्छन्तु§ ॥

"अर्षन्तु"-'अर्षन्ति"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १९

---

* 'द्रोणानि—द्रोणकलश सम्बन्धानि चरु-चमसादीनि पात्राणि, तानि'—इति वि०।

† परत्रान्वयः।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ३३, १।

¶ 'अत्र गायत्री भवति'—इति वि०।

§ पूर्वत्रान्वयः।

Digitized by Google

१ २ १ १ १२
॥ आश्वम् * ॥ अभिद्रोणा२निबभ्रवाः। शुक्राऋतस्य
२ १ १२१ २ २ १ ऽ २
धारा२या। वाजङ्गोमा२३न्ताम्। आक्षा३उवा३।
१ १ १ १
रा२३४५न् (२) ॥ ११ † ॥ [१]

१ २ ऽ २ १ १
॥ सोमसाम‡ ॥ सुताइन्द्रा। यवायवायि। वरु
२ २ १ २ २ १ २ ५ ५
णायाइमा३। रुङ्गियाः। सोमाआर्षा३४। षाउ। तु
४
वायुयिष्णवायि। होपुइ। डा(३) ॥ १२ ¶ ॥ [२]

१२ २ १ २ १२
॥ आश्वम् ॥ प्रसोमासो२विपश्चिताः। अपोनयन्त
२ १ २ १२ २ ऽ २ १ १
ऊर्म्मा२याः। वनानिमा२३ही। षा३उवा३। वा२३
१ १ १ २ १ २ १२ २
४५ ॥(१) अभिद्रोणा२निबभ्रवाः। शुक्राऋतस्यधारा
१ १२ १ २ २ १ ऽ २ १
२या। वाजङ्गोमा२३न्ताम्। आक्षा३उवा३। रा२
१ १ १ १ २ २ १ २
३४५न् ॥(२) सुताइन्द्रा२यवायवायि। वरुणायमरुङ्गा

* "आश्वसूक्तम्"—इति ख० पु० पाठः। † ऊ० गा० १प्र० २ख० ११सा०।
‡ "गायत्रीसोमसाम"—इति ख० पु० पाठः। ¶ ऊ० गा० १प्र० २ख० १२सा०।

Digitized by Google

१ २र१र २ १ ऽ २ ११
२याः। सोमाऽऽर्षा२३हु। वायिष्वा३उवा३। वा२३
११
४५यि(३) ॥ १२ * ॥ [३]

१ र २र१र २ २
॥ श्रायुभार्गवम्॥ प्रसोमासोवि। पश्वा३यिताः।
१र २ १ २ ५ १ २
आपोनया३। तार्ञरम्मा२३४याः। वनाना१यिमा२।
१२ १ ५ ५ २ १र र
षिषा३ः। श्रा२३४यिवो६हायि ॥(१) अभिद्रोणानि।
२ २ १ र २ १ २ ५ १र
बभ्रा३वाः। सुतकाऋता३। स्यऋधा२रा२३४या। वाजा
२ २१ १ ५ ५ २ १र र
क्रो१मा२। तमा३। श्रा२३४रो६हायि॥ सुताइन्द्रा
२र २ १ र१ १ २ ५
य। वायाइवायि। वारुणाया३। मारुरुद्रा२३४याः।
१र २ २२ १ ५
सोमाश्रा१र्षा२। तुवा३यि। ष्वा२३४वो६हायि(३)॥११†॥[४]

१र र१ २ १ २ १ २१
॥ जराबोधीयम्॥ प्रसोमासोवा। वायिपश्चिताः। अपो
२ र १ २ ४ऽ ५र
ना२३या। तऊर्म्मायाः। वनाना१यिमा२३हायि। षाः।

---

* ऋ० मा० ६प्र० २भा० १२ण०।

† ऋ० मा० ११प्र० २भा० ११ण०।

Digitized by Google

१ १   २ २ १ १   १   २ १
इवो३४५ई। डा ॥(१) अभिद्रोणोवा। नायिबभ्रवाः।

२ १   १   २ १   २   २   ४
पुङ्काआर२३र्त्ता। स्वधाराया। वाजाङ्गो१मार२३न्ताम्।

४   २ २   १ २   १ १   १ २ २
ष। षरो३४५ई। डा ॥(२) सुताइन्द्रोवा। यावाय

१   २ १   २   १   २   २
वायि। वरूणा२३या। मरुङ्गायाः। सोमाआ१र्षा

४   ५   २ २
२३न्तू। वि। ष्णावे२३४ई। डा(३)॥ १२ *॥ [५]

१   २र   २ १   १
॥ सोमसाम† ॥ प्रसोमासाः। विपाश्चिताः। आपो

२   २   २र ३ २   १   २   ५
नाया३न्ता३यि। ऊर्म्मयः। वानानायिमा३४। हाउ।

४   १   २र   २ २   १
हिवा५इवा ॥(१) अभायिद्रोणा। निबाभ्रवाः। पुङ्का

२   २   २र ३ २   १   २   ५
आर्त्ता३स्वा३। धारया। वाजाङ्गोमा३४। हाउ।

४   १   २   २ २   १
तमा५षरान्॥(२) सुताइन्द्रा। यवायवायि। वारू

२   २   २ ३ २   १   २   ४   ४
णाया३मा३। रुङ्गियाः। सोमाआर्षा३४। हाउ। तु

४
वा५यिष्णावायि। ह्रो५ई। डा(३)॥ १३ *॥ [६]

---

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० ११सा०। † "गायत्रीसोमसाम"—इति ख० पु० पाठः।
‡ ऊ० गा० १४प्र० १ख० १२सा०।

Digitized by Google

१ र २र र १ २
॥ रौहितकुलीयम्* ॥ प्रसोमासोविपाः । चिता२ः ।
१र ११र २ १ १ २ १
अपोनयन्तऊर्म्मा२३याः । वाना२नायिमा२३ । हिषो२
५ ४ ५ २ १ र २र १ २
३४वा । आ५यिवो६हायि ॥(१) अभिद्रोणानिबा । भ्रवा
१ र २ १र २ १ १
२ः । शुक्रा ऋतस्यधारा२३ या । वाजा२ङ्गोमा २ ३ ।
२१ ५ ४ ५ ११र २र १
तमो२३४वा । न्वा५रो ६ हायि ॥(२) सुताइन्द्रायवा ।
२ १ र २१ २ १ १
यवा२यि । वरुणायमरुद्भ्या२३याः । सोमा२र्षा२३ ।
२१ ५ ४ ५
तुबो२३४वा । ष्णा५वो६हायि ॥ १४ † ॥ [७]

२र १ २ १ ३२
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ प्रसौहोवा । मासो२ । विपा
३ ५ १र २ १ २ १र
श्चा२३४यिताः । अपोनय । तऊर्म्मा१या२ः । वना ।
२ २ २ ५ १ २ ५र
हा । औ३होयि । ना२३४यिमा । हा२यिषा२३४षो
र २ १ १११११ २र १ २ १
होवा । ए३ । दूवा२३४५ ॥(१) अभौहोवा । द्रोणा
३१ २ ५ १ र १ १ २
२ । निबाभ्रा२३४वाः । शुक्रा ऋत । स्याधा१राया२ ।

---

* "रौहित कुलीयोत्तरम्"—इति अ०पु०पाठः । † उ० आ० १४प्र० १ख० १३गा० ।

१र २ २ २ ५ १ २
वाजम्। हा। औ३होयि। गो२३४मा। ता२मा२
५र २ २ १ १११२ २ र १ २
३४औहोवा। ए३। नरा२३४५न् ॥(२) सुतौहोवा।
१ २२१ ५ १ १र १२
सायिन्द्रा२। यवाया२३४वायि। वरुणाय। मरुद्भ्या१
१र र २ २ २ ५
या२ः। सोमाः। हा। औ३होयि। आ२३४र्षा।
१ २ ५र र २ १ ११११
त्वु२वा२३४औहोवा। ए३। णुवा२३४५यि (३)॥ ११*॥[८]

१ र र र ४
॥ आभीकम्॥ प्रा२३४सोमासो५। विपौहोश्चायि
५ १र २ २ २ र २ ५
ताः। अपोनयन्तऊ१र्म्मा३याः। वनामा २ ३ ४ यिमा।
१ ३ २ २ ५ १
हायिषा३उवा२३४३। आ३४५यिवो६हायि ॥(१) आ२३४
र र ४ ५ १ १ २ २
भिद्रोणा५। निवौहोभावाः। प्रुक्रातस्यधा१रा३या।
र २ ५ १ ३ २ २
वाजक्रो२ ३ ४ मा। तामा३उवा२३४३। हा३४५रो६हा
५
यि (२)॥ १५ † ॥ [९]

२र र १ २ १ १२
॥ ऐडसौपर्णम्॥ प्रसोमासोवा। वायिपश्चा२३४यि

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० ११गा०। † ऊ० गा० १९प्र० १ख० १५गा०।

Digitized by Google

५ १ १ ११ ७ ३ ५ १
ताः। अपोनया। तऊरम्मा२३४याः। वा२ना। ना
१ १ १२ १ २ ४५ २ र १
२३यिमा। हायिषाद्वा। औ३होवा॥(१) अभिद्रोणो
२ १ १२ ५ २ १ २ १ ७ ३
वा। नायिबभ्रा२३४वाः। मृक्राक्वता। स्वधा२रा२३
५ १ २ १ २ १
४या। वा२जाम्। गो२३मा। तामक्षरान्। औ२
४ ५ १ र १ २ १ २ २ ५ २१
३होवा॥(२) सुताइन्द्रोवा। यावाया२३४वायि। वरु
२ १ ७ ३ ५ १ २
णाया। मरु२द्भ्या२३४याः। सो२माः। स्या २३ र्षा।
१ २ १ २ ४ ५
द्वविष्णवा। औ३होवा। होऽ५ई। डा (३)॥१६* ॥[१०]१९

अथ प्रगाथात्मके—

द्वितीयसूक्ते, प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २३ १२
प्रसोमदेववीतयेसिन्धुर्नपिप्ये अर्णसा।

३ १२ २र ३ १र १र ३ १ २ १ १ ३ १ २
अ७ंशोःपयसामदिरोनजागृविरच्छाकोशम्मधुश्चुतम्॥१†॥

● ऊ० गा० १९प्र० २अ० १६गा०।

† ऋ० आ० ६, ६, ३, ४ (२भा० ८६पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १४, ९।

हे "सोम!" त्वं "देववीतये" देवानां पानाय तदर्थम् "अर्णसा" वसतीवर्याख्येन "प्रपिप्ये" प्राप्यायसे। तत्र दृष्टान्तः— "सिन्धुः न" यथा सिन्धुः उदकेन प्रपिप्ये प्रप्यायते तद्वत् [प्यायतेर्लिटि "लिड्यङोश्च(६,१,२९)"—इति पी-भावः], स त्वं "मदिरो न" मदकरः सुरादिरिव "जागृविः" जागरणशीलः। यद्वा, नेति सम्प्रत्यर्थे। इदानीं मदकरो जागरणशीलस्त्वम्। "अंशोः" लताखण्डस्य "पयसा" रसेन "मधुश्चुतं" मधुर-रसस्य श्चारयितारं "कोशं" द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि गच्छसि॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १र २र
आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ १र २र
तमीꣳ हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः॥ २*॥ २०१

"हर्यतः" स्पृहणीयः "प्रियः" प्रीणयिता "सूनुर्न" सूनुरिव "मर्ज्यः" मार्जनीयः "अर्जुनः" श्वेतवर्णः‡ सोमः "अत्के" रूपे विचित्रे¶ "आ अव्यत" प्राप्नोति "तम्" "ईम्" §

* ऋ० वे० ७,५,१४,२।

† 'अत्र यौधाजयं साम'—इति वि०।

‡ 'अर्जुनः—तृणसवर्णः। "एतानि वा अर्जुनानि सोमप्रतिनिधौ" तस्मादर्जुन इत्युक्तम्'—इति वि०।

¶ 'अत्के—निक्ते, सोमप्रक्षालिते'—इति वि०।

§ 'तम् ईम्—इति पदपूरणः'—इति वि०।

Digitized by Google

एनं सोमम् अङ्गुलयः "नदीषु" नदमानासु वसतीवरीषु "गभस्त्यो." वाह्वोः "आ" आभिमुख्येन "हिन्वन्ति" प्रेरयन्ति। तत्र दृष्टान्तः—"अपसः यथा" वेगवन्तः शूराः जनाः "रथं" सङ्ग्रामेषु प्रेरयन्ति तद्वत् ॥

"अर्जुनः"-"अर्जुने"—इति पाठौ ॥ २ ॥ २०

॥ यौधाजयम् ॥ प्रसो३१। मा३दे। व। वायि तार२३४यायि। सायिन्धू३ः। नपा२यि। प्येषा३४५। णा२३४सा। अ॒ग्रोःपया। सा। मदिरो२। नजा ३४५। गृ२३४वीः। अक्का२। कोशा२म्। मधू३४५। सू२३४ताम् ॥(१) अच्छा३१। को३शम्। म। धूसूर ३४ताम्। आच्छा३। कोशा२म्। मधू३४५। सू२ ३४ताम्। आचार्यतो। ष। र्जुनोषा२। त्कोषा३ ४५। व्या२३४ता। प्रिया२ः। ध्वनू२ः। नमा३४५। जी२३४याः ॥(२) प्रिया३१ः। ध्व३नुः। न। मांर्जा

२३४याः। प्रायाः३। ह्वनू२ः। नमा३४५। जीर२३४
याः। नमायि०हिन्वा। ति। अपसो२। यया३४५।
रा२३४थाम्। मदा२यि। पूवा२। गभा३४५। स्तौ
२३४यो:(३)॥ १२ *॥[१]

॥वज्रम्॥ प्रसो४म। दा४यिववो। नया३यि।
सायिन्धूः। नपायि। प्य आर्णसा३। आ०ओःपया
३। सामा२दा२३४यिराः। नजा। गूवौवाओ२३४वा।
अक्का। कोओवाओ२३४वा। मधू५स्तुताम्॥(१) अ
क्का४को। शा४ममधु। स्तु३ताम्। आक्का। कोआम्।
मधूस्तू३म्। आहर्य्यजी३। अर्जू२नो२३४आ। त्को
अ। व्यजौवाओ२३४वा। प्रियः। ह्वनौवाओ२३४वा।
नमा५र्जियाः॥(२) प्रिया४ःह्व। नू४न्नम। जिया३ः।

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १२गा०।

Digitized by Google

प्रायाः। प्रायाः। छ्नू:। नमाज्जीयाइः। आमीं

चिम्वाइ। तियार्पार२३४साः। यथा। रथोवाश्वौ२३

४वा। नदी। घुवौवाघो२२४वा। गभापूस्तियोः। दो

पुई। डा (३)॥ १२* ॥ [२]

॥ अभीवर्त्तः ॥ प्रसो३मा३देववीतयोवा। सायिन्धु

र्न पि। प्ये३आर्णा१सा२। आऽशोःपया३१२२३४। सा

मदिरः। नजागृ१वो२ः। अच्छाको१शा२म्। मधु३।

स्रू२३४५। ता२३४५म् (१) ॥१२ † ॥ [३]

॥ गौगवम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि। सायिन्धू२ः।

नपिप्येआ३। णासा। अऽशोःपयसामदा२३यिरोर।

नजा३गृवोः। अऽशोःपयसामदिरः। नजा३गृवोः।

---

* ऊ० गा० ६प्र० २अ० १२सा०।

† ऊ० गा० ८प्र० १अ० १२सा०।

Digitized by Google

१ २ १२ १ २ १ १ ५ ४
आच्छाको। ग्रा। श्रौ३हो। मधो२३४वा। स्वू५तो

६हायि(१)॥ १७*॥ [४]

१ २ १ २ १ २ २ १
॥ मुद्धाभुद्धीयाद्यम्†॥ प्रसोमदेववीतयायि। सि

१२१ १ १ २ २ १ १२
न्धुर्न्नपिप्ये अर्णा२३सा। अ‌ꣳशोपयसामदिरोनजागृ२३

२ १२ १ १ ३१ ५२२
वीः। अच्छाको२३आ३म्। मा२। धुसू३४औहोवा।

३ १ १ १ १
ता२३४५म्(१)॥ १८‡॥ [५]

५ २ १ ४२५४२ ५ १
॥ गौरूवम्॥ प्रसोमा३देववीतयायि। सायिन्धू

१ १२ १ ४ ५ १ १२ २
२ः। नपिप्ये आ३। णासा। अ‌ꣳशो:पयसामदा२३यि

१ १ १ ४ ५ २ १२ २ ३ १
रो२। नजा३गृवीः। अ‌ꣳशोःपयसामदिरः। नजा३

४ ५ १ २ २२ १ १ २ १ ५
गृवीः। आच्छाको। ग्रा। श्रौ३चो। मधो२३४वा।

४ ५ ५ २ २ ४ ५ ४ ५ १
स्वू५तो६हायि॥(१) अच्छाको३ग्रम्मधुस्वुताम्। आच्छा

१२ १ २ ४ ५ २२ १ २
२। कौग्रम्मधु३। स्वुताम्। आहर्य्यंतोअर्ज्जुनो२३

* ज०गा० ९प्र० २ख० १७सा०। † "पदानांमुद्धाभुद्धीयम्"—इति ख०पु० पाठः।
‡ उ० गा० ९प्र० २ख० १८सा०।

Digitized by Google

१ ३र २ ४ ५ २र १ र र र
आ२। त्काआ३व्याजा। आहर्य्यतौअञ्ज नोअ। त्का

२ ४ ५ १ १र १ २ २ १
आ३व्याता। प्रायःह। ना। औ३हो। नमो२३४

५ ४ ५ ५ २ ४ ५ ४ ५ १
वा। जा५योऽ६हायि॥(२) प्रियःहऽ३नुर्न्नमर्जियाः। पा

१र ३ २ ४ ५ २१र
या२ः। हनुर्न्नमा३। जायाः। तमीऽ२ह्विन्वन्त्यपार३

१ २ २ ४ ५ २ १र २ १
सो२। यथाऽ३रायाम्। तमीऽ२ह्विन्वन्त्यपसः। यथा३

४ ५ १ र २ १ २ २ १ ५
राथाम्। नाद्दीषु। आ। औ३हो। गभो२३४वा।

४ ५
स्ता५योऽ६हायि(३)॥ १७ * ॥ [६]

२ २ २ ४ऽ ५
॥ यौधाजयेत्तारान्तम्॥ पृक्षा३१। मा३दे। व।

२ २ ५ १ २ १ र
वायिता२३४यायि। सायिन्धू३ः। नपाऽ२यि। प्येअ

३ १ १ १ १ २ १ ११ २र १
र्णो३४५। सा२३४५। अऽ२भोःपया। सा। मदिराऽ२।

र ३ १ १ १ १ २ १
नजागृ३४५। वी२३४५ः। अच्छा२। कोशाऽ२म्।

३ १ १ १ १ २ २ २ ४
मधुश्चू३४५। ता२३४५म्॥(१) अच्छा३१। को३शम्।

* उ० गा० ११प्र० १ख० १०मा०।

५ २ र ५ १ २ १र
म । धुक्षू२३४ताम् । आच्छा३ । कोश्रा५२म् । मधु

२ १ १ १ १ १र १ २ १ २ १ र
मू३४५ । ता२३४५म् । आचार्य्यतो । य । जुनोआ

र २ १ १ १ १ १ १
ऽ२ । त्कोअव्या३४५ । ता२३४५ । प्रिया२ः । इनूऽ२ः ।

२ १ १ १ १ २ २ २ ४ ५
नमर्ज्जा३४५ । या२३४५ः ॥(२) प्रिया२१ः । इ३नुः । न ।

२ २ ५ १ २ १र
मार्ज्जा२३४याः । पाया३ः । इनूऽ२ः । नमर्ज्जा३४५ ।

२ १ १ १ १ २ १ २ १ २ १ र
या२३४५ः । तमायिंधिन्वा । ति । अपसोऽ२ । यया

२ १ १ १ १ १ १ २
रा३४५ । या२३४५म् । नदा२ यि । पूवाऽ२ । गभ

२ १ १ १ १
स्ता३४५ । यो२३४५ः(३) ॥ १५ * ॥ [७]

५ र २ ४र५४र ५ १ २
॥ द्वैगतम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि । सायिन्धुर्न

र १ २ २ २ ५ २ २ १
पि । प्येआर्णा१सा२ । अंशुओ३ः । हौ३चो३वा । पय

र र २ १ १ २ ५र
सामदिरोनजागृ१वीरः । अच्छा२३ । को२शा२३४ औ

* ऊ० आ० १४प्र० १ष० १५सा० ।

२ १ ३१११ ५ र २
होवा। ए३। मधू२श्चुता२३४५म् ॥(१) अच्छाकोश
४५४ ५ १ र २र ११
३म्मधुश्चुताम्। आच्छाकोश्शम्। मधूश्चु१ता२म्।
२र २ ऽ २ २ १र र ०
आहाउ। औ३हो३। वा। यतोअर्जुनोअत्केअव्याता
१ १ २ ५र र २ १
२। प्रिया२३ः। इ२ना२३४औहोवा। ए३। नमा२
१ ३११११ ५ २ ४५४ ५ १ २र
ऊर्जया२३४५ः ॥(२) प्रियःह३नुर्न्नमर्जिया। प्रायःह्नुः।
१ २ ३२ ऽ २ २ १
नमाऊर्ज्जा१या२ः। तमा३यिम्। औ३हो३वा। दिव
र २ १ १ २ ५र
त्यपसोययारा१था२म्। नदा२३यि। पूरवा२३४औ
र २ १ ३११११
होवा। ए३। गभा२स्तिये२३४५ः(३) ॥ १२ * ॥ [८]
५ र २ ४र५४ ५ १
॥ पौरुहन्मनम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि। सायि
२ र १ २ १ १ र २
न्धुर्नपि। प्यो आर्णा१सा२। णासा२। आ२ऽभोःपय।
१ऽ २ १ २ १ २ ३ ५ १
सा। मदिरो३। मदिरो३। नाजागृ२३४वी। अा

* ऊ० आ० १८प्र० १खा० १२म० ।

२ ३ १ २ १ ५ ४
चक्राकोश्राम् । माधुश्चू२३४ताम् । मधूप्श्चुताम् ॥ (१)
५ २ २ ४ ५ ४ ५ १ २ ३२ १ १
अचक्राको३श्रम्मधुश्चुताम् । आक्काकोश्रम् । मधूश्चू
१ १ १ १ऽ २
१ता२म् । श्चूता२म् । आत्यर्थतः । आ । जुनो
२ १ २ १ १ १ १ ५ १ २२ १
आ३ । जुनोआ३ । त्केअव्या२३४ता । प्रायःसूनूः ।
१ १ २ ५ ४ ५ २ ४ ५
नमाउर्जा२३४याः । नमाप्उर्जियाः ॥ (२) प्रियःसू३नुर्ना
४ ५ १ २२ १ १ १
मज्जियाः । प्रायःसूनुः । नमाउर्जा१या२ः । जाया२ः ।
१ २ २ २ऽ १ १ १ १ १
तामी०हिन्व । तायि । अपसो३ । अपसो३ । याथा
२ ५ १ २२ १ २ १ ५ ४
रा२३४थाम् । नादीषुवा । गाभस्ता२३४योः । गभा
४
प्स्तियोः । चोपुई । डा(३) ॥ १२ * ॥ [९]

१ २ २ २ १
॥ हारायणम् ॥ प्रसोमदीवा२यिववीतयायि । सा
२ २ १ २ १२
यिन्धुर्न्नपिप्ये अर्णसा । शोःपा३या । सामदिरो । न

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १२सा० ।

२ १ १ र र २ १ ५
जा३ष्वा। गृ्वी२ः। अच्छाकोशम्मधोवा३ओ२३४वा।
४ ५ १ र र १
श्चू तो६हायि ॥(१) अच्छाकोशौहो२यिमधुश्चु ताम्। आ
र र र २ २ १ र
च्छाकोशम्मधश्चु तम्। आहार्य्याहिंतो। अर्ज्ज्नोआ।
र २ २ १ १ र २ १ ५
त्केआ३ष्वा। व्याता२। प्रियःसूनुर्न्नमोवा३ओ२३४वा।
४ ५ १ १र १
जा५ये।६हायि ॥(२) प्रियःसूनौहो२यिनमर्ज्जियाः। प्रा
र २ २ १
यःसूनुर्न्नमर्ज्जियः। तमायिंहा३यिन्वा। तियपसो।
२ २ १ १र र २ १ ५
यथा३हायि। राया२म्। नदीषुवागभोवा३ओ२३४वा।
४ ५
स्ता५यो६हायि(३) ॥ १४ * ॥ [१०]

२ १र ४र ५र
॥ हिंहिङ्कारंवामदेव्यम् ॥ प्रसोमा२३देववीतयायि।
१ र र र २ १र २
सायिन्धुर्न्नपिप्ये अर्णसांओः पयसामदिरोऽनजौहो३।
१ १ २ १ र र २ १र २ १
ऊम्मा२। गृ२३वीः। अच्छाकोशाम्मधौहो३। ऊम्मा

* ऋ० मा० १०प्र० १अ० १४वा०।

१ ४ ५ २ १र ४
२। स्तुताम्। औ२३होवा ॥(१) अच्छाको३२३ग्र
५ १ र र र र र
म्मधुश्चुताम्। आच्छाकोशम्मधुश्चुतमाद्यर्य्यतोअर्जुनो
३ २ १र २ १ १ १ १ र१ २र
आत्कऔहो३। ऊम्मा२। व्या२३ता। प्रियस्यतुर्नमौ
२ १ १ २ ४ ५ २ १
हो३। ऊम्मा२। जिया। औ३होवा ॥(२) प्रियःसु२
४ ५ १ र र
३नुर्नमर्जियाः। प्रायःस्तुनुर्नमर्जियस्तमीꣳहिन्वन्त्यपसो
२ ३र १ १ १ १ १र २ ३र
ऽयथौहो३। ऊम्मा२। रा२३थाम्। नदीषुवाऽगभौ
२ १ १ ४ ५ ४
हो३। ऊम्मा२। स्तियोः। औ२३होवा। हो५
ई। डा(३)॥१७०॥ [११]

१र र १ २र १र २ १ २ १
॥ काण्वरथंतरं॥ प्रासोमदेववीतयायि। सिन्धुर्न
२ १ २ १ र र र र
पायि। ष्ये३आर्णा३सा। अꣳशोःपयसामदिरोनजागृ
१ १र २ १र ५ २
वा२३४ऐहि। अच्छाको२३४शाम्। मधा३१उवा२३।
२ २ ३ २ २र र १र २ १ १ १ २ १र
ए३। स्चुतमा ॥(१) आच्छाकोशम्मधुश्चुताम्। अच्छा

* ज० आ० १८प्र० २ख० १०सा०।

र १ २ १ र र र र
कोशाम् । मा३धुश्चू३ताम् । आइर्य्यतोअर्जु नोअत्के

२ ५र १ १ २ १ र र
अव्यता२३४ऐही । आ३इार्य्या३तो । अर्जु नोअत्केअ

२ ५र १ १ ५ २ २
व्यता२३४ऐही । प्रियःसू२३४नूः । ममा३१उवा२३ । ए३ ।

२ ३ २ २र १र २ १ २ १ २ १र २
जियआ ॥(२) प्रायःसूनुर्न्नमर्जियाः । प्रियःसूनूः । ना

१ २ १ र र र ५र २
३माज्जा३याः । तमीᳲहिन्वन्त्यपसोयथा२३४मैही । ता

१ २ १ र र २ ५र २ १र
३मायिᳲहा३यिन्वा । तियपसोयथारथा२३४मैही । नदी

५ २ २ २ २र २
षू२३४वा । गभा३१उवा२३ । ए३ । स्तियोवा ॥६*॥[१२]२०

अथ तृतीयतृचे, † प्रथमा ।

१ २र ३ २३ १२ ३ १ २
प्रसोमासोमदच्युतःश्रवसेनोमघोनाम् ।

३२ ३१२
सुताविदथेअक्रमुः ॥ १ ‡ ॥

---

* ऊ० गा० २२प्र० २ख० ६सा० ।

† 'उक्षोमाध्यन्दिनः पवमानः, उक्षानि गायत्राणि ००० । आर्भवः पवमानो धन्वयः तस्य ज्योतिष्टोमवत् छन्दांसि सान्नाम्नाय नामधेयैरिवोच्यते'—इति वि० ।

‡ छ० आ० ५, २, १ (१भा० ३०पृ०)=ऋ० वे० ९, ८, २२, १ ।

Digitized by Google

"सोमासः" सोमाः "मदच्युतः" मदस्राविणः "सुताः" अभिषुताः सन्तः "विदथे" यज्ञे "मघोनां" हविष्मतां "नः" अस्माकं "अवसे" अन्नाय कीर्त्तये वा "प्र अक्रमुः" प्र गच्छन्ति॥

"मघोनां"-"मघोनः"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १
आदीꣳहꣳसोयथागणंविश्वस्यावीवशन्मतिम्।
१ २ १ २र
अत्योनगोभिरज्यते॥ २ *॥

"आत्" अपिच "ईम्" अयं सोमः "हंसो† यथा" "गणं" जनसङ्घं स्वगतिविशेषेण स्वनेन वा प्रविशति, तद्वत् "विश्वस्य" सर्वस्य स्तोतृजनस्य "मतिं" स्तुतिं बुद्धिं वा "अवीवशत्" वशं नयति; स च सोमः "अत्यो न" अश्व इव "गोभिः" गव्यैरद्भि र्वा "अज्यते" सिच्यते स्निग्धीक्रियते॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आदीन्त्रितस्ययोषणोहरिꣳहिन्वन्त्यद्रिभिः।
३ २ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये॥ ३ ‡॥ २१

* ऋ० वे० ९, ८, ११, २।

† 'हंसः—आदित्यः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ९, ८, ११, ३। अत्रैव च पुनः ५, १, ४, १। परं तत्र तु "त्रितस्य"—इति पाठः।

"आत्" अपिच "ईम्" एनं "हरिं" हरितवर्णम् "इन्दुम्" सोमं "त्रितस्य" ऋषेः "योषणः"* अङ्गुलयः "अद्रिभिः" ग्रावभिः "हिन्वन्ति"। किमर्थम्? इन्द्राय इन्द्रस्य "पीतये" पानार्थम्॥ ३॥ २१

१ २ २२ २ १ २
॥ सꣳहितम्॥ प्रसोमासोम। दा २च्यु ताः। अ
१ २ १ २
वा २। सा २ ३ यिनो। मा २घोनाम्। सू २ ३ ताः।
१ ०२ २
वा २यिदा। थेआ २ ३। हाउवा ३। क्रा २ ३ ४
५
मूः (१)॥ १४†॥ [१]

१ २ २२ १२ २ २
॥ आष्ट्रभार्गवम्॥ प्रसोमासोम। दच्यू३ताः।
१ २२ १ २ ५ १ २
आवसेनो३। मा२घो२३४नाम्। सुतावा३यि। दा२।
३२ १ १ ५ ५
थेआ३। क्रा२३४मो६हायि(१)॥ २०‡॥ [२] २१

---

* 'योषणः—युमिश्रणे, मिश्रणकर्त्तारः ऋत्विजः,—इति वि०।

† ऊ० गा० १प्र० १ख० १४सा०।

‡ ऊ० गा० ११प्र० १ख० २०सा०।

Digitized by Google

अथैकर्च्चे चतुर्थसूक्ते*—प्रथमा।

२ १ २ ३१र २र१ २ ३ १ २
अयापवस्वदेवयूरेभन्पर्य्येषिविश्वतः।
२ ३ १ २
मधोर्धाराअसृक्षत ॥ १ ॥ †

हे सोम! "देवयुः" देवान् कामयमानः त्वम् "अया" अनया धारया "पवस्व" चर। ततः "रेभन्" शब्दायमानः "पवित्रं" "विश्वतः" "पर्य्येषि" परिगच्छसि। अनन्तरं "मधोः" मदकरस्य तव "धाराः" आत्मीयाः "असृक्षत" सृज्यन्ते ॥

अत्र द्वितीय-तृतीय-पादौ व्यत्ययेन ‡ पाठौ ॥ १ ॥

अथैकर्च्चे पञ्चमे—प्रथमा ¶।

१ २ ३ १उ २ १ ३ १ २ २ १ २
पवतेहर्यतोहरिरतिह्वराꣳसिरꣳह्या।
२क २र ३ १ २ ३ २३१ २
अभ्यर्षस्तोतृभ्योवीरवद्यशः ॥ २ ॥ §

---

* मूले, मानग्रन्थे, पदकारमते, विवरणमते चेदमपि सूक्तं तृचं; तथाचेदमेव सूक्तमस्य प्रपाठकस्यान्त्यमिति।

† ऋ० वे० ७, ५, ११, ४।

‡ तथाच—"अयापवस्वदेवयुर्मधोर्धाराअसृक्षत। रेभन्पर्य्येषिविश्वतः"—इति ऋ० पाठः।

¶ मूलादिमते लिखनक् द्वाविंशति-सूक्तस्य द्वितीयेति।

§ ऋ० आ० ६, २, ३, ११ (२ भा० २२० पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, ११, ३।

Digitized by Google

"हर्य्यतः" स्पृहणीयः "हरिः" हरितवर्णः सोमः "रंह्या" तृतीयाया आकारः साधुवेगेन "ह्वरांसि" कुटिलानि अनृजूनि पवित्राणि "अति पवते" अतीत्य गच्छति। किं कुर्व्वन्? स्तोतृभ्यः "वीरवत्" पुत्रयुक्तं "यशः" "अभ्यर्षन्" अभिगमयन् पवते ॥ २ ॥

अथैकर्च्चं षष्ठे प्रथमा *।

१ २ ३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १र २र

प्रसुन्वानायान्धसोमर्त्तोनवष्टतद्वचः।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र

अपश्वानमराधसꣳ हतामखन्नभृगवः ॥ ३ † ॥ २२

॥ इति प्रथमः प्रपाठकः ॥

"सुन्वानाय" [षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (२,३,६२वा०)] सुन्वानस्य अभिषूयमाणस्य "अन्धसः" अदनीयस्य सोमस्य "तत्" प्रसिद्धं "वचः" वचनं घोषं "मर्त्तः" मारकः कर्मविघ्नकारी "न प्र वष्ट" न भजतां न शृणोत्विति यावत्। तथा हे स्तोतारः! "अराधसं" साधककर्म-रहितं "श्वानम्" "अपहत"। तत्र दृष्टान्तः—"मखं न" यथा पुरा अपराद्धं मखम् एतन्नामानं "भृगवः" अपहतवन्तः तथा अपहतेत्यर्थः ॥

"प्रसुन्वानाय"-"सुन्वानस्य","वष्ट"-"हत"—इति पाठौ ॥१॥२२

---

* मूलादिमये विषयक् हार्विंशति-स्तम्भ तृतीयेति।

† ऋ० श्रा० ९, ९, १, ८ (२भा० १९८ पु०) = ऋ० वे० ७, ५, ९, १ = अर्चीकाराधां पुनः ९, २, २, १।

५ १र २ ३ ४ र ४
॥ आश्वारम् ॥ पव। तेहा३४। औहोपुर्य्यंतोहरा
१ र ११ २ २१ र
यिः। अतिक्षरा९सिर९। हा२३या३४। अर्षा। स्तो
१र २ ४५ ३ ११११
तृभ्योवायि। रा३वद्य। आर२३४५:(३) ॥ १६ * ॥[१]

५ १र २ ४ ५ १
॥ गौरोवितम् ॥ प्रस्तु। न्वाना ३। यषन्धसाः। म
र १ र२ ४
र्त्तोनवष्टतद्वचा२३:। आ:पश्वाना३१२३म्। अरा५धसा
१ र १ ४ ५ ४ ५
म्। हातामखा३१२३म्। नभोवा। गा५वोई्हायि ॥
(३)॥ १७ † ॥ [२]

२र र १ २ १
॥ सुज्ञानम् ॥ पवतेहा। र्य्यंतोहरायिः। अजिक्षा
१ २ १ र
रा२। सिर९ह्रिया। अभियार्षा२। स्तोतृ। भ्यो
२ ५र र १ २ १ ११११
र्वा२३४औहोवा। रवद्यमय३उपा२३४५(२) ॥१५ ‡॥[३]

२ र १र २
॥ काशीजम् ॥ पवतेहा। र्य्यंतोहा२३रा३४यिः।

---

* ऊ० गा० १६प्र० २ख० १६सा०।

† ऊ० गा० १प्र० २ख० १७सा०।

‡ ऊ० गा० ६प्र० २ख० १५सा०।

Digitized by Google

२ र १ १ र र
अजिक्करा। सिरᳪहार२३या३४। अभियर्षा। स्तोतृभ्यो
र १ ३ ५र र ३
वीरवत्। यार। आ २ ३ ४। औहोवा। ऊ २ ३ ४
५
पा(२) ॥ १६ * ॥ [४]

२ १ २ ४ ५ १ २ ५
॥ पौष्कलम् ॥ पवतेहर्य्य। तोहा २ ३ ४रायिः।
२ १ २ १ २ ३ ५ २ १ ७र
अतिक्करा। सायिरᳪहार२३४या। अभाअर्षा। स्तोतृ
३ २ १ २ १ १ १ १
रभ्योर२३४५वाई५६यि। रवद्यआर२३४५: ॥ २ † ॥ [५]२२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य
षष्ठः खण्डः‡ ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरोदेयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ १ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे द्वितीयोऽध्यायः¶ ॥

---

* ऊ० गा० ६प्र० २अ० १६सा०।

† ऊ० गा० ६प्र० २अ० २सा०।

‡ 'विहस्तौमिकं प्रथममहः समाप्तम्'—इति वि०।

¶ 'समाप्तश्च प्रथमः प्रपाठकः'—इति वि० मूलादिसर्वसमाप्तश्चैतदिति मम।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम्॥ १॥

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः आरभ्यते * ॥

तत्र,

पवस्ववाच इति पञ्चतृचात्मके प्रथमखण्डे—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

१ २   ३   १   २   ३ १र   २र ३   १   २ ३ १   २
पवस्ववाचोअग्रियःसोमचित्राभिरूतिभिः।
३ १   १र ३   १   २
अभिविश्वानिकाव्या॥ १॥ †

हे "सोम!" "अग्रियः" मुख्यः‡ त्वं "चित्राभिः" पूजनीयैः¶ "ऊतिभिः" रक्षणीयैः सह "वाचः" अस्मदीयाः स्तुतीः

---

* 'इदानीं द्वितीयमर्द्धमारभ्यते द्वितीयश्च प्रपाठकः। पञ्चदशसौमिकं द्वितीय-मर्द्धः'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १, २८, ५।

‡ 'अग्रियः प्रधानभूताः'—इति वि०। अग्रियशब्दस्यैवं व्याचष्टे भगवान् यास्कः—"अग्रगमनेनेति वाग्रगरणेनेति वाग्रसम्पादिन इति वा। अपिवापमित्ये-तदनर्थकमुपबन्धमाददीत"—इति ९, १५।

¶ 'चित्राभिः विचित्राभिः नानाप्रकारैः'—इति वि०।

Digitized by Google

प्रति "पवस्व"। [उत्तरार्द्धं उक्तमेवार्थं विशदयति—] "विश्वानि" सर्वाणि "काव्या" काव्यानि स्तुत्यात्मकानि वाक्यानि "अभि" पवस्वेति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र ३ १ २
त्वꣳसमुद्रिया अपोऽग्रियोवाचईरयन्।
१ २
पवस्वविश्वचर्षणे ॥ २ ॥ *

हे "विश्वचर्षणे" सर्वस्य द्रष्टः सोम! "अग्रियः" मुख्यः त्वं "वाचः" † "ईरयन्" प्रेरयन् "समुद्रियाः" आन्तरिक्षाणि‡ "अपः" उदकानि¶ "पवस्व" धारया क्षर ॥

"विश्वचर्षणे"-"विश्वमेजय"—इति छन्दोग-बह्वृचानां पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३१र २र ३ १ २
तुभ्येमाभुवनाकवेमहिम्नेसोमतस्थिरे।
१ २ ३ १ २
तुभ्यन्धावन्तिधेनवः ॥ ३ § ॥ १

* ऋ॰ वे॰ ७, १, २९, १।

† 'अग्रियो वाचः—प्रधानभूताः ऋग्यजुःसामलक्षणाः'—इति वि॰।

‡ "समुद्रः"—इत्यन्तरिक्षनामसु निघण्टौ पञ्चदशं पदम् (१, ३)।

¶ 'समुद्रिया अपः—समुद्रे भवाः आपः समुद्रियाः। द्रोणकलशः समुद्रः'—इति वि॰।

§ ऋ॰ वे॰ ७, १, २९, १।

Digitized by Google

हे "कवे" क्रान्तकर्म्मन् सोम ! "तुभ्यं" तव "महिम्ने" "इमा" इमानि "भुवना" भुवनानि "तस्थिरे" तिष्ठन्ति त्वामेव पुरस्कुर्वन्तीत्यर्थः । किञ्च "धेनवः" नवप्रसूतिकाः देवानां हविःप्रदानेन प्रीणयित्र्यो गावः * "तुभ्यं" त्वदर्थमेव 'आशिरं प्रयच्छ मे'—इति "धावन्ति" आगच्छन्ति ॥

"धावन्तिधेनवः"—इति छन्दोगाः, "अर्षन्तिधेनवः"—इति बह्वृचाः ॥ ३ ॥ १

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१२ ३ १ २
पवस्वेन्दोवृषासुतःकृधीनोयशसोजने ।

१ २ १ २ ३ १ २
विश्वाअपद्विषोजहि ॥ १ ॥ †

हे "इन्दो" सोम ! "सुतः अभिषुतः "वृषा" कामानां वर्षिता "पवस्व" धारया क्षर "जने" जनपदे "नः" अस्मान् "यशसः" यशस्विनः "कृधि" कुरु ; "विश्वा" विश्वान् सर्वान् "द्विषः" द्वेष्टॄन् शत्रून् "अपजहि" मारय च ॥ १ ॥

---

* 'धेनवः—गावः । अथवा धेनव आदित्यरश्मयः'—इति वि० ।

† छ० आ० ५, २, ५, २ (२भा० ३२७०) = ऋ० वे० ७, १, १२, १ ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१२ ३ १२१ १२१ २ ३१२
यस्यतेसख्येवयꣳसासह्यामपृतन्यतः।
१२ ३१२३१२
तवेन्दोद्युम्नउत्तमे॥२॥*

हे "इन्दो" सोम! "यस्य" † अस्मिन् यागे वर्त्तमानस्य "ते" तव "सख्ये" सखित्वे सति वयं स्तोतारः "तव" त्वदीये "उत्तमे" श्रेष्ठे "द्युम्ने" अन्ने तृप्तिं प्राप्ताः [तथाच यास्कः—"द्युम्नं द्योततेर्यशो वान्नं वा (निरु० नै० ५, ५)"—इति] "पृतन्यतः" युद्धमितः शत्रून् ‡ "सासह्याम" अभिभवेम ¶॥

द्वितीय-तृतीयपादौ व्यत्ययेन पाठौ॥२॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १र २र ३ १ ३२ ३ १२
यातेभीमान्यायुधातिग्मानिसन्तिधूर्वणे।
१ २ ३१२
रक्षासमस्यनोनिदः॥३§॥२

---

* ऋ० वे० ७, १, १२, ४।

† मूलपाठस्तु "यस्य"—इति; विवरणकृतापि तथैव स्वीकृतम्, पदपाठ-गान-ग्रन्थादावपि तथैव श्रूयते।

‡ 'पृतन्यतः—पृतनाः सेनाः, ताभिर्ये यान्त्यर्थं ते क्षिप्ताः वीरपुरुषाः'—इति वि०। "पृतनाः"—इति सङ्ग्रामनामसु निघण्टौ अष्टादशं पदम् (२, १७।

¶ 'सासह्याम—सहेम'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, ११, ५,।

Digitized by Google

हे "सोम!" "ते" तव "या" यानि "भीमानि" शत्रूणां भयङ्कराणि "तिग्मानि" तीक्ष्णानि "आयुधा" आयुधानि* "धुर्वणे" शत्रुवधार्थं सन्ति तैः "आयुधैः" "समस्य" सर्वस्य शत्रोः "निदः" निन्दायत्† "नः" अस्मान् "रक्ष" पालय ॥३॥ २

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषासोमद्युमाꣳअसिवृषादेववृषव्रतः ।

२ ३ १ २
वृषाधर्म्माणिदध्रिषे ॥ १ ॥‡

हे "सोम!" "वृषा" कामानां वर्षिता त्वं "द्युमान्" दीप्तिमान् "असि"। अपिच हे "देव" द्योतमान सोम! "वृषा" त्वं "वृषव्रतः" वर्षणशीलकर्मासि। किञ्च हे सोम! "वृषा" त्वं "धर्माणि" देवानां मनुष्याणाञ्च हितानि कर्माणि "दध्रिषे" धारयसि ॥

"दध्रिषे"-"दधिषे"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'शत्रुहिंसासतोमरादीनि'—इति वि० ।

† 'निदः—नितरां हयाति निदः, तस्य सम्बोधनं निदः'—इति वि० ।

‡ छ० आ० छ० ६, १, २, ८ (२भा० ६३ ४०) = ऋ० वे० ७, १, ३९, १ ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १
वृष्णस्तेवृष्ण्यꣳशवोवृषावनंवृषासुतः।
१२ ३१ २ ३ १२ ३१
सत्वंवृषन्वृषेदसि॥ २ ॥*

हे "वृषन्" कामानां वर्षक सोम! "वृष्णः" वर्षितुः† "ते" तव "शवः" बलं‡ "वृष्ण्यं" वर्षणशीलं भवति "वनं" तव भजनमपि, "वृषा" वर्षणशीलं "सुतः" अभिषुतः तव रसोऽपि "वृषा" वर्षणशीलः "स त्वं" "वृषेदसि" वर्षणशील एवासि भवसि॥

"सुतोमदः"—इति, "सत्वंसत्यम्"—इति च पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३१ ३ १२ ३१
अश्वोनचक्रदोवृषासङ्गाइन्दोसमर्वतः।
१ २ ३ १२ ३१
विनोरायेदुरोवृधि॥ ३ ¶॥ ३

हे "इन्दो" सोम! "वृषा" त्वं "अश्वोन" अश्वइव "सञ्चक्रदः" सङ्क्रन्दसे। अपिच "गाः" पशून् "अर्वतः" अश्वांश्च अस्मभ्यं

---

* ऋ० वे० ७, १, २९, २।

† 'वृष्णः'—वृषु सेचने (भ्वा० पर०) सेचन-समर्थस्य ते'—इति वि०।

‡ "शवः"—इति बलनामसु निघण्टौ तृतीयं पदम् (२, ९)।

¶ ऋ० वे० ७, १, २९, ३।

Digitized by Google

सम्प्रयच्छसीति शेषः। किञ्च "नः" अस्माकं * "राये" धनाय "दुरः" द्वाराणि "विहधि" वितताणि कुरु ॥ ३ ॥ ३

अथ चतुर्थतृचे—प्रथमा ।

१२ १ १२ १ १२१ १ २

वृषाह्यसिभानुनाद्युमन्तन्त्वाहवामहे ।

१२ ३१ २

पवमानस्वर्दृशम् ॥ १ ॥ †

हे सोम! त्वं "वृषासि हि" अभिमत-फलानां वर्षिता भवसि खलु। तस्मात् हे "पवमान" पूयमान वा सोम! "स्वर्दृशं" सर्वस्य [सूर्यस्य वा] द्रष्टारं [सर्वैर्देवैर्द्रष्टव्यं वा] "भानुना" तेजसा "द्युमन्तं" दीप्तिमन्तम् अतिशयेन तेजस्विनमित्यर्थः [स्तुतिमन्तं वा], "त्वा" त्वां वयं "हवामहे" यज्ञेषु आह्वयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२१ १२ २ १२ ३ १ २ ३१ २

यदद्भिःपरिषिच्यसेमर्म्टज्यमानआयुभिः ।

१ २३१२१ २

द्रोणेसधस्थमश्नुषे ॥ २ ॥ ‡

---

* 'नः-अस्मभ्यम्'—इति वि० ।

† ऋ० आ० ५, २, ५, ४ (२भा० ३३पृ०) = ऋ० वे० ७, २, १, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, २, २, १ ।

हे सोम! त्वम् "आयुभिः" मनुष्यैः * ऋत्विग्भिः "मृज्यमानः" अतिशयेन शोध्यमानः सन् "अद्भिः" वसतीवर्याख्याभिः "यद्" यदा "परि सिच्यसे" परितः सिच्यमानो भवसि, तदानीं "द्रोणे" द्रोणकलशेन गृह्यमाणः सन् "सधस्थं" सह तिष्ठन्त्यत्रेति सधस्थं स्थानं ग्रहचमसादिकम् "अश्नुषे" व्याप्नोषि ॥

"मृज्यमानआयुभिः"-"मृज्यमानोगभस्त्योः"—इति, "द्रोणे"-"द्रुणा"—इति च पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २
आपवस्वसुवीर्य्यम्मन्दमानःस्वायुधः ।
३ १ २ ३ १ २
इहोष्विन्दवागहि ॥ ३ † ॥ ४

हे "स्वायुध"! यज्ञे 'स्फ्य-कपालादीनि दशायुधानि-इत्यभिधीयन्ते, शोभनानि तानि यस्य स तथोक्तः। यद्वा धनुरादीन्यायुधानि यस्य सः, तादृश हे सोम! त्वं "मन्दमानः" मोदमानः सन् [अन्तर्णीतण्यर्थः] देवान् स्वयं मादयन् ‡ "सुवीर्य" शोभनवीर्योपेतं पुत्रादिकमस्माकम् "आ पवस्व" पवतिर्गत्यर्थः, आ प्रापय। किञ्च हे इन्दो! ग्रहेषु चमसेषु रक्षणशील सोम!

* "आयवः"—इति निघण्टौ मनुष्यनामसु सप्तदशं पदम् (२ ३)।

† ऋ० वे० ७, १, १, ५।

‡ 'मन्दमानः—शोध्यमानः तप्यमानोवा'—इति वि०।

Digitized by Google

"इह उ" इहैव* अस्मदीये यज्ञे "सु आगहि" सुष्ठु†
आगच्छ ॥ ३ ॥‡

अथ पञ्चमतृचे—प्रथमा ।

१२   २१२१२   ३२
पवमानस्यतेवयम्पवित्रमभ्युन्दतः ।
३ १ २र
सखित्वमावृणीमहे ॥ १ ॥‡

हे सोम ! "पवित्रम् अभ्युन्दतः" पवित्रमभिद्रवतः¶ "पवमानस्य" क्षरतस्य "ते" तव "सखित्वं" सख्यं वयम् अस्मदीयाः आङ्गिरसाः स्तोतारः "आ वृणीमहे" प्रार्थयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२३१२३१ २ ३ १२ ३१ २
येतेपवित्रमूर्मयोभिक्षरन्तिधारया ।
१२
तेभिर्नःसोममृडय ॥ २ ॥ §

हे सोम ! "ते" तव "ये" ऊर्मयः तरङ्गाः|| "पवित्र"

---

*,† 'उ, सु—इति द्वावपि पदपूरणौ,—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, १८, ४ ।

¶ 'अभ्युन्दतः—आर्द्रं कुर्वन्—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, १८, ५ ।

|| 'ऊर्मयः—लहर्यः, सोमखण्डाताः—इति वि० ।

Digitized by Google

"धारया" "अभि चरन्ति" तेभिः तैः ऊर्मिभिः "नः" अस्मान् "मृड़य" सुखय ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ २ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सनःपुनानआभररयिंवीरवतीमिषम्।
१ २ ३ १ २
ईशानःसोमविश्वतः ॥ ३ * ॥ ५

हे सोम! "विश्वतः" सर्वस्य जगतः "ईशानः" ईश्वरः "सः" अभिषुतः "पुनानः" पूयमानः त्वं "नः" अस्मभ्यं "रयिं" धनं "वीरवतीं" पुत्राद्युपेतम् "इषम्" † तम् "आभर" आहर ॥ ३ ॥ ५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः ‡ ॥ १ ॥

——000——

* ऋ० वे० ७, १, १९, १।

† 'इषं—इष्टिमन्नं वा—इति वि०।

‡ 'उक्तां वक्ष्यमाणम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीयखण्डे *—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

२ ३ १ ३१   ३ १ २   ३१२
अग्निन्दूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसम्।
२ ३१२ ३१२
अस्ययज्ञस्यसुक्रतुम्॥ १॥ †

[अग्नेर्दूतत्वमेतन्मन्त्रव्याख्याने तैत्तिरीयब्राह्मणे समाम्नायते—'अग्निर्देवानां दूत आसीदुशनाकाव्योऽसुराणाम्'—इति] तादृशं देवं "दूतम्" अग्निम् अस्मिन् कर्म्मणि वृणीमहे भजामः। कीदृशं "होतारं" देवानामाह्वातारं "विश्ववेदसं" सर्वधनोपेतं [बहुव्रीहौ विश्वं सञ्ज्ञायाम् (६, २, १०६)"—इति पूर्वपदान्तोदात्तत्वम्] "अस्य" प्रवर्त्तमानस्य यज्ञस्य निदानत्वेन "सुक्रतु" शोभन-कर्माणं शोभन-प्रज्ञं वा॥ १॥

अथ द्वितीया।

३१२ ३ १२   ३ १२   ३ १ २
अग्निमग्निंहवीमभिःसदाहवन्तविश्पतिम्।
३ १२   ३१
हव्यवाहम्पुरुप्रियम्॥ २॥ ‡

---

* 'इदानीमाग्नि'—इति वि०।

† ऋ० भा० १, ९, १, २ (१भा० ८७ पृ०) = ऋ० वे० १, १, २२, १।

‡ ऋ० वे० १, १, २२, २।

[यद्यप्यग्निः स्वरूपेणैक एव तथापि प्रयोगभेदादाहवनीयादिस्थानभेदाद्वा बहुविधत्वमभिप्रेत्य] "अग्निम्-अग्निम्"—इति वीप्सा तं "हवीमभिः" आह्वानकरणैर्मन्त्रैः "सदा हवन्त" निरन्तरमनुष्ठातार आह्वयन्ति*। कीदृशम्? "विश्पतिं" विशां प्रजानां होत्रादीनां पालकं "हव्यवाहं" यजमान-समर्पितस्य हविषः देवान् प्रति वोढारम् अतएव "पुरुप्रियं" बहूनां देवानां प्रीत्यास्पदम्॥ [अग्निमग्निम्—"नित्यवीप्सयोः (८, १, ४)"—इति वीप्सायां द्विर्भावः; "तस्य परमाम्रेडितम् (८, १, २)"—इत्युत्तरस्य आम्रेडित-सञ्ज्ञायाम् "अनुदात्तञ्च (८, १, ३)"—इत्यनुदात्तत्वम्। हवीमभिः—'ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०, उभ०); आह्वानकरणभूतेषु मन्त्रेषु स्वव्यापारस्वातन्त्र्यात् कर्त्तृत्वविवक्षया "अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते (३, २, ७५)"—इति कर्त्तरि मनिन्; तस्य छान्दस ईडागमः; बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति धातोः सम्प्रसारणम्; परपूर्वत्वं; गुणावादेशौ; नित्त्वादाद्युदात्तत्वं (६, १, १९७)। सदा—"सर्वैकान्येत्यादिना (५, ३, १५)" सर्वशब्दाद्दाप्रत्ययः "सर्वस्य सोऽन्यतरस्याम् (५, ३, ६)"—इति सभावः; व्यत्ययेनाद्युदात्तत्वम् (३, १, ८५)। हवन्त—ह्वेञो लट् झस्य अन्तादेशः (७,१,३); टेरेभावश्छान्दसः (६, ४, ७६) अपि "बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति सम्प्रसारणम्; "तिङ-

* 'हवीमभिः—होतव्यैः सदा हवन्तः आह्वयन्तः; यानि होतव्यानि हवींषि, तैः पुरतोऽवस्थितैः सदाह्वयन्ते इति वि०।

Digitized by Google

तिङः (८, १, २८)"—इति निघातः। विश्पतिं—"पत्यावैश्वर्य्ये (६, २, १८)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरे प्राप्ते, "परादिश्छन्दसि (६, २, १९९)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्। हव्यवाहम्—'वह प्रापणे (भ्वा०, उभ०), "वहश्च (३, २, ६४)" —इति णिव प्रत्ययः; कृदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३९)। पुरूणां प्रियं—समासान्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३)॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २　३ १ २　२ ३ १ २
अग्नेदेवाँइहावहजज्ञानोवृक्तबर्हिषे।
२ ३ १ २ ३ १ २
असिहोतानईड्यः॥ ३ *॥ ६ †

हे "अग्ने!" "जज्ञानः"‡ अरण्योरुत्पन्नः त्वं "वृक्तबर्हिषे" आस्तरणार्थं छिन्नेन बर्हिषा युक्ताय। तं 'यजमान मनुग्रहीतुम् "इह" कर्मणि हविर्भुजो देवानाह—"नः" अस्मदर्थं "होता" देवानामाह्वाता त्वम् "ईड्योसि" स्तुत्यो भवसि॥ ३॥ ६

द्वितीयतृचेषु¶—प्रथमा।

१ २ ३ १　२　३ १ २ ३　१ २
मित्रंवयँहवामहेवरुणँसोमपीतये।
२ ३ १ २ ३ १ २
याजातापूतदक्षसा॥ १॥ §

* ऋ० वे० १, १, १२, ३।　　† "आग्नेय माज्यमुक्तम्"—इति वि०।

‡ 'जज्ञानः—जायमानः, अथवा यजमानः'—इति वि०।

¶ 'इदानीं मैत्रावरुणमुच्यते—इति वि०। आज्यमिति शेषः।

§ य० वे० ३३, ४६=ऋ० वे० १, २, ८, ४।

"वयम्" अनुष्ठातारः "सोमपीतये" * सोमपानार्थं ["दासीभारादित्वात् पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्] "मित्रं" "वरुणं" च उभावाह्वयामः। कीदृशावुभौ? "या जाता" यौ जातौ सन्तौ प्रदेशं प्रादुर्भवन्तौ, "पूतदक्षसा" शुद्धबलौ †। [पूञ् पवने (क्र्या०, उभ०); "निष्ठा (३, २, १०२)"—इति क्तः, "श्र्युकः किति (७, २, ११)"—इति इट् प्रतिषेधः। पूतं दक्षो ययोस्तौ "बहुव्रीहौ प्रकृत्या (६, २, १)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम् ॥

"याजाता"-"जज्ञाना"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ १ २ २१ २ ३१२ १ २३ १ २
ऋतेनयावृतावृधावृतस्यज्योतिषस्पती।
१ २ १२ २२
तामित्रावरुणाहुवे ॥ २ ‡ ॥

"यौ" मित्रावरुणौ "ऋतेन" सत्यवचनेन¶ यजमानानुग्रहकारिणा "ऋतावृधौ" ऋतमवश्यम्भावितया सत्यं कर्मफलं तस्य वर्धकौ "ऋतस्य" सत्यस्य प्रशस्तस्य "ज्योतिषः" प्रकाशस्य "पती" पालकौ § [श्रुत्यन्तरे मित्रावरुणयोरदिति-पुत्रत्वेन श्रुतत्वात्

* "मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः"—इति पा० ३।३।९६।

† "पूतदक्षौ—पूतत्वेन दक्षत्वेन च सम्पन्नौ"—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, २, ८, ५।

¶ 'ऋतेन—यज्ञेन—इति वि०।

§ 'ज्योतिषः नक्षत्रजातस्य ज्योतिष्टोमस्य वा पती'—इति वि०।

Digitized by Google

द्वादशादित्येष्वन्तर्भूतत्वेन ज्योतिषः पालकत्वं युक्तम्, श्रुत्यन्तरे च अष्टौ पुत्रासो अदितेरित्युपक्रम्य मित्रश्च वरुणश्चेत्यादिकमाम्नातम् तौ मित्रावरुणौ । तथाविधैर्मित्रावरुणैः "सुपां सुलु-मिति (७, १, ३९) पूर्वसवर्णदीर्घ आकारः] "हुवे" आह्वयामि । [ह्वेञ आत्मनेपदोत्तमपुरुषैकवचने सम्प्रसारणे (६, १, ३४) पूर्वरूपत्वे च (६, १, १०८) "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शपोलुक्; टेरेत्वम् (३, ४, ७९); "गुणे प्राप्ते "क्ङिति च (१,१,५)"—इति प्रतिषेधः; उवङा-देशः (६, ४, ७७); "तिङ्ङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २   ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
वरुणःप्राविताभुवन्मित्रोविश्वाभिरूतिभिः ।

१ २   ३ १ २
करतान्नःसुराधसः ॥ ३ * ॥ ७

अयं "वरुणः" देवः अस्माकं "प्राविता भुवत्" प्रकर्षेण रक्षको भवतु । "मित्रः" च "विश्वाभिः ऊतिभिः" सर्वाभिः प्राविता भुवत् । तावुभावपि "नः" अस्मान् "सुराधसः" प्रभूतधनयुक्तान् "करतां" कुरुताम् । [डुकृञ् करणे (उभ०) भौवादिकः, लोटस्तस्, तसस्ताम्, अकर्त्तरि शप्, गुणोरपरत्वम्,

---

* ऋ० वे० १, २, ८, ६ ।

शप: पित्त्वादनुदात्तत्वम् (२, १, ४); तिङश्च लसार्वधातुक-स्वरेण (६, १, १८६) धातुस्वरं (६,१, १६२) शिष्यते ॥३॥ ७

इन्द्रमिद्गाथिनइति चतुर्ऋचं तृतीयं सूक्तम् *,

तत्र प्रथमा।

२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ ३२ ३ १ ३ ३ १ २
इन्द्रमिद्गाथिनोबृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः।
२ ३ १ २
इन्द्रंवाणीरनूषत ॥ १ † ॥

"गाथिनः" गीयमान-सामयुक्ता उद्गातारः "इन्द्रमित्" इन्द्रमेव "बृहत्" "त्वामिद्धिहवामहे (छ० आ० ३, १, ५, २)" —इत्यस्यामृच्युत्पन्नेन बृहन्नामकेन (आ० गा० १, १, २७) साम्ना "अनूषत" स्तुतवन्तः। [णु स्तुतौ (तु०, प०) ; "णो नः (६, १, ६५)"—इति नत्वम्; लुङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् (३, १, ८५); झस्य अदादेशः (७, १, ५); सिच इडभावः उकारस्य दीर्घत्वं छान्दसम् (६, १, १३३); धातोः कुटादित्वात् सिचो ङित्त्वेन (१, २, १) गुणाभावः (१, १, ५)] "अर्किणः" अर्चन-हेतु-मन्त्रोपेता होतारः "अर्केभिः" उक्थ-रूपैर्मन्त्रैरनूषत। ये त्ववशिष्टा अध्वर्यवः ते "वाणीः" वाग्भिः" यजूरूपाभिः इन्द्रम् अनूषत [अर्कस्य मन्त्रपरत्वं यास्केनोक्तम् (५, ४) 'अर्कोमन्त्रोयदनेनार्चन्तीति'] ॥ १ ॥

---

*'ऐन्द्रमाद्यमिदम्—इति वि०।

† छ० आ० ३, १, १, ५ (१भा० ४१७ पृ०) = ऋ० वे० ६, ६, १३, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २२उ ३ २ ३ १ २ ३१ २३१ २
इन्द्रइद्धर्य्योस्सचासम्मिश्लआवचोयुजा ।

१ २३१ १२ १ २
इन्द्रोवज्रीहिरण्ययः ॥ २ * ॥

"इन्द्रइत्" इन्द्रएव "हर्य्योः" हरिनामकयोरश्वयोः "सचा" सह युगपत् "आ सम्मिश्लः" सर्वतः सम्यक् मिश्रयिता । कीदृशयोर्हर्य्योः ? "वचोयुजा" इन्द्रस्य वचनमात्रेण रथे युज्यमानयोः सुशिक्षितयोरित्यर्थः । अथम् "इन्द्रः" "वज्री" वज्रयुक्तः "हिरण्ययः सर्वाभरणभूषितइत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २   ३ १ २
इन्द्रवाजेषुनोवसहस्रप्रधनेषुच ।

३१ ३१ २३ १ २
उग्रउग्राभिरूतिभिः ॥ ३ † ॥

हे "इन्द्र !" "उग्रः" शत्रुभिरप्रधृष्यः त्वम् "उग्राभिः" अप्रधृष्याभिः "ऊतिभिः" अस्मद्रक्षणपरपक्षाभिः "वाजेषु" युद्धेषु "नः" अस्मान् "अव" रक्ष । तथा "सहस्रप्रधनेषु च" सहस्र-सङ्ख्याक-गजाश्वादि-लाभयुक्तेषु महायुद्धेष्वपि रक्ष ॥ ३ ॥

---

* ऋ० आ० प० १, २, ३ (२भा० २६७पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, २ ।

† ऋ० आ० प० १, २, ४ (२भा० २६८पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, ३ ।

Digitized by Google

अथ चतुर्थी।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रोदीर्घायचक्षसआसूर्यᳫँरोहयद्दिवि।

२उ ३ १ २
विगोभिरद्रिमैरयत्॥ ४ *॥ ८ †

अयम् "इन्द्रः" "दीर्घाय" प्रौढाय निरन्तराय "चक्षसे" दर्शनाय "दिवि" द्युलोके "सूर्यमारोहयत्" पुरा वृत्रासुरेण जगति यदापादितं तमस्तन्निवारणेन प्राणिनां दृष्टिसिध्यर्थम् आदित्यं द्युलोके स्थापितवानित्यर्थः। स च सूर्यः "गोभिः" स्वकीय-रश्मिभिः "अद्रिम्" मेघम् "व्यैरयत्" विशेषेण दर्शनार्थं प्रेरितवान् प्रकाशितवानित्यर्थः [अथवा इन्द्रएव "गोभिः" जलैर्निमित्तभूतैः "अद्रिं" मेघं "व्यैरयत्" विशेषेण प्रेरितवान्। पञ्चदश-सङ्ख्याकेषु रश्मि-नामसु 'खेदयः' (१) 'किरणाः' (२) 'गावः' (३)—इति पठन्ति (निघ० १, ५); त्रिंशत्सङ्ख्याकेषु मेघनामसु 'अद्रिः'(१) 'ग्रावा'(२)—इति पठितम् (निघ० १, १०)॥ ४॥ ८

---

* ऋ० वे० १, १, १३, ४।

† 'इदामीमैन्द्राम्नमाज्यम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृचात्मके चतुर्थसूक्ते—

प्रथमा।

१ २ ३ १र २र ३१ २३ १र २र
इन्द्रे अग्नानमोबृहत्सुवृक्तिमेरयामहे।
३ १र २र ३१२
धियाधेनाअवस्यवः॥ १ *॥

"अवस्यवः" रक्षणकामाः वयम् "इन्द्रे" देवे "अग्ना" अग्नौ च "बृहत्" महत्वं वर्द्धकं † "नमः" हविर्लक्षणमन्नं ‡ "सुवृक्तिं" सुप्रवृत्तां स्तुतिञ्च ¶ "आईरयामहे" प्रेरयामः। तथाच "धिया" कर्मणा युक्ता § "धेनाः" ‖ [वाङ्नामैतत् (निघ० १, ११, २८)] स्तुतिरूपा वाचश्च अभिप्रेरयामः॥ १॥

अथ द्वितीया।

१र २र३१२ ३ १र २र ३१२
ताहिशश्वन्तईडतइत्थाविप्रासऊतये।
३२ ३१ २
सबाधोवाजसातये॥ २ **॥

* ऋ० वे० ५, ६, १०, ४।

† 'बृहत्—महत्'—इति वि०।

‡ 'नमः—नमस्कारम्'—इति वि०।

¶ 'सुवृक्तिं—शोभनां वृक्तिं वरणम्'—इति वि०।

§ 'धिया बुद्ध्या'—इति वि०। "धीः"—इति कर्मनामसु निघण्टौ एकविंशतितमं पदम् (२, १)।

‖ 'धेनाः—धेट् पाने (भ्वा० प०), पानसमर्थाः'—इति वि०।

** ऋ० वे० ५, ६, १०, ५।

Digitized by Google

"ता हि" तौ खलु * इन्द्राग्नी "अश्वन्तः" बहवः "विप्रासः" मेधाविनः जनाः "ऊतये" रक्षणाय "इत्थम्" अनेन प्रकारेण "ईळते" स्तुवन्ति। तथा "सबाधः" समानं परस्परं बाध्यमाना जनाः "वाजसातये" अन्नसातये अन्नलाभाय ताविन्द्राग्नी ईळते। यद्वा 'वाजसातिः'—इति सङ्ग्रामनाम (निघ० २, १७, ३६) सङ्ग्रामार्थम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २३ २३ १ २
ता वाङ्गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वन्तो हवामहे।

३ १ २ ३ १ २
मेधसाता सनिष्यवः ॥ ३ † ॥ ९

"विपन्यवः" स्तोत्रमिच्छन्तः "प्रयस्वन्तः" हविर्लक्षणेनान्नेनोपेताः ‡ "सनिष्यवः" सनिं धनमात्मन इच्छन्तः वयं "मेधसाता" मेधानां यागानां ¶ "सातौ" सम्भजने निमित्तभूते

* 'चौति यश्चाहर्थें'—इति वि०।

† ऋ० वे० ५, ६, १०, ६।

‡ 'प्रयस्वन्तः—प्रकर्षेण यजमान गृहान् प्रति गच्छन्तः'—इति वि०।

¶ "मेधः"—इति निघण्टौ यज्ञनामसु चतुर्थं पदम् (३, १७)।

Digitized by Google

सति हे इन्द्राग्नी! "ता" तौ "वां" युवां "गीर्भिः" स्तुतिभिः "हवामहे"॥

"विपन्यवः"-"विपन्यवे"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायनस्य तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः * ॥ २ ॥

वृषापवस्वेति तृतीयखण्डे †—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

१ २   ३ १२ ३ १ २   ३ १

वृषापवस्वधारयामरुत्वतेचमत्सरः ।

२ २ १ २ ३१ २

विश्वादधानओजसा ॥ १ ‡ ॥

हे सोम! त्वं "वृषा" स्तोतृणामभिमत-फलस्य वर्षकः सन् "धारया" त्वदीयया "पवस्व" द्रोणकलशमागच्छ [पवतिर्गतिकर्मा (निघ० २, १४, १०८) आगतस्त्वं यदा अस्माभिः इन्द्राय दीयसे तदा "मरुत्वते" सहाया मरुतो यस्य सन्ति तस्मै इन्द्राय "मत्सरः" मदकरश्च भव। कीदृशः? "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि व्याप्तानि वा धनानि "ओजसा" आत्मीयेन बलेन

* 'उक्तं प्रातःसवनम्'—इति वि० ।

† 'इदानीं माध्यन्दिनं सवनमभिधीयते'—इति वि० ।

‡ ऋ० चा० ५, २, ४, ३ (१भा० १०४०) ऋ० वे० ७, २, २, ४ ।

Digitized by Google

युक्तः सन् स्तोतृभ्यः तानि "दधानः" प्रयच्छंस्त्वं मादयिता भवेति समन्वयः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
तन्त्वाधर्त्तारमोण्योऽ३ऽप्पवमानस्वर्दृशम्।
३ १२ ३२ ३ १ २
हिन्वेवाजेषुवाजिनम् ॥ २ * ॥

हे "पवमान" पूयमान पुनान वा सोम! "ओण्योः" [द्यावापृथिवी नामैतत् (निघ० ४, ३०, १५)] तयोः "धर्त्तारं" धारकम् अतएव "स्वर्दृशं" सर्वस्य सर्वेव द्रष्टारं, सर्वैर्द्रष्टव्यं वा। "वाजिनं" बलवन्तं तं पूर्वोक्तगुणं प्रसिद्धम् "त्वा" त्वां "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु त्वां प्रेरयामि [यद्वा "वाजेषु" विषयेषु प्रेरयामि, अन्नादिकं प्रयच्छे त्यर्थः † ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ १ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
अयाचित्तोविपानयाहरिःपवस्वधारया।
२ ३ १ २
युजंवाजेषुचोदय ॥ ३ ‡ ॥ १० ¶

---

* ऋ० वे० ७, १, ३, १।

† 'वाजेषु—यज्ञेषु। सङ्ग्रामेषु, अधिकरणभूतेषु। वाजिनं बलवन्तं वेगवन्तं वा'—इति वि०।

‡ ऋ० वे०७, १, ३, २।

¶ 'इह यौक्ताश्वं साम'—इति वि०। 'यौक्ताश्व-प्रभृतीनि सामानि तेषां नाम्नो नार्थप्रतिपत्तिः'—इति च वि०।

हे "पवमान" सोम! "अया" * [अय पय गतौ (भ्वा०, आ०) पचाद्यच् (३, १, १३४), तृतीयाया आकारः (७, १, ३९)] कर्मार्थमितस्ततो गच्छन्तीभिः "विपा" [विप प्रेरणे (चु०, उभ०) हवींष्यग्नौ प्रेरयन्तीति विपा अङ्गुलयः। एकवचनं छान्दसं प्रत्येक-विवक्षया वा] एताभिर्मदीयाभिरङ्गुलिभिः "चितः" ज्ञातः निर्गतः अभिषुतः "हरिः" हरितवर्णः त्वं "धारया" सन्ततया "पवस्व" द्रोणकलशं प्रत्यंश गच्छ। किञ्च "युजं" † सखायम् इन्द्रं "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु ‡ "चोदय" प्रेरय। यदास्माभिरिन्द्रार्थं सोमा दीयन्ते तदानीमिन्द्रः सुत्पानेन हृष्टः सन् शत्रून् हन्तीत्यर्थः॥ २॥ १०

॥यौक्ताश्वम्॥ औहोहोहायि। वृषा। पवस्वा३ धारायाइ। मारुत्वा२३४तायि। चोयि। चमा२३। चमारत्सार२३४राः। औहोहोहायि। विश्वा। दधा२ ना२३४ओ। जासार२३४औहोवा॥(१) औहोहोहायि। तन्वा। धर्त्ताराइमोणायोइः। पावा२ मा २ ३ ४ ना।

---

* 'अया—अनया विपा विप्रस्य प्राज्ञधिया'—इति वि०।

† 'युजं—योग्यम्'—इति वि०।

‡ 'वाजेषु—यज्ञेषु'—इति वि०।

Digitized by Google

ओयि । सुवा२३ । सुवा२र्हू२३४शाम् । औहोहोवा
यि । हिन्वायि । वाजा२यिषू२३४वा । जा२यिना२३४
औहोवा ॥(२) औहोहोहायि । यया । चित्तोवी३पा
नाया३ । दारा२यिः । पा२३४वा । ओ । स्वधा२३ ।
स्वधा२रा२३४या । औहोहोहायि । युजाम् । वाजा२यि
षू२३४चो । दाया २ ३ ४ औहोवा । ओयि । ज्वर
आ(३) ॥ १८ * ॥ [१]

॥ सन्तनि ॥ वृषाहाउ । पावस्वधा३१उवा२३ । रा
२३४या । मरुत्वतेचमत्सरा१ः । विश्वाहाउ । दाधान
ओ३आउवा२३ । जा२३४सा ॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमोण्योः
पवमानस्वर्हृशा२३४५म् । हिन्वेहाउ । वाजेषुवा३
१उवा२३ । जा२३४यिनाम् ॥(२) यया चित्तोविपानया

* ऊ० गा० १प्र० २ख० १८गा० ।

१ २ १र २११११ १ २ १ र १ १
हरिःपवस्वधारया२३४५। युजाऽऽ२हाउ। वाजेषुचो३वा।
५
उवा२३। हा२३४या(३) ॥ १ * ॥ [२]

१र १ २ १ २ १ ५
॥ ऐडसौपर्णम् ॥ वृषापवोवा। स्वाधारा२३४या।
२१२१ ७ २ ५ १
महत्वतायि। चमा२त्सा२३४राः। वा२ऽयिस्वा। दा२
२ १ १र १ २ ४ ५ २ र १ २
३धा। नाम्रोजसा। औ३होवा ॥(१) तन्त्वाधर्तोवा।
१ २ २ ५ ११ २र १ ७ ३ ५
रामोणा२३४योः। पवामाना। स्वर्वा२र्दृ २ ३ ४ शाम्।
२ १ २र १ ४ ५
हा२ऽयिन्वे। वा२३जायि। षूवाजिनाम्। औ३होवा ॥(२)
२र १२ १ २ ३ ५ ११ ११
अयाचित्तोवा। वायिपाना२ ३ ४ या। हरायिःपवा।
७ ३ ५ १ २ १२र १
स्वधा२रा२३४या। यू२ऽजाम्। वा२३जायि। षूचोदया।
२ ४ ५ ४
औ३होवा। होऽ५ई। डा(३) ॥ २ † ॥ [३]

१ २र १ १ १ २
॥ रोहितकूलीयोत्तरम् ॥ वृषापवस्वधा। रया२।
१ र११ २ १ १ २ १
महत्वतेचमत्सा२३राः। वायिस्वा२दाधा२३। नम्रो२३४

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० १सा०। † ऊ० गा० ४प्र० १ख० २सा०।

Digitized by Google

वा। जा५सोइ६हायि॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमो। णियो

२ः। पवमानस्वर्दृ२३शाम्। हायिन्वे२वाजा२३यि।

पुवो२३४वा। जा५यिनोइ६हायि॥(२) अयाचित्तोविपा।

नया२। हरिःपवस्वधारा२३या। यूजा२वाजा२३यि।

पुचो२३४वा। दा५योइ६हायि(३)॥२*॥[४]

॥आमहीयवम्॥ वृषोपा३वस्वधारया। मरुत्वा१

जा२यि। यमा२३त्सरा:। विश्वादधा। नओ२३जसा

उ। वा३॥(१) तन्त्वाधा३र्त्तारमोणियो:। पवामा१

ना२। स्वा२३र्दृशाम्। हिन्ववाजायि। पुवा २ ३

जिनाउ। वा३॥(२) अयाचा३यित्तोविपानया। हरा

यि:पा१वा२। स्वधा२३रया। युजंवाजायि। पुचोर

३दयाउ। वा३। स्तौषे२३४५(३)॥१†॥[५]

---

* ऋ० मा० ४प्र० १अ० ३खा०। † ऋ० मा० ६प्र० १अ० १खा०।

२र   र   २ र   १
॥ हाविष्मतम् ॥ हाउवृषापवस्वधारयाहाउ । मरु
२   १ १ २   ५   २   २
त्वताइयि । चामत्सा२३४राः । ऐ२हो१आ २ ३ यिही ।
१ २ २ १र   २   ५र र
विश्वादा३धा । नभो । जा२ सा २ ३ ४ औहोवा ॥(१)
१र र र र र १ र २ १ १
हाउतन्त्वाधर्त्तारमोण्योर्हाउ । पवमाना३ । सूवर्२३
५ २ २ १ २ २
४ग्राम् । ऐ२हो१आ२३यिही । हिन्वेवा३जायि । पु
१र २ ५र र २र र र र
षा । जा२यिना२३४औहोवा ॥(२) हावयाचित्तोविपान
र १ १ २ २ ५
याहाउ । हरिःपवा३ । स्वाधारा२३४या । ऐ२हो१आ
२ १ २ २ १र २ ५र र
२३यिही । युजांवा३जायि । पुषो । दार२या२३४औहो
१ २ १ १ १ १
वा । हविष्मते२३४५(३) ॥ १ * ॥ [६]

२र र १ र
॥ यौक्ताश्वोत्तरम् ॥ वृषाऔहोहोहायि । पवा ३
१ र २ १ २ ५ ३ २ १
स्वाधा१रायाइ । मारुत्वा२३४तायि । चमा३ । भोयि ।
० २ ५ १र र र १ १ १ २
चमा२त्सा२३४राः । विश्वाऔहोहोहायि । दधार२ना

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० १गा० ।

५ १ २ ५र र २ र र १
२३४भो । जा२सा२३४औहोवा ॥(१) तन्वाऔहोहो

२ २ऽ १ २ २ १ २ ५
हायि । धर्त्ता३रामो१णायो३ः । पावा२मा२ ३ ४ ना ।

२ १ १ ७ २ ५ २ र र १
सुवा३ । ओयि । सुवा२र्द्दे २ ३ ४ शाम् । दिव्याऔहो

२ १र २ ५ १ २ ५र र
होहायि । वाजा२यिषू२३४वा । जा२यिना२३४औहो

२ र र १ २ र ऽ १ २
वा ॥(२) अयाऔहोहोहायि । चित्ता३वायिपा१ना

२ १ २ ५ २ १ ०
या३ । हारा२यिःपा२३४वा । स्वधा३ । ओ । स्वधा

२ ५ १र र १ २ १र २
२रा२३४या । युजाऔहोहोहायि । वाजा२यिषू२३४

५ १ २ ५र र २ २
वो । दा२या २ ३ ४ औहोवा । ओयि । जू २ ३ ४

५
वा(३) ॥ २ * ॥ [७]

१ १ १ २ १
॥ आजिगम् ॥ वृषापावा । स्वधाराया । मरुत्व

१र १ ७ २ १ २ १र २
ते । चामत्सा२३राः । विश्वादाधा । नओजा२३सा३

१ २ १ २ १ २र १०
४३ ॥(१) तन्वाधार्त्ता । रमोणायोः । पवमान । स्वव

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० २घा० ।

Digitized by Google

२ २ १र २
हु२३श्राम्। हिन्वेवाजायि। षुवाजार३यिना३४३म्॥(२)
१ २ १ २ १ २ १ २
अयाचायित्तो। विपानाया। हरिःपव। स्वाधा१रार
२ १ २ १र २ १
३या। युजांवाजायि। षुचोदा२३या३४३। यो२३४५
ई। डा(३)॥ १४ *॥ [८]

२ र र २ ४२ ४र५
॥ स्वारसौपर्णम्॥ वृषापवस्वधारा३या। मरुत्वतेच
र १ २ ५ १ २ २ १र
मा। ऊम्। त्सार३४राः। वायिश्वा३उवा। दधा।
२ १ ५ ४ ५ २ र र र
नओर२३४वा। जा५सो६हायि॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमोणा
२ ३४५र र १ २ ५ १
३या३योः। पवमानस्वा। ऊम्। ह२३४श्रास्। हायि
२ २ र१र २१ ५ ४ ५
न्वा३उवा। वाजे। षुवो२३४वा। जा५यिनो६हायि॥(२)
१र र र २ ३४ ३४५र १ २
अयाचित्तोविपाना३यां। हरिःपवस्वधा। ऊम्। रा२
५ १२ २ र१र २१ ५ ४
३४या। यूजा ३ उवा। वाजे। षुचो२३४वा। दा५
५
यो६हायि(३)॥ १५ †॥ [९]

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १४सा०। † ऊ० गा० ११प्र० २ख० १५सा०।

Digitized by Google

॥ सुरूपोत्तरम् ॥ वृषापवौहो२। इया। स्वधारा या२। मरुत्वतौहो२। इया। चमत्सारा२ः। विश्वा दधौहो२। इया। नओोजा२३सा३४३॥(१) तन्त्वा धत्ताहो२। इया। रमोणाये२ः। पवमानौहो२। इया। सुवर्दृशा२म्। हिन्वेवाजौहो२। इया। पु वाजा२३यिना३४३म्॥(२) अयाचित्तौहो२। इया। विपानाया२। हरिःपवौहो२। इया। स्वधाराया२। युजंवाजौहो२। इया। षुचोदा२३या३४३। यो२३ ४५ई। डा(३)॥ १८ *॥ [१०]

॥ ऋषभःपावमानम् ॥ हाहाउवृषापवा। हा३। हा ३यि। स्वाधा२रा २ ३ ४ या। मरुत्वतेचमा१त्सा३राः। विश्वादा२३४धा। योमो३। नओोवा। जा५सोईहा

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १८सा० ।

यि ॥(१) रामो२णा२३४यो:। पवमानस्तुवा१ई३म्राम्।
हिन्ववा२३४जायि। ओमो२। पुवोवा। जा५यिनो६
हायि॥(२) हाहाक्याचित्ता:। हा३। हा३यि। वा
यिपा२ना२३४या। हरि:पवस्वधा१राया। युजंवा२३४
जायि। ओमो३। पुवोवा। दा५यो६हायि(३)॥१९*॥[११]

॥ हरिश्रीनिधनम् ॥ वृषापवस्वधारया। वृषापवा।
स्वधारया२। मरुत्वतेचमाहो२। त्सारा२३:। हाउ
वा। विश्वादा२३धा। नआो। जारसा२३४औहोवा॥(१)
तन्त्वाधर्त्तारमोणियो:। तन्त्वाधर्त्ता। रमोणियो२:।
पवमानस्तुवाहो२। हस्रा२३म्। हाउवा। हिन्वेवा
२३जायि। पुवा। आ२यि। ना२३४औहोवा॥(२) य
याचित्तोविपानया। अयाचित्ता:। विपानया२। हरि:

---

* ऊ० गा० १८अ० १ख० १९गा०।

Digitized by Google

२ १ १ १ २ १ २
पवस्वधाहो२। राया२३। हाउवा। युजांवा२३जा

१२ ३ ५ २ १ १ १ १
यि। षुचो। दा२या२३४औहोवा। हरी३श्रीर२३

१ १
४ ५:(३)॥ १ *॥ [१२]

१ २२ १ २ १२ २ २ १
॥ गौषूक्तम्॥ वृषापवस्वधौ। हौहोवाहायि। रया।

२ १ १ १
महत्वतेचमौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। त्सारा२:। वि

२ २ १ १ १
श्वादधानऔ२। ऊवायि। ऊवा२यि। जासा२३।

१ २ ५२ २ १ २ २ १२ २ १२ २
हो२वा२३४औहोवा॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमौ। हौहोवा

२ १ २ २ १
हायि। णियोः। पवमानस्वौ२। ऊवायि। ऊवा२

१ १ २ २ २ २ १
यि। दृशा२म्। हिन्वेवाजेषुवौ२। ऊवायि। ऊवा

१ १ ३ ५२ २ २ १२
२यि। जासा२३। ह्रो२वा२३४औहोवा॥(२) घया

२ १२ २ १२ २ २ १ २
चित्ताविपौ। हौहोवाहायि। नया। हरि:पवस्वधौ

१ १ १ २ २ १
२। ऊवायि। ऊवा२यि। राया२। युजंवाजेषु

* ऊ० गा० १०प्र० १अ० १खा०।

Digitized by Google

चौ२ । ऊवायि । ऊवा२यि । दाया२३ । हा२वा२
३४औहोवा । अग्निराऊता२३४५ः(३) ॥ ८ * ॥ [१३]

॥ आकलम् ॥ वृषापवा२स्वधारया । मरुत्वतेचमत्सा
२३राः । वायिश्वा२ । दाधानओ२३ । ऊम् । जा३
४ ५ सोइहायि ॥(१) तन्त्वाधर्त्ता२रमोणियोः । पवमान
सुवर्हर २३आम् । हायिन्वे२ । वाजेषुवा २ ३ । ऊम् ।
जा३४५यिनाइहायि ॥(२) अयाचित्तो२विपानया । ह
रिःपवस्वधारा२३या । यूजा२म् । वाजेषुचो२३ । ऊम् ।
दा३४३योइहायि(३) ॥ १० † ॥ [१४] १०

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

वृषाशोणोअभिकनिक्रदद्गा
नदयन्नेषिपृथिवीमुतद्याम् ।

* ऊ० गा० २प्र० २ख० ८सा० ।　　† ऊ० गा० २०प्र० २ख० १०सा० ।

Digitized by Google

१ २   ३ १२ ३२   ३ १
इन्द्रस्येववग्नुराशृण्वआजौ
२३ १२   ३ २ ३ १२
प्रचोदयन्नर्षसिवाचमेमाम् ॥ १ * ॥

"श्रोण:" श्रोणवर्ण: † "वृषा" कश्चिद् वृषभ: "गा:" पशून् "अभि" लक्ष्य "कनिक्रदत्" ‡ शब्दं करोति [एवं "गा:" स्तुती: "अभि कनिक्रदत्" अभिशब्दायमान:]। तदेवाह— "नदयन्" शब्दमुत्पादयन् हे सोम! त्वं "पृथिवीम्" "उत" अपि च "द्याम्" एतौ लोकौ "एषि" गच्छसि। किञ्च "वग्नु:" [वग्नु वाङ्नामैतत् (निघ० १, ११, २५) तस्य] वाक्यस्य शब्द: "आजौ" सङ्ग्रामे "इन्द्रस्येव" इन्द्रशब्द इव "शृण्वे" सर्वै: श्रूयते। तत: "प्रचेतयन्" आत्मानं सर्वेषां प्रज्ञापयन् "इमां" "वाचम्" "अर्षसि" समन्तादागमयसि उच्चै: शब्दायत इत्यर्थ: ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३२ ३ १२३१२
रसाय्य:पयसापिन्वमान
३१२   ३१ २३   ३ २
ईरयन्नेषिमधुमन्तमꣳशुम् ।

---

* ऋ० वे० ७, ४, १२, २।   † 'श्रोण:—बभ्रुवर्ण:'—इति वि०।

‡ "दाधर्ति-दर्धर्ति-दर्धर्षि-बोभूतु-तेतिक्ते-ऽलर्ष्या-ऽऽपनीफणत्-संसनिष्यदत् करिक्रत्-कनिक्रदद्-भरिभ्रद्-दविध्वतो-दविद्युतत्-तरित्रत:—सरीसृपतं—वरीवृजत्-मर्मृज्या-ऽऽगनीगन्तीति च (७, ४, ६५)"—इति पाणिनिस्मरणात् क्रन्दे लुङि घ्लोरद्

१२   २ १ २   ३ १
पवमानसन्तनिमेषिक्कण्व
२र   ३ १ २
न्निन्द्रायसोमपरिषिच्यमानः ॥ २ * ॥

हे सोम! "रसाय्यः" [रसेरौणादिक आय्य-प्रत्ययः (उ०, ३, ९६)] आस्वाद्यः † "पयसा" "पिन्वमानः" वर्द्धयंस्त्वम् "ईरयन्" "मधुमन्तं" माधुर्य्योपेतम् "अंशुम्" रसभावम् "एषि" प्राप्नोषि ["अंशुमश्नमात्रो भवति"—इति यास्कः (निरु० ,)]। अनेन सोमरसोऽभिधीयते। किञ्च हे सोम! "परिषिच्यमानः" अद्भिः परिषिक्तो भवंस्त्वं "पवमानः" पवित्रे पूयमानः सन् "सन्तनिं" [तनु विस्तारे (त०, प०) इ-प्रत्ययः] सन्ततां धारां "कृण्वन्" कुर्वन् "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "एषि" गच्छसि ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ १ २   ३ १र २र
एवापवस्वमदिरोमदायो
३ १ २ ३ १ २   ३ २
दग्राभस्यनमयन्वधस्नुम्।
१ २ ३ १ २ १ २   ३ १ २
परिवर्णम्भरमाणोरुशन्तं
३ १ २   ३ १ २   ३ २
गव्युर्नोअर्षपरिसोमसिक्तः॥ ३ * ॥ ११

द्विर्वचनमभ्यासस्य तुलाभावो निपातनम्। लुङ् चाप "छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः (३, ४, ६)"—इति धात्वर्थ-सम्बन्धमात्रे सार्वकालिकः।

* ऋ० वे० ७, ४, १३, ४।   † 'रसाय्यः—रसवान्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १३, ५।

हे सोम! "मदिरः" मदकरः त्वम् "उदग्राभस्य" * ["क्रिया ग्रहणं कर्त्तव्यम्"—इति कर्मणः सम्प्रदानसञ्ज्ञा। चतुर्थ्यर्थे बहुलमिति षष्ठी] उदग्राभम् उदकग्राहिणं मेघं "नमयन्" वृष्ट्यर्थं प्रह्वीकुर्वन्। कीदृशम्? "वधस्नुम्"† वृत्रवधेन प्रस्नवन्तम् "मदाय" मदार्थमेव "पवस्व" पात्रेषु क्षर। किञ्च "रुशन्तम्" आरोचमानं श्वेतं "वर्णं" "परि भरमाणः" परितो बिभ्रत् "सिक्तः" पवित्रे सिच्यमानः त्वं "गव्युः" अस्माकं गा इच्छन् "पर्येषि" परिगच्छ॥

"वधस्नुं"-"वधस्नैः"—इति पाठौ। ३॥११

१र २र३ २ १ २२
॥ इन्द्रवद्वासिष्ठम्॥ औहोवाहा ३ होयि। इन्द्रा।
१र २ २ १ १२३४५ २ १ २
वृषाग्नोणो। अभिक। निकृदङ्गाः। नदयन्नायि। षी
१ १ २३४५ २ १ र २१र २ ३
३ पृथि। वीमुतद्याम्। इन्द्रस्येवा। वग्नुरा। शृणव
४ ५ २१र २१ २ २ ४
आजाउ। प्रचोदयान्। अर्षसि। वा३४३। चा३मा
२ १र २ १ र २ ३ ४
५ यिमा ई५ईम्॥(१) रसायियाः। पयसा। पिन्वसा
५ २र १ २ १ १२३४ ५ ११र
नाः। ईरयन्नायिषी३मधु। मन्तमꣳशूम्। पवमाना।

---

* 'उदग्राभस्य—उदक-सङ्घातस्य वधस्नुम्, उदकसङ्घातस्य वधः येन क्रियते भवति परिवर्णः सोमेन स वधस्नुः'—इति वि०।

† मन्त्रे तु प्रायो वधोऽन्यस्यावकारादिदं मते।

सन्तनिम्। एषिक्ठणवान्। इन्द्रायसो। मा३परि। षा

३४३यि। च्या३मा५नाई५६:॥(२) एवापवा। स्वा३

मदि। रोमदाया। उदग्राभा। स्या३नम। यन्वध

स्नुम्। परिवर्णाम्। भरमा। णोरुशन्ताम्। औहो

वाहा३होयि। इन्दा। गव्युर्नोआ। षा३परि। सो३

४३। मा५सा५यिक्ता६५६:(३)॥ २ *॥ [१]

॥ पार्थम्॥ ओ३हो३होयि। वृषाशोणो। अभिक।

निक्रदङ्गाः। नदयन्नायि। षी३पृथि। वीमुतद्याम्।

इन्द्रस्येवा। वग्नुरा। शृण्वआजाउ। प्रचोदयान्। अ

र्षसि। वा३४३। चा३मा ५ यिमाई५६म्॥(१) रसायि

याः। पयसा। पिन्वमानाः। ईरयन्नायि। षी३मधु।

मन्तमꣳशूम्। पवमाना। सन्तनिम्। एषिक्ठणवान्।

---

* ऊ० गा० २प्र० १अ० २खा०।

२ र १ २ १ २ २ ४
इन्द्रायसो । मा२परि । षा३४३यि । च्या३मा५नाई

२र र १ १ १ २ ३ ४ ५ २
५ई: ॥(२) एवापवा । स्वा३मदि । रोमदाया । उद

१र २ १ २ ३ ५ २ १ २१
आभा । स्या३नम । यन्वधन्नूम् । परिवणाम् । भर

र २ ३ ४ ५ २ २ २ १र
मा । णोरुश्रताम् । ओ ३ हो ३ वोयि । गव्युर्नोआ ।

२ १ २ २ ४
षा३परि । सो३४३ । मा३सा५यिन्द्राई५ई:(३) ॥ ६* ॥[२]११

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य
तृतीय: खण्ड: † ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थखण्डे ‡ प्रमाथकल्पे—

प्रथमसूक्ते—प्रथमा ।

१र २र २ १ १र ३ १ १
त्वामिद्धिहवामहेसातौवाजस्यकारव: ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ २उ ३ १ १
त्वांवृत्रेष्विन्द्रसत्पतिन्नरस्त्वाङ्काष्ठास्वर्वत: ॥ १ ¶ ॥

---

* ऊ० गा० ७प्र० १अ० ६गा० ।

† "उक्तो माध्यन्दिन:"—इति वि० ।

‡ 'या ज्योतिष्टोमे देवता परिभाषा साम्नां सैवात्रापि"—इति वि० ।

¶ ऋ० आ० २, १, ५, २ (१भा० ४८१ पृ०)=ऋ० वे० ४, ७, १७, १ ।

Digitized by Google

"कारवः" स्तोतारो वयं "वाजस्य" अन्नस्य "सातौ" सम्भजने निमित्तभूते सति, हे "इन्द्र!" "त्वाम् इत् हि" त्वामेव "हवामहे" स्तुतिभिराह्वयामहे। हे इन्द्र! "सत्पतिं" सतां पालयितारं श्रेष्ठं त्वां "नरः" अन्येऽपि मनुष्याः "वृत्रेषु" आवरकेषु शत्रुषु सत्सु "हवन्ते" आह्वयन्ति, तज्जयार्थम्। अपिच "अर्वतः" अश्वस्य सम्बन्धिनीषु "काष्ठासु" यथा अश्वः क्रान्त्वा तिष्ठति तासु "काष्ठासु" सङ्ग्रामेषु युद्धकामाश्च त्वामेवाह्वयन्ति, अतो वयं त्वामेवाह्वयाम इत्यर्थः॥

"सातौ"-"साता"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१र२र २ ३१ १ २ ३ १ २
सत्वन्नश्चित्रवज्रहस्तधृष्णुयामहस्तवानोअद्रिवः।
१ २र ३ २र २ १ २ ३ १उ ३ २ ३ १ २
गामश्वꣳरथ्यमिन्द्रसङ्किरसत्रावाजन्नजिग्युषे॥२*॥ १२

हे "चित्र" चायनीय! "वज्रहस्त" वज्रबाहो! "अद्रिवः" वज्रवत् † [यद्वा आदृणात्यनेनेत्यद्रिरशनिस्तद्वत्] एवम्भूत हे इन्द्र! "धृष्णुया" धृष्णुः शत्रूणां धर्षयिता ‡ "महः" महान्

* ऋ० वे० ४, ७, २७, २।

† 'अद्रिवः—वज्रवन्। अथवा अद्रयः पर्वताः। अथवा अभिषवग्रावाणः। ते अद्रिवः'—इति वि०। अत्र "मतुवसो रुः सम्बुद्धौ छन्दसि (८, ३, १)"—इति रुत्वम्।

‡ 'धृष्णुया—धारणशीलया बुद्ध्या प्रज्ञया वा'—इति वि०।

Digitized by Google

स तादृशस्त्वं "स्तवानः" अस्माभिः स्तूयमानः सन् "गाम्" "रथ्यं" रथवाहम् "अश्वं" च "सं किर" सम्यक् प्रयच्छ। "जिग्युषे" जितवते पुरुषाय भोगार्थं "सत्रा" महत् प्रभूतं* "वाजं न" अन्नमिव यथा प्रचुरं जितवते भोगार्थं बहु प्रयच्छसि तद्वत्† ॥ २ ॥ १२

२र र र १ २ २
॥ वारवन्तीयम् ॥ तुवामिद्धाऔहोहायि। हावामा२३
५ २ र र र १ ५ १र र
४हायि। सातौवाजस्यकारावो२३४हायि। त्वांवृत्रेष्वि
२ १र ४र ५ १ २ ५ २
न्द्रसत्पतिन्ना३४। औहोवा। हुहा२३४हायि। उक्ष
२ ५ २१र २र १ ० २ १र ४र ५
वा२३४राः। तुवाक्का। ष्ठासुअर्वा ३ ४। औहोवा।
१ २ ५ १र २ ४र ५
हुहा२३४हायि। औहो३१२३४। ताः। एहियाईहा।(१)
२ र र र १ २ २ ५ २ १
तुवाक्काऔहोहायि। सूअर्वा२३४ताः। सत्वान्ना२ ३ ४
५ १ २ १र ४र ५ १ २
हायि। चित्रवज्रहस्तधृष्णू३४। औहोवा। हुहा२३४
५ २ २ ५ २ १ १ १ ०र २
हायि। उक्षवा२ ३ ४ या। महस्त। वानोअद्रा ३ ४।

---

* 'सत्रा—सदा'—इति वि०।

† 'वाजम्—अन्नम्। न जिग्युषे—न शब्द उपमार्थीयः, यथा जिग्युषे; समस्त-भोग्याय वणिजे यथा धनमुत्पद्यते तद्वत् त्वमस्मासु देहीत्यर्थः।

Digitized by Google

१र ४र ५ १ २ ५ १र २
औहोवा। इहा २ ३ ४ हायि। औहो३१२३४। वाः।
५र ५ २ र र १ २ २
एहियाइहा ॥(२) महस्तवाऔहोहायि। नोअद्रा२३४
५ १र १ ५ १ २
यिवाः। गामाश्वा२३४ हायि। रथियमिन्द्रसह्मा३४।
१र ४र ५ १ २ ५ २ २ र २ १र २र
औहोवा। इहा२३४हायि। उक्षवा२३४रा। सनावा।
१ ७ २ १र ४र ५ १ २ ५ १र २
जान्नजिग्यू३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो
५र ५ ४
३१२३४। षायि। एहियाइहा। होपुई। डा(३) ॥१ २*॥[१]
१र र र २ १ २
॥ काण्वबृहत् ॥ औहोतुवामिद्धा३ए। हवामा१हा
१र २ १ र १र र २ २
२३४यि। हाहोयि। सातौवाजस्यकारवः। तुवांवा१
१र २ १ २ १ २
त्री२३४। हाहोयि। षृइन्द्रसत्। पतायिन्ना१रा२३४ः।
१र २ १ २ १र २ २ १ १
हाहोयि। तुवाङ्काश्ष्ठा२३४। हाहो। सुश्रा३। वौ
५ ५ १र र र र
२३४ताः। उक्षवाइहाउ। वा ॥(१) औहोतुवाङ्काष्ठा
२ १ २ १र २ १ २
३ए। सुश्रावौ१ता२३४ः। हाहोयि। सात्वन्नश्वि। न

* ज० गा० २२प्र० १ख० १२गा०।

१ २ ३र २ १ २ ३र २
वाज्रा१हार२३४। हाहो। स्तधाष्णू१या२३४। हाहो
१ २ ३र २ ३र १ १
यि। महास्ता१वा२३४। हाहो। नोआ३। द्रा२३४
५ ५ ३र र २
यिवाः। उहुवा६हाउ। वा॥(२) औहोमहस्तवा३र।
र १ २ ३र २ १ २ १
नोआद्रा१यिवा२३४ः। हाहोयि। गामश्रुवम्। रथा
२ ३र १ १ २ ३र
यिया१मा२३४। हाहोयि। द्रमाङ्का१यिरा२ ३ ४। हा
२ १ २ ३र २ २ २ १
होयि। सत्रावा१जा२३४म्। हाहो। नजा३यि। ग्यू
५ ५
२३४षायि। उहुवा६हाउ। वा(३)॥ १७ *॥ [२] १२

अथ द्वितीयसूक्ते प्रगाथे—

प्रथमा।

३ १र २र ३ १ १ १ १ २ ३ १ २ ३ २
अभिप्रवःसुराधसमिन्द्रमर्च्चयथाविदे।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
योजरितृभ्योमघवापुरूवसुःसहस्रेणेवशिक्षति॥ १ ‡॥

„पुरूवसुः” पश्वादिबहुधनोपेतः, यद्वा बाहुल्यात् बहूनि वासको वा “मघवा” धनवान् “यः” इन्द्रः “जरितृभ्यः”

* ऊ० गा० २२प्र० १ख० १०सा०।

‡ छ० आ० ३, १, ५, १ (१भा० ४८३ पृ०)=ऋ० वे० ६, ४, १४, १।

Digitized by Google

स्तोतृभ्यः अस्मभ्यं "सहस्रेणेव" सहस्रसङ्ख्याकेन धनेनेव "शिक्षति" [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघ० ३, २०,८)], पश्चादि-बहु धनम् अस्मभ्यं प्रयच्छतीत्यर्थः। स इन्द्रः "यथाविदे" यथा-स्माभिर्विज्ञायते तथा हे ऋत्विजः! "वः" यूयं "सुराधसं" शोभनधनोपेतम् "इन्द्रम्" ऐश्वर्य्ययुक्तं देवम् "अभि" आभि-मुख्येन "प्र अर्च" प्रकर्षेणार्च्चत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १   २   २ १   २   २ १   १२ ३ १   २ ३   १ २
शतानीकेवप्रजिगातिधृष्णुयाहन्तिवृत्राणिदाशुषे ।
३ १ २ ३ १२ ३२   २ १ २   ३ १ २
गिरेरिवप्रसाअस्यपिन्विरेदत्राणिपुरुभोजसः ॥ २* ॥१३†

"धृष्णुया" ‡ धृष्णुः धर्षणशीलः पुरुषः "शतानीकेव" यथा शतसङ्ख्याकानि शत्रुसैन्यानि "प्रजिगाति" जयार्थं प्रक-र्षेण गच्छति, तद्वत्; इन्द्रः "दाशुषे" यजमानार्थं "वृत्राणि" यज्ञविघातकान् शत्रून् प्र जिगाति ततस्तान् "हन्ति"। किञ्च "पुरुभोजसः" बहुधनस्य "अस्य" इन्द्रस्य सम्बन्धीनि "दत्राणि" दत्तानि धनानि "प्र पिन्विरे" यजमानार्थं प्रकर्षेण वर्त्तन्ते। तत्र दृष्टान्तः—"गिरेरिव" यथा गिरेः सकाशात् "रसाः" उदकानि पिन्विरे प्रवर्त्तन्ते तद्वत् ॥ २ ॥ १३

---

* ऋ० वे० ६, ४, १४, २ ।

† 'वामदेव्यं', मेधावयणं साम । शैत्यं, अश्वसाम'—इति वि० ।

‡ 'धृष्णुया—धारकस्वभावया'—इति वि० ।

Digitized by Google

४ २ ४ ५ र २ १ ३र ४र ५
॥ श्येतम् ॥ अभिप्रवःसुरा। धसा ३ ४ औहोवा।
१ २ १ ० ५ ५ १र २
आयिन्द्रमर्च्च। यथाविदा२३४यि। ओ६हा। योजरि
१ १ १ २ १ २ ५ २ १ र
तृभ्यः। माघा२३वा। पुरू२। बा२३४सूः। सहस्रेणा
२ २ १ २ ५र र
यिवा३शा। ऊम्मायि। चा२ता २ ३ ४ औहोवा॥(१)
४ २ र ४र५ २ २ ३र ४र ५ १ २र र १
सहस्रेणेवशि। क्षता३४औहोवा। सहस्रेणे। वशा
० ५ ५ २ १र र २र १
यिच्चता२३४यि। ओ६हा। शतानीकेव। प्राजा२ ३
२ १ २ ५ १ १ २
यिगा। तिधार२। ष्णु२ ३ ४ या। हन्तिवृत्राणी३दा।
१ २ ५र र २ ४ २र ४ ५र
ऊम्मायि। शूर२षार३४औहोवा॥(२) हतिवृत्राणिदा।
२ २ २र ४र ५ १ २ र १ ०
शुषा३४औहोवा। हान्तिवृत्रा। णिदाशुषा२ ३ ४ यि।
५ ५ २ १र २ १ २ १
ओ६हा। गिरेरिवप्र। रासा२३आ। स्यपा २ यि।
२ ५ १ र २ २ १
न्वा२३४यिरायि। दत्राणिपूरु३भो। ऊम्मायि। जा२
२ ५र र २ ५
सा२३४औहोवा। वा२३४हू(३)॥ २* ॥ [१]

* ऊ० गा० १प्र० १आ० ३सा०।

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तः ॥ अभा३यिप्रा ३ वःसुराधसोवा। आ
२ १ १ १ २
यिन्द्रमर्च्च। यथावा१ यिदा२यि। योजरितृ३१२३४।
१र ४ ५र २ १ २ २ २ २
भ्योमघवा। पुरूवा१स्रू२ः। सहास्रे१णा२यि। वशा
१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४
३यि। चा२३४५। जा२३४५यि॥(१) सहा३स्रे३णे॑व
५ ४ ५ १ १र र १ २ १ र
शि॒क्ष॒तोवा। साहस्रेणे। वशायिक्षा१ता२यि। शाता
र २ २ ४ ५र २ १ २ १
नीका३१२३४यि। वप्रजिगा। तिधार्ष्णू१या२। हन्ता
१ ३ २ १ ३ १ १ १ १
यिवा१र्त्रा२। णिदा३। शू२३४५। षा२३४५यि॥(२)
५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १ १र १ २
हन्ता३यिवा३र्त्राणिदा३शुषोवा। हान्तिवृत्रा। णिदाशू
१ र २ ३ ४र५ २ १ २
१षा२यि। गायिरेवि३१२३४। प्ररसाव। स्वपायिन्वा१
१ २ ३ २ १
यिरा२यि। दत्राणा१यिपू२। रुभो३। जा२३४५।
३ १ १ १ १
सा२३४५ः(३) ॥ ७ * ॥ [२]

४ ३ ४ ५र ३ २ ३र ४र ५
॥ श्यैतनौधसम्॥ अभिप्रवःसुरा। धसा३४औहोवा।

---

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ७सा०।

Digitized by Google

१ २ १ ७ ५ ५ ८
आयिन्द्रमर्च्च। यथाविदा२३४यि। ओ६हा। यो२३

२ १ २ १२ १ २ ३ ५ १
जा। रीतृभ्यः। मघ। वा। पुरूवा२३४सूः। सा२३

२ १ ८२ १ ५ ३ ५ ४ ३८ ४८५
हा। स्रेणेवशो२३वा। सा२३४ती॥(१) सद्य्रेणेवशि।

३२ ३८४८ ५ १ २८८ १ ०
स्नता३४औहोवा। सात्स्रेणा। वशायिच्नता२३४यि।

५ ५ १ २ १८२ १२ १
ओ६हा। शा२३ता। नौकेव। प्रजि। गा। तायि

२ ३ ५ १ २ १८ २२ ५
भाष्णु२३४या। हा२३न्तायि। वार्त्राणिदो२३४वा।

३ ५ ३ ४ ३८ ४ ५८ ३२ ३८४८५
पुरू२३४षे॥(२) हन्तिवृत्राणिदा। पुरुषा३४औहोवा।

१ २८ १ ० ५ ५ १
हान्तिवृत्रा णिदापुरुषा२३४यि। ओ६हा। गा२३यि

२ १ २ १२ १ २२ ५
रेः। आयिव। प्रर। साः। आ। स्रापिन्वा२३४यिरा

१ २ १ २१ ५ ३
यि। दा२३त्रा। णायिपुरुभो२३४वा। जा२३४

५
साः(३)॥११*॥[३]

२१ २ ५८
॥वाङ्निधनं क्रौञ्चम्॥ अभायिप्रावा३१२३४ः। सुरा।

● ऊ० गा० २२प्र० १अ० ११सा०।

२ २ २ १ २ ५र ३ १ २र १
धसा३म्। इन्द्रमर्चा३१२३४। यथा। विदा३यि। योजा
२ २र ४ ५र र १ २ २ १ २
रितू३१२३४। भ्योमघवापुरू। वसू३ः। सहास्रे णा३
४ २ १ २
१२३यि। वशा५यिचताउ॥(१) सहास्रे णा३१२३४यि।
५ २ १ २ १ २ ५ २ २
वशि। चता३यि। सहस्रे णा३१२३४यि। वशि। चता
२ १ २ ३ ४ ५र २ २
३यि। शतानीका३१२३४यि। वप्रजिगातिधृ। ष्णु या
२ १ २ ४ २ १
३। हन्तायिवार्त्रा३१२३। णिदा५प्रुषाउ॥(२) हन्ता
२ ५र २ १ २ १ २
यिवात्रा३१२३४। णि। दा। प्रुषा३यि। हन्तिवृत्रा
५र ३ १ २ १ २
३१२३४। णिदा। प्रुषा३यि। गिरे रायिवा३१२३४।
२ ४र ५ २ २ २ १ २ ४
प्ररमास्यपि। ण्विरा३यिदत्राणायिपू३१२३। रभो५ज
साउ। वा॥(३) ॥१५॥ [४] १७

* ऊ० गा० १९प्र० १ख० ५सा०।

Digitized by Google

अथ तृतीयप्रगाथे—

प्रथमा ।

२ ३१र २र ३ १ २
त्वामिदाह्योनरोपीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः ।
१ २ ३ १ २ ३२ ३१ ३१ २ ३ १ २
सइन्द्रस्तोमवाहसइहश्रुध्युपस्वसरमागहि ॥ १ * ॥

हे "वज्रिन्" वज्रवन्निन्द्र ! यं "त्वाम्" "भूर्णयः" हविर्भरणशीलाः "नरः" कर्मणां नेतारो यजमानाः "इदा" अद्य "ह्यः" पूर्वेद्युश्च "अपीप्यन्" सोममपाययन्। हे इन्द्र ! "सः" त्वं "स्तोमवाहसः" स्तोत्रवाहकस्य मम स्तोत्रम् "इह" यज्ञे "श्रुधि" शृणु "स्वरं" गृहञ्च ["दुर्याः"(९) "स्वसराणि"(१०)—इति (निघ० ३, ४) गृहनामसु पाठात्] "उपागहि" उपागच्छ ॥

"स्तोमवाहसः"—इति छन्दोगाः, "स्तोमवाहसाम्"†—इति बह्वृचाः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मत्स्वासुशिप्रिन्हरिवस्तमीमहेत्वयाभूषन्तिवेधसः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २
तवश्रवाᳪस्युपमान्युक्थ्यसुतेष्विन्द्रगिर्वणः ॥ २‡ ॥ १४

* ऋ० सा० ४, १, १, १० (१भा० ६१० पृ०) ऋ० वे० ६, ७, ३, १ ।

† अतएव छन्दआर्चिक व्याख्यावसरे 'अस्माकम्'—इति बहुवचनान्त' व्याख्यातम् । ‡ ऋ० वे० ६, ७, ३, २ ।

Digitized by Google

हे "सुशिप्रिन्" शोभनहनो! "हरिवः" हरिनामकाश्वोपेत!" "गिर्वणः" गीर्भिर्वननीयेन्द्र! "त्वया" त्वयि "वेधसः" परिचारकाः "आ भूषन्ति" * आभवन्ति, "मत्स्व" सोमेन मादय आत्मानम् किञ्च "तम्" त्वा वयम् "ईमहे" याचामहे। किं वाच्यम्? इत्यत्राह—"सुतेषु" सोमेषु अभिषुतेषु सत्सु "तव" "श्रवांसि" अन्नानि † "उपमानि" उपमानभूतानि, हे "उक्थ्य" प्रशस्य! ‡ तव प्रसादात् सन्त्विति॥

"सुशिप्रिन्"-"सुशिप्र"—इति पाठौ॥ २॥ १६

२र ४ ५र २ ३ ४र
॥माधुच्छन्दसम् ¶॥ त्वामिदा। ह्योयि। ह्वियोन

५ ५ १ १ २ १ २ ३ ५ १
राइए। अपायिप्यन्वा। ज्रायिन्भूर्णा२ ३ ४ याः। स

२ १र २र १ २ ३र २ ३र १
इन्द्रस्तोमवाहसः। इहाश्रूधा। औहो३४ वाहायि।

१ २ ३र २ ३र १ १र २
उपास्वासा। औहो३४वाहा। रमागार२३हा३४३यि॥(१)

३४५ र २ ३ ४र ५ ५ २ १ २ १ २
उपस्वसा। हों। रमागहो६ए। उपास्वसा। रामा

३ ५ १ र १ १ २
गा २ ३ ४ हो। मत्स्वासुशिप्रिन्हरिवः। तमायिमाहा।

---

* 'स्लाघां कुर्वन्ति'—इति वि०।

† 'श्रवांसि—अन्नानि पयांसि वा'—इति वि०।

‡ 'उक्थ्या—उक्थैः सम्भजनीयैः'—इति वि०।

¶ 'माधुच्छन्दसं मामाच्छावाकस्य'—इति वि०।

Digitized by Google

औहोऽ३४वाहायि । त्वयाभूषा । औहो३ ४ वाहा । ति

वेधा२३सा३४३: ॥(२) त्वयाभूषा । हो । तिवेधसा६ए ।

त्वयाभूषा । तिवेधा२३४सा: । तवश्रवा७ं स्युपमा । नि

यूक्थाया । औहो २ ३४वाहायि । सुतायिषूवा । औ

होऽ३४वाहायि । द्रगिर्वा२३णा ३ ४ ३: । ओ२३ ४ ५ई ।

डा (३) ॥ ४ * ॥ [१]

॥ मानवोत्तरम् ॥ होवायि । त्वामिदाह्योनर: । हो

वायि । आपीप्यन्वज्रिन्भूर्णय: । साइन्द्रस्तो । मावा

हसा३१: । इहा२२३४र्भूधायि । उपास्वा२३सा३ । रा२

मा२३४औहोवा । गा२३४ही ॥(१) होवायि । उपस्व

सरमागच्छि । होवायि । ऊपस्वसरमागच्छि । मात्वास्तु

भि । प्रायिन्द्रहरिवा३१: । नमा२यिमा२३४हायि । त्वया

* ऊ० गा० २प्र० १अ० ४सा० ।

Digitized by Google

१　१　३　५२र　२　५
भूर३षा३। ता२यिवे२३४औहोवा। धा२ ३ ४ साः॥(२)

१　र२र१　२र१ १　१　रर
होवायि। त्वयाभूषन्तिवेधसः। होवायि। त्वायाभूष

र　१२र　१ ७ २　७ ३
न्तिवेधसः। तावश्रवा। साउपमा३१। नियू२श्या२३४

५ २१　२　१ ३　५रर　२
या। सुतायिषू२३वा३यि। द्रा२गा२३४औहोवा। वा२

५
३४णाः (३)॥ ८ *॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयाध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

पञ्चमखण्डे‡—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २　३ १ २
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा।

३ १ २　३ २
देवावीरघशंसहा॥ १ ¶ ॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० २खा० ८सा०।

† 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि०।

‡ 'तृतीयसवनमभिधीयते'—इति वि०।

¶ छ० आ० ५, २, ४, ४ (२भा० १४ पृ०)=ऋ० वे० ८, १, २१, ४।

हे सोम! "ते" तव "देवावीः" देवकामः "अघशंसहा" राक्षसानां हन्ता "वरेण्यः" सर्व्ववरणीयः "मदः" मदकरः "यः" रसः विद्यते, "तेन" "अन्धसा" अदनीयेन "पवस्व" चर॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २३ १२३ २२ २ ३१ २ ३१२
जघ्निर्वृत्रममित्रियᳬसस्निर्वाजन्दिवेदिवे।
१ २ ३१ २
गोषातिरश्वसाअसि॥ २ *॥

हे सोम! त्वम् "अमित्रियं" अमित्रभवं † "वृत्रं" शत्रुं "जघ्निः असि" हन्ता भवसि। किञ्च "दिवे दिवे" प्रतिदिनं "वाजं" ‡ सङ्ग्रामं "सस्निः" सम्भक्ताऽसि ¶। अपिच "गोषातिः" गवां सातिर्दातासि, "अश्वसाः" अश्वानां दाता चासि।

"गोषातिः"-"गोषाउ"—इति पाठौ॥ २॥

---

* ऋ० वे० ८, १, ११, ५।

† 'अमित्रियम्—अमित्रकर्मकर्त्तारम्'—इति वि०।

‡ 'वाजमिति द्वितीयैकवचनम्, षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्; वाजस्य अन्नस्य'—इति वि०।

¶ 'सस्निः—साधनस्वभावः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ २ २ १ २ २ २ २ २ २ १ २
सम्मिश्लो अरुषोभुवः सूपस्थाभिर्न्नधेनुभिः ।
१ २ ३ २उ ३ १
सीदञ्छ्येनोनयोनिमा ॥ ३ * ॥ १५ †

हे सोम ! त्वं "सूपस्थाभिः" शोभनोपस्थानाभिः "धेनुभिः" गोभिः [गोविकारैः पयोभिरित्यर्थः] "सम्मिश्लः" सम्मिश्रितः "श्येनः न" यथा श्येनः शीघ्रमागत्य स्थानमासीदति तद्वत् "योनिं" स्वकीयं स्थानम् "आसीदन्", "न" [—इति सम्प्रत्यर्थे] इदानीम् "अरुषः भुवः" आरोचमानो भव ॥

"भुवः"-"भव:"—इति वा पाठो ॥ ३ ॥ १५

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

२ २ ३ १ २ १उ २ १ २ २ १ १
अयम्पूषारयिर्भगस्सोमःपुनानोअर्षति ।
१ ३ १ १ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २
पतिर्विश्वस्यभूमनोव्यख्यद्रोदसीउभे ॥ १ ‡ ॥

"पूषा" पोषकः सर्वेषां "भगः" भजनीयः "रयिः" धनहेतुः "अयं" सोमः "पुनानः" पवित्रे पूयमानः सन् "अर्षति" कलश-

---

* ऋ० वे० ८, १, २२, १ । † 'उष्णिक् गायत्री'—इति वि० ।
‡ छ० आ० ६, १, १, २ (२भा० ११२६०)=ऋ० वे० ७, ५, २, २ ।

Digitized by Google

मभिगच्छति। तथा "विश्वस्य" सर्वस्य "भूमनः" भूतजातस्य "पतिः" पालयिता "सोमः" "उभे रोदसी" द्यावापृथिव्यौ "व्यख्यत्" स्वतेजसा प्रकाशयति। अनेन लोकद्वयवर्त्तित्वं सूचितम्॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
समुप्रियाअनूषतगावोमदायघृष्वयः।
१ २ ३ १२ ३२ ३ १ २
सोमासःकृण्वतेपथःपवमानासइन्दवः॥ २ *॥

"प्रियाः" प्रियतमाः "घृष्वयः" अत्यन्तदीप्ताः, [यद्वा 'अहं प्रथमतः स्तौमि', 'अहं पुरस्तात् स्तौमि'—इति परस्परं संहृष्यमानाः] "गावः" स्तुति-लक्षणा वाचः † "मदाय" सोमस्य मदार्थं "समनूषत" संस्तुवन्ति ; "उ" प्रसिद्धौ ‡ [यद्वा गावो धेनवः सोमस्य मदाय अब्दायन्ते]। ततः "पवमानासः" पूयमानाः "इन्दवः" दीप्ताः "सोमासः" सोमाः पथः मार्गान् "कृण्वते" चरणार्थं कुर्वन्ति॥ २॥

---

* ऋ० वे० ७, ५, २, ३।

† 'गावः—० ० ०मोसम्भवानि क्षीराणि उदकानि वा'—इति वि०।

‡ 'उ—इति पदपूरणः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ २र ३ १र २र३ १ २ ३ १ २
यओजिष्ठस्तमाभरपवमानश्रवाय्यम् ।
१ २र ३ २ ३१२ रउ ३ १ २
यःपञ्चचर्षणीरभिरयिंयेनवनामहे ॥ ३ * ॥ १६ †

"ओजिष्ठः" ओजस्वितमः "यः" तृतीयो रसोऽस्ति तं "श्रवाय्यं" श्रवणीयं रसम् "आभर" अस्मभ्यमाहर । किञ्च "यः" रसः "पञ्च चर्षणीः" ‡ पञ्चजनान् निषादपञ्चमान् चतुरो-वर्णान् "अभि तिष्ठति" । अपिच "येन" रसेन वयं "रयिं" धनं च "वनामहे" सम्भजामहे ¶ [यद्वा येन त्वां रयिं याचा-महे] तमाभर ॥ ३ ॥ १६

५ ३र २ ४ ५ १र
॥ गौरीवितम् § ॥ अयम् । पूषा ३ । रयिर्भगाः । सो
र र १ २ ४
मःपुनानोअर्षता२३यि । पातिर्विश्वा३१ २ ३ । स्वभू५म
१ २ ४ ५ ४ ५
नाः । वायस्वद्रो३१२३ । दसोवा । ऊ५भो६वायि ।(३)
॥ ८ ‖ ॥ [१]

---

* ऋ० वे० ७, ५, २, ४ । † "ज्योतिष्टोमौ ककुब्बिम्बौ"—इति वि० ।

‡ 'पञ्चचर्षणीः—चर्षणयोमनुष्याः । चत्वारोमहर्त्विजः, पञ्चमो यजमानः ।

¶ 'रयिं—धनं । येन वनामहे—येन सोमेन कृतेन रयिं धनं लभामः । वनतिर्यद्यपि स्तुत्यर्थे तथाप्यत्र लाभार्थे द्रष्टव्यः—इति वि० ।

§ 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु० । ‖ ऊ० गा० १२प्र० १ख० ८सा० ।

Digitized by Google

४ ३ ४२५२ २ ३ ४ ५
॥ तृतीयंक्रौञ्चम् ॥ अयम्पूषा। ह्वो। रयिर्भगा ६
५ १ १ ३ २ ३ ५ १
ए। सोमा २:पुना२। नम्रा३४५। षा२३४ती। पतिर्वि
२१२ ३ १ १ १ १ २ १ २ १२ १
श्वस्यभूमना२३४५:। वियख्या२३द्रो। दसीउ२३भा३४
३४ ५ २ २ ३ ४२ ५ ५ १
३यि ॥(१) समुप्रियाः। ह्वो। अनूषता ६ ए। गावो२
१ ३ १ २ ५ १२ २ २ २ ३
मदा२। यघा३४५। षा२३४याः। सोमासःकृण्वतेप
२ २ १ २ १ २ ३ ४२
था ऽ १:। पवमा२३ना। सइन्दा२३वा३४३: ॥(२) यचो
५ २ २ ३ ४२ ५ ५ १ १ २ १
जिष्ठाः। ह्वो। तमाभरा६ए। पावा २माना२। अवा
३ ५ १ २ २१ २ २ १
३४५। यो२३४याम्। यःपञ्चचर्षणीरभौ ऽ १। रयिंया२
२ १२ २ १
३यिना। वनामा२३हा ३ ४ ३ यि। ओ२३४५ई। डा।(३)

॥ ८ * ॥ [२]

५ ३२ २ ४ ५ १ २
॥ गौरीवितम् † ॥ अयम्। पूषा३। रयिर्भगाः। सो
२ २ १ २ ४
मःपुनानोअर्षता२३यि। पातिर्विश्वा३१२३। स्यभूपुमनाः।

* ऊ० गा० २प्र० १ख० ८गा०। † 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु०।

१ २ ४ ५ ४ ५
वायस्थ्यद्रो ३ १ २ ३। दसोवा। ऊ ५ भो ६ हायि ॥(१)
५ ३ २ ४ र ५ १र र र
समु। प्रियाः३ः। अनूषता। गावोमदायधृष्वयार३ः।
२ २ ४ १ र १
सोमासःका३१२३। एवता५यिपथाः। पावमाना३१२३।
४ ५ ४ ५ ५ र ३ १ ४ र
सन्नोवा। दा५वो६हायि॥(२) यश्नो। जिष्ठा३ः। तमा
५ १ र र १ २
भरा। पवमानश्रवायियार३म्। याःपञ्चचा ३ १ २ ३।
४ १ र १ ४ ५ ५
षणा५यिरभायि। रायिंयेना३१२३। वनोवा। मा५
५
होइ६हायि(३) ॥ ९ * ॥ [३]

३ १ २ ४र ५ २ ४
॥ श्यावाश्वम् ॥ अया३१म्। पू३षा। रयिः। भा३गः।
१ १ र १ १ १ र
एहिया। सो। मःपुनानो। अ। षता२रयि। ऐहि
१ २ ४ ५ १र १
या२। पतिर्विश्वास्या३भू३। मा२३४नाः। ऐहा२रयि।
र १ २ ४ २ ५
एहिया२। वियस्थ्यद्रोदा३सी३। ऊ३४५भो६हायि ॥(१)
२ २ ४र ५र २ ४ ५ १
समू३१। प्रो३याः। अनू। षा३त। एहिया। गा।

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ९सा०।

र र २ १ १र र र १
वोमदाया । घृ । ष्वया२ः । एहिया२ । सोमासःका

२ ४ ५ १र १र
णर्वा३ता३यि । पा२३४था: । ऐहा२यि । एहिया२ ।

१र २ ४ २ ५ ३ २
पवमानासा३आ३यि । दा३४५वो६हायि ॥(२) यओ३

२ ४ ५र २ ४ ५ १
१ । जा३यिष्ठ: । तमा । भा३र । एहिया । पा । व

र १र १ १र १ २
मानआ । वा । यिया२म् । एहिया२ । यःपञ्चचार्षा३

४ ५ २र १र
णी३: । आ२३४भायि । ऐहा२यि । एहिया२ । रयिं

१र २ ४ २ ५
येनावा३ना३ । मा२३४५हो६हायि(३) ॥ १०* ॥ [४]

२ १ १रर १ र
॥ आसिताद्यम् ॥ अयमूषारयायिः । भगाः । सो

र र २ १ १र
मःपुनानोअर्षा२३तायि । पाता२यिस्वा२ । स्वभूमनाः ।

१ १ २ १ ५ ४ ५
वाया२ख्याद्रो२ । दसोवा३ओ२३४वा । ऊ५भो६वा

१ २ १र २ १ र र र
यि ॥(१) समुप्रियाअनू । षता । गावोमदायघृष्वा२३

२ १ १र १
याः । सोमा२साःका२ । ण्वतंपथाः । पावा२माना

---

* ऊ० गा० ११प्र० १अ० १०सा० ।

१ २ १ ५ ४ ५ १र
२। सञ्चोवा३ओ२३४वा। दा५वोई६हायि ॥(२) यञ्चो
२ १ र र २ १
जिष्ठस्तमा। भरा। पवमानश्रवाञ्चा२३याम्। याःपा
१र १ १
२ञ्चाचा२। षणीरभायि। रायी२यायिना२। वञ्चो
२ १ ५ ४ ५
वा३ओ२३४वा। मा५होई६हायि(३) ॥ २० * ॥ [५]

२ र र २ र १र २ १
॥ निषेधम्† ॥ अयम्पूषारा३यिर्भगाः। सोमाःपुना।
२र १ १ २ १ २ ४ ५ २ २
नोअर्षता२यि। इहा३। पाता३यिर्वायिश्वा। हाहो
५ २ र १ २ १ २ १ २ ४ ५
२३४हा। स्वभूमार३नाः। इहा३। वाया३ख्याद्री।
२ २ ५ २ २ ४ २ र
हाहो२३४हा। दसो३ऊ५भा६५६यि ॥(१) समुप्रियाञ्चा
२ र १र११ २ १ १ २ १
३नूषता। गावोमदा। यघृष्वया२ः। इहा३। सो
२ ४ ५ २ २ ५ २ र १ २ १ २
माऽसाःका। हाहो२३४हा। एवतेपा२३थाः। इहा३।
१ २ ४ ५ २ २ ५ २ २ ४
पावा३माना। हाहो२३४हा। सञ्चा३यिन्दा५वा६
२ र २र १र२र१ २ र
५६ः ॥(२) यञ्चोजिष्ठस्ता३माभरा। पवामाना। श्रवा

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० २०गा०। † 'निषेधः'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

१ १२ १२ ४५ २ २ ५
यियार्२म् । इहा ३ । याःपा३स्वाचा । हाहोर२३४हा ।
२र १ २ १२ १ २ ४ ५ २ २
षणीरार२३४भायि । इहा३ । रायी३यायिना । हाहोर२३
५ ३ २ ४ २ १ १
४हार२३ ४ हा । वना ३ मा ५ हा ६ ५ ६ यि । हे २ ३
१ १
४ ५(३) ॥ २ * ॥ [६]

४ ३ र ४ २ ४ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ अयाऽ५म्पू । षा३रा३यिर्भागाः ।
१ २ १ २ २ १ १
सोमःपुना । मो३आर्षा३तायि । पता२यिर्विं । स्वस्या
२ १ २ २ १ र २१
२३भू । ऊम्मायि । मा३नाः । षायख्यद्रोदसी २ उभा
१ २ १ र र र र २
उ ॥(१) भायिसाम् । उप्रियाअनूषतगावोमदा । या
१ २ २ १र १ २ १
३घार्ष्वा३याः । सोमा२सः । क्षण्वा२३ता । ऊम्मायि ।
२ २ १ र र ३२ १ २ १र
पा३थाः । पावमानासआ२यिन्दवाउ ॥(२) वायाः । ओ
र र २ ३ र २ १ १
जिष्ठस्तमाभरपवमाना । आ३वाआ३याम् । यःपा२ञ्च ।

• ऊ० गा० १२प्र० १ख० २सा० ।

Digitized by Google

२ १ २ २ १ र
चर्षा२३णा। ऊम्मायि। आ३भायि। रायिंयेनवना२
३ १ १ १ १
मद्दाउ। वा३४५(३) ॥ १३ *॥ [७]

२ १ २र १र २र १ १ र १ २
॥ यद्वाहिष्ठीयम्॥ अयम्पूषारयिर्भगः। अयम्पूषोवा।
१ र २ र
रयिर्भगाः। सोमःपू२३ना। नोअर्षतायि। पतिर्वा२३
२ १र २ १र २
यिश्वा। स्वभूमनाः। वियख्या२३द्रो। दसीऊ२३भा२
१ २१र २र १ २ १र
४३यि॥(१) समुप्रियाअनूषत। समुप्रियोवा। अनूष
र र २ १ र र २
ता। गावोमा२३दा। यघृषयाः। सोमासा२३ःका।
१र १ १ २ १
एवुतेपथाः। पवमा२३ना। सइन्दा२३वा३४३ः॥(२) य
र २ १ र २ र १ २ १र
ओजिष्ठस्तमाभर। यओजिष्ठोवा। तमाभरा। पवमा
२ १र २ १र
२३ना। अवायियाम्। यःपञ्चा२३चा। षणीरभायि।
२ १र २ १
रयिंया२३यिना। वनामा२३द्दा३४३यि। ओ२३४५ई।
डा (३)॥ १४ †॥ [८]

* ऊ० गा० १५प्र० १अ० १२सा०। † ऊ० गा० १२प्र० १अ० १७सा०।

Digitized by Google

१ १२२ ०२१ २२
॥ क्रौञ्चाद्यम् ॥ अयम्पूषौहो । रायिर्भगाः । सो
१ २ ४ २ १ २
मःपुना३ । नोआ३र्षा५ता६ ५ ६ यि । पतिविश्वौहो ।
२२१२ २ १ २ ४
स्याभूमनाः । वियख्यद्रो३ । दासी३ऊ५भा६५६यि ॥(१)
२ १ २ २२ १२ २१ २ १ २ ४
समुप्रियौहो । आनूषता । गावोमदा३ । याघा३र्षा५
१२२ १ २ २२ १२ १ २
या६५६ः । सोमासःकौहो । एवातेपथाः । पवमाना३ ।
१ २ ४ १ २ १ २ २२ १२
साषा३यिन्दा५वा६५६ः ॥(२) यओजिष्ठौहो । तामाभ
२ २ १ २ ४ २ १ २
रा । पवमाना३ । आवा३आ५या६५६म् । यःपञ्चचौ
२२ १२ २ २ १ २ ४
हो । षाणीरभायि । रयिंयेना३ । वाना३मा५हा६५
६यि (३)॥ १७ * ॥ [८]

२ २२१ ३२ १
॥ ऐडक्रौञ्चम् ॥ अय९ँहोपू२३ । षारयिर्भगाइया ।
१२ १ २ १२ २ १ २ १२ २ १
सोमःपुनानोअर्षति । पातिर्विश्व । स्यभूमा२३नाः । वा
२ २ १ २ २ १२ २ २
या३हा । ख्याद्रो३हा । दसोऊ२३भा३४३यि ॥(१) स

* ऊ० गा० १५प्र० १ख० १७सा० ।

मूर्द्विप्रो२३। याअनूषतइ्या। गावोमदायघृष्वयः। सो

मासःकृ। एवुतेपा२३थाः। पावा३द्दा। माना३द्दा।

सइन्दा२३वा३४३ः ॥(२) यओहोजा२३यि। छस्तमाभर

द्रया। पवमानश्रवायियम्। याःपञ्चच। षणोरा२३

भायि। रायो३ए्हायि। यायिना३हायि। वनामा२

३हा३५३यि। ओ२३४५ई। डा (३)॥ ५ *॥ [१०]

॥ मधुश्चुन्निधनम्॥ अयम्पूषारयिर्भगा३ए। सोमःपु

ना३नोअर्षता३यि। द्दा३द्दा। औ३द्दो३वा। आयि

द्दी२। पतिर्विश्वा३स्याभूमना३ः। द्दा३द्दा। औ३द्दो

३वा। आयिद्दी२। वायस्यद्रो३। द्दा३हायि। औ

३द्दो३वा। आयिद्दी२। दसौ। ऊ२भा२३४ औद्दो

वा ॥(१) समुप्रियाअनूषता३। गावोमदा३याघृष्वया३ः।

---

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० ५गा०।

२ २ ऽ २ २ १ २र १
हा३हा। औ३हो३वा। आयिही२। सोमासःकृ३ण्वा

र २ २ २ ऽ २ २ १ १
तेपथा३ः। हा३हा। औ३हो३वा। आयिही२। पा

र १ २ १ ऽ २ १ १
वमाना३। हा३हायि। औ३हो३वा। आयिही२।

१ ३ ५र र २र र
सद्। दा२वा२३४औहोवा॥(२) यओजिष्ठस्तमाभरा

२ र १र २ २ २ ऽ २
३ए। पवमाना३आवायिया३म्। हा३हा। औ३हो३

२ १ १ र २ २
वा। आयिही२। यःपञ्चचा३र्षणीरभा३यि। हा३

२ ऽ २ २ १ १ र१ २
हा। औ३हो३वा। आयिही२। रायियेना३। हा

२ ऽ २ २ १ १र ३
३हायि। औ३हो३वा। आयिही२। वना। मा२हा

५र र २ १ ३१११११
२३४औहोवा। मधुश्चुतता२३४५ः(३)॥ १८ *॥ [११]

१र र र २ १ २
॥ कण्वबृहत्॥ औहोअयम्पूषा३ए। रयायिर्भा१गा२

३र १ १र २र १र १ १ २
३४ः। हाहोयि। सोमःपुनानोअर्षति। पतायिर्वा१यि

३र २ १ १ ३र २ १ २
श्वा२३४। होहोस्यभूमा१ना२३४ः। हाहोयि। वियाख्या

---

* ऊ० गा० २०प्र० २ख० १८सा०।

२र १ २ ० १ ५
१द्रो२३४। हाहो। दसौ३। ऊ२३४भायि। उऊवा

५ २र र २ १ २
ईहाउ। वा॥(१) औहोसमुप्रिया३ए। अनूषा१ता२

२र १ १ र १ र १र २
३४। हाहोयि। गावोमदायघृष्वयः। सोमासा१:का२

२र १ १ २ २र १ १
३४। हाहो। एवतायिपा१था२३४:। हाहोयि। पवा

२ २र २ ३ २ १ ५
मा१ना२३४। हाहो। सआ३यि। दा२३४वा:। उ

५ २र र र २ १ २
ऊवाईहाउ। वा॥(२) औहोयओजिष्ठा३ए। तमाभा

२र २ १ २र र १ २
१रा२३४। हाहोयि। पावमानश्रवायियम्। यःपाञ्चा

२र १ १ २ २र २
१चा२३४। हाहो। षणायिरा१भा२३४यि। हाहोयि

१ २ २र २ ३ २ १
रयायिंया१यिना२३४। हाहो। वना३। मा२३४हायि।
५ ५
उऊवाईहाउ। वा(३)॥८ *॥[१२] १६

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा।

१ १ ३ १ २ २ २उ
वृषामतीनाम्पवतेविचक्षणः

३ १ २ ३ १ २र ३ २
सोमोअह्नाम्प्रतरीतोषसान्दिवः।

---

* ऊ० गा० २१प्र० २ष० ९सा०।

Digitized by Google

३ १र २र ३ १ २ ३
प्राणा सिन्धूनाङ्कलशाꣳ अचिक्रद
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
दिन्द्रस्य हार्द्यांविशन्मनीषिभिः॥ १ *॥

अयं "सोमः" "पवते" अभिषूयते। कीदृशः सोमः? "मतीनां" मतयः स्तोतारः तेषां "वृषा" वर्षकः, "कामानां" "विचक्षणः" विद्रष्टा, "अक्राम्" उषसां "दिवः" द्युलोकस्य आदित्यस्य वा "प्रतरीता" प्रवर्द्धयिता किञ्च "सिन्धूनां" स्यन्दमानानाम् उदकानां "प्राणा" प्राणयिता चेष्टयिता [अनितेः (अदा० प०) शानचि, "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शब्विकरणस्य लुक्, सुपां सुलुगित्याकारः (७, १, ३९)] "कलशान्" "अचिक्रदत्" शब्दं करोति प्रवेष्टुम्। किं कुर्वन्? "इन्द्रस्य" "हार्दि" हृदयम् "आविशन्" प्रविशन् "मनीषिभिः" मनसईषितृभिः स्तुतिभिः स्तुत इति शेषः। व्यवहित मपि मनीषिभिरित्येतत् पवतइत्यनेन सम्बध्यते॥

"अक्राम्"-"अक्रः"—इति, "उषसाम्"-"उषसः"—इति, "प्राणा"-"क्राणा"—इति, "अचिक्रदत्"-"अवीवशत्"—इति च पाठाः॥ १॥

---

* ऋ० वा०९, ९, २, ६ (२भा० १८५ पृ०)=ऋ० वे० ७, ३, १४, ४।

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ २ ३ १
मनीषिभिःपवतेपूर्व्यःकवि*र्नृ-
३र ३ २उ ३ १ २
भिर्यतःपरिकोशाꣳअसिष्यदत् ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ १ ३
त्रितस्यनामजनयन्मधुक्षर-
१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
न्निन्द्रस्यवायुꣳसख्यायवर्द्धयन् ॥ २ † ॥

अयं सोमः "मनीषिभिः" मेधाविभिः अध्वर्य्यादिभिः "पवते" पूयते । यद्वा अयं मनीषिभिर्द्धाराभिः "पवते" क्षरति । कीदृशोऽयम् ? "पूर्व्यः" पुराणः "कविः" मेधावी "नृभिः" नेतृभिः अध्वर्य्यादिभिः "यतः" सन् "कोशान्" कलशान् प्राप्तुं "परि असिष्यदत्" परितः स्यन्दते स्रवति । "त्रितस्य" त्रिषु स्थानेषु लोकेषु विस्तृतस्य "इन्द्रस्य" यजमानस्य सम्बन्धि "नाम" नामकमुदकं "जनयन्" उत्पादयन् "मधु" मधुरं रसं "क्षरन्" क्षरति । किं कुर्वन् ? इन्द्रस्य "सख्याय" सखित्वाय "वायुं" "वर्द्धयन्" प्रवृद्धं कुर्वन् ॥

"असिष्यदत्"-"अचिक्रदत्"—इति पाठौ, "युवां"-"वायोः"—इति च, "वर्द्धयन्"--कर्त्तवे"—इति च ॥ २ ॥

* "पूर्व्यः कवि"—इति मु० पाठः ।   † ऋ० वे० ७, ३, १६, १ ।

अथ तृतीया।

२ १ २ ३ १ ३ १ २
अयम्पुनानउषसोअरोचय

३ २ १ ३ २ ३ १
दयꣳसिन्धुभ्योअभवदुलोककृत्।

३ २ ३ ३ १ २ १ ३ २ ३ ३ २
अयन्त्रिःसप्तदुदुहानआशिरꣳ

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सोमोहृदेपवतेचारुमत्सरः॥ ३ * ॥ १७ †

"अयं" सोमः "पुनानः" पूयमानः "उषसः" "अरोचयत्" अदीपयत्। अयं "सिन्धुभ्यः" स्यन्दमानेभ्यः वसतीवरीभ्यः ‡ "अभवत्" समुत्पन्नो भवति। "उ"—इति पूरणः। कीदृशोऽयम्? "लोककृत्" लोकानां कर्त्ता [वर्षकृत्त्वाद्दृतीधारकत्वाच्चास्य लोककृत्त्वम्]। "अयं" सोमः "त्रिःसप्त" एकविंशतिं गाः ¶ ऋत्विग्मुखेन "आशिरं" "दुदुहानः" दुहानः [दोहस्य प्रयोजकत्वात् कर्त्तोपचारः] "मत्सरः" मदकरः "चारु" रमणीयं "पवते" चरति। किमर्थम्? "हृदे" हृदयाय हृदय-गमनाय॥

"अरोचयत्"-"विरोचयत्"—इति पाठौ॥ ३ ॥ १७

---

* ऋ० वे० ७, ३, १६, २। † 'याम साम'—इति वि०।

‡ 'समुद्रेभ्यो वा'—इत्यधिकं वि०।

¶ 'प्रतिसवनं सप्तसप्त गावः ० ०'—इति वि०।

Digitized by Google

१ र २
॥ यामम् ॥ आ२यि। इया। वृषामतायिना१म्प
४ २ ३ ५ १र र ७ र
वता२३यि। वा३यिचक्षणः। सोमोयज्ञाम्प्रतरीतोर ३।
४ २र ३ ४ १र र १ ४ १
षा३सान्दिवः। प्राणासिन्धूना१ङ्कलशा२३। आ ३ चि
३ ५ १ ७ र २ ४
क्रदत्। इन्द्रस्यहार्द्दियाविशा२३न्। मना३यिषा५यिभा
१ र ७ र ४ २ ३ ५
६५६यिः ॥(१) मनीषिभायिःपवतेपू२३। वी३ यःकवि।
१ ७ र ४ २ ३ ५ १
नृभिर्य्यतःपरिकोशा२३। आ३सिष्यदत्। त्रितस्यना
७ ४ २ ३ ५ १ ७
मजनया२३न्। मा३धुक्षरन्। इन्द्रस्यवायुँसखिया२
२ ४ १ ७
३। यवा३र्द्धा५या६५६न् ॥(२) अयम्पुनानउषसो२३।
४ २र ३ ५ १ २ ४ १र
आ३रोचयत्। अयँसिन्धूभ्यो१अभवा२३त्। ऊ३लो
३ ५ १ ७ ४ २र ३ ५
कक्कृत्। अयन्त्रिस्साप्तदुहा२३। ना३आशिरम्। आ
१ र र ७ र २ ४
२यि। इया। सोमोहृदायिपवतेचा२३। रूमा३त्सा
५रा६५६ः(३) ॥ १० * ॥ [१]

* ऋ० ७अ० १अ० १०वा०।

२ ८ १ १८ १
॥ ऐडयामम् ॥ वृषामातो२३। नाम्पवातार३ यि।

१ १ १८ ८ १ १ १
ए३। विचक्षणए३। सोमोभाक्षा२३म्। प्रतरायिता२

१ १ ८ १८ ८ १ १८
३। ए३। उषसान्दिवए३। प्राणासायिन्धू२३। नाह्न

१ १ १ १ १
लाम्रा२३। ए३। अचिक्रदद्दे ३। इन्द्रस्याहा २ ३।

१ ८ १ २ २ ८ १८
दियावायिभ्रा२३न्। ए३। मनीषिभिरे३४३ ॥(१) मनी

१ १ १ १ १
षायिभा२३यिः। पवतायिपू२३। ए३। विँयःकविरे३।

१ १ १ १ १ १
नृभिर्याता२३ः। परिकोशा२ ३। ए३। असिष्यदद्दे

१ १ १ १ १ १
३। चितस्याना२३। मजनाया२३न्। ए३। मधुच्च

१ १ १ १ १
रन्ते३। इन्द्रस्यावा२३। युसखीया२३। ए३। यव

१ १ १ १ १
र्द्धयन्नो३४३ ॥(२) अयम्पूना२३। नउषासा२३ः। ए३।

१ ८ १ १ १८ १
अरोचयदे३। अयसायिन्धू२३। भ्योभभावा२३ त्।

१ ८ १ १ १ १
ए३। उलोकक्रद्दे३। अयन्त्रायिःसा२३। मदुदूहा२३।

२ १ २ १२ २ १ २ १

ए३। नम्राग्निरमे३। सोमोद्वार्हा २ ३ यि। पवताथि

२ १

धा२३। ए३। हमत्सरए३४३। औ २३४५ई। डा(३)॥

॥ ५ * ॥ [२]

४ २ ४ १ २ ४ ५

॥ यज्ञायज्ञीयम्। वृषाऽ५म। ता३यिना३पवताथि।

१ २ २ २ २ २ १ २ २

वायिचक्षणःसोमोमन्हाम्प्र् तरौतो। धा३सान्दा३यिवाः।

१२ १ २२ २ २ १

प्राणा२सिन्धूनाङ्कलशाँ२ अचिक्र। ददा२३यिन्द्रा। ऊ

२ २ १२ २२

म्मायि। स्या ३ हा। दीयाविशन्मना २ यिषिभाउ॥(१)

१ १ १२ २२ २

भायिर्म्मा। नीषिभिःपवतेपूर्व्यःकविर्नृ भिर्यतःपरिकोशाँ२।

२ १ २ २ १ १२

धा३सायिष्या३दात्। त्रिता२स्यनामजनयन्मधुक्ष। रन्ना

२ १ २ २ १ २

२३यिन्द्रा। ऊम्मायि। स्या३वा। यू२सखियायवा२

२२ १२ १ २ २ २

ई्याउ॥(२) याना। यम्पुनानउषसोअरोचयदयँ२सि

२ २ १२ १ १

न्धुभ्योअभवात्। ऊ३लोका ३ कृत्। अया२न्त्रिःसप्तदुदु

* ऊ० गा० ८प्र० १ख० ५सा०।

Digitized by Google

२ १ २ १ १ २ २
हानयाग्नि। र(ऽ)सो२३मा:। ऊम्मायि। पा३ हाँयि।
१ २२ ३ २ २ १ १ १ १
पावतेचारुमार३त्सराउ। वा२३४५(३)॥ १७* ॥ [३] १७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य
पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

एवाह्यसीति-षष्ठे खण्डे ‡—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

३ १ २र ३ १ २ १ २र३ २ ३ २
एवा ह्यसिवीरयुरेवाशूरउतस्थिरः।
३ १ २ २ ३ १ २
एवातेराध्यम्मनः ॥ १ ¶ ॥

हे इन्द्र! त्वं "वीरयुः" वीरान् युद्ध-कर्मणि समर्थान् शत्रून् हन्तुं कामयमानः "एव असि" भवसि खलु। "हि" प्रसिद्धौ अतएव त्वं "शूरः" सामर्थ्यवान् "एव" भवसि। "उत" अपिच "स्थिरः" सङ्ग्रामे धैर्यवान् भवसि, एकत्र स्थित्वैव शत्रून् सम्प्रहरसीत्यर्थः। एवं सति "ते" तव "मनः" "राध्य"

---

* ऊ० गा० १६प्र० १खा० १७गा० ।

‡ 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोमसाम। एषूषाकमुक्थ्यम्। एवाह्यसि सामद्वीयं द्वितीयमुक्थ्यम्'—इति वि० षर्वेति शेषः।

¶ ऋ० आ० २, १, ४, १० (१भा० ४७५पृ०) ऋ० वे० ६, ६, १०, १।

Digitized by Google

स्तुतिभिः आराधनीयम् "एव"। यतोऽनेन मनसा त्वं शत्रुवधं सङ्ग्रामे धैर्यादिकं करोषीति तव मन एव सर्वैः स्तुत्यमित्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ १ २　　३ १२　　३ १ २
एवारातिस्तुवीमघविश्वेभिर्धायिधातृभिः।
१ २　　३ १ २
अधाचिदिन्द्रनस्सचा॥ २*॥

हे "तुविमघ!" [तुविरिति बहु-नाम (निघ०२,१,१)] बहु-धन इन्द्र! "विश्वेभिः" सर्वैः "धातृभिः" कर्मधारकैः [यद्वा, देवानां हविर्दानेन पोषयितृभिः सर्वैः यजमानैः] तव "रातिः" गवाश्वादि-दानं "धायि" तैर्धार्यत एव [दधातेर्लुङि कर्मणि रूपम्]। "चित्" एवार्थे†। "अध"‡ अनन्तरमेव हे इन्द्र! एवंविधस्त्वं "नः" अस्माकं यष्टॄणामपि "सचा"¶ धनादि-दानेन कर्म-सहायो भव॥

"इन्द्रनस्सचा"--"इन्द्रमेसचा"—इति पाठौ॥ २॥

---

* ऋ० वे० ९, ६, २०,२।

†, ‡ 'अधा चित्—इति पद पूरणः'—इति वि०। सायणमते तु अधेत्यस्य अथेत्यर्थे, "निपातस्य च (६,३,१३६)"—इति दीर्घे भवति "अधा"—इति।

¶ 'अथवा सचा सखा'—इत्यधिकं वि०।

अथ तृतीया।

२उ ३ १ २ ३ १र २र
मोषुब्रह्मेवतन्द्रयुर्भुवोवाजानाम्पते।
१ २ ३ २ ३ १ २
मत्स्वासुतस्यगोमतः॥ ३ *॥१८

हे “वाजानाम्पते” अन्नानाम्पते! बलानां वा, हे इन्द्र! “तन्द्रयुः” † निष्कारणं निवृत्तकर्मत्वादालस्ययुक्तः “ब्रह्मेव” ब्राह्मणइव त्वं “मा उ षु भुवः” ‡ सुष्ठु मा भव, सर्वदाऽस्मत्-कर्मरतो भवेत्याशासनम् ¶। तदेवाह—“सुतस्य” अभिषुतस्य, ततः “गोमतः” गव्येन क्षीरेण दध्ना वा मिश्रणवतः सोमस्य पानेन “मत्स्व” माद्य हृष्टो भव॥ ३॥१८

५र र २ ४ ५र २र १
॥ उक्थामदीयवम्॥ एवाहो३ असिवीरयूः। एवा
२ १ २ १ २र र १
प्रभू१रा२ः। उता२३स्थिराः। आयिवातेरा। धिया
२ ५र र २ ४ ५र २ १
२३म्मनाउ। वा३॥(१) एवारा३तिस्तुवीमघा। विश्वा

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ४।

† “उ षु”—इति पदपूरणौ। मा इति प्रतिषेधः, तन्द्रयुरित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः; मा तन्द्रयुः आलस्यं कुरु—इति वि०।

‡ “भुवः वाजानां पते”—भुवर्लोकस्य अन्नानां धनानां चाधिपते भुवर्पदस्य प्रदर्शनार्थं सर्वेषां लोकानां पते—इति वि०।

¶ अहह! अस्मास्वपि ब्राह्मणानामालस्य-स्वभावो वर्णितः।

Digitized by Google

२ १ २ १ २र १
यिभा१यिद्वा२। यिधा २ ३ तृभायिः। आधाचिद्वायि।
२ ५र २ ४र ५
द्रना२३:सचाउ। वा३ ॥(२) मोषुब्रा३ह्म वतन्द्रयुः।
२ १ २ १ २ १ २र १
भुवोवा१जा२। नार३म्यतायि। मात्स्वासुता। स्यगो
२ २ र १।१ १ १
२३मताउ। वा३। स्तौषे२३४५(३) ॥ ११ * ॥ [१]

५र२ २ ४ ५र ४ ५ २र १र
॥ सौभरम् ॥ एवा३द्यो३असिवीरयोवा। एवाभू२
१ ० १ २ ५ १२र२ र
राउता२३। द्यो। स्या२३४यिराः। एवातेरा। धिया
१ २ १ २ ५र र ५र ४ २ ४
३एहा३यि। मा२ना२३४औहोवा ॥(१) एवा३रा ३ ति
५र ४ ५ २ १र १ ० १ २
स्तुवीमघोवा। विश्वेभा२यिद्वायिधा२३। द्यो। तृ२
५ १ र १ २ १ २
३४भायिः। अधाचिदि। द्रना३हा३यि। सा२चा२३४
५र र ५र४ २ ४र ५ ४ ५ २ १र
औहोवा ॥(२) मोषूब्रा३ह्म वतन्द्रयोवा। भुवोवा२
१ १ २ ५ १ र
जाना२३म्। हो। पा२३४तायि। मत्स्वासुत। स्य

* ऋ० मा० ३अ० १ख० ११वा० ।

Digitized by Google

५ २ १ ३ ५र र ३ ११ १ १
गो३वा३यि। मा२ता २ ३ ४ औहोवा। ऊ २ ३ ४ ५

(३)॥ २ *॥ [२] १८

द्वितीयतृचे—प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसङ्गिरः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
रथीतमꣳरथीनांवाजानाꣳसत्पतिम्पतिम् ॥ १† ॥

"विश्वाः" सर्वाः "गिरः" अस्मदीयाः स्तुतयः "इन्द्रम्" "अवीवृधन्" वर्द्धितवत्यः [वृधेर्णिचि चङि "उर्ऋत् (७, ४, ७)"—इत्यनुवृत्तौ "नित्यं छन्दसि (७, ४, ८)"—इति ऋकारस्य अकार-विधानात् लघूपधगुणाभावः, निपातस्वरः (८, १ २८)] कीदृशमिन्द्रम् ? "समुद्रव्यचसं" समुद्रवद् व्याप्तवन्तं, "रथीनां" रथ-युक्तानां योद्धॄणां मध्ये "रथीतमम्" अतिशयेन रथ-युक्तं, "वाजानाम्" अन्नानां "पतिं" स्वामिनं, "सत्पतिं" सतां सन्मार्गवर्त्तिनां पालकं ["पत्यावैश्वर्य्ये (६,२, १८)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्]॥ १ ॥

* ऊ० गा० २१प्र० १अ० २सा०।

† ऋ० आ० ४, ३, १, २ (१भा० ६९७ पृ०)=ऋ० वे० १, १, २१, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

२ १ २ ३ १ ३ १ २
सख्येतइन्द्रवाजिनोमाभेमशवसस्पते ।
२ ३ १ १र १ १ २३१ १ २
त्वामभिप्रनोनुमोजेतारमपराजितम् ॥ २ * ॥

हे "शवसस्पते" † बलस्य पालकेन्द्र ! "ते" तव "सख्ये" अनुग्रहप्रयुक्ते सखित्वे वर्त्तमाना वयं "वाजिनः" अन्नवन्तः भूत्वा "मा भेम" शत्रुभ्यो भीतिं प्राप्ता मा भूम । अतः "त्वाम्" अभयहेतुम् "अभि प्र नोनुमः" सर्वतः प्रकर्षेण स्तुमः [णु स्तुतौ (अदा०, प०), "णोनः (६, १, ६५)"—इति नत्वम्, यङोलुक् (२, ४, ७४), प्रत्ययलक्षणेन (१, १, ६२), "सन्यङोः (६, १, ९)"—इति द्विर्भावः, "गुणो यङ्लुकोः (७, ४, ८२)"—इत्यभ्यासस्य गुणः, प्रत्ययलक्षणेन धातुसञ्ज्ञायां (३, १, ३२) लटोमस् (३, ४, ७८), अदादिवद्भावात् शपोलुक् (२, ४, ७२)] । कीदृशं त्वाम् ? "जेतारं" युद्धेषु जयशीलं अपराजितं क्वापि पराजय-रहितम् ॥

"प्रनोनुमः"-"प्रणोनुमः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० १, १, २१, २ ।

† 'अन्नस्य यशसोवाधिपते' - इति वि० ।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २र २र ३ २ ३ १ ३र ३ १ २

पूर्वीरिन्द्रस्यरातयोनविदस्यन्त्यूतयः।

१ २र २र३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३२

यदावाजस्यगोमतस्तोतृभ्योमंहतेमघम्॥ ३ *॥ १८†

॥ इति द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः॥

"इन्द्रस्य" सम्बन्धिन्यः "रातयः" धन-दानानि "पूर्वीः" अनादि-काल-सिद्धाः, अस्येन्द्रस्य सर्वदा यष्टृभ्यो धनदानमेव स्वभाव इत्यर्थः; एवं सति इदानीन्तनोऽपि यजमानः "स्तोतृभ्यः" ऋत्विग्भ्यः "गोमतः" गो-सहितस्य "वाजस्य" अन्नस्य पर्य्याप्तं "मघं" धनं "यदा" "मंहते" दक्षिणारूपेण ददाति, तदानीं "रातयः" बहु-धन-दान-पूर्व्वकाणीन्द्रस्यान्न-विषयाणि रक्षणानि "न वि दस्यन्ति" विशेषेण नोपक्षीयन्ते। ["यदा"-"यदि"—इति पाठो। "मघं", "रेक्णः", "रिक्थं" —इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेषु धननामसु (निघ० २, १०) मघशब्दः पठितः। "दाति"-"दाशति"—इत्यादिषु दशसु दानकर्मसु "मंहते"—इति पठितम् (निघ० ३, २०, १०)। पूर्वीः—पुरु-शब्दस्य "वोतोगुणवचनात् (४, १, ४४)"—इति ङीष्, आद्यस्योकारस्य दीर्घश्छान्दसः, जसि "दीर्घाज्जसिच (६, १, १०५)"—इति निषेधं वाधित्वा "वा छन्दसि (६, १, १०६)"—इति पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्, ङीषः प्रत्ययस्वरेणोदात्त-

* ऋ० वे० १, १, ११, ३। † 'आहावंइहृक्मुग्यम्'—इति वि०।

Digitized by Google

त्वम्। मंहते—अपः पित्वादनुदात्तत्वम्, तिङश्च ल-सार्वधातुक-स्वरेण, 'तिङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "निपातैर्यद्यदिहन्त (८,१,३०)"—इति निषेधात् ॥३॥ १९

१ २ १ १२ २ १
॥ षाष्टादंष्ट्राद्यम्॥ इन्द्रं विश्वाअवीवृधन्। ऐया
२ १ २ १ २ १२
हायि। समुद्रा॒१व्या॑२। चसाङ्गा१यिरा२३ः। ऐया
२ १ २ १ १२
२३हायि। रथायिता१मा॑२म्। रथायिना२३म्। ऐया
२ २ १ १ १ १
२३हायि। वाजाना१९सा॑२त्। पतायिम्पा१ती२३म्।
१२ २ १ १२ २ २ १ २ १ २
ऐया२३हा३४३यि ॥(१) सख्ये तइन्द्रवाजिनः। ऐयाहा
२ १ २ १ २ १२
यि। माभायिमा१भा॑२। वसास्पा१ता२३यि। ऐया२
२ १ २ १ २ १२
३हायि। तुवामा१भी॑२। प्रनोनू१मा२३ः। ऐया २ ३
२ २ १ २ १ २ १२
हायि। जेतारा१मा॑२। पराजा१यिता२३म्। ऐया२
२ २२ १२ १ २ १ १ १ २
३हा३४३यि ॥(२) पूर्वीरिन्द्रस्यरातयः। ऐयाहायि। न
१ २ १ २ १२ १
वायिदा१स्या॑२। तियूता१या२३ः। ऐया २ ३ हायि।
१ २ १ २ १२ २
यदावा१जा॑२। स्यगोमा१ता २ ३ः। ऐया २ ३ हायि।

२ १ २ १ २ १२ २
स्तोतृभ्यो१मा २ । वतायिमा१घा२३म् । ऐया२३हा३४
१
३यि । ओ२३४५ई । डा(३) ॥ १२ * ॥ [१]

१ २ १ २२ २ १२ २२ १२
॥ आष्टादꣳष्टोत्तरम् ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्नैयादौ ।
२ २ १ २ १ १२
हो३वा । समुद्रव्यचसम् । गायिरा२३ । ऐया २३ त् ।
१ २ २ १ २ १ १२
औ२३होवा । रथायितमꣳर । थायिना२३म् । ऐया
१ २ २ १२२ १२ १ २ १
२३त् । औ२३होवा । वाजानाꣳसत्पतिम् । पाती २
१२ १ २ २ २ १२२
३म । ऐया२३त् । औ२३होवा३४३ ॥ (१) सख्ये तइन्द्र
२ १ २ १२२२१२ २ २ १२ २ २ १
वाजिनऐयादौ । हो३वा । माभेमशवसः । पाता२ ३
१२ १ २ २ १२२ १ २ २ १
यि । ऐया२३त् । औ२३होवा । त्वामभिप्रनो । नूमा
१२ १ २ २ १२२२१ २२ १
२३ः । ऐया२३त् । औ२३होवा । जेतारमपरा । जा
१२ १ २ २ २२१२
यिता२३त् । ऐया२३ । औ२३होवा३४३ ॥ (२) पूर्वीरि
२ २ १ १ १२२२१२ २ २ १ २२ १
न्द्रस्यरातयऐयादौ । हो३वा । नविदस्यन्तियू । ता

* ऊ० गा० १प्र० १ अ० १२ गा० ।

१र १ र २ १र र १ र
यार३ः। ऐया२३त्। औ२३होवा। यदावाजस्यगो।
१ १र १ र २ र १ १र१
माता२३ः। ऐया२३त्। औ२३होवा। स्तोतृभ्योम९
२र १ १र १ र २
हते। माघार३म्। ऐया२३त्। औ२३होवा३ ४ ३।
१
ओ२३४५ई। डा(३)॥ ११ * ॥ [२]

५ २ ४र ५ ४र ५ २ १ २
॥ कालेयम्† ॥ इन्द्र वा३यिस्वाश्रवोवृधान्। समुद्र
१ २ १ २ १ २ १ ५
व्या। चसञ्जिरा२३ः। रथा३यि। मार३४। म९र।
२ २ १र २र २ २ ५ ४
था३यिनाम्। वाजाना९सौ। वा३४३औ३४वा। पता
५ र २ ४ ५ ४र ५ २र १
५ यिम्पतायिम्॥(१) सख्ये ता३इन्द्रवाजिनाः। माभा
२ १ २ २ २ १ २ १
यिमधा। वसस्पता२३यि। तुवा३म्। भा२३४। भि
५र २ २ १र २ १ २ ५ ४
प्रणो। नू३माः। जेतारमौ। वा३४३औ३४वा। परा
५ र २ ४ ५ ४र ५ २ १ २
५ जिताम्॥(२) पूर्वीरा३यिन्द्रस्यरातयाः। नवायिद
१ २ ३र २ १ २ १ ५र
स्या। त्यियूतया२३ः। यदा३। वा२३४। जस्यगो।

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ११सा०। † 'महाकालेयम्'—इति ख० पु०।

Digitized by Google

२ २ १र ३र १ ५र ५ ४
मा३ताः । स्तोतभ्योमौ । वा३४३ओ३४वा । इता३यि

४
मघाम् । ह्वोपुई । डा(३) ॥ ३ * ॥ [३]

१ र र २ १ २
॥ नार्मेधम् ॥ इन्द्र विश्वा अवीवृधा३ने । स । मू । द्र

१ २ १ २ १ १ २ ५ २ १
व्या । चसाङ्खा३यिराः । रथा३यिता२३४माम् । रथा

२ ३र र ५ १ र ५ २र
यिनाम् । औहोहो२३४वा । वा२३४जाहायि । ना९

१ २ ३र र ५ १ ५र
सात्पाता । औहोहो२३४वा । पा२३४तीम् । एहिया

५ २ र र २ र १ २
६हा ॥(१) सख्ये तइन्द्रवाजिना३ए । मा । भायि । म ।

१ २ १ २ २ १ २ ५ २ १ २
आ । वसास्वा३तायि । तुवा३मा२३४भौ । प्रनोनूमा ।

३र र ५ १ ५ २ १ २ ३र
औहोहो२३४वा । जा२३४यितहायि । रमापारां । औ

र ५ १ ५र ५
होहो२३४वा । जा२३४यिताम् । एहिया ६ हा ॥(२)

२र र र २ १ २ २ २
पूर्वीरिन्द्रस्यरातया३ए । न । वायि । द । स्या । ति

१ २ २ १ २ ५ २ १ २ ३र र
यूता३याः । यदा२वा२३४जा । स्यगोमाता । औहो

* ऋ० म० १२म० १ ख० ३ मा० ।

५ १ ५ २र १ २ ३र
हो२३४वा। स्तो२३४तृह्वायि। भ्योमा॰हाता। औ

र ५ १ ५र ५ ४
हौहो२३४वा। मा२३४घाम। एहियाईहा। हो५ई।

डा(३) ॥ १ * ॥ [४] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः † ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।

पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ २ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-

श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तराग्रन्थे तृतीयोऽध्यायः ‡ ॥

---

* ऊ० गा० २१प्र० २ख० २सा० । † 'इति द्वितीयमहः'—इति वि० ।

‡ "अत्र द्वितीयप्रपाठकस्यार्द्धः समाप्तः"—इत्येव मूल-पद-विवरणादि-सम्मतः न तु "तृतीयो" नापि "अध्यायः"—इति ।

Digitized by Google

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्याय आरभ्यते* ॥

तत्र,

प्रथम-खण्डे—

एते असृग्रमिति प्रथमतृचे—प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
एते असृग्रमिन्दवस्तिरःपवित्रमाशवः ।
१ २ ३ १ ३२
विश्वान्यभिसौभगा ॥ १† ॥

"तिरः पवित्रं"‡ तिर्यग् गच्छन्तं दशापवित्रं प्रति "आशवः" शीघ्रगामिनः "एते" पवमाना "इन्दवः" सोमाः "विश्वानि" सर्व्वाणि "सौभगा" सौभगानि धनानि ¶ "अभि" लक्ष्य "असृग्रम्" ऋत्विग्भिः सृज्यन्ते ॥ १ ॥

---

* 'इदानीं तृतीयमध्याय आरभ्यते'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, १, १४, १ । ‡ 'तिरः=अधः'—इति वि० ।

¶ 'विश्वानि अभिसौभगा—विश्वानि सर्वाण्यभिसौभाग्यानि'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ २ १ २ ३ १ २
विघ्नन्तोदुरितापुरुसुगातोकायवाजिनः।
१ २ ३ २ ३ १ २
त्मनाकृण्वन्तोअर्वतः॥ २* ॥

“वाजिनः” बलवन्तः† सोमाः “पुरु” बहूनि “दुरिता” दुरितानि “वि घ्नन्तः” विशेषेण नाशयन्तः “तोकाय” अस्माकं पुत्राय‡ “सुगा” अतिसुखरूपाणि धनानि¶ “अर्वतः” अश्वांश्च “त्मना” आत्मना स्वयमेव “कृण्वन्तः” इरत इत्यर्थः। ऋत्विग्भिः सृज्यन्त इति पूर्वेण सम्बन्धः॥

“त्मना”-“तना”इति—इति पाठौ, “अर्वतः”-“अर्वते”—इति च॥२॥

अथ तृतीया।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ २
कृण्वन्तोवरिवोगवेभ्यर्षन्तिसुष्टुतिम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
इडामस्मभ्यꣳसंयतम्॥ ३ §॥ १

* ऋ० वे० ७, १, २४, २।

† ‘वाजिनः--अन्नवन्तः’—इति वि०।

‡, ¶ ‘सुगातोकाय—सुखाय पुत्रपौत्राय’—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, २४, ३।

Digitized by Google

सोमाः अस्माकं "गवे" "अस्मभ्यं" च "संयन्त" यदस्मात् संयच्छति। तद् "वरिवः" धनम् "इळाम्" अन्नञ्च "कृण्वन्तः" कुर्वन्तः "सुष्टुतिम्" अस्मदीयां शोभनां स्तुतिम् * "अभ्यर्षन्ति" आभिमुख्येन गच्छन्ति॥ ३॥ १

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३१२
राजामेधाभिरीयतेपवमानोमनावधि।
३१ २ ३१२
अन्तरिक्षेणयातवे॥ १ †॥

"मनो अधि" मनुष्ये यागं कुर्वाणे सति‡। यद्वा मनावधि मनुर्मन्तव्यो यज्ञस्तस्मिन् "पवमानः" पूयमानः पुनानो वा "राजा" [राज-शब्देन सोमोऽभिधीयते "सोमं राजानमकृण्वन् (य० मा० २८, ७२)"—इत्यादिषु दृष्टत्वात्, स राजा] सोमः "मेधाभिः" स्तुतिभिः¶ सह "ईयते" गच्छति। कुत्र? "अन्तरिक्षेण" आकाशमार्गेण द्रोणकलशं प्रति "यातवे" यातुम्। द्रोणाभिगमन-कालेहि स्तोतृभिः स्तूयते खलु॥ १॥

---

* 'सुष्टुति—सुखेन स्तुतिम्'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, २,४, १।

‡ 'मनौ अधि—मनुष्ये यजमाने निमित्तभूते'—इति वि०।

¶ 'मेधाभिः ईयते—ऋत्विग्यजमानानां प्रज्ञाभिः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ २ १ २ १ २ ३ १ २र
आनस्सोमसहोजुवोरूपन्नवर्च्चसेभर ।
२ १ २ १ २
सुष्वाणोदेववीतये ॥ २ * ॥

हे "सोम !" "देववीतये" देवानां पानाय देवानां कामाय वा † "सुष्वाणः" अभिषुतो वा त्वं "सहः" शत्रुभिभवनसमर्थं बलं "जुवः" [जु—इति गत्यर्थः ‡] शत्रून् प्रति शीघ्रगमनं ¶ यद्वा सर्वतो गमनशीलं बलं । किञ्च ["न"—इति चार्थे §] "वर्च्चसे" [वर्च्च दीप्तौ (भ्वा०, आ०) दीप्त्यै सर्वत्र प्रकाशनाय रूपञ्च "नः" अस्मभ्यम् "आ भर" आहर प्रयच्छ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
आनइन्दोशतग्विनङ्गवाम्पोषꣳस्वश्व्यम ।
२ ३ १ २ ३ १ २
वहाभगत्तिमूतये ॥ ३ ‖ ॥ २

---

* ऋ० वे० ७, २, ४, २ ।

† 'देववीतये० ००—देवानां दानाय भक्षणाय वा'—इति वि० ।

‡ निघण्टौ गतिकर्म्मसु पञ्चोत्तरशततमत्वेन पठितम् (२, १४) ।

¶, § 'जुवः—रूपम् । न—न शब्द उपमार्थीयः रूपमिव'—इति वि० ।

‖ ऋ० वे० ७, २, ४, २ ।

हे "इन्दो" पात्रेषु चरणशील ! दीपनशील ! वा हे सोम ! "शतग्विनं"* शतसहस्रसङ्ख्याकाभिः गोभिः युक्तं "गवां पोषं" गवादीनां पुष्टिवर्द्धनं "स्वश्व्यं" शोभनाश्व-सङ्घ-सहितं "भगत्तिं" भगदत्तिं भजनीय-धन-दानञ्च † "ऊतये" रक्षणाय "नः" अस्माकम् "आवह" प्रापय। गवादीश्च तेषां वृद्धिं प्रयच्छे-त्यर्थः ‡ ॥ ३ ॥ २

तन्त्वानृम्णानीति पञ्चर्चं तृतीयं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा।

१ २ ३ १ २ १२ ३१२ ३ १ ३ २
तन्त्वानृम्णानिबिभ्रतꣳसधस्थेषुमहोदिवः।

१ २ ३ १ २
चारुꣳसुकृत्ययेमहे ॥ १ ※ ॥

"महोदिवः" महतोद्युलोकस्य¶ "सधस्थेषु" सहस्थानेषु स्थितं, "नृम्णानि" धनानि § "बिभ्रन्तं" अस्मदर्थं धारयन्तं "चारुं" कल्याणं ‖ हे सोम ! "तं" तादृशं पवमान-लक्षणं "त्वा" त्वां "सुकृत्यया" शोभन-क्रियया "ईमहे" धनानि याचामहे** ॥ १ ॥

---

* 'शतग्विनं—शतसङ्ख्यातम्'—इति वि०।

† 'भगत्तिं—शोभमानप्रतिपत्तिम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, १, ५, १।

¶ 'महोदिवः—महाकाशात्'—इति वि०।

§ 'नृम्णानि—बलानि धनानि वा'—इति वि०।

‖ 'चारुं—शोभनम्'—इति वि०।

** "ईमहे"—इति याच्ञाकर्मसु निघण्टौ प्रथमं पदम् (३, १९)।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ ३क १र २ १ २ २ १ २
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यम्महामहिव्रतम्मदम् ।
२ १ २र २ १ २
शतम्पुरोरुरुक्षणिम् ॥ २* ॥

हे सोम ! "संवृक्तधृष्णुं" संवृक्ताः सञ्छिन्नाः धृष्णवो धर्षणशीलाः शत्रवो येनासौ संवृक्तधृष्णुः, तम् †, "उक्थ्यं" उक्थार्हं प्रशस्यम्, ‡ "महामहिव्रतं" महीय-बहु-कर्माणं, ¶ "मदं" मदकरं "शतं" बहूनि "पुरः" शत्रूणां पुराणि "रुरुक्षणिं" विनाशयन्तम् ; त्वां धनानाम् ईमहे इति § सम्बन्धः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ ३क२र ३ १ १ ३ २
अतस्त्वारयिरभ्ययद्राजानꣳसुक्रतोदिवः ।
२ १ २ ३ १ २
सुपर्णोअव्यथीभरत् ॥ ३ ‖ ॥

* ऋ० वे० ९, १, ५, २ ।

† 'संवृक्तधृष्णुम्—अतिशयेन संवर्जकं, धृष्णुं धारणात्मकम्'—इति वि० ।

‡ 'उक्थ्यम्—उक्थ्यानि स्तोत्राणि यत्र विद्यन्ते स उक्थ्यः, तम् उक्थ्यं सोमम्'—इति वि० ।

¶ 'महामहिव्रतं—महेति महान्तं व्रतमस्य कर्म वा यस्य, स महिव्रतः, तं महिव्रतम्'—इति वि० । महदर्थशब्दद्वयमुक्तेरतिमहत्त्वं गम्यतइति भावः ।

§ पूर्वचर्चितम् ।

‖ ऋ० वे० ९, १, ५, ३ । "रयिमभिराजं"—इति च तत्र पाठः ।

Digitized by Google

हे "सुक्रतो" शोभनकर्म्मन् * पवमान सोम ! "रयिः" रयिम् धनम्प्रति "अभि अयत्" † अभिगमयति "राजानं" ‡ "त्वा" त्वाम् "अतः दिवः" अमुष्मात् द्युलोकात् "अव्यथी" व्यथारहितः "सुपर्णः" श्येनवत् ¶ "भरत्" आहरत् । तथाच श्रूयते—'आदाय श्येनोऽभरत् सोमम् (ता० ब्रा०)'—इति ॥

"अव्यथी"-"अव्यथिः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३१ २
अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे ।
३ १ २र
अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥ ४ § ॥

"अधा" अथ "विचर्षणिः" कर्मणां विद्रष्टा ‖ "अभिष्टिकृत्" यजमानानाम् अभीष्ट-फलस्य कर्त्ता सोमः** "इन्द्रियं" स्वकीयं फलं †† "हिन्वानः" प्रेरयन् "ज्यायः" प्रशस्यतरं "महित्वं" महत्वम् "आनशे" प्राप्नोति‡‡ ॥ ४ ॥

---

* 'सुक्रतो—सुक्रतु शोभनकर्म'—इति वि० ।

† 'अयत्—आनयत्'—इति वि० ।

‡ 'राजानं—सोमम्'—इति वि० ।

¶ 'सुपर्णः—पक्षीभूत्वा'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, ५, ४ ।

‖ 'विचर्षणिः—विविधानां पुरुषाणां स्वामी'—इति वि० ।

** 'अभिष्टिकृत्—अभिष्टिः यजमानः तं यः करोति स अभिष्टिकृत्'—इति वि० ।

†† 'इन्द्रियम्—इन्द्रस्य रूपं सोमम्'—इति वि० ।

‡‡ 'आनशे—अश्नुवानौ'—इति वि० ।

अथ पञ्चमी ।

१२ २ ३१ २ १ १२ ३ १ २
विश्वस्माइत्स्वर्दृशे साधारणꣳ रजस्तुरम् ।
३ १ ३ २ ३ १ २
गोपामृतस्य विर्भरत् ॥ ५ * ॥ ३

"रजस्तुरम्" † उदकस्य प्रेरकम् "ऋतस्य" यज्ञस्य "गोपां" गोपयितारं‡ "विश्वस्मै" सर्वस्मै "स्वर्दृशे" देवाय ¶ "साधारणम् इत्" समानम् § आवसन्तं सोमं "विः" पक्षी ‖ श्येनो "भरत्" स्वर्गादाहरत् ॥ ५ ॥ ३

अथ तृचात्मके चतुर्थसूक्ते—

प्रथमा ।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।
१ २ ३ १ २र
इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ १ ** ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, ४, ५ । "विश्वस्मा इत्स्व०"—इति ऋ० पु० पाठः । "विश्व-स्माइत्स्व०"—इति मु० पाठः ।

† 'रजस्तुरं—रजः-संयुक्तम्'—इति वि० ।

‡ 'गोपां—अनपाध्यानसंयुतम्'—इति वि० ।

¶ 'स्वर्दृशे—स्वः सर्वलोकस्य, दृशे दर्शनाय'—इति वि० ।

§ 'इत्—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

‖ 'विः—मधनीयम्'—इति वि० ।

** छ० आ० ६, १, २, ९ (२ भा० ६४ पृ०) =ऋ० वे० ७, १, २८, २ ।

हे "इन्दो" सोम! "मनीषिभिः" ऋत्विग्भिः "मृज्यमानः" शोध्यमानः त्वम् "इषे" अस्माकमन्नाय "धारया" "पवस्व" क्षर। "रुचा" रोचमानेनात्मना "गाः" पशून् "अभीहि" अभिगच्छ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ १ २र २ २ १ १ २
पुनानोवरिवस्कृध्यूर्ज्जञ्जनायगिर्वणः।
१ २ २ २ १ १ २
हरेसृजानआशिरम् ॥ २ * ॥

हे "गिर्वणः" गीर्भिर्वननीय! "हरे" हरितवर्ण सोम! "आशिरं" † क्षीरं प्रति "सृजानः" विसृज्यमानः "पुनानः" पूयमानः त्वं "जनाय" ‡ जनार्थं "वरिवः" ¶ धनम् "ऊर्जम्" § अन्नञ्च "कृधि" कुरु ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ २ २ १ २ २१ २ २ १
पुनानोदेववीतयइन्द्रस्ययाहिनिष्कृतम्।
२ २ २ १ २ २१
द्युतानोवाजिभिर्हितः ॥ ३ ‖ ॥ ४

---

* ऋ० वे० ७, १, १८, ४।

† 'आशिरं—क्षीरं दधि वा'—इति वि०।

‡ 'जनाय—यजमानार्थम्'—इति वि०।

¶ 'वरिवः—वरिष्ठम्'—इति वि०।

§ 'ऊर्जम्—अन्नं यशो बलं वा'—इति वि०।

‖ ऋ० वे० ७, १, १८, ५।

Digitized by Google

हे सोम ! "वाजिभिः" हविर्लक्षणान्नयुक्तैर्यजमानैः सह* "द्युतानः" दीप्यमानः "देववीतये" यज्ञार्थं "पुनानः" पूयमानः "हितः" हितकरः † त्वम् "इन्द्रस्य" "निष्कृतं" स्थानं "याहि" गच्छ ॥

"हितः"-"यतः"—इति पाठो ॥ ३ ॥ ४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः ‡ ॥ १ ॥

द्वितीय-खण्डे¶—

प्रथमत्वचे—प्रथमा ।

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा ।
२ १ २क २र
हव्यवाड्जुह्वास्यः ॥ १ § ॥

---

* 'वाजिभिः—वाजमन्नञ्च पुरोडाशादि-लक्षणं, तद्येषामस्ति ते वाजिनः ऋत्विग्यजमानाः तैर्वाजिभिः ; अथवा वाजसनेयैः वाजिभिः अध्वर्युभिः'—इति वि० ।

† 'हितः—निहितः स्थापित इत्यर्थः—इति वि० ।

‡ 'बहिष्पवमानमुक्तम्'—इति वि० ।

¶ 'सप्तदशस्तौमिकं भेदमाह । इदानीमाज्यानि । आग्नेयम्—इति वि० ।

§ ऋ० वे० १, १, १२, ६ ।

Digitized by Google

"अग्निः" आहवनीयाख्यः तस्मिन् प्रक्षिप्यमाणेन "अग्निना" निर्मन्थन-प्रणीतेन वा सह "समिध्यते" सम्यग् दीप्यते*। कीदृशोऽग्निः? "कविः" मेधावी "गृहपतिः" यजमान-गृहस्य पालकः "युवा" नित्य-तरुणः "हव्यवाट्" हविषोवोढा [वहतेः "वहश्च (३, २, ६४)"—इति ण्वि-प्रत्ययः ; णित्त्वादुपधा-वृद्धिः (७, २, ११५) 'गतिकारकोपपदात् कृत् (६,२,१३९)"—इत्युत्तर-पद-प्रकृति-स्वरत्वम्] "जुह्वास्यः" जुहूरूपेण मुखेन युक्तः† [हूयते अनयेति जुहूः "हुवः श्लुवच्च (उ०, २, ६१)" —इति क्विप्; तत्सन्नियोगाद् (३, २, १७८ वा०) दीर्घश्च ; श्लुवद्भावात् द्विर्भावः ; चुत्व-जश्त्वे ; प्रातिपदिक-स्वरेणान्तो-दात्तः (फि०१, १) ; जुहूरास्यं यस्येति बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-स्वरत्वेन स एव शिष्यते (८, २, १) ; शेष-निपातः ; यणादेशे "उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य (८, २, ४)"—इत्या-कारः स्वरितः]॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २र ३१२ ३ १२ ३१ २
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतन्देवसपर्य्यति।
१ २ ३१२
तस्यस्मप्राविताभव॥ २ ‡॥

*'अग्निनाग्निः समिध्यते—अग्नीनां वैवेत्याचोन्याकरोति। तेन निर्मथ्याग्निना अग्निः समिध्यते सवनीयः'—इति वि०।

† 'जुह्वास्यः—जुह्वाते आस्ये यस्य जुह्वास्यः। अथ जुहोति क्रिया यस्य आस्ये क्रियते। अथवा जुहूनामा स्रुक् आस्यं मृतौ यस्य स जुह्वास्यः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, १२, २।

Digitized by Google

हे "अग्ने!" "देव!" "यः" "हविष्पतिः" यजमानः "दूतं" "त्वाम्" "सपर्यति" * परिचरति। तस्य यजमानस्य "प्राविता" "भव स्म" अवश्यं रक्षको भव। [हूयत इति हविः "अर्चि-शुचि (उ०,२,१०७)"—इत्यादिना इसिः, प्रत्यय-स्वरेण इकार उदात्तः (३, १, ३), हविषः पतिः हविष्पतिः, "नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य (८, ३, ४५)"—इति षत्वम्, "पत्यावैश्वर्ये (६, २, १८)"—इति पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम्। सपर्यति—सपर-शब्दात् "कण्ड्वादिभ्यो यक् (३, १, २७)"—इति यक्, धातुप्रकरणात् गुणप्रतिषेधार्थात् यकः कित्त्वाच्च सपरशब्दस्य धातुत्वात्ततोविहितस्य यक आर्द्धधातुकत्वे सति "अतोलोपः(६,४,४८)"—इति लोपः, "सनाद्यन्ता धातवः (३,१,३२)"—इति धातुसञ्ज्ञायां तिप्, "कर्त्तरि शप् (३,१,६८)", तस्मिन् पूर्वस्य "अतोगुणे (६, १, ९६)"—इति पररूपत्वम्, यकः प्रत्यय-स्वरेणोदात्तत्वम् (३, १, ३), शपा सह एकादेशस्य "एकादेशउदात्त० (८, २, ५)"—इत्युदात्तत्वम्, "तिङ्ङतिङः (८, २, २८)"—इति निघातो न भवति "यद्वृत्तान्नित्यम् (८, १, ६६)"—इति प्रतिषेधात्] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२　३ १ २ ३ १ २　　३ १ २　　३ १ २
योऽअग्निन्देववीतये हविष्माꣳ आविवासति।

१ २
तस्मै पावकमृडय ॥ २ † ॥ ५

* "सपर्यति"—इति परिचरणकर्मसु तृतीयं नैघण्टुकम् (३, ५)।

† ऋ० स० १, १, १२, ९।

"हविष्मान्" हविर्युक्तो "यः" यजमानः "देववीतये" देवानां हविर्लक्षणहेतुयागार्थम् "अग्निम्" "आविवासति" अग्नेः समीपे विशेषेणागत्य परिचर्यां करोति *। हे "पावक" अग्ने! "तस्मै"† "मृड़य" तं यजमानं सुखय। [देववीतये—'वी गति-प्रजन-कान्त्यशन-खादनेषु (अदा०, उभ०)'—इत्यस्मादशनार्थात् क्तिन्, देवानां वीति र्यस्मिन् यागे स देववीतिः, "बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम्, "नब्विषयस्यानिसन्तस्य (फि०, २, ३)"—इति पर्य्युदासाद्धविः-शब्दोदात्तः, मतुपः सर्वानुदात्तत्वात् स एव शिष्यते। आविवासति—'वा गति-गन्धनयोः (अदा० प०)'—अस्मादन्तर्भावित-ण्यर्थादागमयितुमिच्छतीत्यर्थे सन्, आह्वानेच्छा; परिचर्यायां पर्यवस्यतीति विवासति-शब्दः परिचर्यार्थे निघण्टौ (३, ५, १०) पठितः, द्विर्भावः, अभ्यासस्य ह्रस्वः (७, ४, ५९), "सन्यतः (७, ४, ७९)"—इति इत्वम्, "अनित्यादिर्नित्यम् (६, १, १९७)"—इत्याद्युदात्तत्वम्, "तिङ्ङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "यद्वृत्तान्नित्यम् (८, १, ६६)"—इति प्रतिषेधात्, "तिङि चोदात्तवती (८, १, ७१)"—इत्याङो "सहसुपेत्यत्र (२, १, ४) सहेति योगविभागादाङस्तिङा सह समासे समासान्तोदात्तत्वे प्राप्ते (८, १, २२३) "परादिश्छन्दसि बहुलम् (६, २, १९९)"—इत्युत्तर-पदाद्युदात्तत्वम्। तस्मै—"क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (२, ३, १३ वा०)"—इति सम्प्रदानत्वाच्चतुर्थी॥ २॥ ५

---

* 'आविवासति—दीपयति'—इति वि०।

† 'तस्मै पावक—चतुर्थ्यं वा द्वितीया-स्थाने भवति, तं पावकम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीयतृचे*—प्रथमा ।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

मित्रꣳहुवेपूतदक्षंवरुणञ्चरिशादसम् ।

१ २ ३ १ २ १ २

धियङ्घृताचीꣳसाधन्ता ॥ १ † ॥

अहमस्मिन् कर्म्मणि हविः-प्रदानाय "पूतदक्षं"‡ पवित्रबलं "मित्रं" "हुवे" आह्वयामि [ह्वयतेः "बहुलञ्छन्दसि (२, ४, ७३)"---इति शपो लुकि सति "ह्वः सम्प्रसारणम् (६, १, ३२)"---इत्यनुवृत्तौ 'बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"---इति सम्प्रसारणे उवङादेशः, "तिङ्ङतिङः (८, १, २८)"---इति निघातः]। तथा "रिशादसं" रिशानां हिंसकानाम् अदसमत्तारम्¶ "वरुणञ्च" हुवे। कीदृशौ मित्रावरुणौ? "घृताचीं"§ घृतमुदकमञ्चति भूमिं प्रापयति या धीर्येन कर्म्मणा तां घृताचीं "धियम्" "साधन्ता" साधयन्तौ ‖ ['राध साध संसिद्धौ

---

* 'मैत्रावरुणसाम्नम्'—इति वि० ।

† य० वे० ३३, ५७ = ऋ० वे० १, १, ४, २ ।

‡ 'पूतदक्ष'—पूतं मेध्यं, दक्षं शीघ्रम्'—इति वि० ।

¶ रिशादसं—शत्रूणां हिंसकम्'—इति वि० ।

§ 'घृताचीं—'घृतमुदकं तस्य प्रदानसमर्थाम्'—इति वि० ।

‖ महीधरस्त्वेवमिमां व्याचष्टे—'द्वे मधुच्छन्दोदृष्टे गायत्र्यौ आद्या मित्रावरुण-देवत्या। मित्रं वरुणञ्चाहं हुवे आह्वयामि। कीदृशम्? पूतदक्षम् पूतं पवित्रं सदाचारं दक्षयति धन-पुत्रादिभिर्वर्द्धयति पूतदक्षस्तम् दक्षवृद्धौ शीघ्रार्थे चेत्यस्माद्धातोरण्यस्मात् कर्मण्यण्। रिशादसम् रिशन्ति हिंसन्ति रिशा दुष्टाः तान् समन्तादस्यति नाशयति रिशादसः तम्। रिश हिंसायाम् दस उपक्षये। द्वयोर्विशेषणे। कीदृशा

(द्वि०,प०)'—इत्यस्मादन्तर्भावितण्यर्थाल्लटः शत्रादेशे (६,१,१६१), श्नुं बाधित्वा व्यत्ययेन (३,१,८५) शप्, अदुपदेशत्वात् उपरि शतृ-प्रत्ययस्य ल-सार्वधातुकानुदात्तत्वम्, द्वितीयाद्विवचनस्य शपश्च "अनुदात्तौ सुप्पितौ (३,१,४)"—इत्यनुदात्तत्वे, "धातोः (६, १, १६२)"—इति धातुस्वर एव शिष्यते, "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्यादिना विभक्तेराकारादेशः ॥१॥

अथ द्वितीया।

२ १ २
ऋतेनमित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा।

१ २ १ १ २
क्रतुम्बृहन्तमाशाथे ॥ २ * ॥

हे "मित्रावरुणौ!" [मित्रश्च वरुणश्चेति मित्रावरुणौ "देवता द्वन्द्वे च (६, ३, २६)"—इति पूर्वपदस्यानङादेशः, तादृशौ] युवां "क्रतुं" प्रवर्त्तमानमिमं सोमयागम् "आशाथे" आनशाथे व्याप्नुवन्तौ ["छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः (३, ४, ६)"—इति वर्त्तमाने लिट्, नुडभावश्छान्दसः]। केन? "ऋतेन" अवश्यभावितया सत्येन फलेन अस्मभ्यं फलं दातुमित्यर्थः। कीदृशौ युवाम्? "ऋतावृधौ" ['ऋतमित्युदक-नाम (निघ० १, १२, ६), सत्यं वा यज्ञं वा'—इति यास्कः†] उदकादीना-

वुभौ? धियं कर्म साधन्ता साधयन्तौ। कीदृशीं धियम्? घृताचीं घृतमञ्चते पूयते यत्र तम्'—इति।

* ऋ० वे० १, १, ४, २।

† 'ऋतमित्युदकनाम'—इत्यंशस्तु द्वितीय-पञ्चविंशे, 'सत्यं वा यज्ञं वा'—इति तु चतुर्थोनविंशे इति विवेकः।

मन्यतमस्य वर्द्धयितारौ* । अतएव 'ऋतस्पृशा' उदकादीन् स्पृशन्तौ† । कीदृशं क्रतुम्? "बृहन्तम्" अङ्गैरुपाङ्गैश्चातिप्रौढम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ २ ३ १ १२ ३ १ २३१ २
कवीनोमित्रावरुणातुविजाताउरुक्षया ।
१ २ ३ १ २
दक्षन्दधातिअपसम् ॥ ३ ‡ ॥ ६

"मित्रावरुणा" मित्रावरुणौ एतौ देवौ "नः" अस्माकं "दक्षं" बलम् "अपसं"¶ कर्म च "दधाते" पोषयतः, कीदृशौ? "कवी" मेधाविनौ, "तुवि-जाता" तुविजातौ बहूनामुपकारकतया समुत्पन्नौ, "उरुक्षया" बहु निवासौ [मित्रावरुणौ—मित्रशब्दः प्रातिपदिक-स्वरेणान्तोदात्तः (फि० १, १), वरुण-शब्दो नित्स्वरेणाद्युदात्तः (६, १, १९७) । तुविजातौ—बहूनामुपकारकतया तत्सम्बन्धित्वेन जाता विति षष्ठीसमासे समासान्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३), चतुर्थीसमासे हि "क्ते च (६, २, ४५)"—इति क्वचित् पूर्वपदप्रकृतिस्वरः स्यात् । उरूणां बहूनां क्षयौ उरुक्षयौ, 'क्षि निवास-गत्योः (तु० प०)'—इति धातोः क्षियन्त्यस्मिन्निति क्षय इत्यधिकरणे एव अच्-प्रत्ययान्तस्य "क्षितः

---

* 'ऋतावृधौ—ऋतमन्नं तद् वर्द्धयतः'—इति वि० ।

† 'अग्निष्टोमादिकम्'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० १, १, ४, ४ ।

¶ 'अपसं—धनम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

(६, १, १६३)"—इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते "चयो निवासे (६, १, २०१)"—इत्याद्युदात्तत्वं विहितम्, समासे तु "समासस्य (८, १, २२३)"—इत्यन्तोदात्तत्वं वाधित्वा तदुत्तरप्रकृति-स्वरेण (६, २, १३९) प्राप्तमुत्तरपदाद्युदात्तत्वम् यद्यपि थाथादि-स्वरेणान्तोदात्तत्वेन बाध्यते तथापि "परादिश्छन्दसि बहुलम् (६, २, १९९)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वं द्रष्टव्यम्। दच:—दचतेरुत्साहकर्मणो ञित्त्वादाद्युदात्त: (६, १, १९७)। आप्यते फलमनेनेत्यप: कर्म, "आप: कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा (उ० ४, १०९ टी० द्र०)"—इत्यसन्तस्य अपसस्यारेइत्यादौ नित्त्वा (६, १, १९७) दाद्युदात्तस्यापस्-शब्दस्यात्र व्यत्ययेन प्रत्ययाद्युदात्तत्वम् (३, १, ३)]॥ ३॥ ६

अथ तृतीयत्वचे*—प्रथमा।

१ २ १ २ २र २ १ २र

इन्द्रेणसꣳहिदृक्षसेसञ्जग्मानोअबिभ्युषा।

२ १२ ३ १२

मन्दूसमानवर्चसा॥ १ †॥

हे मरुद्गण! त्वम् "इन्द्रेण" "सञ्जग्मान:" सङ्गच्छमान: "सं दृक्षसे हि" सम्यग् दृश्येथा: खलु, अवश्यमस्माभिर्द्रष्टव्य-

---

* 'ऐन्द्रमाद्यम्'—इति वि०।

† ऋ० वे० १, १, १२, २।

मित्यर्थः *। कीदृशेनेन्द्रेण? "अबिभ्युषा" भीति-रहितेन कीदृशाविन्द्रमरुद्गणौ? "मन्दू" नित्य-प्रमुदितौ, † "समान-वर्चसा" तुल्य-दीप्ती ['पुरा कदाचित् वृत्र-वध-दशायाम् इन्द्रस्य सखायः सर्वे देवा वृत्र-श्वासेनापसारितास्तदानीमिन्द्रस्य वृत्र-सम्बन्धि-सकल-सेना-जयार्थं मरुद्भिः सङ्गमो भूतः'—सोऽयमर्थो "वृत्रस्यत्वश्वसथाय (ऋ० आ० ४, १, ४, २; ६५६ पृ०)"—इति मन्त्रे सङ्गृहीतः; 'इन्द्रो वै वृत्रं हनिष्यन्'—इति ब्राह्मणे (ता०) प्रपञ्चितश्च; इन्द्रशब्दः परमैश्वर्यवत्त्वं मरुद्गणस्याभिधत्ते, तदानी-मिन्द्रस्य सम्बोधनं वहिरेवाध्याहर्त्तव्यम्। तथाचेयमृक् यास्के-नैवं व्याख्याता—"इन्द्रेण हि सन्दृश्यसे सङ्गच्छमानोऽबिभ्युषा गणेन मन्दू मदिष्णू युवां स्थोऽपि वा मन्दुना तेनेति स्यात्, समानवर्चसेत्येतेन व्याख्यातम् (४, १२)"—इति। सन्दृक्षसे—सम्पश्येथाः "दृशेश्चेति वक्तव्यम् (७, १, ७ वा०)"—इत्यात्मने-पदम्, दृशेः "लिङर्थे लेट् (३, ४, ७)"—इति प्रार्थनायां लेट्, थासस्से (३, ४, ८०), "लेटोऽडाटौ (३, ४, ९४)"—इत्यडा-गमः, "सिब्बहुलं लेटि (३, १, ३४)"—इति सिप्, "सञ्ज्ञा पूर्वको विधिरनित्यः (प० शे० ९३)"—इति गुणाभावः, व्रश्चा-दिना (८, २, ३६) षत्वम्, "षढोः कः सि (८, २, ४१)"

---

* 'इन्द्रेण सं हि दृक्षसे मरुद्गण' इति वाक्यशेषः। अथवा व्यत्ययेन व्याख्या क्रियते—मरुद्गणेन दृश्यसे इन्द्रः। अथवा आदित्य इन्द्रोऽभिधीयते, मरुद्गणा रश्मिमध्यस्थाः सह दृश्यसे। अथवा इन्द्रेण आदित्येन सङ्गमानः सङ्गच्छमानः'—इति वि०।

† 'मन्दू—मदन-स्वभावेन'-इति वि०।

Digitized by Google

—इति कत्वम्, "आदेश-प्रत्यययोः (८, ३, ५९)"—इति सिपः षत्वम्, बहुल-ग्रहणात् सिपः परस्तादडपि भवति, सिपा व्यवधानात् पश्चादेशो न भवति, शपः पित्त्वादनुदात्तत्वम् (३, १, ४), उत्तरस्य ल-सार्वधातुकानुदात्तत्वम् (६, १, १८६), धातुस्वर एव शिष्यते (६, १, १६२), हि-शब्द-योगात् "तिङ्-तिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "हि च (८, १, ३४)"—इति प्रतिषेधात्। सञ्जग्मानः—गमेः सम्पूर्वात् छन्दसि लुङ्लङ्लिटः (३, ४, ६)"—इति वर्त्तमाने लिट्, "समोगम्यृच्छि० (१, ३, २९)"—इत्यात्मनेपद-विधानात् लिटः कानजादेशः (३, २, १०६), द्विर्भावः (६, १, ८), हलादि-शेषः (७, ४, ६०), अभ्यासस्य चुत्वम् (७, ४, ६२), "गमहन० (६, ४, ९८)"—इत्युपधा-लोपः, कानचश्चित्त्वादन्तोदात्तत्वम्, गति-समासे (२, २, १८), क्रदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३९)। अबिभ्युषा—'ञि भी भये (जु०, प०), पूर्ववल्लिट् (३, ४, ६), "शेषात् कर्त्तरि० (१, ३, ७८)"—इति परस्मैपदम्, "क्वसुश्च (३, २, १०७)"—इति लिटः क्वसुरादेशः, तस्य कित्त्वाद् गुणाभावः (१, १, ५), अभ्यासस्य ह्रस्व-जश्त्वे (७, ४, ५९)—(८, ४, ५४) क्रादिनियमात् प्राप्तइट् (७, २, १३) "वस्वेकाजाद्घसाम् (७, २, ६७)"—इति नियमात् निवर्त्तते नञ्समासे तृतीयैकवचने भत्वाद "वसोः सम्प्रसारणम् (६, १, १३१)"—इति वकारस्य उकारादेशः, "सम्प्रसारणाच्च (६, १, १०८)"—इति पूर्वरूपत्वं बाधित्वा "एरनेकाच (६, ४, ८२)"—इति यणादेशः, अव्यय-

Digitized by Google

पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, ११८), पूर्वेण सह संहितायां मोकारस्य "एङः पदान्तादति (६, १, १०९)"—इति पररूपत्वे प्राप्ते "प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे (६, १, ११५)"—इति प्रकृतिभावः। मन्द—'मद स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु' (भ्वा०, आ०,), "इदितो नुम् धातोः (७, १, ८५)"—इति नुमागमः, कुरित्यनुवृत्तौ "खरु-शङ्कु-पीयु-नीलङ्गु-लिगु (उ० १, ३६)"—इत्यत्राविभक्तिक-निर्देशाद्बन्तेर्डिङ्कुरितिवद्बाल्वन्तरादपि कुरित्युक्तम्, प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १, ३), द्विवचने सो "प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (६, १, १०४), तृतीयैकवचने च "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्यादिना पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्, समानं वर्णो ययोरिति वा यस्येति बहुव्रीहिः, द्विवचने "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्याकारः, समान-पदस्य प्रातिपदिकान्तो-दात्तत्वम् (फि० १, १), बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-स्वरेण (६, २, १), तदेवावशिष्यते ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१　२र३ २उ　३ १ २ ३　१ २ ३ २

आदहस्वधामनुपुनर्गर्भत्वमेरिरे।

१ २　३ १२३　१ २

दधानानामयज्ञियम् ॥ २ * ॥

अहेत्यवधारणार्थः†]। "आत् अह" वर्षार्तोरनन्तरमेव "स्वधामनु" इतःपरं जनिष्यमाणमन्नमुदकं वा अनुलक्ष्य महतो

---

* ऋ० वे० १, १, ११, ४।

† "अहइति च ह इति च विनिग्रहार्थीयौ पूर्वेण सम्प्रयुज्यते। अयमहेदं करो-त्वयमिदं च करिष्यतीति"—इति निरु० १, ५

Digitized by Google

देवाः "पुनः गर्भत्वम् आ ईरिरे" मेघ-मध्ये जातस्य गर्भाकारं प्रेरितवन्तः* [प्रतिसंवत्सर मेवं कुर्वन्तीति दर्शयितुं पुनः-शब्दः प्रयुक्तः]। कीदृशा मरुतः? "यज्ञियं" यज्ञार्हं "नाम" "दधानाः" धारयन्तः। [समस्तु गणेषु मरुतामीदृक् चाताना-मीदृक् चेत्यादीनि यज्ञ-योग्यानि नामान्यन्यत्राम्नातानि। "अम्भः" —इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेष्वन्ननामसु "उदक्"(१५),"रसः" (१६), "स्वधा" (१७)—इति पठितम्, (निघ० २, ७) "अर्णः"—इत्यादिष्वेकशत-सङ्ख्याकेषूदक-नामसु च "तेजः" (८६), "स्वधा" (८७), "अघरम्" (८८)—इति पठितम् (निघ० १, १२)। "आत्"-"अह"-निपातावाद्युदात्तौ (फि० ४, १२)। स्वधा—स्वं लोकं दधाति पुष्णातीति स्वधा, "आतोऽनुपसर्गेकः (३, २, ३), कृदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३९)। अनु-पुनः-शब्दौ निपातावाद्युदात्तौ (फि०, ४, १२)। गर्भस्य भावो गर्भत्वं प्रत्ययस्वरः (३, १, ३)। एरिरे—अन्तर्भावितण्यर्थात् 'इण् गतौ (अदा०, प०)'—इत्य-स्मादनुदात्तेतः परस्य लिटो झस्य इरेच्, चित्त्वादन्तोदात्तः (६, १, १६२), "सह सुपा (२, १, ४)"—इत्यत्र "सुपा" योगविभा-गादाङा सह तिङः "समासस्य (८, १, २२३)"—इत्यन्तोदा-त्तत्वम्, "इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः (३, १, ३६)"—इत्याम् न भवति मन्त्रत्वात् † अह-शब्द-योगाभिघाताभावः "तु-पश्य-

* 'आदित्य-रश्मय उदपयन्तं, सविता सह अर्च्चाणि, तैः पुनरस्तमिते सवितरि गर्भत्वं याति'—इति वि०।

† "कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि (३,१,३५)"—इति सूत्रादिह 'अमन्त्रे'—इत्यनुवृत्तेरिति भावः।

Digitized by Google

प्रशस्तायैः पूजायात् (८,१,३८)"—इति निषेधात्। दधानाः— शानच्चित्वादन्तोदात्तत्वे प्राप्ते (६, १, १६२) "अभ्यस्तानामादिः (६, १, १८९)"—इत्याद्युदात्तत्वम्। यज्ञमर्हति यज्ञियम्, "यज्ञर्त्विग्भ्यां घ-खञौ (५, १, ७१)"—इति घ-प्रत्ययः "आयनेयीनीयियः फ-ढ-ख-छ-घां प्रत्ययादीनाम् (७,१,२)"— इतीयादेशः प्रत्ययस्वरेण इकार उदात्तः (३, १, ३)] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ १ २　　३ २ ३ १ २　　२ १ २
वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्रवह्निभिः।
१ २　　३ २ ३ १ २
अविन्दउस्रिया अनु ॥ ३* ॥ ७

अस्ति किञ्चिदुपाख्यानम्—'पणिभिर्देवलोकाद् गावोऽपहृताः अन्धकारे प्रक्षिप्ताः तास्चेन्द्रो मरुद्भिः सहाजयत'—इति। एतच्च बहृचानुक्रमणिकायां सूचितम्—"पणिभिरसुरैर्निगूढा गा अन्वेष्टुं सरमादेत शुनीन्द्रेण प्रेषिता ता ऋग्भिः पणयोऽभिप्रीयन्तः प्रोचुः"—इति। मन्त्रान्तरेऽपि दृष्टान्ततया सूचितम्— "निरुद्धा आपः पणिनेव गावः"—इति] तदेव उपाख्यान मभिप्रेत्योच्यते—हे "इन्द्र!" "वीडु चित्"† दृढमपि दुर्गमस्थानम् "आरुजत्नुभिः" ‡ अभिभञ्जद्भिः "वह्निभिः" वोढृभिः अन्यत्र

* ऋ० वे० १, १, ११, ५।

† 'चित्—इति पदपूरणः। वीडु अन्तरिक्षे स्थितः'—इति वि०।

‡ 'अन्तरिक्षे स्थिता अमर्त्त्याःपयन्ति आरुजन्तः'—इति वि०।

¶ 'इन्द्रमात्मकैरग्निभिः—इति वि०।

मेतु समर्थैः मरुद्भिः सहितस्त्वं "गुहा चित्" गुहायामपि स्थापिता "उस्रियाः" गाः "अन्वविन्दः" † अन्विष्य लब्धवानसि । ["ओजः" (१), "पाजः"(२)—इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेषु बल-नामसु "दक्षः"(१३) "वीळु"(१४) "च्यौत्नम्" (१५)—इति पठितम् । (८, ९) नव-सङ्ख्याकेषु गो-नामसु "अघ्न्या"(१), "उस्रा" (२), "उस्रिया" (३)—इति पठितम् निघ० (२, ११) । वीळु—प्रातिपदिक-स्वरः (फि० १, १) । चित्—आद्युदात्तः । आरुजत्नुभिः—'रुजो भङ्गे (तु० प०) इत्यस्मादौणादिकः क्नुच् प्रत्ययः, कित्त्वाद् (१, १, ५) गुणाभावः, चित्त्वादन्तोदात्तत्वम् (६, १, १६) समासे कृदुत्तर-पदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (६, २, १६०) । गुहा—सप्तम्यां डादेशः (७, १, ३९), "ग्रामादीनाञ्च (फि०, २, १५)"—इत्याद्युदात्तः । वह्निभिः—"वहि-श्रि-श्रु-यु-द्रु-ग्ला-हा-त्वरिभ्यो नित् (उ० ४, ५१)"—इति नि-प्रत्ययः, नित्त्वादाद्युदात्तः । अविन्दः—'शेमुचादीनाम् (७, १, ५९)"—इति नुमागमः, लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः (६, ४, ७१) । वसन्तीति उस्रियाः वसेः कर्त्तरि यक् प्रत्ययः, षत्वाभावश्च बाहुलकादूहनीयः (३, १, ८५), उक्तं हि 'यत्र पदार्थविशेष मुक्तं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तद् बाह्यम् (३, १, ८५ भा०)'—इति, इकारः प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १ ३) ॥ २ ॥ ७

---

० 'उस्रियाः—आदित्यरश्मयः—इति वि० ।

† 'अविन्दः विदॢ लाभे (तुदा० प०)—इत्यस्येदं रूपम्'—इति, 'अनु—आनुपूर्व्येण' इति च वि० ।

Digitized by Google

अथ चतुर्थे तृचे* प्रथमा।

१ २ ३ १ १ २ ३ १ २ १ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

ताङ्गवेययोरिदम्पप्रे विश्वम्पुराकृतम्।

२ १ ३२

इन्द्राग्नीनमर्द्धतः॥ १† ॥

"ता" तौ तादृशौ "इन्द्राग्नी" "हुवे" आह्वये। "ययोः" इन्द्राग्न्योः "पुरा" पूर्वस्मिन् काले "कृतं" "विश्वं" सर्वम् "इदं" पूर्वास्वृक्षु कीर्त्तितं वीर्यं "पप्रे" पप्यते ऋषिभिः स्तूयते;—ताविन्द्राग्नी हुवे इत्यन्वयः। तौ चेन्द्राग्नी न "मर्द्धतः" [मर्द्धतिः हिंसाकर्मा (निघ०२, १९, १४)] स्तोतॄन् अहिंस्रः। अतोऽस्मान् आहुतौ रक्षतामिति भावः॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २

उग्राविघनिनाम्टधइन्द्राग्नीहवामहे।

१ २ ३ १ २

तानोम्टड़ातईदृशे॥ २‡ ॥

"उग्रा" उग्रौ उद्गूर्ण-बलौ अतएव "मृधः" ध्नन्तौ "विघनिता" विघनितौ विशेषेण हतवन्तौ "इन्द्राग्नी" "हवामहे" आह्वयामहे। तौ चेन्द्राग्नी "ईदृशे" अस्मिन् सङ्ग्रामे "नः"

* 'ऐन्द्राग्नमाद्यम्'—इति वि०।

† ऋ० वे० ४, ८, १०, ४।

‡ ऋ० वे० ४, ८, १०, ५।

Digitized by Google

अस्मान् "मृड़ातः" सुखयताम् [यद्वा मृड़ातिः उपदयाकर्मा ; नोऽस्माकं मृड़ातः उपदयां कुरुताम्] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ १ १ १ २र ३ १ १ १र

हथोवृत्राण्यार्य्याहथोदासानिसत्पती।

३ २उ ३ २ ३ १ २

हथोविश्वाअपद्विषः ॥ ३* ॥ ८

हे इन्द्राग्नी! "आर्या" आर्यैः कर्मानुष्ठातृभिः कृतानि "वृत्राणि" उपद्रवजातानि "हथः" हिंस्थः। तथा "सत्पती" सतां पालयितारौ सन्तौ "दासानि" दासाः कर्महीनाः† शत्रवः, तैः कृतानि चोपद्रवजातानि हथः। अपि च "विश्वाः" सर्वाः "द्विषः" द्वेष्ट्रीः शत्रुभूताः प्रजाः "अप हथः" विनाशयथः अतोऽस्माकमप्येव मेव कुरुता मिति भावः॥

"हथः"-"हनः"—इति पाठो ॥ ३ ॥ ८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः ‡ ॥ ४ ॥

---

* ऋ० वे० ४, ८, १८, १।

† 'दासानि—यादादीनि रक्षः-पिशाचादीनि'—इति वि०।

‡ 'उक्तं प्रातःसवनम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीयखण्डे*

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

२ १ २र ३१२३१२१२३१२
अभिसोमासआयवःपवन्तेमद्यम्मदम् ।
२ १ २र ३१२ ३ १२ ३१२ ३१२
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणोमत्सरासोमदच्युतः ॥ १ † ॥

"आयवः" गमन-शीलाः "सोमासः" सोमाः "मद्यं" मदकरं मदम् आत्मीयं रसम् "अभिपवन्ते" अभितो निर्गमयन्ति । कुत्रेत्युच्यते "समुद्रस्य" अन्तरिक्षस्य "अधिविष्टपे" अधिकं समुच्छ्रिते पवित्रे यद्वा समुद्रस्य यस्मात् समुद्द्रवन्ति रसास्तस्य कलशस्य "अधि" उपरि "विष्टपे" स्थाने पवित्रे निर्गमयन्ति । कीदृशाः ? "मनीषिणः" मनस ईशितारो "मत्सासः" मदकराः "मदच्युतः" मदस्राविणः ॥

"विष्टपे"-"विष्टपि"—इति पाठौ, "मदच्युतः"-"स्वर्विदः" इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२ ३१ २र २ २ ३१ २ ३१२३२२ २
तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणाराजादेवऋतम्बृहत् ।
१२ ३२ ३१२ ३१ २३ १२ ३ २३१२
अर्षामित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणाप्रहिन्वानऋतम्बृहत् ॥२‡॥

* 'इदानीं माध्यन्दिनं सवनमच्यते । अथोच्यते—गायत्री-त्रैष्टुभादीनि सामानि, तासां नामत आर्षेयमुक्तम्'—इति वि० ।

† ऋ० आ० ६, १, ३, ८ (२भा० ९६पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १४, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १५, १ । "समुद्रियः"—इति च तत्र पाठः ।

Digitized by Google

"पवमानः" पूयमानः "देवः" द्योतमानः "बृहत्" अत्यन्तम् * "ऋतम्" सत्यभूतः † "राजा" सोमः "समुद्रम्" अन्तरिक्षं कलशं वा "ऊर्मिणा" धारया ‡ "तरत्" तरति "हिन्वानः" प्रेर्यमाणः। "ऋतम्बृहत्" अत्यन्तं सत्यभूतः स सोमः "मित्रस्य वरुणस्य" मित्रावरुणयोः "धर्मणा" धारणार्थं "प्र अर्षा" प्रार्षति प्रकर्षेण गच्छति ¶॥

"अर्षा"-"अर्षन्"—इति पाठौ॥२॥

अथ अध्यास्याख्या तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २र ३ १ १ २ ३ २र

नृभिर्येमाणोहर्यतोविचक्षणोराजादेवःसमुद्रयः॥३§॥९

"नृभिः" कर्म-नेतृभिः ऋत्विग्भिः "येमानः" नियम्यमानः "हर्यतः" स्पृहणीयो "विचक्षणः" विद्रष्टा "देवः" दीप्यमानः "समुद्रयः" अन्तरिक्षे भवः॥ "राजा" सोमः इन्द्रार्थं पवते इति शेषः॥

"येमाणः"-"येमानः" इति पाठौ॥३॥९

* 'बृहत्—महत् अथवा बृहत्साम'—इति वि०।

† 'ऋतं—सत्यम् अन्नम् प्रजापतिः यज्ञः वा'—इति वि०।

‡ 'ऊर्मिणा—उदकसङ्घातेन'—इति वि०।

¶ 'अर्षा—द्रष्टा'—इति वि०।

§ ऋ० आ० ६, १, ४, २ (२आ० ११२पृ०)=ऋ० वे० ७, ३, १०, ४।

‖ "समुद्रः"—इत्यन्तरिक्ष-नामसु पञ्चदशं नैघण्टुकम् (१, ३)। 'समुद्रयः—समुद्रात्मकः'—इति वि०।

Digitized by Google

॥ पौरुमद्गम् ॥ अभिसोमासआयवः। औहोवा।
एहिया। हाउ। पवन्तेमा२दियम्मदम्। समुद्रा१
स्या२। धायिविष्टपा३यि। मानीषा२३४यिणः। मत्सा।
रासौवा३ओ२३४वा। हा३हायि। मदा५च्युताः॥(१)
मत्सरासोमदच्युतः। औहोवा। एहिया। हाउ। म
त्सरासो२मदच्युतः। तरात्समा१मू२। द्रामवमा३। ना
ऊर्म्मा२३४यिणा। राजा। दायिवौवा३ओ२३४वा। हा
३हायि। ऋता५म्बृहात्॥(२) राजादेवऋतम्बृहत्। औ
होवा। एहिया। हाउ। राजादेवा२ऋतम्बृहत्। अ
र्षामा१यिन्ना२। स्यावरुणा३। स्याधर्म्मा२३४णा। प्र
हायि। न्वानौवा३ओ२३४वा। हा३हायि। ऋताम्बृ
हात्। हो५इ। डा(३)॥ १४ *॥ [१]

* ज० गा० १प्र० १ख० १४गा०।

२र र र र र
॥ उभयतःस्तोभं गौतमम्॥ हावभिसोमासआयवो

१ २र १ ७ ३र १
हाउ। पावन्तेम। दियाम्मदार३४म्। हाहोयि। स

१ र २१र र २ ३र २ १
मुद्रस्याधिविष्टपे। मानीषिणा३४:। हाहोयि। मत्स

२ ३र २ २ १ ५ ४ ५
रासा३४:। हाहो३। मदो२३४वा। च्य५तोई हायि॥(१)

२र र र र १ २र १ ७
हाउमत्सरासोमदच्युतोहाउ। मात्सरासः। मदाच्यु

३र २ १ २ १ २र १ र
ता'२ ३ ४:। हाहोयि। तरत्समुद्रम्पवमा। नाऊर्म्मि

२ ३र २ १ र २ ३र २
णा३४। हाहोयि। राजादायिवा३४:। हाहो३यि।

२ १ ५ ४ ५ २र र र र
ऋतो२३४वा। बृ५हो ६ हायि॥(२) हाउराजादेवऋत

१ र २र १ ० ३र र
म्बृहद्धाउ। राजादेवः। ऋताम्बृहा२३४त्। हाहोयि।

१ र २१ २१ २ १ २ ३र२ १
अर्षामित्रस्यवरुण। स्याधर्मणा ३ ४। हाहोयि। प्रा

२ ३र २ २ १ ५ ४
हिन्वाना३४:। हाहो३यि। ऋतो२३४वा। बृ५हो ६

५
हायि(३)॥ १५ *॥ [२]

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १५सा०।

Digitized by Google

२ १ ४र ५र
॥ द्विहिङ्कारं वामदेव्यम् ॥ अभिसोर३मासआयवाः।
१ र र १२र २ १
पाऽवन्तेमघम्मदऽसमुद्रस्याधिविष्टपाऽयिमनीचोर३। ऊ
१ २ १ र १२र २ १
म्मा२। षार३यिणाः। मत्सरासोमदौचोर३। ऊम्मा२।
२ १ २ ४ ५ २ १ ४र ५
ऽच्युता। औ३होवा॥(१) मत्सरा २ ३ सोमदच्युताः।
१ र र २ ३र २ १
मात्सरासोमदच्युतन्तरत्समुद्रमवमाऽनऔचोर३। ऊम्मा
२ १र र र १ २र २ १
२। मार३यिणा। राजादेवाऽक्तौचोर३। ऊम्मा२।
१ ४ ५ २र १र ४ ५
वृद्धात्। औ२३होवा॥(२) राजादा २ ३ यिवक्ततम्बृ
१ र र र १ २र २
द्धात्। राऽजादेवक्ततम्बृद्धादर्षामित्रस्यवरुणाऽस्यधौहोर३।
१ १ २ १ र १ २र २ १
ऊम्मा२। मार३णा। प्रद्धिन्वानाऽक्ततौचोर३। ऊम्मा
१ ४ ५ ४
२। वृद्धात्। औ२३होवा। होऽ५ई। डा(३)॥ ७ * ॥ [३]
१ २ १ र २
॥ गायत्रपार्श्वम् ॥ आभो। सोमासआ३१उवार३।
१ २र १ २ १ २ १ २ १ र २ र १
यार३४वाः। पवन्तेमदियम्मदऽसमुद्राधिविष्टपेमनीषि

---

* ऊ० गा० ४प्र० २ख० ७सा०।

Digitized by Google

२ ११११ २ १ २ २२ १ ४ १
णा२३४५ः। मत्सारा१सा२ः। मदा३। ऊ२३वा३। च्यू
११११ १ २ १२२
ता२३४५ः॥(१) मात्सा। रासोमदा३१उवा २ ३। च्यू
५ १२२ २ १२१ २ १ १२ २ १
२ ३४ताः। मत्सरासोमदच्युतस्तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मि
२११११ १२१ २ २२ १ ४
णा२३४५। राजादा१यिवा२ः। ऋता३म्। ऊ२३वा
१ ११११ १२१ २ १
३। बृहा२३४५त्॥(२) राजा। दायिवऋता३१उवा२
५ १२२१२१ २१२ १ २ २११११
३। बृ२३ ४हात्। राजादेवऋतम्बृहद्यामित्रस्यवरुण
१ २११११ २१ २ २२ १
स्यधर्म्मणा२३४५। प्रघायिन्वा१ना२ः। ऋता३म्। ऊ
४ १ ११११
२३वा३। बृहा२३४५त(३)॥८*॥[४]
५ २ ४२५४२ ५ १ २२
॥पौरुहन्मनम्॥ अभिसो३मासआयवाः। पावन्ते
१ १ १ १२ १
म। दियाम्मा१दा२म्। मादा२म्। सामुद्रस्या। धा
२ १ २ १ २३ ५
यि। विष्टपा३यि। विष्टपा३यि। मानीषा२३४यिणाः।
१२२ १ २ २ ५ ४
मात्सरासो। मादच्यू२३४ताः। मदा ५ च्युताः॥(१)

* ऋ० मा० ४प्र० १ख० ८सा०।

५　२र　१　२　१　१　२
मत्सरासः। मदाच्यू१ता२ः। च्यूता२ः। तारत्समु।
१　२　१　२　१　२　१　५　१
द्राम्। पवमा३। पवमा३। नाऊर्मा२३४यिणा। रा
२र२ १　२ ३　५　४　५र र
जादेवाः। भार्त्तम्बृ२३४हात्। ऋतापुम्बृहात् ॥(२) राजा
२　४५४५　१　र२र　१　२　१
दा३यिवऋतम्बृहात्। राजादेवः। ऋतांबृ१हा२त्। भा
र२　१　२　१　२　१२३
र्षामित्र। स्या। वरुणा३। वरुणा३। स्याधर्मा२३
५　१　२र१　२३　५　४
४णा। प्राचिन्वानाः। भार्त्तबृ२३४हात्। ऋतापुम्बृहा
४
त्। हो५ई। डा(३) ॥ ८ * ॥ [५]

५　२　४र५४र　५　१　२र
॥ द्वैगतम् ॥ अभिसो३मासआयवाः। पावन्ते म।
१　२　३२　२　२　२　१र
दियाम्मा१दा२म्। समू३। औ३हो३वा। द्रस्याधिवि
र　२　१　२　५रर
षयेमानो१विष्णा२ः। मत्सा२३। रा२सा२३४औहोवा।
२　१　३११११　५　२　४र५४　५
ए३। मदा२च्युता२३४५ः ॥(१) मत्सरा३सोमदच्युताः।
१　२र　१२　३२　२　२
मात्सरासः। मदाच्यू१ता२ः। तरा३त्। हौ३हो३वा।

* ऊ० गा० ४प्र० २ख० ८गा०।

१ र २ १र १ ३
समुद्रम्पवमानाऊ१र्मिणा२ । राजा२३ । दा२यिवा२३

५रर २ १ ३१११ ५रर
४औहोवा । ए३ । ऋता२म्बृहा२३४५त् ॥(२) राजा

२ ४५४ ५ १ २१र १ २
दा३यिवऋतंबृहात् । राजादेवः । ऋतांबृ १ हा २ त् ।

२२ ऽ २ २ १
अर्षा३ । हो३ । हो ३ वा । मित्रस्यवरुणस्याधर्माणा २ ।

१ १ २ ५रर २ १ ३
प्रहा२३यि । न्वा२ना२३४औहोवा । ए३ । ऋता२म्बृहा

११११
२३४५त्(३) ॥ १० * ॥ [६]

१ रर र १
॥ हारायणम् ॥ अभिसोमौहो२यिसआयवाः । पा

र २ २ १ २
वन्तेमद्यम्मदम् । समूद्रा३स्या । धिविष्टपायि । मना

२ १ १ रर २ १ ५
३हायि । षायिणा२ः । मत्सरासोमदोवा३औ२३४वा ।

४ ५ रर १
च्यू५तो६हायि ॥(१) मत्सरासोहो२यिमदच्युताः । मा

रर २ २ २
त्सरासोमदच्युतः । तरात्सा३मू । द्रपवमा । नऊ३

२ १रर र २ १ ५ ४
हा । मायिणा२ । राजादेवऋतोवा३औ२३४वा । बृ

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० १०सा० ।

५ १ २ २ २ १ २ २
५होईहायि॥(२) राजादेवौहो२ऋतंबृहात्। राजादे
२ २ १ २
वऋतंबृहत्। अर्षामा३ यिचा। सयवरुणा। स्यधा३
२ १ १ २ २ १ ५ ४
हा। माणा२। प्रहिन्वानऋतोवा३ओ२३४वा। बृ५हो
५
ईहायि(३)॥ ११ *॥ [७]

२ २ २
॥ अच्छिद्रम्॥ अभिसोमा। सआ३१उवा२३। या
५ १ २२१ ११३११११ २ २
२३४वाः। पवन्तेमदियम्मदा२३४५म्। पवन्तेमा। दि
५ २ १ २ २ १ २ २ २
या३१उवा२३। मा२३४दाम्। समुद्रस्याधिविष्टपेमनी
१३१११ २ १ २ २
षिणा२३४५ः। समुद्रस्या। धिवि। ष्टा। पेमना३१उ
५ २ १२२१ १ ११११
वा२३यि। षी२३४णाः। मत्सरासोमदच्युता२३४५ः।
२ २ ५ २
मत्सरासाः। मदा३१उवा२३। च्यू२३४ताः॥(१) मत्स
२ ५ २ १२२
रासाः। मदा३१उवा२३। च्यू२३४ताः। मत्सरासो
२ १३११११ २ २
मदच्युता२३४५ः। मत्सरासाः। मदा३१उवा२३। च्यू

* ऊ० गा० ४प्र० २ख० ११गा०।

Digitized by Google

५ १ २ १ १र र १ ३१११११ २
२३४ताः। तरत्समुद्रम्पवमानऊर्मिणा२३४५। तरत्स
१ २ १ ५
मू। द्रम्पव। मा। नऊ३आउवा२३। मो२३४णा।
१र र १र१ १ १ २ २र र र
राजादेवऋतंबृहा१त्। राजादेवाः। ऋता३१उवा२३।
५ १र र र१ १ १ २ १र र र
बृ२३४हात्। राजादेवऋतंबृहा१त्। राजादेवाः। ऋ
५
ता३१उवा२३। बृ२३४हात्। राजादेवऋतंबृहा१त्।
१र १ १ २
राजादेवाः। ऋता३१उवा२३। बृहात्। अर्षामित्रस्य
१ २ १ २१११११ र र १ २
वरुणस्यधर्मणा२३४५। अर्षामित्रा। स्यवरु। णा। स्य
५ १ १र १ १ १ २
धा३१उवा२३। मा २ ३४णा। प्रहिन्वानऋतंबृहा१त्।
२ र ५
प्रहिन्वानाः। ऋता३१उवा२३। बृ२३४हात्(३) ॥१२*॥[८]

२ र र १ ५ १
॥ रौरवम्॥ अभिसोमासआ३यया२३४वाः। पाव
र र र ३२ १ २
न्तेमद्यम्मदᳪसमुद्रस्याधिविष्टपेमनार्यिषिणाः। ओहा
२ १ रर १ १ २ २
३उवा। मत्सरासोमदा२३हायि। ओहा३उवा। च्यु

* ऋ० मा० ७प्र० २ष० ११घा०।

१ २ ४५ २ २र १ ५
ता। औ ३ होवा ॥(१) मत्सरासोमा३दच्यु२३४ताः।
१ २र र ३ १ १
माऽत्सरासोमदच्युतस्तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणा। ओ
२ १ १२र र २ १ १ २
हा३उवा। राजादेवऋता२३ऽहायि। ओहा ३ उवा।
१ ४५ १र र र १ ५
बृहात्। औ २ ३ होवा ॥(२) राजादेवआ३र्त्तं२३४हा
१ २र र २ २
त्। राजादेवऋतंबृहदर्षामित्रस्यवरुणस्यधा र्म्मणा।
१ १ २ १ र २ १
ओहा३उवा। प्रहिन्वानऋता२३ऽहायि। ओहा३उ
२ १ ४ ५ ४
वा। बृहात्। औ२३होवा। हो५ई। डा(३) ॥१३*॥[९]

१ २ २र र २र१२
॥ मानवोत्तरम्॥ होवायि। अभिसोमासआयवः।
१ र ७१र १
होवायि। पावन्ते मद्यम्मदम्। सामुद्रस्या। धायि
७ १ ७ २ ५ २ १
विष्टया३१यि। मनार्यिषा२३४यिणाः। मत्सारा २ ३
२ २ ३ ५र र ३ ५ १
साः। मार्दा२३४औहोवा। च्यू२३४ताः ॥(१) होवा
२ १र र २ १ २ १ र र
यि। मत्सरासोमदच्युतः। होवायि। मात्सरासोम

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० १३।७।

१ ० २ १ ७ २ ७ २
दच्युतः । आरत्समु । द्राम्यवमा३१ । नजर्म्मा२३४यि

५ १२ १ २ १ २ ५२ २
णा । राजादा२३यिवा३ः । आर्त्ता २ ३ ४ औहोवा ।

२ ५ १ २ २ २२ १ २ १ १ १ १
व २३४ हात् ॥(२) होवायि । राजादेवक्कतम्बृहत् । हो

२ २ ७२ २ १ ० २
वायि । राजादेवकृतंबृहत् । आर्षामित्र । स्यावरुणा

७ २ ५ २ १ २ १ २
३१ । स्यधार्म्मा२३४णा । प्रहायिन्वा२३ना३ः । आर्त्ता

५२ २ २ ५
२३४औहोवा । बृ२३४हात्(३) ॥ १४ * ॥ [१०]

१ २ १ २ २ २ १ २
॥ आनूपवाध्यस्वम् ॥ अभीअभी । सोमासा३आया

१ २२ १ ७ १
१वा२ः । पावन्तेम । दियान्मा१दा२म् । सामू२

१ १ २ २ १ २ १ २ १ २ २
द्रास्या२ । धिविष्टपेमनीषा२३यिणाः । मत्सारा३सा

१ ४ २ ५ १ २ १ २
३ः । मा२३दा३ । च्यू३४५तो६हायि ॥(१) मत्सामत्सा ।

२ २ १ २ १ १ १ २ २
रासोमा३दाच्यू१ता२ः । तारा२त्सामू२ । द्रपवमान

१२ २ १२ २ २ १ ४
ऊर्म्मा२३यिणा । राजादा३यिवा३ः । आ २३ ता३म् ।

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० १४गा० ।

२ ५ १र १ १र २ र १ १
ब३४५ चोई डायि॥(२) राजाराजा। देवक्ष ३तांब१हा

१ र १र १ १ १ १
२त्। राजाद्देवः। क्षतांब१ हा२त्। आर्षा २ मायि

१ २१ १ १ २ १
त्रा २। स्यवरुणस्यधर्मा२३णा। प्रहायिन्वा ३ ना ३ः।

१ ४ २ ५
आ२३र्त्ताम्। ब३४५चोई डायि(३)॥ १५ ॥[११]

४ ३र ४र ५ र २ १ १
॥ वाम्रम्॥ अभिसोमासआ। हाउहा३यि। या२

र ५ १ १र १ ७
३४। वायवोवा। पवाहो२। तेमाहो२। दायम्भा

१ २ र १ २ ३१ १
दा२म्। सामुद्रस्या। धिवायिष्टापेमनाउवा३। ऊ

५ १ १ १ १
३ ४ पा। षिणा२ः। मात्सा२रासा २ः। मद। च्यु

३ ५र र ४ ३र ४र ५ र २ १
२ता२३४औहोवा॥(१) मत्सरासोमदा। हाउहाउयि।

१ ५ १ १र
च्यू२३४। तच्युतोवा। मत्साहो२यि। रासाहो२।

१ ७ १ १ १ २ ३१
मादच्यूता २ः। तारत्समु। द्रम्यावामा। नआउवा३।

२ ५ १ १ १ १
ऊ३४पा। मिणा२। राजा२दायिवा२ः। ऋतम्।

---

* ऊ० गा० ७अ० २ख० १४गा०।

२ ५र र २र ४र र २ ४ ५ १ २
बृ२हा२३४औहोवा ॥(२) राजादेवमृतम्। हा३हा३यि।

१ ५ १र १र १
बू२३४। हहूहोवा। राजाहो२यि। देवाहो२। आ

० १ र १ १ १ ५
तंव हा२त्। आर्षामित्र। स्वधाउवा३। ऊ३ ४ पा।

१ १ १ १ २
मणा२। प्राहा२यिन्वाना२ः। ऋतम। बृ२हा२३४

५र र २ ५
औहोवा। ऊ३२३४पा(३) ॥ १६ ॥ [१२]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तम् ॥ अभा३यिसो३माऽऽसआयवोवा। पा

१र १ २ १ २
वन्ते म। दियाम्मा१दा३म्। सामुद्रस्या३१२३४। धि

४ ५र २ १ २ १ १ २ १
विष्टपे। मनायिषा१यिणा२ः। म२पारा१सा२ः। मदा

१ २ १ १ १ १
३। च्यू२३४५। ता१२३४५ः(१) ॥ १६* ॥ [१३]

५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ १र १
॥ कालेयम्† ॥ मत्सरा३सोमदच्यूताः। मत्सारासो।

२ ३ २ १ १ २ २ १ २ ४र ५र
मदच्यूता२३ः। तरत्समू३। द्रा२३४म्। पवमानऊ।

---

* ऊ० गा० ७प्र० २खा० १६सा०। † "महाकालेयम्"—इति वि०।

२ २ १र ३ र १ ४
मा३यिणा। राजादेवौ। वा३४३वा। ऋतापुम्ब् हात्।
५
होपुई। डा(२)॥ १७ *॥ [१४]

५ २ ४र ५ ४र ५ १ १र
॥ गौङ्गवम् ॥ अभिसो३मासआयवाः। पावा२। ते
३ २ ४ ५ १ १ र
मदिया३म्। मादाम्। समुद्रस्याधिविष्टा२३पा २ यि।
३ २ ४ ५ २ १ र र ३ २ ४
मना३यिषायिणाः। समुद्रस्याधिविष्टये। मना३यिषा
५ १ १र १ २ २ १ ५
यिणाः। मात्सरा। सा। औ३हो। मदो२३४वा।
४ ५ ५ २ ४र ५ ४ ५ १
च्यू५तो६हायि॥(१) मत्सरा३सोमदच्युताः। मात्सा२।
१र र ३ २ ४ ५ १ २ १ १ ३ २
रासोमदा३। च्यूताः। तरत्समुद्रम्पवा२३मा३। नज
४ ५ १ २ १ र १ २ ४ ५ १
३र्मायिणा। तरत्समुद्रम्पवमा। नज३र्मायिणा। रा
र १र १ २ २ १ ५ ४ ५
जादे। वा। औ३हो। ऋतोर२३४वा। ब५हो६हा
५र र २ ४ ५र ५ १ १र २
यि॥(२) राजादा३यिवऋतंब् हात्। राजा२। देवऋ
२ ४ ५ १र २ १ २ १ १ ३ २
ता३म्। ब् हात्। धर्षामित्रस्यवरू२३णा२। स्वधा३

* ऊ० गा० ७प्र० २ श्रा० १७गा० ।

४ ५ १ २ १ १ २ १ ३ २ ४ ५ १ २र
र्माणा। अर्षामित्रस्यवरुणा। स्यधाःर्माणा। प्राहिन्वा।
१ २ २ १ ५ ४ ५
ना। औ३हो। ऋतो२३४वा। ब५हो६हायि(३)॥१८*॥[१५]

२ र १ २
॥ भारद्वाजम्॥ अभिसोमा। सआया१ वा२ः।
१ २र १ २ १ २र
पावन्त मद्यम्मदम्। समूद्रा१स्या२। धायिविष्टपे। म
१ २ १ २ १ २ ५र
नायिषा१यिणा२ः। मत्सारा१सा२३ः। मा२दा२३४औ
र ३ ५
होवा। च्यू२३४ताः(१) ॥ १५ † ॥ [१६]

२ र १ २ ३ २ ४ ५
॥ मैधातिथम्॥ अभिसोमोहायि। सआ३यावाः।
१ २ २ १ २ १ २
पवन्ता२हो१यि। माऔ३हो। दायाउवा। मादाउ
१ र २ २ १ २ १
वा। समुद्रस्याधिविष्टपाऔ३हो। मानाउवा। षा
२ १ र २ २ १ २र १ ३र
यिणाउवा। मत्सरासाऔ३हो। मदा। औहो। वा
५ ४ ५ २ र १ २ ३
हो२३४वा। च्यू५तो६हायि॥(१) मत्सरासोहायि। म
२ ४ ५ १ २ २ १ २
दा३च्यूताः। मत्सरा२हो१यि। साऔ३हो। मादा

* ऊ० गा० ८प्र० २खा० १८खा०। † ऊ० गा० ९प्र० २खा० १५खा०।

Digitized by Google

१ २ १ २ २ १
उवा। च्यूताउवा। तरत्समुद्रम्पवमाऔ३हो। ना
२ १ १ १र र र २ २ १
मा उवा। मायिणाउवा। राजादेवाऔ३हो। ऋता।
२र १ ३र ५ ४ ५ २र र र १
औहो। वाहो२३४वा। बृ५हो६हायि॥(२) राजादेवो
२ ३ १ ४ ५ १र र २
हायि। ऋता३म्बृहात्। राजादा२हो१यि। वाऔ३
२ १ २ १ २ १ र
हा। ऋत्ताउवा। बृहाउवा। अर्षामित्रस्यवरुणा
२ २ १ २ १ २ १ र २
औ३हो। स्याधाउवा। माणाउवा। प्रहिन्वानाऔ३
२ १ २र १ ३र ५ ४ ५
हो। ऋता। औहो। वाहो२३४वा। बृ५हो६हा
यि(३) ॥ ६* ॥ [१७]

४ ५ र ४र ५ र ४ ५ ३र १
॥ उत्सेधम्† ॥ अभिसोमासआयवः। पव। तेमा
३र ४र ५ २ १ २
३४औहोवा। दियम्मदा२म्। हा३१उवा२३। ऊ३४
५ १ २ ४ ५र ४ ५ १ ११
पा। समू३द्रस्या। औहोवाहायि। धायिविष्टपायि।
२ र १ १र २ ५ १ १ ४र
मनीषायिणाः। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। मत्सा३रा

* ऊ० गा० ९प्र० ३ख० ६मा०। † "उत्सेधः"—इति ख० पु०।

Digitized by Google

५र ४ २ १ ४ ४ ३र

सः। औहोवायि। मदा३च्यू५ता६५६ः॥(१) मत्सरा

४र५ ४ ५ ३र १ ३र ४र ५ २ १

सोमदच्युतः। मत्स। रासा३४औहोवा। मदच्युताऽ

२ ५ ३ र ४ ५र ४

२ः। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। तरा३त्समु। औहो

५ १ ११ २ र १ ३र

वाहायि। द्रापवमा। नऊर्म्मायिणा। हा३१उवा२३।

२ ५ ३र २ ४र ५प ४ ५ २ २ ४

ऊ३४पा। राजा३देवः। औहोवाहायि। ऋता३म्बृ५

३र ४र र ३ ४ ३ ४ ५ र र ३र २

हाई५६त्॥(२) राजादेवऋतंबृहत्। राजा। देवा

३र ४र ५ २ १ २

३४औहोवा। ऋतंबृहाऽरत्। हा३१उवा२३। ऊ३४

५ २ २ ४ ५र ४ ५ १ ११ २

पा। अर्षा३मित्रा। औहोवाहायि। स्यावरुणा। स्य

१ ३र २ ५ ३ २ ४र

धर्म्मणा। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। प्रहा३यिन्वानः।

५र ४ ५ २ १ ४ ३ १ १

औहोवाहायि। ऋता ३ म्बृ ५ हा ई ५ ६ त्। औ २ ३

१ १

४ ५(३)॥ ३*॥ [१८]

२ र र र र र र

॥ सदोविशीयम्॥ अभिसोमासआयवओहाओहा३

---

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ३गा०।

Digitized by Google

२ र र र २ १ २र१ २ १ ऽ २
ए। औहोऔहो३वा। पवन्तेमदियम्मदम्। ओ३हा।
१ र २१र२र १ २ ऽ २ १ २
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणः। ओ३हा। मत्सारा१सा
ऽ २ ऽ २ २ ऽ २ ऽ २
२ः। ओ३हा। ओ३हा३ए। औ३होयि। औ३हो
२ १ २ ५र र २ र र
३वा। मद। च्यू२ता२३४औहोवा॥(१) मत्सरासो
र र र २ र र र २ १र
मदच्युतओहाओहा३ए। औहोऔहो३वा। मत्सरा
र२ ११ ऽ २ १ २ १ २र १र १र
सोमदच्युतः। ओ३हा। तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणा।
ऽ २ १र २ ऽ २ ऽ २ २
ओ३हा। राजादा१यिवा२ः। ओ३हा। ओ३हा३ए।
ऽ २ ऽ २ २ १ २ ऽ
औ३होयि। औ३हो३वा। ऋतम्। बृ२हा२३४औ
र २र १ १र र र र २ र र
होवा॥(२) राजादेवऋतंबृहदोहाओहा ३ ए। औहो
र २ १र र २र१ २ १ २ १ ऽ २ १ र
औहो३वा। राजादेवऋतंबृहत्। ओ३हा। अर्षा।
२ १ २ १ २ १ २र ऽ २ १ २
मित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणा। ओ३हा। प्रहायिन्वा१ना२ः।
ऽ १ ऽ २ २ ऽ २ ऽ २ २
ओ३हा। ओ३हा३ए। औ३होयि। औ३हो ३ वा।

Digitized by Google

१ २ ५र र २ र १ २ १ १
ऋतम् । बृ २ हा २ ३ ४ औहोवा । सदोविश्वा २ ३
१ १
४ पुः(३) ॥ १६ * ॥ [१९]

५ २ ४र ५ ४र ५ २ १
॥ जनित्राद्यम् ॥ अभिसोऽ३मासआयवाः । ऊवेहो

१ र २ १ र
२यि । पवन्तेमदियाम्म१दा२म् । समुद्रस्याधिविष्टपा

२ १ २ ५ १ २ १ र २
२यि । मनार्२यिषा२३४यिणाः । मत्सा३होयि । रासा

१ २ १ २ ५र र ५ २ ४र
३हो । मद । च्यू२ता२३४औहोवा ॥(१) मत्सरा३सो

५ ४ ५ २ १ १ र र २
मदच्युताः । ऊवेहो२यि । मत्सरासोमदाच्यू१ता२ः ।

१ २ २ २ ५ १र २ १
तरत्समुद्रम्पवमा२ । नऊर्म्मा२३४यिणा । राजा३होयि ।

र २ १ २ १ २ ५र र ५र र
देवा३हो । ऋतम् । बृ२हा२३४औहोवा ॥(२) राजा

२ ४ ५ ४ ५ २ १ १र र र १
दा३यिवऋतंबृहात् । ऊवेहो२यि । राजादेवऋतंबृ

१ र २ २ ३ ५ १
१हा२त् । अर्षामित्रस्यवरुणा२ । स्यधार्म्मा२३४णा । प्र

* ऊ० गा० १९प्र० २ख० १६सा० ।

२ १ र २ १ २ १ २ ५र
हाइयिच्चौयि । न्वानाइहो । ऋतम् । ब२हा२३४औ
र २ १ १११ १
होवा । जनित्वा२३४५म्(३) ॥ ८ * ॥ [२०]

१ रर र रर र र
॥ दैर्घश्रवसम् ॥ अभिसोमासआयवओहा । ओहा३
१ १ २र १ २ ऽ २ ऽ २ २
ए । पवन्तेमद्यिम्मदम् । ओ३हा । ओ३हा३ए३४ ।
३ २ ३ २ १ २ र१र २ ऽ २
समू३४द्रस्या । धायिविष्ट । पेमानीषिणाः । ओ३हा ।
ऽ २ २ २ २ ३र २ २ १ ५
ओ३हा३ए३४ । मत्सा३४रासा३ः । मदो २ ३ ४ वा ।
४ ५ १ रर ररर २
च्यू५तोई्हायि ॥(१) मत्सरासोमदच्युतओहाओहा३ए ।
१र र २ १ २ ऽ २ ऽ २ २ ३ २
मत्सरासोमदच्यूतः । ओ३हा । ओ३हा३ए३४ । तरा
२ २ १ २ र१र २ ऽ २ ऽ
३४त्समू । द्राम्पव । मानाऊर्म्मिणा । ओ३हा । ओ
२ २ ३र २ ३र २ २ १ ५ ४
३हा३ए३४ । राजाजा३४दे वा३ः । ऋतो२३४वा । ब
५ २र र र र र र २ १र
५ह्वोई्हायि ॥(२) राजादेवऋतंबृहदोहाओहा३ए । रा
र २र १ २ १ २ १ ऽ २ ऽ २ २ ३ २
जादेवऋतंबृहात् । ओ३हा । ओ३हा३ए३४ । अर्षा

* ऊ० गा० १४प्र० १ख० ८गा० ।

१ २ १ ३ १ २ ३ २ ३
३४मित्रा। स्यावरु। णस्याधर्म्मणा। श्रो३हा। श्रो
२ ३ २ १ ३र २ १ १ ५ ४
३हा३ए३४। प्रहा३४यिन्वानाऽ३:। ऋतो२३४वा। ब
५
५हो६हायि(३)॥ ५ *॥ [२१]

१ २ १ र २
॥ सन्तनि॥ अभीहाउ। सोमासऋआ३१उवा २ ३।
५ १ १र१ २ १र १ १ र २ र
या२३४वा:। पवन्ते मदियम्मदꣳसमुद्रस्याधिविष्टपेमनी
१ २ १ १ १ १ १ २ १ र २
षिणा२३४५:। मत्सराहाउ। रासोमदा३१उवा २ ३।
५ २ १र र २ १ र २ १र र २ १ २
च्यु२३४ता:॥(१) मत्सरासोमदच्युतोमत्सरासोमदच्युत
१ २ १ २र र १ २ १ १ १ १ १र २ १
स्तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणा२३४५। राजाहाउ। दा
२ ५ १र र २र १ २ १
यिवऋता३१उवा२३। ब२३४हात्॥(२) राजादेवऋतं
२ १ र र २र१ २ १ २ १ र २ १ २ १ २ १ २ १ १ १ १
बृहद्राजादेवऋतंबृहदर्षामित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणा२३४५।
१ २ १ २ १ ५
प्रहायिहाउ। न्वानऋता३१उवा२३। ब२३४हात्(३)॥

॥ ७ †॥ [२२]

---

* ऊ० गा० १४प्र० २ख० ७गा०। † ऊ० गा० १४प्र० २ख० ७गा०।

२ १ ३ ३ १ ३ १ २ १ ३ १ ३ १ ३
॥ आष्टादंष्ट्रोत्तरम्॥ अभिसोमासआयवऐयाटौ।
२ २ १ २३ १ २ १ २३
होइवा। पवन्तेमदियम्। मादा२३म्। ऐया२३त्।
१ ३ २ १ ३ २ १ ३ ३ २ १ १ ३
औ२३होवा। समुद्रस्याधिविष्टपेमनी। षायिणा२३ः। ऐया
१ ३ २ १३ ३ २ १
२३त्। औ२३होवा। मत्सरासोमद। च्यूता२३ः।
१३ १ ३ २ १
ऐया२३त्। औ२३होवा३४३। ओ२३४५ई। डा३)॥

॥ २ * ॥ [२२]

२ ३ ३ ३
॥ आभीशवोत्तरम्॥ अभिसोमासआयवए। ए। पव
३ १ ७ २ २ ५ २ २ १ ३
न्तेमा३दायम्मादम्। सा२३५मू। हा३हा। द्रस्याधि
३ २ २ २ ५ २ २ १ ३
विष्टपेमानी१षिणाः। मा२३४त्सा। हा३हायि। रासो
२१ ५ ४ ५ २ ३३
मदो२३४वा। च्यू५तो६हायि॥(१) मत्सरासोमदच्युत
३ ५३ १ ७ २ २ ५ २
ए। ए। मत्सरासो३मादच्यूतः। ता२३४रात्। हा३
२ १ ३ २ २ २ ५ २
हायि। समुद्रस्यवमानाऊ१र्म्मिणा। रा२३४जा। हा

२ १ १ १ ५ ४ ५
३ हायि । दायिवक्क्रतो२३४वा । बृ५हो ६ हायि ॥(२)

१र र र र र र १ १
राजादेवक्कतंबृहदे । ए । राजादे वा३ष्मास्तंबृहात् ।

२ ५ २ १ १ ० २
आ२३४र्षा । हा ३ हायि । मित्रस्यवरुणस्याधर्म्मणा ।

१ ५ १ २ १ १ १ ५ ४
प्रा२३४हायि । हा३हायि । न्वानक्कतो२३४वा । बृ५

५
होई हायि(३) ॥ ३ * ॥ [२३]

५ १ ४र ५र४५ १
॥ आष्कारनिधनम्† ॥ अभिसो३मा सऽआयवाः । पः

१र १ २ १ १ १ २
वन्त म । दिया२३म्मदाउ । वा३२ । समुद्रस्या । धि

१ १ १ २ १र ५ १ २ १प र २
विष्टपायि । मनोषा२३४यिणाः । मा२३त्सा । रासोम ।

१ ५ २ ४र ५ ४ ५ १ २र
दच्यू२३४५ताई५६ः ॥(१)मत्सरा३सोमऽदच्युताः । मात्सरा

१ १ १ २ १ २ २ २
सः । मदा२३च्युताउ । वा २ ३ । तरत्समू । द्रम्पव

१ २ १र ५ १ २ १र १ १
मा । नजर्म्मा२३४यिणा । रा२३जा । देवक्क । तंबृ

५र र २ ४ ५ ४ ५ १ र
२३४५हाई५६त् ॥(२) राजादा३यिवक्कऽतंबृहात् । राजा

• ऊ० गा० १६प्र० १ख० ३सा० । † "आष्कारनिधनं काव्यम्"—इति ख० पु० ।

Digitized by Google

१र १ २ १र २ १ २ २
द्वेवः। ऋतार२३बृहात। वा३२। अर्षामित्रा। स्वव

२ १ २ १ ५ १ २ १र २ १
रुणा। स्वधर्म्मा२३४णा। प्रा२३हायि। न्वानक्त। तं

२ १ १ १ १
बृ२३४५हाई५६त्। आ२३४५म्(३) ॥ २* ॥ [२४]

२ र र३ ५
॥ मानवाद्यम् ॥ अभिसोमा। सआया२३४वाः। २।

१ २प १ २ १ २ र
पावन्तेम। दियाश्मा१दा२म्। सम्। ऊ। द्रस्या।

१ ० २ १ २ ५ १२र१
धार्यिविष्टपा३यि। मनार्२यिषा२३४यिणाः। मत्सरासा

१ २ ५र र २ ५ २
२३ः। मा२दा२३४औहोवा। च्यू२३४ताः ॥(१) मत्स

र २ ५ २ ३ ५ १ २र
रासाः। मदच्यू२३४ताः। मदाच्यू२३४ताः। मात्सरा

१ २ १ २ १ ० २
सः। मदाच्यू१ता२ः। त। रत्। समु। द्राम्यवमा

१ ३ ५ १र २र र १ १ ३
३। नऊ२र्म्मा२३४यिणा। राजादेवा२३ः। आर२र्त्ता

५र र २ ५ १ रर
२३४औहोवा। बृ२३४हात् ॥(२) राजादेवाः। ऋतं

२ ५ २ २ ५ १ र २र १ २
बृ२३४हात्। ऋतांबृ२३४हात्। राजादेवः। ऋतांब

* ऊ० गा० १८प्र० २ख० २सा०।

Digitized by Google

१ १ १ १ १ १
१हा२त्। स। या। मित्र। स्य। वरुणा३। स्वधा
२ ५ १ २ २ १ १ २ ५र र
२र्म्मा२३४णा। प्रचिन्वानार३ः। या२र्त्ता२३४औहोवा।
२ ५
बृ२३४हात्(३) ॥ १० * ॥ [२५]

१ २र १ २र १ १
॥ महावैष्टम्भम् ॥ अभिसोमोहायि। सम्रायवोवा।
१ २र १ २ १ २ २
पावन्तोम। दियाम्मा१दा२३म्। होवा३हायि समु
१ र २ १ र २ १ २ १ १ २
द्रस्याधिविष्टपे। मनायिषा १ यिषा२३ः। होवा३हा
१ २ १ २ २ १
यि। मत्सारा१सा२३ः †। होवा३हायि। मद। च्यूर
२ ५र र १ २र १ २ १ २
ता२३४औहोवा ॥(१) मत्सरासोहायि। मदच्युतोवा।
१ २र १ २ १ २ २ १
मात्सरासः। मदाच्यु१ता२३ः। होवा३हायि। तर
२ १ २र १ २ १ २ २
त्समुद्रम्पवमा। नऊर्म्मा१यिणा२३। होवा ३ हायि।
१र १ १ २ २ १ २
राजादा१यिवा२३ः। होवा३हायि। ऋतम्। बृ२हा२
५र र १२र २र१ २ १ २ १
३४औहोवा ॥(२) राजादेवोहायि। ऋतंबृहोवा। रा

* ऊ० गा० १८प्र० २ख० १०गा०। † "मत्सारासा१२"—इति ख० पु० पाठः।

२ १२ १ १ १ २ १ १२ १
जाद्वेवः। ऋतांव१हा२३त्। होवा३हायि। ऋषीमि
१ १ १ २ १ २ १ २ २ १
चक्षुवरुण। सधार्मा१णा२३। होवा३हायि। प्रक्ष
२ १ २ १ १ २
यिन्वा१ना२३। होवा३हायि। ऋतम्। वृ२हा२३४
४२ ८
औहोवा(३) ॥ १० *॥ [२६] ९

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

२ १ २र ११ २र
तिस्रोवाचईरयतिप्रवह्निः
२ १ २ २ १ २र २ २
ऋतस्यधीतिम्ब्रह्मणोमनीषाम् ।
१ २ २ १२ २ १ २ २
गावोयन्तिगोपतिम्पृच्छमानाः
१ २ २ १२ २ २
सोमंयन्तिमतयोवावशानाः ॥ १† ॥

"वह्निः" वोढा यजमानः "तिस्रोवाचः" ऋग्यजुःसामात्मिकाः स्तुतीः प्रेरयति। तथा "ऋतस्य" यज्ञस्य "धीतिं" धारयित्रीं "ब्रह्मणः" परिवृढस्य सोमस्य "मनीषां" मनस ईशित्रीं कल्याणीं वाचं प्रेरयति। किञ्च "गोपतिं" वृषभं यथा गावोऽभिगच्छन्ति तद्वत् गवां स्वामिनं सोमं "गावः"

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १०गा० ।

† छ० आ० ६, १, ४, १ (२भा० ११२पृ०)=ऋ० वे० ७, ४, १७, ४ ।

Digitized by Google

"पृच्छमानाः" पृच्छन्त्यः सत्यः यन्ति स्व-पयसा मिश्रयितुम् अभिगच्छन्ति। तथा "वावशानाः" कामयमानाः "मतयः" स्तोतारश्च "सोमं" "यन्ति" स्तोतुमभिगच्छन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ २उ
सोमङ्गावोधेनवोवावशानाः
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमंविप्रामतिभिः पृच्छमानाः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
सोमःसुतऋच्यतेपूयमानः
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
सोमेअर्कास्त्रिष्टुभःसन्नवन्ते ॥ २* ॥

"धेनवः" † प्रीणयित्र्यो "गावः" "सोमं" "वावशानाः" कामयमाना भवन्ति, "विप्राः" मेधाविनः स्तोतारः ‡ "सोमं" "मतिभिः" स्तुतिभिः ¶ "पृच्छमानाः" पृच्छन्तो भवन्ति "सुतः" अभिषुतः "सोमः" "पूयमानः" ऋत्विग्भिः "ऋच्यते"

---

* ऋ० वे० ७, ४, १७, ५।

† 'आदित्यरश्मयो धेनवः'—इति वि०।

‡ 'विप्राः—ब्राह्मणाः . . . अथवा विप्रा आदित्यरश्मयः'—इति वि०।

¶ 'मतिभिः—प्रज्ञाभिः'—इति वि०।

चरति*। तथा "त्रिष्टुभः" त्रिष्टुब्रूपाः† "अर्काः" अस्माभिः क्रियमाणा एते मन्त्राः "सोमे" "सनवन्ते" सङ्गच्छन्ते॥

"सोमस्सुतऋच्यतेपूयमानः"—इति छन्दोगाः, "सोमःसुतः पूयतेअज्यमानः"—इति बह्वृचाः॥ २॥

अथ तृतीया।

२ १ २ ३ १ २ ३
एवानःसोमपरिषिच्यमान

१ २ ३ १ २ ३ २
आपवस्वपूयमानःस्वस्ति।

२ ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रमाविशबृहतामदेन

३२ ३ १ २ ३ २३ १ २
वर्द्धयावाचञ्जनयापुरन्धिम्॥ २‡॥ १०

हे "सोम!" "परिषिच्यमानः" परितः पात्रेषु सिच्यमानः पूयमानः त्वं "नः एव" अस्माकमेव "स्वस्ति"¶ अविनाशम् आ पवस्व प्रापय। किञ्च "बृहता" महता "मदेन" मदकर-रसेन अहम् "इन्द्रम्" "आविश" प्रविश। तथा "वर्द्धय" "वाचं" स्तुति-लक्षणां§ प्रसिद्धां कुरु। किञ्च

* 'ऋच्छते—ऋच्छ् गतौ। गच्छति'—इति वि०।

† 'त्रिष्टुप्छन्दस्काः अथवा त्रिष्टुभः त्रयीं विद्यां स्तोभयन्तः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १८, १। "रवेण"—इति च तत्र पाठः।

¶ 'स्वस्ति—क्षेमं कुरु'—इति वि०।

§ 'वाचम्—ऋग्यजुःसामलक्षणम्'—इति वि०।

Digitized by Google

"पुरन्धिं" बहुधियं प्रज्ञानं * "अनया" † मन्त्रमुत्पादय। वाक्यभेदादनिघातः ‡ ॥ २ ॥ १०

१ २ १ २ १र
॥ सङ्क्रोशम् ॥ श्रोयि। श्रो। श्रा२श्रोयि। तिस्रो

र २ १ २ ३ ४ ५ २ १ २
वाचाः। ई२रय। तिप्रवह्नीः। ऋतस्यधायि। ती२

१ २ ३ ४ ५ २र १र २ १
म्ब्रह्म। णोमनीषाम्। गावोयन्तायि। गो२पतिम्।

२ ३ ४ ५ २र १ २ १ २ २
पृच्छमानाः। सोमंयन्तायि। मतयः। वा३४३। वा

२ ४ २र १र २ १
३४३। वा३श्रा५ना६५६ः ॥(२) सोमङ्गावो। धे३नवः।

२ ३ ४ ५ २र १ २ १ २ ३ ४ ६
वावशानाः। सोमंविप्राः। मतिभिः। पृच्छमानाः।

२र १ २ १ र २ ३ ४ ५ २र १र
सोमःसुताः। ऋच्यते। पूयमानाः। सोमेश्रर्काः।

२ १ २ २ ४ २र१र
त्रिष्टुभः। सा३४३म्। ना३वा५पूता६५६यि ॥(२) एवा

---

* 'पुरन्धि'—पुष्टिम्'—इति वि०।

† 'इव मन्त्रे एवेत्यादौ बहुव छान्दसं दीर्घत्वम्। तथाच—"एवा"—इत्यत्र "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दीर्घः, "वईया"—"अनया"—इत्यनयोस्तु "द्वाचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इत्यत्र "तिङः"—इति, योगविभागाद्दीर्घः।

‡ "तिङतिङः (८, १, २८)"—इति प्राप्तो निघातः "समानवाक्ये निघातयुष्मदस्मदादेशा वक्तव्याः" ... "यत्तदनेकमपि वाक्यं" ... छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् (८, १, ३५)"—इति तदभावइत्यर्थः।

Digitized by Google

२　१　२ ३ ४ ५　२र १　२ १
नःसो। मा३परि। षिच्यमानाः। आपवस्वा। पू३य

र　२ ३ ४ ५　२ १ र　२ १　२ २ ४ ५
मा। नःसुवस्ती। इन्द्रमावायि। आ३बृ च। तामदेना।

१　२ १　२१ र　२ १
होयि। हो। हा३होयि। वर्द्धयावा। चा३ञ्जन।

२　२ ४
या३४३। पू२रा५धा६५६यिम्(३) ॥ १७ * ॥ [१] १०

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

तृतीयः खण्डः † ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थखण्डे, ‡ प्रगाथरूपे—

प्रथमसूक्ते—प्रथमा।

१　२र　२ २र ३ १　२र २ १
यद्याव इन्द्र ते शत ꣳ शतम्भूमीरुतस्युः।

१ २　२ २ २　२ २　१ २ २ २ १ २ १ २ १ २
नत्वावज्रिन्त्सहस्र ꣳ सूर्य्या अनु नजातमष्टरोदसी ॥ १ ¶ ॥

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० १७गा०।　　† 'खण्डो माध्यन्दिनः'—इति वि०।

‡ 'इदानीं पृष्ठान्युच्यन्ते। रथन्तरं, बृहत्, विरूपं, वैराजं, शाक्वरं, रैवतञ्चेति पृष्ठः षड्विधः, तस्य पृष्ठानि षष्ठमंशानि भवन्ति'—इति वि०। 'रथघोषं, दुन्दुभ्याघातम्, उपवाजनम्, वर्षोऽग्निमन्थनम्, चार्वाघोषः, मर्त्यघोषः इति पृष्ठषड्विधा। तस्यां पृष्ठे षड्वे चदन्ति गौरीवितं सामन्'—इति च वि०।

¶ छ० आ० ३, २, ४, ६ (१ भा० ५०२४०)=ऋ० वे० ६, ५, ८, ५।

हे "इन्द्र!" "ते" तव प्रतिमानार्थं "यद्" यदि "द्यावः" द्युलोकाः "शतं" शत-सङ्ख्याकाः "स्युः" तथापि नाश्नुवन्ति । "उत" अपिच "भूमीः" भूम्यः "ते" तव मूर्त्ति-प्रतिविम्बाय "शतं" स्युः तथापि "न" अश्नुवन्ति । हे "वज्रिन्" "त्वा" त्वाम् "सहस्रं" "सूर्याः" अगणिता अपि सूर्याः "न" "अनु" भवन्ति न प्रकाशयन्तीत्यर्थः । "न तत्र सूर्यो भाति (इ०उप०)" —इति श्रुतेः । किं बहुना जातं पूर्वमुत्पन्नं किञ्चित् त्वामनु "नाष्ट" नाश्नुते तथा "रोदसी" द्यावापृथिव्यौ नाश्नुवाते सर्वेभ्योऽतिरिच्यसे इत्यर्थः । "ज्यायान् पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षाद् दिवो ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः"—इति (इ० उप०) श्रुतेः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ ३र ३ १ २ ३ १ २
आपप्राथमहिनावृष्ण्यावृषन्विश्वाशविष्ठशवसा ।
३ १ २ ३ १ २ ३१ ३र ३ १ ३ ३ १ २
अस्माꣳअवमघवन्गोमतिव्रजेवज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः॥२*॥११

हे "वृषन्" अभिमतवर्षकेन्द्र! त्वम् "आ पप्राथ" आ पूरयसि व्याप्नोषि । कानि? "विश्वा" सर्व्वाणि "वृष्ण्या" वर्षकाणि बलानि अनु-सम्बन्धीनि । केन साधनेन? "महिना" महता "शवसा" बलेन स्वीयेन अथवा वृष्ण्येत्येतच्छवो विशेषणम् । तथा सति अभिमतवर्षकेण महता बलेन अस्मदीयानि बलानि पूरयसीत्यर्थः । अथ तथाकृत्वा हे "शविष्ठ" बल-

---

* ऋ० वे० ६, ५, ९, १ ।

Digitized by Google

वत्तम! "गोमति" बहुभिः गोभिर्युक्ते "व्रजे" गवां-सम्बन्धि-निमित्ते सति "अस्मान्" "अव" रक्ष। हे "मघवन्" धनवन्! "वज्रिन्" वज्रयुक्तेन्द्र! कैः साधनैः? "चित्राभिः" नानाविधैः "ऊतिभिः" रक्षणैरिति॥ २॥

१ र २ १   २र १ २
॥ महावैष्टम्भम्॥ यद्यावश्रोहायि। द्रतेशतोवा।
१ २र र १ २ १ २ २ १ र
शातम्भूमीः। उतासी१यू२३ः। होवा३हायि। नत्वा
२ १ २ १र २ १ १ १ १ २ १
वज्रिन्सहस्र७सू। रियाआ१नू२३। होवा३हायि। न
२ १ २ २ १र २ ५र र
जाता१मा२३। होवा३हा। हरो। दा२सी२३४औहो
१ र २ १ २ र १ २ १ र २
वा॥(१) नजातमोहा। हरोदसोवा। नाजातम।
१ २ १ २ २ १र १र र
हरोदा१सा२३यि। होवा३हायि। आपप्रायमहिनात्रृ।
१ २ १ २ २ १ २
ष्णियावा१र्षा२३न्। होवा३हायि। विश्वाशा१वा२३।
१ २ २ १ २ ५र र १ र
होवा३हा। इश। वा२सा२३४औहोवा॥(२) विश्वा
२ १ २ १ २ १ र २ १ २
शवोहायि। इशसोवा। वायिश्वाशवि। इशावा१सा

Digitized by Google

१ २ १ १र २ र १
२३। होवा ३ हायि। अस्माऽ२अवमघवन्गो। मतायि
२ १ २ १ १ १
व्रा१जार२यि। होवा३हायि। वज्रायिन्वा१यिवा २ ३।
१ २ २ १र ४ २ ५र र
होवा ३ हायि। भिह्न। ता २ यिभा २ ३ ४ औहोवा॥

॥ १८ *॥ [१] ११

अथ द्वितीयखण्डे†—प्रथमा।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
वयन्त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परिस्तोतार आसते॥ १‡॥

हे "वृत्रहन्" इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "वयं च" वयं खलु "सुत-वन्तः" "आपः न" आप इव प्रवणमभिगच्छामः। "पवित्रस्य" सोमानां प्रस्रवणेषु "वृक्तबर्हिषः" तीर्णबर्हिषः स्तोतारश्च त्वां पर्युपासते॥ १॥

---

* ऊ० गा० २२प्र० १ख० १८सा०।

† 'वामदेव्यं सैतावचनं साम, वैदुमं ब्राह्मणाच्छंसि, रौरवमच्छावाकं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ३, २, २, ९ (१ भा० ५४० पृ०) = ऋ० वे० ६, २, ७, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स्वरन्तित्वासुतेनरोवसोनिरेकउक्थिनः ।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
कदासुतन्तृषाणओकआगमइन्द्रस्वब्दीववंसगः ॥ २* ॥

हे "वसो" वासयितरिन्द्र ! † "त्वा" त्वां "सुते" अभिषुते सोमे "निरेके" निर्गमे ‡ "उक्थिनः" ¶ "नरः" नेतारः "स्वरन्ति" शब्दायन्ते §। अपिचेन्द्रः "सुतं" सोमं प्रति "तृषाणः" तृष्यन् "स्वब्दीव" स्वभूत-शब्दी इव ‖ "वंसगः" वननीय-गमनो** वृषभः शब्दं कुर्वन् "कदा" "ओकः" स्थानम् "आगमत्" आगच्छेत् ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ३, ७, १ । "गमदिन्द्र"—इति मु० पाठः सायणसम्मतश्च ।

† 'वसो निरेके—हे वसो ! प्रशस्तधन !'—इति वि० ।

‡ 'निरेके—दानवति यज्ञे । अथवा वसोनिरेक इत्येकं पदम्, तथा सा षष्ठी क्रियते—वसुनः धनस्य निरेके'—इति वि० ।

¶ 'उक्थिनः—उक्थानि सामानि, ते तद्वन्तः'—इति वि० ।

§ 'स्वरन्ति सामभिः'—इति वि० ।

‖ 'स्वब्दो इन्द्रः । शोभन-शब्दं करोति, दर्शयोभूत्वा हविषारवं'—इति वि० ।

** 'वंसगः—वननीयगः'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २ २ २ ३ १२ ३२ ३ १ २
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजन्दर्षि सहस्रिणम्।
३ १ २ ३ १२ ३२
पिशङ्गरूपम्मघवन्विचर्षणेमक्षूगोमन्तमीमहे ॥ ३ * ॥ १२

हे "धृष्णो" धर्षकेन्द्र ! † "कण्वेभिः" कण्वान् मेधाविनः स्तोतॄन् अनुग्रहीतुं [विभक्ति-व्यत्ययः (३, १, ८५)] "सहस्रिणं" सहस्र-सङ्ख्याकं "वाजम्" "आदर्षि" प्रयच्छसि। हे "मघवन्" धनवन्! "विचर्षणे" विद्रष्टरिन्द्र! ‡ "धृषत्" धृष्टं "पिशङ्ग-रूपं" ¶ "गोमन्तम्" वाजं § "मक्षू" शीघ्रम् ‖ "ईमहे" याचामहे, त्वामिति शेषः ॥ ३ ॥ १२

२ १ २ १ २ ३ १ १
॥ महावैष्टम्भम् ॥ वयन्त्वोहायि। सुतावन्तोवा।
१ ३ २ १ २ १ २ २ १
आपोनवृ। क्तबार्हा१यिषा२३ः। होवा३हायि। पवि

---

* ऋ० वे० ६, २, ७, ३।

† 'धृष्णो—धारकशील!'—इति वि०।

‡ 'विचर्षणे—विविधाश्चर्षणयः पुरुषाः यस्य स विचर्षणिः, अथवा विश्वस्य द्रष्टा'—इति वि०।

¶ 'पिशङ्गरूपं—सुवर्णवर्णम्'—इति वि०।

§ 'गोमन्तं—गोक्षीरयुक्तम्'—इति वि०।

‖ 'मक्षु—मक्षणीयम्'—इति वि०। "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दीर्घः।

Digitized by Google

२ १ १र १ २ १ २ २ १
चस्यप्रस्रवणे। पुवार्चा१हा२३न्। होवा३हायि। परा
२ १ २ २ १र ३ ५र
यिस्तो१ता२३। होवा३हा। रमा। सा२ता२३४औ
र १ २ १ १र १ २ १ २ र
होवा॥(१) स्वरन्तित्वोहायि। सुतेनरोवा। वासोनि
र १ २ १ २ २ १र २ १
रे। कजश्या१यिना२३ः। होवा३हायि। कदासुत
२र १ र २ १ २ १ २ २ १
तृपाणओ। कआगा१मा२३ः। होवा३हायि। इन्द्र।
२ १ २ २ १ ३ ५र
स्वा१ब्दी२३। होवा३हा। वव। सा२गा२३४। औ
र १ र ० १ २ र १ २ १ २
होवा॥(२) कण्वेभिर्द्धोहा। ष्णुवाधृषोवा। वाजन्द
१ २ १ २ २ १
र्षि। सहस्रा१यिणा२३म्। होवा३हायि। पिशङ्ग
२र १ २ १ २ २ १
रूपम्मघवन्। विचार्षा१णा२३यि। होवा३हायि। मक्षू
२ १ २ २ १र ३ ५र र
गो१मा२३। होवा३हा। तमी। मा२हा२३४औहो
६ ५
वा। दी२३४आः(३)॥ १८ *॥ [१]

५र १ २ १ २
॥ अभिनिधनङ्काण्वम्॥ औहोहोहायि। आयिही।

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० १८गा०।

Digitized by Google

वायाम्। घार३४ल्वा। सूतावार३४न्ताः। आपोनार
३४वृ। ज्ञाबर्हिषाः। ऐहोयि। आ२३४यिही। पा
विवा२३४स्या। प्रास्तावा२३४णे। षूवृत्रहान्। ऐहोयि।
आ२३४यिही। पारिस्तो२३४ता। रआ३सा५ता६ ५ ६
यि ॥(१) औहोहोहायि। आयिही। त्वारा। तार
३४यित्वा। सूतेना२३४राः। वासोना२३४यिरे। का
उक्थिनाः। ऐहोयि। आ२३४यिही। कादासू२३४
ताम्। तार्षाणा२३४ओ। काआगमाः। ऐहोयि।
आ२३४यिही। आयिन्द्रात्वा२३४व्ही। ववा३९सा५गा
६५६ः ॥(२) औहोहायि। आयिही। कार्णवे। भार
३४यिर्व्वा। ण्णावाधा२३४र्षात्। वाजन्दा२३४षीं। सा
हस्तिणाम्। ऐहोयि। आ२३४यिही। पायिमज्जार३

Digitized by Google

५ २ २ ५ २र १ २र १ २
४हू। पमांघार३४वान्। वीचर्षणायि। ऐहोयि। आ

५ २ ३ ५ ३ २ ४
२३४यिही। माचूगो२३४मा। तमा३यिमा५द्दा ६ ५ ६

२ ५
यि। आ२३४भौ(३)॥ ८*॥ [२]

५ ५ २ ४ ५र ४ ५ १र
॥ अभीवर्त्तम्† ॥ वया३न्वा३त्वासुतावन्तोवा। आपो

२ १ २ १ २ २ ४
नवृ। क्तबार्हा१यिषा२ः। पावित्रस्या३१२३ ४। प्रस्रव

५र २ १ २ १ २ २ १
णे। षुवार्त्रा१द्दा२न्। परायिस्तो १ ता २। रआ ३।

१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५र ४ ५
सा२३४५। ता२३४यि ॥(१) स्वरा३न्ता३यित्वासुतेनरोवा।

१र २र १ २ १ २ २
वासोनिरे। कऊक्या१यिना२ः। कादासुता३१२३४म्।

२ र ४ ५र २ १ २ १ २ २ २
त्रिषाणभो। क्षागा१मा२ः। इन्द्राखा१ब्दी२। ववा

१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५र
३। सा२३४५। गा२३४५ः ॥(२) कण्व३भा३यिधृष्णवा

४ ५ १ २ १ २
धृषोवा। वाजन्दषि। सद्दास्रा१यिणा२म्। पायिप्रङ्ग

२ ३ ४ ५ १ १ २ १ २
ह्रू३१२३४। पम्रघवन्। विचार्षा१णा२यि। मचूगो१

---

* क० गा० ४प्र० १ख० ८सा०। † "अभीवर्त्तः"—इति ख० पु०।

२१ १ २११११
मार । तमा३यि । मा२३४५ । हा२३४५यि(३) ॥ ६* ॥ [३]

१२

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते†—प्रथमा ।

३२३ १ २ ३२ ३१२ ३२
तरणिरित्सिषासति वाजम्पुरन्ध्या युजा ।
२ ३१२ ३१२ ३२३ १ २र३१ २
आव इन्द्रम्पुरुहूतन्नमे गिरा नेमिन्तष्टेव सुद्रुवम् ॥ १ ‡ ॥

"तरणिरित्" युद्धादौ कर्मणि त्वरितएव पुमान् "पुरन्ध्या" महत्या धिया "युजा" सहायभूतया "वाजम्" अन्नं "सिषासति" सम्भजते, "पुरुहुतं" बहुभिराहुतम् "इन्द्रम्" "गिरा" स्तुत्या हे यजमानाः "वः" युष्मदर्थम् अहम् "आ नमे" आनतमभिमुखं कुर्वे। तत्र दृष्टान्तः—"नेमिं" चक्रस्य वलयम् "सुद्रुवं" शोभनदारु "तष्टेव" यथा वर्द्धकिः दारु-नेमिमानमयते तद्वदित्यर्थः ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० ६प्र० १अ० ६खा० ।

† 'रौरवमच्छावाकं साम'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० २, १, ५, ६ (१ भा० ४९३ पृ०) = य० वे० ११, २१ = ऋ० वे० ५, ३, २०, ५ ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ ३ १ २

नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यतेनस्रेधन्तꣳरयिर्नशत् ।

१ २ ३ १ १ २ १ ३ १ २ ३ १२ १२ ३ २

सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यम्मावतेदेष्णंयत्पार्येदिवि ॥ २* ॥१६

"द्रविणोदेषु" धनदातृषु पुरुषेषु "दुष्टुतिः" असमीचीना स्तुतिः "न शस्यते" नाभिधीयते । किञ्च "स्रेधन्तं" हिंसन्तं धनदातृविषय-स्तुत्यादि-कर्माण्यकुर्वन्तमित्यर्थः, एवम्भूतं जनं "रयिः" धनं "न नशत्" न व्याप्नोति । तथा हे "मघवन्" धनवन्निन्द्र ! "पार्ये दिवि" सोत्ये दिवसे † "मावते" मत्सदृशाय स्तोत्रे "देष्णं" दातव्यं "यत्" धनमस्ति तत् "तुभ्यं" त्वत्तः सकाशात् "सुशक्तिरित्" शोभन-स्तुतिकएव स्तोता लभत इति शेषः ॥

"नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यते"—इति छन्दोगाः, "नदुष्टुती मर्त्योविन्दतेवसु"—इति बह्वृचाः ॥ २ ॥ १३

२ १ ५ १

॥ रौरवम् ॥ तरणिरित्सा३यिषासार३४ती । वा॒ऽजम्पु

२ २ २ १२ १ २ २

रन्ध्यायुजावइन्द्रम्पूरुहूतन्नमा२यिगिरा । ओहा३ऊवा ।

---

* ऋ० वे० ५, ७, २१, १ ।

† 'पार्ये दिवि—पारणीये युलोके'—इति वि० ।

१र र २ १र र १ १
नेमिन्तष्टे वसू२३हाइ । नेमिन्तष्टे वसा२३उहाइ । ओ

२ २ १ ४ ५ १र र
हा३उवा । इवाम् । औ२३होवा ॥(१) नेनिन्तष्टे वा

१ ५ १ र र
३सुद्र २३४वाम् । नायिमिन्तष्टे वसुद्रु वन्नदुष्टू तिर्द्रं विष्णो

र ३ २ २ १ २ १ र ऽ
ढेषुशा२स्यतायि । ओहा३उवा । नस्ते धन्ता७रया२३

२ १ २ २ १ ४ ५
यिर्द्दायि । ओहा३उवा । नशात् । औ२३होवा ॥(२)

२ र १ ५ १ र
नस्ते धन्त७रा३यिर्न्ना२३४शात् । ना॑स्ते धन्त७रयिर्न्नशत्सु

३ २ १ २ २ १र
शक्तिरिन्मघवन्तुभ्यम्मा२वतायि । ओहा३उवा । देष्णं

र २ १ २ २ १ २
यत्पारिया२३यिद्दायि । ओहा३उवा । दिवा । औ३

३ ५ ४
होवा । हो५ई । डा(३) ॥ १८ * ॥ [१] १३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

चतुर्थः खण्डः † ॥ ४ ॥

---

* ऊ० गा० २प्र० १ष० १८सा० ।

† 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ पञ्चमे खण्डे*—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

२ ३उ   ३१२ ३१२   ३१२
तिस्रोवाचउदीरतेगावोमिमन्तिधेनवः।
१२ ३१२
हरिरेतिकनिक्रदत्॥ १† ॥

"तिस्रोवाचः" ऋगादिभेदेन "उदीरते" प्रोद्गायन्ति ऋत्विजः। "धेनवः" आशिरेण प्रीणयित्र्यो "गावः" "मिमन्ति" शब्दायन्ति दोहार्थम्, "हरिः" हरितवर्णः सोमश्च "कनिक्रदत्" शब्दं कुर्वन् "एति" गच्छति द्रोणकलशम्॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १२ ३२   ३१ ३ १२३ १२
अभिब्रह्मीरनूषतयह्वीऋर्तस्यमातरः।
३ १२   ३१   ३२
मर्ज्जयन्तीर्दिवःशिशुम्॥ २‡ ॥

"ब्रह्मीः" ब्राह्मण-प्रेरिताः¶ "यह्वीः" महत्यः ['यह्वः'—इति महन्नाम (निघ०३, ३, १३)] "ऋतस्य" यज्ञस्य "मातरः"

---

* 'इदानीं तृतीयसवनमारभते'—इति वि०। 'पाष्ठौहं साम'—इति वि०।

† छ० आ० ५, २, ४, ५ (२ भा० १६) = ऋ० वे० ९, ८, ३३, ४।

‡ ऋ० वे० ९, ८, २३, ५।

¶ 'ब्रह्मीः—ब्रह्मणा या याः स्तूयन्ते ता ब्रह्मीः'—इति वि०।

Digitized by Google

निर्मातारः स्तुतयः* "दिवः" द्युलोकात्† "शिशुं" शिशु-स्थानीयं सोमम्‡ "मर्जयन्तीः" पावयन्तीः "अभ्यनूषत" स्तवन्ति [तृतीय-स्यामितोदिवि सोमआसीदित्यादि श्रुतेः द्यु-शिशुत्वं तस्य]॥

"मर्जयन्तीः"-"मर्मृज्यन्ते"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रायःसमुद्रा७ँश्चतुरोस्मभ्य७ँसोमविश्वतः।
१ २ ३ १ २
आपवस्वसहस्रिणः॥ ३ ¶॥ १४

"रायः" धनस्य सम्बन्धिनश्च "चतुरः समुद्रान्" मणि-मुक्तादि-धन-पूर्णानित्यर्थः। तादृशान् समुद्रान् "अस्मभ्यम्" अर्थाय हे "सोम!" "विश्वतः" सर्वतः "आ पवस्व"। तथा "सहस्रिणः"§ अपरिमितान् कामान् आपवस्व प्रयच्छ [चतुः-समुद्रस्य धन-विशेष-प्राप्ते तन्मध्यगत-धन-भूमि-स्वामित्वमन्तरेणा सम्भवात् चतुस्समुद्र-सहित-भूमण्डल-स्वामित्वमेवाशास्ते यज-मानः]॥ ३॥ १४

---

* 'मातरः—धेनवः आदित्यरश्मयो वा आपो वा'—इति वि०।

† 'दिवः—द्युलोकात् सकाशात्'—इति वि०।

‡ 'शिशुं शंसनीयं सोमम्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, ८, २२, ६।

§ 'सहस्रिणः—सहस्रसङ्ख्याकाः'—इति वि०।

Digitized by Google

१ र र र१ २र १र
॥ पार्ष्ठौहम् ॥ तिस्रोवाचा२उदीरमायि। गावो।
२ १र २ १
मिमन्तिधेनवः। हरिरा२३यितौ। कनी२। ऊघायि।
ऽ २ १ २ ५र र १
होऽ३वा३। क्रा२दा२३४औहोवा ॥(१) अभिब्रह्मा२यि
र १ २ १र र २
रनूषता। यह्वीर्ऋतस्यमातरः। मर्ज्जया२३न्तीः। दिवौ
१ ऽ २ १ २ ५र र
२। ऊवायि। होऽ३वा३। शा२यिशा२३४औहोवा ॥(२)
१र र १ २१ र र
रायःसमू२द्रा९स्वतुराः। अस्मभ्य९सोमविश्वताः। आ
२ १ ऽ २ १
पवा२३स्वा। सहौ२। ऊवायि। होऽ३वा। स्रा२यि
२ ५र र ५र १ २ १ २११११
णा२३४औहोवा। हाश्रोवा। श्रोवा२३४५ ॥ २०* ॥ [१]

४ २ र ४ २ ३र५
॥ क्षुल्लकवैष्टम्भम् ॥ तिस्रोऽ५वा। चाऽ३उदीरतायि।
१ र २ १ २ २ २ १
गावोमिम। तिधायिता१वा२३ः। होवा३हायि। हरा
२ १ २ २ १ २
यिरा१यितौ२३। होवा३हायि। कनि। क्रा२दा२३४
५र र ४ २ ४ २ ३र५ १ र
औहोवा ॥(१) अभाऽ५यिब्र। ह्माऽ३यिरनूषता। याह्वी

* ऊ० गा० २प्र० १अ० २०सा० ।

२ १ २ १ १ २ १ २
कृत। स्यमाता१रा२३:। होवा३हायि। मज्जाया१

१ २ २ १ २ ५र
न्तौ२३:। होवा३हायि। दिवः। श्रा२यिश्रा२३४औ

र ४र ३ ४ २र ३ ५ १
होवा॥(२) रायाऽ५:सम्। ऊ३द्रा॰स्वतुरा:। आस्म

२ र १ २ १ २ २ १र
भ्य॰सो। मवायिस्वा१ता२३:। होवा३हायि। आपा

२ १ २ २ १ ३ ५र
वा१स्वा२३। होवा३हायि। सह। स्वा२यिणा२३४औ

र ३ ५
होवा। दौ२३४श्रा:(३)॥१६*॥[२]

१ र २र १
॥साꣳहितम॥ तिस्रोवाचउत्। आ२यिरतायि।

२र १ २ १ १ १
गावो२। मा२३यिमा। तिधा२यिनावा:। हा२३रौ:।

१ ० २ ५
आ२यितायि। कना२३। हाउवा३। क्रा२३४दात्॥(१)

२ १ २र १ २ १ २
अभिब्रह्मीर। नू२षता। यक्का२यि:। आ२३र्त्ता।

१ १ २ १ ०
स्यमा२तारा:। मा२३र्ज्जा। या२न्तायि:। दिवा२

२ ५ २र १ २ र
३:। हाउवा३। श्रा२३४यिश्रूम्॥(२) रायःसमुद्रान्।

---

* ऊ॰ गा० ७प्र॰ १ख॰ १६गा०।

चा२तुराः। अस्मा२। भ्या२३ॐसो। मवा२यिश्वा
ताः। आ२३पा। वा२खा। सद्वा२३। हाउवा३।
खो२३४णाः(३)॥ ७ * ॥ [३]

॥ ऐडसैन्धुक्षितम्॥ तिस्रोवाचो। हायि। उदी
रा२३तायि। गावोमिमन्तिधा१यिना३वाः। हरिरेतो
२३४हायि। काना३यिहायि। क्रदात्। औ२३हो
वा॥(१) अभिब्रह्मी। हायि। अनूषा२३ता। यह्वी
र्ऋतस्यमा१ता३राः। मर्जयन्तो२३हायि। दायिवा३
हायि। शिशुम्। औ२३होवा॥(२) रायःसमो। हा
यि। द्राॐस्वतू२३राः। अस्मभ्यॐसोमावा१यिश्वा३ताः।
आपवस्वो२३४हायि। साहा३हा। मृणा। औ३हो
वा। हो५ई। डा(३)॥ १९ † ॥ [४]

* ऊ० गा० ९प्र० १ख० ७सा०। † ऊ० गा० १५प्र० १ख० १९सा०।

Digitized by Google

१ २र र १ २ १र २
॥ गायत्रौशनम् ॥ तिस्रोवाचाः। उदीरा२३ता

१ र १ १र २ १ २ २
यि। गावोमिम। तिधेना२३वाः। हरायिरा३यिता३

१ २ १ ५ ५ १
यि। काना२३यिहा३४३यि। क्रा२३४दो६हायि ॥(१) अ

२ १ २ १र २ १ र २ १र
भिब्रह्मायिः। अनूषा२३ता। याह्वीर्ऋत। स्यमाता

२ १ २ २ १ २ १
२३राः। मर्ज्जायाह्वीरः। दायिवा२३हा३४३यि। आ

५ ५ १र र २ १ २
२३४यिओ६हायि ॥(२) रायःसमू। द्राꣳस्चतु२३राः।

१ २ र १ २ १र २ २ १
धरुणम्यꣳसो। मविश्वा२३ताः। आपावा३स्वा३। सावा

२ १ ५ ५
२३हा३४३यि। सृा२३४यिणो६हायि(३) ॥ १० * ॥ [५]

२ १र ५ २ १ २ २
॥ वैरूपम्† ॥ तिस्रोवा२३४चाः। उदायिरा३ता३यि।

१र ३ ५ १ २ १
गावोरमा२३४यिमा। ताविधे१नावा२ः। हरा२३यिः।

र १ १र र २ १ २ ३ १ १ १ १ १ २ १
हता२३४यौवोवा। कनिक्रदा२३४५त् ॥(१) अभिब्रा२३

५ २ १ १ २ १ २ ५ १ २
४ह्मीः। अनूषा३ता३। यह्वा२यिरा२३४ता। स्यामा

---

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० १०गा०। † "गायत्रीवैरूपम्"—इति ख० पु०।

१　　२　　५ र र　　१ १ २
१तारा२ः । मर्ज्जा२३ । यन्ता३४औहोवा । दिवःमि
३ १ १ १ १ १　　२ १　　५　　१र १ २ १　　१
मू२३४५म् ॥(२) रायःसार३४मू । द्राꣳश्वामू३रा३ः । म
२　　५　　१ ०　　१र　　२
स्मार२भ्या२३४ꣳसो । माविस्वाता२ः । चापार३ । वस्वा
५र र　　२ १　२ २ १ १ १ १
३४औहोवा । सहस्रिणा२३४५ः(३) ॥ ११ * ॥ [६] १४

अथ द्वितीयतृचे† — प्रथमा ।

२ २　२ १ २　　१ २ ३ १ २　२ १ २
सुतासोमधुमत्तमाःसोमाइन्द्रायमन्दिनः ।
३ १ २　　३ १　२　　२ १ २
पवित्रवन्तोअक्षरन्देवान्गच्छन्तुवोमदाः ॥ १ ‡ ॥

"मधुमत्तमाः" अतिशयेन माधुर्योपेताः अतएव "मन्दिनः" मदकराः "सुतासः" अभिषुताः सोमाः "पवित्रवन्तः" पवित्रे वर्त्तमानाः सन्तः "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "अक्षरन्" पात्रेषु क्षरन्ति । अथ प्रत्यक्षकृतः— "वः" युष्माकं "मदाः" मदहेतवः रसाः "देवान्" इन्द्रादीन् "गच्छन्तु" ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ११गा० ।

† 'नाहुषी साम'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० ६, २, १, ३ (२भा० १५५पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, १, ४ ।

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुरिन्द्रायपवतइतिदेवासोअब्रुवन्।
३ १ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वाचस्पतिर्मखस्यतेविश्वस्येशानओजसः॥ २ * ॥

"इन्दुः" सोमः "इन्द्राय" इन्द्रार्थं "पवते" कलशे क्षरति "—इति" "देवासः" स्तुतिकारिणः स्तोतारः "अब्रुवन्" वदन्ति; यदा स्तोतार एवं ब्रुवन्ति तदानीं "वाचः" स्तुतेः "पतिः" पालयिता † यद्वा शब्दस्य स्वामी अत्यन्तं शब्दायमान इत्यर्थः, तादृशः सोमः "मखस्यते" स्तुतिभिः पूजामिच्छति [लालसायां सुगागमः]। कीदृशः? "ओजसः" बलवतः "विश्वस्य" सर्वस्य "ईशानः" प्रभुः॥

"ओजसः"-"ओजसा"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २ ३ २
सहस्रधारःपवतेसमुद्रोवाचमीङ्खयः।
२ ३ १ २ ३ १ ३२ ३ १
सोमस्पतीरयीणाᳬसखेन्द्रस्यदिवेदिवे॥ ३ ‡ ॥ १५

* ऋ० वे० ७, ५, १, ५।

† 'वाचस्पतिः—मध्यमः सामसत्यवाभ्यो वाग्भ्यः पतिः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १, १।

Digitized by Google

"सहस्रधारः" बहुविध-धारोपेतः "सोमः" "पवते" क्षरति। कीदृशः? "समुद्रः" समुद्रवन्ति "रसा" रस-स्थानीयः "वाचमीङ्खयः" [ईङ्खतेर्ण्यन्तस्य सुप्युपपदे खश् प्रत्ययः] स्तुतीनां प्रेरयिता * "रयीणां" धनानां "पतिः" प्रभुः [यद्वा "रयीणां" हविषोदातॄणां यजमानानां † "पतिः" पालयिता] "दिवे-दिवे" प्रत्यहम् "इन्द्रस्य" "सखा" मित्रभूतः सोमः पवते॥

"सोमस्पतिः"-"सोमःपतिः"—इति पाठो॥ ३॥ १५

५ र   २र २   ४ ५
॥ गौरीवितम् ‡ ॥ सुता। सोमा३। धुमत्तमाः।
१र र   र   १   २   ४र
सोमाइन्द्रायमन्दिना२३ः। पाविनवा३१२३। तोम्रा५स्र
१   र   २   ४   ५   ४   ५
रान्। हायिवान्गच्छा३१२३। तुवोवा। मा५दो६वा
५   २ २   ४ ५   १   र र र
यिं॥(१) इन्दुः। इन्द्रा३। यपवताथि। इतिदेवासो
१   २   ४
घमुवा२३न्। वाचस्पता३१२३यिः। मखा५स्तायि।
१   र २   ४   ५   ४   ५
वायिश्वस्ये शा३१२३। नमोवा। जा५सो ६ हायि॥(२)
५   २ २   ४   ५   १   र र   र
सह। सूधा३। रःपवताथि। समुद्रोवाचमीङ्ख्या२३ः।

---

* 'वाचमीङ्खयः—शब्दं कुर्वन्तः'—इति वि०।

† 'सोमः पतिः केषाम्? रयीणाम् पशु-पुरोडाशादि-लक्षणानां धनानाम् अथवा सर्वप्रजानाम्'—इति वि०।

‡ "महागौरीवितम्"—इति ख० पु०।

१ २ ४ १ र २
सोमस्यता३१२३यिः । रया५यिणाम् । साखेन्द्रस्या३१२३ ।
४ ५ ५ ५
दिवोवा । दा५यिवो६हायि(३) ॥ ३ * ॥ [१]

१ र र २
॥ त्वतन्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमा । धुमा ३ त्तमाः ।
१र २ २ २ १ २ २ १ २ २
सोमाइन्द्रा३यमा३ । ए३ । दिनश्रा । पवायित्रवा३न्तो
२ २ २ २ १ २ २ २
३ । ए३ । त्वरन्ना । दायिवान्गच्छा३न्तुवा३ः । ए३ ।
२ २र २ २ २ २र र
मदाश्रा ॥(१) इन्दुरिन्द्रा । यपा३वतायिदेवा३सो ३ ।
२ २ ३ १ १र २ २ २ १ १
ए३ । ब्रुवन्ना । वाचास्पता३यिर्म्मखा३ । ए३ । स्यत
२ १ २र २ २ २ ३ २ २
श्रा । विश्वास्येश्रा३नश्रो३ । ए३ । जसश्रा ॥(२) सह
२ १ १र २ २
स्रधा । रःपा३वतायि । समुद्रोवा३चमा ३ यि । ए३ ।
२ ३ २ १र २ २ २ २ २
खयश्रा । सोमास्यता३यिरया३यि । ए३ । णा ३ मा ।
१ २ २ २ २ २ २
सखेन्द्रस्या३दिवा३यि । ए३ । दिवश्रा(३) ॥ ४ † ॥ [२]

२ र र २ १र र
॥ आन्धीगवम् ॥ सुतासोमधुमा१त्तामाः । सोमाइ ।

---

* ऊ० गा० २प्र० २ख० ३सा० । † ऊ० गा० २प्र० २ख० ४सा० ।

र २ १ १ २१ १ र ३ १
द्रायार३मा। ऊम्मा२१ऽ२। दिनःपवित्रवन्तोअत्तरार
१ १ १ १ २ १ १ १ १
३४५न्। दायिवा३उवा। गा२च्छा। तूर३वो। मदा।
१ ४ ५ २ र २ १ र र
औ३होवा॥(१) इन्दुरिन्द्रायपा१वातायि। इतिदे। वा
२ १ १ २र१ १ १ १ १ १
सो२३आ। ऊम्मा२१ऽ२। भुवन्वाचस्पतिर्मखस्यतार२३४
१ १ २ १ १
५यि। वायिस्वा३उवा। स्या२यिया। ना२३मो। ज
१ २ ४ ५ २ र २ १
सा। औ३होवा॥(२) सहस्रधारःपा१वातायि। समु
र २ १ १ र१ १ र१
द्रः। वाचा२३मा। ऊम्मा२१ऽ२। खयःसोमस्यतोर
२र १ २ १ १ १
योणा१म्। साखा३उवा। द्रा२स्या। दा२३यिवे।
१ २ ४ ५ ४
दिवा। औ३होवा। होऽ५ई। डा(३)॥२०*॥[१]

१ २ २ २ १ १
॥खारत्वाष्ट्रीसाम॥ सहस्रधा३रा। रःपवाता२
१ र २ २ ३ २र १ १र १
यि। समुद्रोवा३चा। चमीङ्खाया२ः। सोमस्यता३यि

---

* क० मा० ७प्र० १ख० १०घा०।

२ १ १र २ २ ११
हायि। रयायिणा२म्। सखेन्द्रस्या३हायि। दिवा३
१ ५ ४ ५
हो२३४। वा। दा५यिवोहायि(३) ॥ ८ *॥ [२]

१ २र २ २ २ ११ १
॥ स्वारत्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमा३हा। धुमत्तामा
१र र १ २ ११ १ १ २
२:। सोमाइन्द्रा३हा। यमन्दायिना२:। पवित्रवा३
२ १र २ १ १र र २ २ ११ १
हा। तोमधारा२न्। देवान्गच्छा३हा। तुवो३हो२
५ ४ ५ १ १ २ ११
३४। वा। मा५दोहायि ॥(१) इन्दुरिन्द्रा३हा। यप
१ १ र१ २ १र११ १र
वाता२यि। दूतिदेवा३हा। सोमब्रूवा२न्। वाचस्य
२ २ २१ १ १ र १ २ २
ता३यिर्हायि। मखस्याता२यि। विश्वस्येशा३हा। न
२ २ ५ ४ ५ १ २
ओ३हो२३४। वा। जा५सोहायि ॥(२) सद्यसृधा३
२ ११ १ १ र १ २ ११र १
हा। र:पवाता२यि। समुद्रोवा३हा। चमीक्रनाया२:।
१र २ १ १ १र १ २
सोमस्यता३यिहायि। रयायिणा२म्। सखेन्द्रस्या३हा
११ १ ५ ४ ५
यि। दिवा३हो२३४। वा। दा५यिवोहाइ(३) ॥१†॥[३]

* ऊ० गा० ९प्र० १ख० ८सा०। † ऊ० गा० १५प्र० २ख० १सा०।

॥ हिरण्यस्त्वाष्ट्रीसाम ॥ सुता । सोमा३ । हा ३
हा । द्युमत्तमा२३४ः । सोमाः । इन्द्रा३ । हा३हा ।
यमन्दायिना२३४ः । पवि । त्रवा३ । हा३हा । तोअ
क्षारा२३४न् । देवान् । गच्छा३ । हा३हा । तुवो३
हो२३४ । वा । सा५दो६हायि ॥(१) इन्दुः । इन्द्रा
३ । हा३हा । यपवाता२३४यि । इति । देवा३ । हा
३हा । सोअब्रूवा२३४न् । वाचः । पता३यिः । हा३
हायि । मखस्याता२३४यि । विश्व । स्येशा३ । हा३
हा । नओ३हो२३४ । वा । जा५सो६हायि ॥(२) स
ह । स्रधा३ । हा३हा । रःपवाता२३४यि । समु ।
द्रोवा३ । हा३हा । चमोङ्खाया२३४ः । सोमः । पता
३यि । हा३हायि । रयायिणा२३४म् । सखे । इन्द्रस्या

Digitized by Google

३। हाउहायि। दिवा३हो२३४। वा। दा५यिषो६
हायि(३) ॥ २ * ॥ [४]

॥ ऊर्द्ध्वत्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमधुमत्तमाः। सोमा
२३इन्द्रा२। यमा३४५। दी२३४नाः। पवित्रवन्तोअ
क्षरा२३४न्। देवान्गच्छा। तुवोमा२३दा ३ ४ ३ः॥(१)
इन्दुरिन्द्रायपवतायि। आयिता२यिदेवा२। सोआ३४
५। ब्रू२३४वान्। वाचस्पतिर्मखस्यता२३४५यि। वि
श्वस्येशा। नओजा२३सा३४३ः॥(२) सहस्रधारःपवता
यि। सामू२द्रोवा२। चमा३४५यि। खा२३४याः। सो
मस्यतीरयीणा२म्। सखेन्द्रस्या। दिवेदा२३यिवा३५३
यि। ओ२३४५ई(३)॥ २ † ॥ [७]

॥ साध्रम् ॥ सुतासो३सा१धुमत्तमाः। सोमाइन्द्रा२।

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० २गा०। † ऊ० गा० १६प्र० १ख० १गा०।

३ २ ३ ५ २ १ २ र २ १ १ १ १ १
यमा३४५। दी२३४नाः। पवित्रवन्तोअक्षरा२३४५न्।
१ २ ३ ५ १ २ ३ ५ ४
दायिवाओ२३४५वा। गाच्छाओ२३४वा। तुवो५मदाः॥(१)
५ र ४ऽ ५ ५ ५ २ १ २र १ २र १
इन्दुरा३यिन्द्रायपवतायि। इतायिदेवा२। सोम्आ३४५।
२ ५ २र १ १ २ १ १ १ १ १ २
व्र२३४वान्। वाचस्पतिर्मखस्यता२३४५यि। वायिश्वा
२ ५ १ २ ३ ५ ४
ओ२३४वा। स्यायिषाओ२३४वा। नवो ५ जसाः॥(२)
५ २ ४ऽ ५ ४ ५ २ १ २र १ २ १
सहस्रा३धारःपवतायि। समुद्रोवा२। चमा २ ३ ४ ५ यि।
३ ५ १र २ १ र २ ३र १ २ ३
खा२३४याः। सोमस्पतीरयिणा१म्। साखाओ २ ३ ४
५ १ २ ३ ५ ४ ४
वा। द्रास्याओ२३४वा। दिवे५दिवायि। द्यो ५ इ।
डा (३)॥ १२ *॥ [८]

३२ २ ४ ५ २
॥ श्यावाश्वम्॥ सुता३१। सो३माऽ। धुम। ता३
४ ५ १ र र २ १
म। एहिया। सो। माइन्द्राया। म। दिना२ः।
१र १ २ ४ ५ १र
एहिया२। पवित्रवान्तो३आ३। चा२३४रान्। ऐहा

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० १२सा०।

Digitized by Google

१र २र १ २ ४ २
२यि। एहिया२। देवान्गाच्छान्तू३वो३। मा३४५दो६

५ १ २ २ ४5 ५ २ ४र
हायि॥(१) इन्दू३१:। आ३यिन्द्रा। यप। वा३ते।

५ १ २र २ १ १र
एहिया। आयि। तिदेवासो। अ। ब्रूवा२न्। ए

२ १ २ ४ ५ १र
हिया२। वाचस्पतायिम्मा३खा३। स्या२३४तायि। ऐ

१र १र २ ४ २
हा२यि। एहिया२। विश्वस्ये शाना३ओ३। जा३४५

५ १ १ २ ४5 ५ २ ४र
सो६हायि॥(२) सखा३१। स्वा३धा। र:पा। वा३ते।

५ १ २ २ १र १ १र
एहिया। साम्। उद्रोवाचाम्। ई। खया२:। ए

२ १ २ ४ ५ १र
हिया२। सोमस्याती३रा३। या२३४यिणाम्। ऐहा

१र २ १ २ ४ २
२यि। एहिया२। सखेद्र स्यादा३यिव३। दा३४५यि

५
वो६हायि(३)॥ १२ *॥ [९]

२ १र २र १ २ १ २
॥ महाविष्टम्भम्॥ सुतासोमोहायि। धुमत्तमोवा।

१ २ १ २ १ २ १ २ २ १
सोमाइन्द्रा। यमान्दा१यिना२३:। होवा३हायि। पवित्र

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० १२गा०।

२　२१ २　१ २ १　१२ २
व । तोश्राचा१रा२३न् । होवा३ हायि । देवान्गा१

१२ २ १　२　५२ २
च्छा२३ । होवा३हा । तुवः । मा२दा२३४औहोवा ॥(१)

१ २१　२ १२　१　१२२　१२ २
इन्दुरिन्द्रोवा । यपवतोवा । मायितिदेवा । सोमाय्र

१२ २　२ १　२　१ २
१वा२३न् । होवा३हायि । वाचस्पतिः । मखास्या१

१२ २　१ २　१२
ता२३यि । होवा३हायि । विश्वास्ये१शा२३ । होवा३

२　१२　२　५२२　१ २१
हा । नभो । जा२सा२३४औहोवा ॥(२) सहस्रधोवा ।

२ १२　१ १२२　१ २　१
रःपवतोवा । सामुद्रोवा । चमायिक्ता१या२३ः । हो

२ २　१२　२ ५२ २　२
वा३हायि । दिजे । दा२यवा२३४औहोवा । दी२३४

५
श्राः(३) ॥ ११* ॥ [१०] १५

अथ तृतीयतृचे†—प्रथमा ।

२११२ १२
पवित्रन्ते विततम्ब्रह्मणस्पते

२१　१२ २१२　२१२
प्रभुर्गात्राणिपर्य्येषिविश्वतः ।

---

* ऊ० गा० ११०प्र० २ ख० ११सा० ।　　† 'चरित्र' साम'—इति वि० ।

१ २ १ २उ २ १ २
अतप्ततनूर्नतदामोअश्नुते

२ २ २ १ १२ २ १ २र
श्टतासइद्वहन्तःसन्तदाशत ॥ १* ॥

हे "ब्रह्मणस्पते" मन्त्रस्य स्वामिन् सोम! "ते" "पवित्रं" शोधकमङ्गं "विततं" सर्वत्र विस्तृतम्। सः "प्रभुः" प्रभविता त्वं "गात्राणि" पातुरङ्गानि "पर्येषि" परिगच्छसि "विश्वतः" सर्वतस्तव तत् पवित्रम् "अतप्ततनूः" पयोव्रतादिना असन्तप्तगात्रः "आमः" अपरिपक्वः "न अश्नुते" न व्याप्नोति। "शृतासः इत्" "शृताएव" परिपक्वाएव "वहन्तः" यागं निर्वहन्तः "तत्" पवित्रम् "समाशत" व्याप्नुवन्ति॥

"सन्तदाशत"--"तत्समाशत"—इति पाठौ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ २ २ ३ १ २ २ २ २
तपोष्पवित्रं विततन्दिवस्पदे

१ २ २ ३ २क २र
र्च्चन्तोअस्यतन्तवोव्यस्थिरन्।

* ऋ० आ० ६, २, २, १२ (२भा० १९८ पृ०) = ऐ० ब्रा० १, ११=ऋ० वे० ७, ३, ८, १।

Digitized by Google

१ २   ३ १ २ ३ १ २
अवन्त्यस्यपवितारमाशवो

३ २ ३ १   २र   ३ १ २
दिवःपृष्ठमधिरोहन्तितेजसा ॥ २ * ॥

"तपोः" † शत्रूणां तापकस्य सोमस्य "पवित्र" शोधकमङ्ग "दिवस्पदे" द्युलोकस्योत्थिते स्थाने "विततं" विस्तृतम् ["तृतीयस्यामितो दिवि सोम आसीत्"—इति ब्राह्मणम्] "अस्य" "तन्तवः" अंशवः ‡ "अर्चन्तः" दीप्यमानाः "व्यस्थिरन्" विविधं तिष्ठन्ति पृथिव्यां हविर्द्धाने वा "अस्य" सोमस्य "आशवः" शीघ्रगामिनः रसाः "पवितारं" पावयितारं यजमानम् "अवन्ति" रक्षन्ति होमद्वारा पश्चाद्धुता "दिवः" द्युलोकस्य "पृष्ठ" पृष्ठभागम् उन्नतदेशम् "तेजसा" स्वप्रकाशेन सार्द्धं "अधिरोहन्ति" आरोहणं कुर्वन्ति ॥

"अर्चन्तः"-"शोचन्तः"—इति पाठौ, "अधिरोहन्तितेजसा"-"अधितिष्ठन्तिचेतसा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ३, ८, २ ।

† 'हे तपोः'—इति वि० ।

‡ 'अस्य दशापवित्रस्य तन्तवः'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ २ १ २ १ १ २ २ १ २
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय

२ १ २ २ १ १ १ २
उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः ।

२ १ २ २ १ २
मायाविनो ममिरे अस्य मायया

२ १ २ १ २ ३ २ २ १ २
नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥ ३ * ॥ १६

"उषसः" सम्बन्धि "पृश्निः" आदित्यः ["पृश्निरादित्यो भवति प्राश्नुत एनं वर्णः"—इति निरुक्तम् (२, १४)] "अग्रियः" मुख्यः सोऽयं "अरूरुचत्" रोचयति । स "उक्षा" जलस्य सेक्ता "भुवनेषु" भूतजातेषु "मिमेति" मिनोति उदकं प्रक्षिपतीत्यर्थः । "वाजयुः" † तेषामन्नमिच्छन् "मायाविनः" माया प्रज्ञा तद्वन्तः देवा "अस्य" सोमस्य "मायया" प्रज्ञया "ममिरे" निर्मितवन्तः, सोमस्यैकैकांशपानबला अग्न्यादयः स्व-स्व-व्यापारेण जगत् सृजन्तीत्यर्थः । तथा "अस्य" मायया "नृचक्षसः" नृणां द्रष्टारः "पितरः" पालका देवाः अङ्गिरसः पितरो वा "गर्भम्" "आदधुः" धारयन्ति ओषधीषु च । अत्र सूर्य्यात्मकः सोमः स्तूयते । सूर्य्यरश्म्यनुगमाधीन-

* ऋ० वे० ७, ३, ८, ३ ।

† 'वाजयुः—वाजमन्नं तदिच्छुः अथवा वाजयुः वाजप्रदः अथवा वाजयुः वेगवान्'—इति वि० ।

Digitized by Google

वर्द्धनाचन्द्रस्य अयमुषसः पृश्निः सविता अरुरुचत् रोचते रोचयति वासवं श्रिष्टं समानं तत्सम्बन्धिनः नृचक्षसः नृणां द्रष्टारः पितरो जगद्रक्षका रश्मयो गर्भमादधुः वृष्टार्थम् ॥

"मिमेतिभुवनेषु"-"विभर्त्तिभुवनानि"—इति पाठौ ॥३॥ १६

॥ स्वारसाम ॥ पवौहोवा। चन्तं विततंत्रा। ह्मणस्पाता२यि। प्रभुर्गात्राणिपरियायि। षिविश्वाता२ ३ः। आता३म्नाता। नूर्न्नतार२३४दा। हौ। मोआम्नू२३४तायि। होइयि। आर्त्ता३साईत्। वाह्वन्तोर२३४ःसा। हौ। तदा३शा५ताई५६ ॥(१) तपौहोवा। पवित्रं विततम्। दिवस्पादा२यि। अर्चन्तोअस्यतन्तवो। वियस्थायिरा२३न्। आवा३न्तीया। स्यापावी२ ३ ४ ता। हौ। रमोत्ता२३४वाः। होइयि। दायिवाः३पार्ष्ठाम्। आधोरो२३४हा। हौ। तिता३यिजा५सा ६ ५ ६ ॥(२) अरौहोवा। रुचदुषसःपा। श्निरग्रायाय२ः। उक्षामि

र २ र १ १ २ ४ ५ २
मेतिभुवनायि । षुवाजायू२३: । मायाइवायिनो । मा
२ ५ २ ३ २ २ ५ २ १
मौरे२३४मा । हो । स्यमाया२३४या । होइयि । ना
२ ४ ५ २ २ ५ २ २ २ ४
र्चाश्चासा: । पायितारो२३४गा । हो । भमाइदा५धू
६५६:(३) ॥ १ * ॥ [१]

२ १ र २ १
॥ कावम्† ॥ पवोवा । त्रन्तेवितताम्ब्रा । ह्मणस्या ।
१ र र २ १
ता२यि । प्रभुर्ग्गात्राणिपरियायि । षिविस्वाता२: ।
१ र र १ १ २ ४ ५
अतप्ततनूर्न्नतदा । मोत्रश्न ता२३यि । शार्त्ताइसाईत् ।
२ १ १ २ ४ २ १
वहन्ता:सा२३म् । तादा३आ५ूता६५६ ॥(१) तपोवा ।
२ १ १ र
पवित्त्रंवितताम् । दिवस्पादा२यि । अर्च्चन्तोअस्यतन्त
२ १ १ २ र १
वो । वियस्थायिरा२न् । अवन्त्यस्यपविता । रमाआ
१ २ ४ ५ २ र २
वा२३: । दायिवाइ:पार्ष्ठाम् । अधिरोहा२३ तायि
र ५ र २ २
ता३यिजा५ूसा६५६ ॥(२) अरोवा । रुचदुषस:पा । श्नि

* ऊ० गा० ७प्र० २ख० १सा० ।

१ १र र २र१

र्य्यायाऽ२ः । उत्वामिमेतिभुवनायि । षुवाजाय्ऽ२ः ।

१रर र र रर१ १२ ४५

मायाविनोममिरेश्चा । स्यमायायार३ । नार्च्चा३त्वासाः ।

२१ १२ ४

पितरोगार२३ । भामा३दा५धू६५६ः(३) ॥ ३ * ॥ [२]

४२ ४ २ ४५

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवाऽ५यित्रम् । ता३यिवा३यिततंब्रा ।

१ र रर २१२२

ह्माणस्पतेप्रभुर्गात्राणि । परियायि । षी३वायिस्वा३ताः ।

१ १र रर र २१

अता२प्ततनूर्नतदामोअश्नु । तेशा२३र्त्ता । ऊम्मायि ।

२२ १ ३२ १२ १र

सा३ई३त् । वाहन्तःसन्तइा२थनाउ ॥(१) ताता । पोष्य

र र २२

वित्रं विततन्दिवस्पदे र्च्चन्तो अस्यतन्तवो । वा३यास्था३यि

र १ १ रर र २

रान् । अवा२न्त्यस्यपवितारमाश । वोदा २ ३ यिवाः ।

१ २२ २ऽर ३२

ऊम्मायि । पा३ष्ठीम् । आधिरोहन्तिता२यिजसाउ ॥(२)

१२ १र र र

साआ । रूरुचदुषसःपृश्निरग्रियउत्वामिमेतिभुवनायि ।

२१२२ १र १र र र र

षू३वाजा३यूः । माया२विनोममिरेअस्यमाय् । याना२

* उ० गा० १२प्र० २ख० २सा० ।

Digitized by Google

२ १ १ २ १ २ १ २ १
३र्वा। ऊम्मायि। स्वा३सा:। पायितरोगर्भमा२दधा

२ १ १ १
उ। वा३४५(३)॥ १ * ॥ [३] १६

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे ‡—

प्रथमसूक्त-प्रगाथे—

१ २२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्रमꣳहिष्ठायगायतऋताव्ने बृहतेशुक्रशोचिषे।

३ १ २ ३ १ २
उपस्तुतासोअग्नये ॥ १ ¶ ॥

हे "उपस्तुतासः" उपस्तोतारः! यूयं "मंहिष्ठाय" दातृतमाय "ऋताव्ने" ऋतवते यज्ञवते वा "बृहते" महते "शुक्रशोचिषे" दीप्ततेजसे "अग्नये" "प्र गायत" स्तोत्रं पठत ॥ १ ॥

---

* उ० आ० १५प्र० १ख० १सा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'इदानीमुक्थानि भवन्ति'—इति वि०।

¶ छ० आ० २, १, २, १ (१ आ० १७४ प०) = ऋ० वे० ६, ७, १४, १।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३र ३ २२ १ २ ३१ २
आवꣳसतेमघवावीरवद्यशःसमिद्धोद्युम्न्याहुतः।
३ १ २ ३ १ ३र २ २ ३ २ ३ १ २
कुविन्नोअस्यसुमतिर्भवीयस्यच्छवाजेभिरागमत्॥ २* ॥१७

"मघवा" धनवान् "द्युम्नी" अन्नवान् यशस्वी वा। [तथाच यास्कः—"द्युम्नं द्योततेर्यशोवान्नं वा (५, ५)"—इति] "समिद्धः" सम्यग् दीप्तः "आहुतः" आभिमुख्येन हुतः अग्निः "वीरवत्" पुत्रवत् "यशः" यशस्करम् अन्नम् "आवंसते" यजमानेभ्य आ प्रयच्छति तस्य "अस्य" अग्नेः "भवीयसी" अस्मासु अतिशयेन भवितुं योग्या "सुमतिः" अनुग्रह-बुद्धिः "नः" अस्मान् "अच्छ" प्रति "वाजेभिः" अन्नैः सह "कुवित्" बहु-सलिलम् † [कुविदिति बहु-नाम (निघ० ३, १, १२)] "आगमत्" आगच्छतु॥

"भवीयसी"-"नवीयसी"—इति पाठौ॥ २ ॥ १७

५ र ४र ५र २
॥ प्रमꣳहिष्ठीयम्॥ प्रमꣳहाइयिष्ठायगायता। ऋ
१ १ र २ ४ ५ २ १
तावे २। बृहतेशूक्राइशोइ। चा२३४यिषायि। उपा

---

* ऋ० वे० ६, ७, १४, ४।

† 'कुवित्—कदाचन'—इति वि०।

२ २ १ २ ४ २ ५
औ३हो। स्तोतासो३आ३। गा३४५यो ६ हायि॥(१)

५ २ ४२ २ ५ १२ १ १ २
उपस्त्व३तासोअग्नयायि। आव७साता२यि। मघवाना

२ ४ ५ २ १ २ २ १ २
यिरा३वा३त्। या२३३साः। समाऔ३हो। धोद्यूम्नी

४ २ ५ ५ २ ४ ५२
३या३। इ३४५तो६हायि॥(२) समिद्धो३यग्नीयाहुताः।

२ १ १ २ ४ ५
कुवायिन्नो२। अस्यसुमतातिर्भा३वी३। या२३४सायि।

२ १ २ २ १२ १ ४ २ ५
अच्छाऔ३हो। वाजायिभौ३रा३। गा३४५मो६हायि(३)॥

॥ ५ *॥ [१] १७

अथ द्वितीयदृचे†—प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
तन्ते मदङ्गृणीमसिवृषणम्पृत्सुसासहिम्।

३ १ २ ३ १ २
उलोककृत्नुमद्रिवोहरिश्रियम्॥ १ ‡॥

हे "अद्रिवः" वज्रवन् इन्द्र! "ते" त्वदीयं तं "मदं" सोम-पान-जनितं हर्षं "गृणीमसि" गृणीमः प्रशंसामः ['गॄ शब्दे'

* ऊ० गा० १प्र० २ख० ६सा०।

† 'हारिवर्णं साम'—इति वि०।

‡ छ० आ० ४, १, ५, २ (१भा० ७८८ पृ०) = ऋ० वे० ६, १, १७, ४।

क्यादिः "पूर्वादीनां क्रस्वः (७, ४, ८०)", "इदन्तोमसि (७, १, ४६)"—इति मसङ्गागमः]। कीदृशम्? "वृषणं" वर्षितारं कामानां "पृत्सु" पृतनासु सङ्ग्रामेषु "सासहिं" शत्रूणाम् अभिभवितारं "लोककृत्नु" लोकस्य स्थानस्य कर्त्तारं हरिश्रियं "हरिभ्याम्" अश्वाभ्यां "अययणीयं" सेव्यम् ["उ"शब्द एषः समुच्चये पादपूरणे वा]॥

"पृत्सु"-"पृत्सु"—इति पाठौ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
येनज्योतीᳪंष्यायवेमनवेमनवेचविवेदिथ।

३ २ ३ १ २ १ ३ १ २
मन्दानोअस्यबर्हिषोविराजसि॥ २ *॥

हे इन्द्र! "येन" आत्मीयेन मदेन "आयवे" और्वशेयाय † "मनवे" विवस्वतः पुत्राय च "ज्योतींषि" सूर्यादीनि वृत्रादिभिरावृतानि तदा तेन "विवेदिथ" अलम्भय प्रज्ञापितवान् प्रकाशितवानसीत्यर्थः; तेन मदेन "मन्दानः" मोदमानस्त्वम् "अस्य बर्हिषः" वृद्धस्य यज्ञस्य "विराजसि" विशेषेण दीप्यसे [यद्वा अस्येति तृतीयार्थे षष्ठी, अनेन बर्हिषा वृद्धेन मदेन हृष्यन् विराजसि विशेषेण दीप्यसे॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ६, १, १०, ३।

† 'आयवे—यजमानाय'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

२ ३ १ ३ १ १ ३२ ३१२
तदद्याचित्तउक्थिनोनुष्टुवन्तिपूर्वथा ॥

१२ ३१२ ३१२
वृषपत्नीरयोजयादिवेदिवे ॥ ३ * ॥ १८

हे इन्द्र ! "ते" त्वदीयं "तत्" प्रसिद्धं बलं "अद्याचित्" † अद्यापि ‡ "पूर्वथा" ¶ पूर्वस्मिन् काले इव "उक्थिनः" शस्त्रिणः स्तोतारः "अनुष्टुवन्ति" क्रमेण प्रशंसन्ति । स त्वं "वृषपत्नीः" वृषा वर्षन्तः पर्जन्याः पतिर्यासां तादृशीः "अपः" "दिवेदिवे" प्रतिदिवसं "जय" § स्वायत्तं कुरु ॥ ३ ॥ १८

१ २ २ १ २
॥ हारिवर्णम् ॥ तन्तेमदा २गृणीमसायि । चार्षणं

१ २ २ १ २ २ १ १ २
प । त्तुसासा३हो३म् । होवा३हायि । उलोका३कृ३ ।

१ २ २ १ २ ५र २ २
होवा३हा । त्तुम । द्रा२यिवा२३४औहोवा । हरि

* ऋ० वे० ६, १, १८, १ ।

† "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति वि० ।

‡ 'चित्—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

¶ "दिक्शब्देभ्यः (५, ३, २७)"—इति था ।

§ मन्त्रे अथेति दीर्घान्तः, तत्र "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः ।

Digitized by Google

१ ११११ १र र र१
श्रियार२३४५म् ॥(१) येनज्योता२यिरुषिभ्रापवायि। मा
२र १ २ २ १२ १ १ २
नवेच। विवायिदी३था३। होवा३हायि। मन्दानो३
२ १२ २ १ २ ५र र
था३। होवा३हा। मयव। हा२यिषा२३४औहोवा।
२र१ ११११ १ र १
विराजसार२३४५यि ॥(२) तदद्याचा२यित्तउक्थिना:।
२ २१ २ १२ २ १ १२
आनुष्टुव। तिपूर्वा३था३। होवा३हायि। वृषापालि३:।
१२ २ १ २ ५रर २र
होवा३हायि। अप:। जा२या२३४औहोवा। दिवे
२ ११११
दिवा२३४५यि(३) ॥६*॥ [१]

२र रर१२ २ ५ २
तन्तेमदाऔहोहायि। गार्णायिमा२३४सायि। वृ
१ ५ १र र२ १र४र५
षाणा२३४ऽहायि। पृत्सुसासहिमुलोका३४। औहोवा।
१२ ५ २२ ५ २१२ १० २
हूहा२३४हायि। उऊवा२३४कृ। त्नुमद्रि। वोहरिश्रा
१र४र५ १२ ५ ३र२
३४। औहोवा। हूहा२३४हायि। औहो३१२३४।
५र ५ १रर र र१२
याम्। एहियाद्दहा ॥(१) येनज्योता। औहोहायि।

० ऊ० गा० १प्र० १ख० ६गा०।

२ ५ २ १ ५ १ र
घोआया२३४वायि। मनावा२३४ई हायि। चविवेदियम

र १ ३र ४र ५ १ ३ ५ २ ३
न्दाना३४। औहोवा। हुहा२३४हायि। उङ्वा२३४

५ २ १ २ १ ० र २ ३र ४र ५ १ २
वा। स्ववर्हि। घोविराजा३४। औहोवा। हुहा२३४

५ ३र २ ५र ५
हायि। औहो३१२३४। सायि। । एहियाई हा॥(२)

२ रर र १ २ ३ ५ ११
तद्याचाऔहोहायि। ताउच्छा२३४ईना:। अनूष्ट२३

५ १ र र २ ३र ४र५ १ ३ ५
४हा। वन्तिपूर्वथावृषपा३४। औहोवा। हुहा२३४हा

२ ३ ५ २१र२ १ ०र२ ३र
यि। उङ्वा२३४नी:। अपोज। यादिवेदा३४। औ

४र ५ १ २ ५ ३र २ ५र
होवा। हुहा२३४हायि। औहो३१२३४। वायि। ए

५
हियाई हा(३)॥ १३ † ॥ [२]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ सौभरम्॥ तन्ता३यिमा३हङ्गृणीमसोवा। वृषणं

र १ ० १ ३ ५ १
पृक्षुसासा २हायिमुलो२३। हो। का२३४कु। त्नुमद्रि

५ २ १ २ ५र र ५र ४
व:। हरा३यिहा३यि। आ२या२३४औहोवा॥(१) येना

० ऋ० मा० १३प्र० १चा० १३वा०।

२ ४ ५र ४ ५ १ र र १ ०
३ज्योऽ३तीꣳषिआयवोवा। मनवेचविवेदा२यिथामन्दा
१ ३ ५ १ ऽ २
२३। हो। नो२३४आ। स्वर्वहिंषः। विरा३हा३यि।
१ ३ ५र र ५ ४ २ ४ ५ ४ ५
जा२सा२३४औहोवा॥(२) तदा३द्या३चित्तउक्थिने।वा।
१ र १ ० १ ३ ५ १
अनुष्टुवन्तिपूर्वा२थावृषा२३। हो। पा२३४नीः। अ
र र ऽ २ १ ३ ५र ० २
पोजया। दिवे३हा३यि। दा२यिवा२३४औहोवा। ऊ
१ १ १ १
२३४५(३)॥ १८ *॥ १८

अथ तृतीयतृचे† —प्रथमा।

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
श्रुधीहवन्तिरश्च्याइन्द्रयस्त्वासपर्यति।
३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
सुवीर्यस्यगोमतोरायस्पूर्द्धिमहाꣳअसि॥ १‡॥

हे इन्द्र! यः "त्वा" त्वां "सपर्यति" [सपरशब्दः कण्ड्वादिः¶ हविर्भिः परिचरति। तादृशस्य "तिरश्च्याः"—एतन्नामकस्य ऋषेर्मम "हवं" स्तुतिभिस्त्वद्विषयमाह्वानं "श्रुधि" शृणु।

* उ० गा० १८प्र० १ख० १८सा०।

† 'मैरवं तृतीयमुक्थ्यम्'—इति वि०।

‡ ऋ० सा० ४, २, १, ५ (७०० पृ०) = ऋ० वे० ६, ६, २०, ५।

¶ अतः "कण्ड्वादिभ्यो यक् (३, १, २७)"—इति यकि रूपमिति भावः।

Digitized by Google

श्रुत्वा च हे इन्द्र! त्वं "सुवीर्यस्य" शोभन-वीर्योपेतस्य [यद्वा, वीरे पुत्रे भवं वीर्यं, सुपुत्रवतः] "गोमतः" गवादि-पशुमतः "रायः" धनस्य दानेन अस्मान् "पूर्द्धि" पूरय। एतत्सामर्थ्यं त्वतइत्यतआह—त्वं "महान्" गुणाधिकः श्रेष्ठश्च "असि" भवसि खलु ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३१२ ३ १२३१ ३२
यस्तइन्द्रनवीयसीङ्गिरम्मन्द्रमजीजनत्।
३ १२ ३१२३ १ ३ १२३१२
चिकित्विन्मनसन्धियम्प्रत्नामृतस्यपिप्युषीम्॥ २ * ॥

हे "इन्द्र!" "यः" यजमानः "नवीयसीं" नवतरां † पुनःपुनः क्रियमाणतया "मन्द्रां" मदकरीं "गिरं" स्तुतिलक्षणां वाचं "ते" त्वदर्थम् "अजीजनत्" उदपीपदत् अकार्षीदित्यर्थः। तस्मै "स्तोत्रे" त्वं "प्रत्नां" पुरातनीम् ‡ "ऋतस्य" सत्यस्य¶ सम्बन्धि [यद्वा तृतीयार्थे षष्ठी (२, ३, ६३)] सत्येन "पिप्युषीं" प्रवृद्धां ["स्फायीओप्यायी (६, १, २८)"—इति प्यायतेः पी-भावः] तादृशः "चिकित्वित् मनसं" ['कित ज्ञाने' क्वसौ रूपम्, आकारस्येकारश्छान्दसः] चिकित्वांसि ज्ञानानि

---

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ६।

† 'नवीयसीं—नवतरां बहुपदवर्णस्तोत्रादारकयुक्ताम्'—इति वि०।

‡ 'ऋग्यजुःसामलक्षणाम्'—इति वि०।

¶ 'ऋतस्य पिप्युषीं—ऋतो यज्ञः अथवा ऋतमन्नम् अथवा ऋतः प्रजापतिः अथवा ऋतं सत्यं परं ब्रह्म, तस्य पिप्युषीं पोषणसमर्थाम्'—इति वि०।

सर्वेषां हृदयानि यथेति प्रभवद्भिरियमाणं यत्तव रक्षणं तत् सर्वेषां हृदयं प्रज्ञापयतीति । ततः अतीन्द्रियार्थदर्शिकं "धिय" त्वदीयं रक्षणाख्यं कर्म तस्मै कुरु ॥

"यस्तइन्द्र"-"इन्द्रयस्ते"—इति व्यत्ययेन पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २　३ १२　३ १ २ ३　१ ·२　३ २
तमुष्टवामयङ्गिरइन्द्रमुक्थयानिवावृधुः ।
३ १ २ ३ १　२　१ २
पुरूण्यस्यपौंस्यासिषासन्तोवनामहे ॥ ३ * ॥ १९

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः ॥

ऋषयः "तम्" परस्परमाहुतं पूर्वोक्तलक्षणम् "उ"—इत्यवधारणे तमेव "इन्द्रम्" "स्तवामः" स्तुतिभिः स्तुमः "यम्" इन्द्रं "गिरः" अस्माकं स्तुतयः "उक्थ्यानि" शस्त्राणि च "वावृधुः" प्रावर्धयत् तं स्तुमः; ततो वयम् "अस्य" इन्द्रस्य "पुरूणि" बहूनि "पौंस्याणि" वीर्याणि "सिषासन्तः" ['षण सम्भक्तौ' सनीडभावपक्षे आत्वे कृते रूपं. "सनोतेरनः (८, ३, १०८)"—इति सांहितिकं षत्वम्] तानि वीर्याणि सम्भक्तुमिच्छन्तः सन्तो "वनामहे" तमिन्द्रं स्तुतिभिः सम्भजामहे ॥ ३ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, २१, १ ।

५ र १ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १
॥ तैरश्च्यम् ॥ अधीहा३वन्तिरश्विया: । इन्द्रायत्वा ।

२ १ ७ १ ५र १ २ १ ५ १
सपर्य्यंता२३४यि । सुवी । रिया । स्या२३४गो । मा

१ २ २ १ ४
ता२: । रायास्पृर्द्धौ३ । हा३हायि । महा५ऽ६असौ ॥(१)

५ २ ४ ५ ४र ५ २ १ २ १ २ ३र
यस्त्वा३यिन्द्रनवीयसायिम् । गिराम्मन्द्राम् । अजौ

२ १ ५ २ १ २ ५ १
जना२३४त् । चिकि । त्विन्मा । ना२३४साम् । धाया

१ २ २ २ ४
२म् । प्रत्नामार्त्ता३ । हा३हा । स्यपा५यिप्पुषीम् ॥(२)

५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ २ १ २ ३र २ १
तमुष्टा३वामयङ्गिरा: । इन्द्रामुक्था । निवावृधू२३४: ।

५र २ १ २ ५ १ १ २
पुरू । णिया । स्या२३४पौ । साया२ । सिषासान्ता३: ।

२ २ ४ ४
हा३हायि । बना५मसायि । हो५ई । डा(३) ॥ ७ *॥ [१]

२ र र र १ २ २
॥ वारवन्तीयम् ॥ अधीहवाऔहोहायि । ताइरश्वा२३

५ २ र १ ५ १ र र
४याः । इन्द्रयत्वासपर्य्यातो२३४हायि । सुवीर्य्यस्यगो

* ऊ० गा० २प्र० २ख० ७सा०।

२ ३र४३ ५ १ २ ५ २ ३ ५
मा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उड्ढवा२३४ताः।

१र १ २र १ ७ र २ ३र ४र ५ १ २
रायस्पू। धायिमहा७मा३४। औहोवा। इहा२३४

५ ३र १ ५र ५ २
हायि। औहो३१२३४। सायि। एहियाइहा॥(१) य

र र १ २ २ ५ २
स्तइन्द्राऔहोहायि। नावीया२३४सायिम्। गिरम्भ

र र १ ५ १ १ ३र
न्द्रामजीजानो२३४हायि। चिकित्विन्मनसन्धा३४। औ

४र ५ १ २ ५ २ १ ५ २ १र १
होवा। इहा२३४हायि। उड्ढवा२३४याम्। प्रत्नाम्ट।

१ ७ १ ३र ४र ५ १ ३ ५ ३र २
तास्यपिप्यू३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो

५र ५ २ र र १ २
३१२३४। षीम्। एहियाइहा॥(२) तमुष्टवाऔहोहा

२ ५ १ र र १
यि। मायज्ञा२३४यिराः। इन्द्रमुक्थानिवावार्धो२ ३ ४

५ १ र र २ ३र ४र ५ १ ३
हायि। पुरूण्यस्यपौ७सा३४। औहोवा। इहा२३

५ २ ३ ५ २ १र २ १ ७ र १ ३र
४हायि उड्ढवा२३४या। सिषास। तोवनामा३४। औ

४र ५ १ २ ५ ३र १ ५र
होवा । इहा२३४हायि । औहो३१२३४ । हायि । ह
५ ४
हियाईहा । होपुई । डा(३) ॥ १४ * ॥ [२] १८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थोध्यायस्य

षष्ठः खण्डः † । ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।

पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-

श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तराग्रन्थे चतुर्थोऽध्यायः ‡ ॥

---

* ऊ० गा० १३प्र० १अ० १४गा० ।

† 'तृतीयश्च: समाप्त:' इति वि० ।

‡ द्वितीयश्च प्रपाठकः समाप्तः'—इति वि० मूल-पदकारादि-सम्मतश्चेति-भ्रम् ।

Digitized by Google

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्म्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम्॥ ५॥

॥ अथ पञ्चमाध्यायः आरभ्यते* ॥

तत्र,

प्रथमे खण्डे प्रतआश्विनीरिति† त्र्यचं प्रथमं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा—

२ ३ १ २   ३ १ २

प्रतआश्विनीःपवमानधेनवो

२ १ २   ३ १ २ ३ १ २

दिव्याअसृग्रन्पयसाधरीमणि।

१२   ३२ ३ १   २   ३

प्रान्तरिक्षात्स्थाविरीस्तेअसृक्षत

१ २ ३ १ २   ३ १ २

येत्वामृजन्त्यृषिषाणवेधसः॥ १ ‡॥

हे "पवमान" सोम! "ते" तव "आश्विनीः" व्याप्ताः ['अशू व्याप्तौ (स्वा० आ०)' तस्मादौणादिका विनिः, ततोऽण्, व्यत्ययेनाद्युदात्तः] "धेनवः" प्रीणयित्र्यः "दिव्याः" दिवि भवाः

---

* 'अथ चतुर्थस्याध्यायस्यारभ्यते द्वितीयश्चिरार्धः। प्रगाथच्छन्दाः प्रथमश्चिरार्धः। अथोत्तरस्य छन्दांसि चत्वारि जगत्यः प्रतिपदः, जगती-स्थाने त्रिष्टुभः, त्रिष्टुभां मा ध्वजः'—इति वि०।

† "एषा चतुर्थस्य प्रतिपत्"—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ३, १९, ४।

दिव: पतन्त्यो धारा: "पयसा" युक्ता: * "धरीमणि" धारके द्रोणकलशे† "प्र असृग्रन्" गच्छन्ति "ये" "वेधस:" विधातार: ऋत्विज: हे सोम! "ऋषिषाण" ऋषिभि: सम्भक्तत्वात् "त्वा" त्वाम् "मृजन्ति" अभिषुण्वन्ति, "ते" वेधस: "स्थाविरी:" स्थविरा धारा"‡ "अन्तरिक्षात्" सकाशात् "प्र असृक्षत" पात्रं प्रति सृजन्ति ॥

"धेनवे"—"धीजुवो"—इति पाठौ, "प्रान्तरिक्षात्स्थाविरीस्तेअसृक्षत"—"प्रातऋ षय:स्थाविरीरसृक्षत"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १२३१२ ३ १ २
उभयत:पवमानस्यरश्मयो

३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
ध्रुवस्यसत:परियन्तिकेतव: ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३
यदीपवित्रे अधिमृज्यतेहरि:

२ ३ १र २र ३ १ २
सत्तानियोनौकलशेषुसीदति ॥ २ ¶ ॥

"पवमानस्य" पूयमानस्य "ध्रुवस्य" स्वयमविचलितस्य "सत:" विद्यमानस्य सोमस्य "केतव:" प्रज्ञापका रश्मय: "उभयत:" इतश्चामुतश्च "परि यन्ति" परितो गच्छन्ति अभिषव-

* 'पयसा—तृतीयैकवचनमिदं प्रथमाबहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् पयांसि'—इति वि० ।

† 'धरीमणि—यज्ञ'—इति वि० ।

‡ 'स्थाविरी: स्थिरा: स्थूला वा स्थविरीर्वा गाव: रश्मय:'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, ३, १३, १ ।

Digitized by Google

समये एवं भवति । "यदि" यदा "पवित्रे"* दशापवित्रे "हरिः" हरितवर्णोऽयं सोमः "अधि मृज्यते" तदानीं "सत्ता" सदनशीलोऽयं "योनौ"† योनिषु स्थानेषु "कलशेषु" द्रोणकलशादिषु पात्रेषु "निषीदति" निषण्णो भवति ॥

"योनौ"—"योना"—इति च पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २　　३ १ २
विश्वाधामानिविश्वचक्षऋभ्वसः

३ १ २ ३ १र २र　　३ १ २
प्रभोष्टसतःपरियन्तिकेतवः ।

३　१ २　　३ १ २ ३
व्यानशीपवसेसोमधर्मणा

२ ३ १ २ ३ १ २
पतिर्विश्वस्यभुवनस्यराजसि ॥ ३ ‡ ॥ १

हे "विश्वचक्षः" सर्वस्य द्रष्टः ! सोम ! "प्रभोः" परिवृढस्य "सतः" "ते" तव "ऋभ्वसः" "[ऋभ्वा"—इति महन्नामसु¶ महान्तः "केतवः" रश्मयः "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि

* 'पवित्रे अधि—सप्तम्येक-वचनमिदं पञ्चम्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, पवित्रादधि'—इति वि० ।

† 'नितरां योनिर्नियोनिः, अथवा नीचैः स्थिता पवित्रस्य योनिर्नियोनिः, तस्मिन् नियोनौ'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ३, ११, ५ ।

¶ सायणमतेऽदःपदं निघण्टौ महन्नामसु (३, ३) पाठभेदेन पठ्यते । विवरणकारस्तु 'ऋभ्वसः—प्रभुत्वस्य'—इति व्याचष्टे ।

"धामानि" तेजः-स्थानानि देव-शरीराणि* "परियन्ति" परितो गच्छन्ति प्रकाशयन्तीत्यर्थः। हे "सोम!" "व्यानशी" व्यापनशीलस्त्वं "धर्मणा" धारकेण रसनिष्यन्देन "पवसे" पूयसे। किञ्च "विश्वस्य भुवनस्य" "पतिः" स्वामी त्वं "राजसि" ईश्वरो भवसि† ॥

"प्रभोष्टेसतःपरियन्ति"-"प्रभोस्तेसतःपरियन्ति"—इति पाठौ, "व्यानशी"-"व्यानशि"—इति, "धर्मणा"-"धर्मभिः" —इति च ॥ २ ॥ १

२ २ २र ५ १र ४ २र
॥ लौशाद्यम् ॥ प्रतश्राश्वि। नीःपवमार२३। मा३धे

२ ५ २ २र २ ५ १ ४ २र २ ५ २र
नवः। दिव्याश्वह। ग्रन्पयसा२३। धा३रीमणि। प्रा

२ ३ ५र १र र ४ २ २ ५ ३र २र २
न्तरिक्षात्। स्थाविरीक्ष्ते२३। श्रा३स्वत। येस्वाम्द

५ १ २ ४ २ १
जा। तिक्त्षिषा२३। पावा३यिधा५वाई५६ः॥(१) उभ

२ ५ १ र ४ २ २ ५ २ २ २ ५ १
यतः। पवमाना२३। स्था३रम्सयः। धृवस्व। तः

४ २र २ ५ २ २र २ ५ १र
परिया२३। ती३केतवः। यदीपवि। वेषधिमा२३।

---

* 'विश्वा धामानि—विश्वानि स्थानानि जन्मानि नामानि वा'—इति वि०।

† 'राजसि—दीप्यसे शोभसे वा'—इति वि०।

ज्याऽ३तेष्वरिः । सम्मानियो । नौकलश्चा२३४यि । पुसा३

यिदा५ता६५६यि ॥(२) विश्वाधामा । निविश्वचा २३ ।

श्वा३श्वभ्‌वसः । प्रभोष्टेस । तःपरिया२३ । तो३केतवः ।

वियानशो । पवसेसो२३ । मा३धर्मणा । पतिर्विश्वा ।

स्यभुवना२३ । स्वरा३जा५सा६५६यि(३) ॥ २ * ॥ [१]

अथ द्वितीयखण्डे—प्रथमा ।

पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रन्नतन्यतुम् ।

ज्योतिर्वैश्वानरंबृहत् ॥ १ † ॥

"पवमानः" पूयमानः सोमः "बृहत्" महत् "वैश्वानरं" वैश्वानराख्यं "ज्योतिः" तेजः "दिवः" द्युलोकस्य "चित्र" विचित्रं "तन्यतुं न" अशनिमिव "अजीजनत्" अजनयत् ॥ १ ॥

---

* ऊ० आ० ८प्र० १अ० २सा० ।

† ऋ० आ० ५, १, ५, ८ (२भा० १८ पृ०)=ऋ० वे० ७, १, ११, १ ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ ३ १ ३ १ २ ३ १ २

पवमानरसस्तवमदोराजन्नदुच्छुनः।

२ उ २

विवारमव्यमर्षति॥ २ * ॥

हे "राजन्" दीप्यमान! "पवमान" पूयमान! सोम! "तव" त्वदीयः "मदः" मदकरः "अदुच्छुनः"† रक्षोवर्जितः "रसः" "अव्यम्" अविमयं "वारं"‡ वालं दशापवित्रम् "वि अर्षति" अभिगच्छति॥

"पवमानरसस्तव"-"पवमानस्यते रसः"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ ३ १ ३ १ २ ३ २

पवमानस्यतेरसोदक्षोविराजतिद्युमान्।

२ ३ १ ३ २र ३ २

ज्योतिर्विश्वꣳस्वर्दृशे॥ ३ ¶ ॥ २

हे सोम! "पवमानस्य" "ते" त्वदीयः "रसः" "दक्षः" § "द्युमान्" दीप्तिमान्|| "विराजति" प्रकाशते**। न केवलं

---

* ऋ० वे० ७, १, २१, २।

† 'दुच्छुनः दुष्टजनः, न दुच्छुनः अदुच्छुनः'—इति वि०।

‡ 'विवारं—वि-अवारितं च, वारं=याचम्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ७, १, २१ ३।

§ 'दक्षः शीघ्रगामी, अथवा दक्षरवरक्रियायाः कर्म'—इति वि०।

|| 'द्युमान् द्युलोकवान्'—इति वि०।

** 'विविधं दीप्यते शोभते वा'—इति वि०।

Digitized by Google

स्वयमेव प्रकाशते किन्तु "विश्वं" व्याप्तं *"स्वः" सर्वं "ज्योतिः" तेजः "दृशे" द्रष्टुं करोतीति शेषः†॥

"पवमानस्यतेरसः"-"पवमानरसस्तव"—इति पाठौ॥३॥२

॥सञ्हितम्॥ पवमानोऽअ। जाऽ२यिजनात्। दिवा २ः। चार३यित्राम्। नता२न्याद्धम्। ज्यो२३तीः। वा२यिश्वा। नरा२३म्। हाउवा३। ब२३४हात्॥(१) पवमानर। सा२स्तवा। मदो२। रा२३जान्। अदू२च्छूनाः। वा२३यिवा। रा२मा। व्यमा२३। हाउवा३। षा२३४तो॥(२) पवमानस्य। ता२यिरसाः। दक्षो२। वार३यिरा। जता२यिद्युमान्। ज्यो२३तीः। वा२यिश्वाम्। सुवा२३। हाउवा३। ह२३४शे(३)॥ १२ ‡॥ [१]

---

* 'विश्वं सर्वम्'—इति वि०।

† 'दृशे—सर्वलोकस्य गमनाय ; न केवलं सर्वलोकस्य, सर्वस्य जगतो दर्शनतायेत्यर्थः'—इति वि०।

‡ ऊ० गा० १२प्र० १ख० १२सा०।

२ ३ १ २   १ ३ १२

॥ जराबोधीयम् ॥ पवमानोवा । घोजीजनात् ।

२ १   १   १   ३   २

दिवाश्चार२३यिचाम् । ननन्यातूम् । ज्योतायिर्वा१ वि

४ऽ   ५   २ १   २ ३ १ २

श्वार२३ना । रम् । बृहो३४५ई । डा ॥(१) पवमानोवा ।

१   २ १   २ १   २   १   २

रासस्तवा । मदोरार२३जान् । अदुच्छ्‌ नाः । विवारा

४ऽ   ५   २ २   २ ३ १

१मार२३व्याम् । घ । पतो३४५ई । डा ॥(२) पवमानो

२   १ ३२१   २१   २   २

वा । स्यातेरसाः । दचोवार२३यिरा । अतिद्यूमान् ।

३   २   ४ऽ   ५   २२

ज्योतायिर्वा १ यिश्वा २ ३९सूऽ । वः । हमो ३ ४ ५ ई ।

डा(३) ॥ ८ * ॥ [२]

५ २ ४२ ५२   १

॥ औपगवोत्तरम् ॥ पवमा३नोअजीजनात । दिवश्चि

२३   १

त्रन्नतन्यतूम् । ज्योती२ । षौ२ । ऊवा २ ३ यि ।

२   ५   २   १ २   ५ २ ४ ५   १ ९

वा३४यिश्वा । नरम्बृहात ॥(१) पवमा३नरसस्तवा । मदो

३   २   १   २

राजमदुच्छ्‌ नाः । विवौ२ । षौ२ । ऊवा२३यि । रा

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १८वा० ।

५　२　१ २　　　५ ५ ४ ५र　　१ र
३४मा । व्यमर्षातायि ॥(२) पवमा३नस्यते रसाः । दक्षो

र　　　२र　　　　१
विराजतिद्युमान् । ज्योती२ । षी२ । ऊवा२ ३ यि ।

२　५　　२ १ २　　र　　१　　२
वा३४यिश्वाम् । सुवर्दृशायि । ऐ । हा२ए२३ । हिया

५र र　　२　　१२　　१११२
३४औहोवा । ए३ । उपा३१२३४५(३) ॥ ८ * ॥ [३] २

अथ प्रयन्नावइति नवर्च्चं तृतीयं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा ।

१उ　३ १　२र　३ १ २ १ ३ १ २
प्रयन्नावोनभूर्णयस्त्वेषाअयासोअक्रतुः ।

१ २ २ २उ　३ १ २
घ्नन्तःकृष्णामपत्वचम् ॥ १ † ॥

"यत्" ये अभिषुताः सोमाः "गावः न" उदकानीव [तानि यथा तूर्णमधः पतन्ति तद्वत्; गाव एव वोपमीयन्ते, ता यथा स्वं गोष्ठं प्रत्याशु गच्छन्ति तद्वत्; अथवा गावः स्तुतिवचनाः यथा स्तुत्यं प्रति क्षिप्रं प्राप्नुवन्ति तद्वत्], "भूर्णयः" क्षिप्राः, "त्वेषाः" दीप्ताः "अयासः" अयाः गमनशीलाः, "कृष्णं" कृष्ण-वर्णम् "अपत्वचम्" अपकृष्टां त्वचं "घ्नन्तः" विनाशयन्तः, ईदृग्भूता ये सोमाः "प्र अक्रमुः" तां स्तुम इति शेषः ॥

"यत्"-'ये'—इति पाठो ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० ८गा० ।

† ऋ० शा० ९, १, १, ५ (१भा० ४७पृ०)=ऋ० वे० ९, ८, २१, १

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ १२ ३१ ३१२३ क २र
सुवितस्यवनामहेतिसेतुन्दुराय्यम्।
३ २ ३१ २ ३१
साह्यामदस्युमव्रतम्॥ २* ॥

"सुवितस्य"† शोभनं प्राप्तस्य सोमस्य सम्बन्धिनम् "अति-सेतुम्"‡ रक्षोविषयं बन्धनं "वनामहे"¶ सोमकर्त्तृकं रक्षसां बन्धनं स्तुमहत्यर्थः। कीदृशम्? "दुराय्यम्" दुष्प्रापणीयम् § किञ्च "अव्रतम्" यज्ञादि-कर्म-रहितं "दस्यु"‖ अपि "साह्याम" अभिभवेम॥

"दुराय्यं"-"दुराव्यं","साह्याम"-"साह्यांस"—इति पाठाः॥२॥

अथ तृतीया।

२ ३१२ २ ३१र २र ३ १ २
शृण्वेवृष्टेरिवस्वनःपवमानस्यशुष्मिणः।
१२ ३१२ ३ २
चरन्तिविद्युतोदिवि॥ ३ **॥

"शृण्वे" श्रूयते। कः? "स्वनः"। किमिव? "वृष्टेः"

* ऋ० वे० ९, ८, २१, १। "मनामहे"—इति च तत्र क्वचित् पाठः।

† 'सुवितस्य—अभिषुतस्य'—इति वि०।

‡ 'अतिसेतुं—मर्य्यादां त्यक्त्वा अतिक्रम्य धावनतया'—इति वि०।

¶ 'वनतिः स्तुतिकर्मा, स्तुतिं कुर्मः'—इति वि०।

§ 'दुराय्यं—दुर्वार्यम्, अथवा दुराप्यं दुष्प्राप्यम्'—इति वि०।

‖ 'व्रत-वर्जितम्'—इति वि०।

** ऋ० वे० ९, ८, २१, २।

Digitized by Google

वर्षणस्य स्वनइव [तस्य यथा महान् स्वनः श्रूयते तद्वत् प्रभूत-रस-पात-समये श्रूयते]। कस्य स्वन इति? तत्राह—"पवमानस्य" पूयमानस्य "शुष्मिणः" बलवतः तस्यैव "विद्युतः" दीप्तयः* "दिवि" अन्तरिक्षे चरन्ति ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी।

१ २ ३ १उ २ ३ १ २ ३ १ २

आपवस्व महीमिषङ्गोमदिन्दो हिरण्यवत्।

१ २ ३ २ २

अश्ववत्सोमवीरवत् ॥ ४ † ॥

हे "इन्दो!" "सोम!" अभिषुतः त्वं "महीम् इषम्" महदन्नम् "आ पवस्व" ‡। कीदृशम् अन्नम्? "गोमद्" गोभिर्युक्तम्, "हिरण्यवत्" सुवर्णोपेतम्, "अश्ववत्" अश्वोपेतम्, "वीरवत्" पुत्रयुक्तम् ॥

"अश्ववत्सोमवीरवत्"-"अश्वावद्वाजवत्सुतः"—इति पाठो॥४॥

---

* 'विद्युतः—विद्युत्संयुक्तस्य'—इति वि०।

† ऋ० वे० ६, ८, ३१, ४।

‡ 'आपवस्व महीमिषम्'—आभिमुख्येन पवस्व महीमिषम् महतीमिषं वृष्टिमन्नं वा'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ पञ्चमी।

१ २ ३ २ ३ १ २र
पवस्वविश्वचर्षणआमहीरोदसीपृण।

३ २उ ३ २ ३ १ २
उषाःसूर्योनरश्मिभिः॥ ५ * ॥

हे "विश्वचर्षणे" विश्वस्य द्रष्टः सोम! स त्वं "पवस्व" चर रसम्। तथा कृत्वा तेन रसेन "मही"† "रोदसी" द्यावापृथिव्यौ "आ पृण" आ पूरय। "उषाः" उषसः [एकदेश-वाचिनोषः-शब्देनाहान्युपलक्ष्यन्ते तत्प्राधान्यात्] अहानि "रश्मिभिः" "सूर्योन" सूर्यइव॥

"पवस्वविश्वचर्षणे"-"पवस्वविश्वचर्षण"—इति पाठौ॥ ५॥

अथ षष्ठी।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
परिनःशर्मयन्त्याधारयासोमविश्वतः।

१ २ ३ १ ० ३ १ २
सरारसेवविष्टपम्॥ ६ ‡॥ ३

हे सोम! "नः" अस्मभ्यं "शर्मयन्त्या" सुखयन्त्या धारया¶ "विश्वतः" सर्वतः "परि सरा" परिसर परिचर। "रसेव"

* ऋ० वे० ६, ८, ३१, ५।

† 'मही—महती'—इति वि० महत्यौइत्यर्थः।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ३१, ६।

¶ 'शर्मयन्त्या—शर्म-सुखं, तद्भावयन्त्या धारया'—इति वि०।

रसेनेव "विष्टपं" भूलोकं* [यद्वा रसा नदी स्थानं सा प्रवणरूपमिव] ॥

"परिनः"-"परिणः"—इति पाठौ ॥ ६ ॥ ३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय खण्डे—

आशुरर्षेति षड्चं प्रथमं सूक्तम्, तत्र प्रथमा ।

२ १ २   ३ १ २ ३ २ ३ १ २
आशुरर्षबृहन्मतेपरिप्रियेणधाम्ना ।
१ २ १ २ ३ १ २
यत्रदेवाइतिब्रवन् ॥ १ † ॥

हे "बृहन्मते" ‡ महामते सोम ! "प्रियेण" देवानां प्रियतमेन "धाम्ना" शरीरेण ¶ "धारया" "आशुः" शीघ्रः सन्

---

* 'विष्टपं स्वर्गं लोकम्,—इति वि० ।

† ऋ० वे० ९, ८, २९, १ । "ब्रुवन्"—इति मु०पाठः, आकरे च क्वचित् पाठः ।

‡ 'बृहन्मते—बृहद्बुद्धे'—इति वि० ।

¶ 'परिप्रियेण—परि समन्तात् प्रियेण धाम्ना प्रियेण स्थानेन'—इति वि० ।

Digitized by Google

"पर्य्येषि" परिगच्छ, "यत्र" "देवाः" इन्द्रादयः वर्त्तन्ते—"इति" "ब्रुवन्" उच्चारयन्, तं देशं गच्छामीति ब्रुवन्नित्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ १र २र ३ १ २ ३१२१२
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतञ्जनाययातयन्निषः।
३२ ३१ २र
वृष्टिन्दिवःपरिस्रव॥ २ *॥

"अनिष्कृतम्" असंस्कृतम् † यजमानं स्थानं वा "परिष्कृण्वन्" संस्कुर्वन् "जनाय" "इषः" अन्नानि "यातयन्"‡ निर्गमयन् "दिवः" अन्तरिक्षात् "वृष्टिं"¶ "परि स्रव"॥ २॥

अथ तृतीया।

३ २उ ३१र २र ३ १ १ ३१२१
अयꣳसयोदिवस्परिरघुयामापवित्रआ।
१ २ ३ १ २र
सिन्धोरूर्म्माव्यक्षरत्॥ ३ §॥

"सः" "अयं" सोमः "पवित्रे आ" सिच्यमानः [—इति

---

* ऋ० वे० ६, ८, २९, १।

† 'अनिष्कृतम्—आभिमुख्येन निष्कृतम्'—इति वि०। इह लेतविनयमव ब्रजयं आभिमुख्यं कुतो लभ्यतइति।

‡ 'यातयन्'—प्रापयन्—इति वि०।

¶ मुद्रित-मूले तु "वृष्टिम्"—इति पाठः ऋग्वेदेपि तथा।

§ ऋ० वे० ६, ८, २९, ३।

Digitized by Google

शेषः *] "सिन्धोः" जलस्य † "ऊर्मा" ‡ ऊर्मौ सङ्घाते "वि अचरन्" विविधं चरति । स इत्युक्तम्, कः ? इत्याह— "यः" "दिवस्परि" द्युलोकस्योपरि "रघुयामा" लघुगमनः ¶ देवप्राप्तौ, सोयमिति सम्बन्धः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

३ १ २ ३ १ २ ३उ ३ १ २ ३ १ २
सुतएतिपवित्रआत्विषिन्दधानओजसा ।
३ १ २ ३ १ २
विचक्षाणोविरोचयन् ॥ ४ § ॥

"सुतः" अभिषुतः सन् "पवित्रे" दशापवित्रे ["आ" —इत्यनर्थकः] "ओजसा" बलेन "शीघ्रम्" "एति" गच्छति । कीदृशः सन् ? "त्विषिं" दीप्तिं "दधानः" धारयन्, "विचक्षाणः" सर्वं पश्यन्, ‖ "विरोचयन्" दीपयंश्च ; किम् ? देवानिति शेषः ॥ ४ ॥

---

* 'पवित्रे—अधिकरण-सप्तम्येषा ; पवित्रे अधिकरणभूते । आ-इत्ययमुपसर्गः अचरदित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः ; आ अचरत्'—इति वि० ।

† 'सिन्धोः—समुद्रस्य नदीनाञ्चोदकस्य वा'—इति वि० ।

‡ 'ऊर्मयः सङ्घाताः'—इति वि० । ऊर्मा इति तूर्म्मिशब्दस्य सुपां सुलुगिति सुपो डादेशे डि-लोपे रूपम् ।

¶ 'रघुशब्दो लघुवाची'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ९, ८, २९, ४ ।

‖ 'विचक्षाणः—विविधं पश्यमानः अयं वा विश्वं जगत् पश्यमानः'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ पञ्चमी।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आविवासन्परावतोअथोअर्वावतःसुतः।
१ २ ३ १ २
इन्द्रायसिच्यतेमधु॥ ५ *॥

"सुतः" अभिषुतः सोमः "परावतः" [दूरनामैतत् †] दूरस्थान् "अथो" ‡ अपिच "अर्वावतः" अन्तिकस्थांश्च ¶ देवान् "आ विवासन्" रसेन परिरक्षणायेत्यर्थः। "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "मधु" मधुसदृशः सोमः "सिच्यते"॥ ५॥

अथ षष्ठी।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समीचीनाअनूषतहरिंहिन्वन्त्यद्रिभिः।
१ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये॥ ६ §॥ ४

"समीचीनाः" सम्यगञ्चिताः सङ्गताः स्तोतारः ‖ "अनूषत" स्तुवन्ति किञ्च सोमं "हरिं" हरितवर्णं "हिन्वन्ति"

---

* ऋ० वे० ६, ८, २९, ५।

† "परावतः"—इति निघण्टौ तृतीय-षड्विंशे दूरनामसु पञ्चमत्वेन पाठात्।

‡ "अथ उ"—इति वि०।

¶ अन्तिकनामसु "अर्वाके"—इति पाठात् (निघ० २, १६, ८)।

§ ऋ० वे० ६, ८, २९, ६। "योनावृतस्यसीदत"—इति तत्र तृतीयः पादः।

‖ 'समीचीनाः—आसन्नवर्त्तिनः'—इति वि०।

Digitized by Google

प्रेरयन्ति गमयन्ति "अद्रिभिः" ग्रावभिः । किमर्थं हिन्वन्ति ? "इन्दुं" सोमम् "इन्द्राय" इन्द्रस्य "पीतये" पानाय ॥ ६ ॥ ४

अथ त्र्यचात्मके द्वितीयसूक्ते—प्रथमा ।

२ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
हिन्वन्तिसूरमुस्रयःस्वसारोजामयस्पतिम् ।
२ १ १र ३ १ २
महामिन्दुम्महीयुवः ॥ १ * ॥

"उस्रयः" कर्मार्थं निवसन्त्यः सर्वत्र गन्त्र्य इत्यर्थः, "जामयः" एकस्याः पाणेः उत्पन्नत्वात् परस्परं बन्धुभूताः, "स्वसारः" [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ॰ २, ५, १३)। सुष्ठु कर्मसु प्रेर्यन्ते ऋत्विग्भिरिति स्वसारः] अङ्गुलयः, "महीयुवः" सोमाभिषवं कामयमानाः सन्तः "सूरं" सुवीर्यं [सोमे पीते वीर्यं भवतीति ; शोभनं वीर्यं कारणं वा, सर्वेषां कर्मणि प्रेरकं वा, तादृशम्] "पतिम्" सर्वस्य स्थावर-जङ्गम-जातस्य स्वामिनं, यस्माद् देवार्थमिज्यतेऽतएव "महाम्" देवेभ्यो दीयमानत्वेन महान्तं मंहनीयं वा "इन्दुम्" ग्रहेषु स्यन्दमानं सोमं "हिन्वन्ति" प्रेरयन्ति ["हिवि प्रीति-गत्योः (स्वा॰ प॰)"—इति धातोरेतद्रूपं स्वादि] † ॥ १ ॥

---

* ऋ॰ वे॰ ७, ०, १, १ ।

† 'हिन्वन्ति सूरम् उस्रयः = सेवयन्ति सूर्यम् आदित्यरश्मयः । स्वसारः जामयः पतिम् = स्वसारः भगिन्यः जामयः आदित्यरश्मयः ; यथा परस्परं भगिन्यः एकस्यैव भर्तुः परमरमिकया सेवां कुर्वन्ति, तद्वदादित्य-रश्मयः परमरमिकया आदित्यं सेवन्ति । एवं, महामिन्दुमहीयुवः = महिमानमिच्छन्त्यः सोमरश्मयः उदकानि वा'—इति वि॰ ।

अथ द्वितीया।

१ २ २ १ २ ३ १ १ २ १ २ ३ १
पवमानरुचारुचादेवदेवेभ्यःसुतः।
२ ३ २३ १ २
विश्वावसून्याविश॥ २ *॥

हे "पवमान" दशापवित्रेण पूयमान! [यद्वा पुनान शुद्ध!] सोम! "रुचारुचा" ["रुच दीप्तौ (भ्वा० आ०)] सर्वेण तेजसा हे "देव" दीप्यमान! "देवेभ्यः" देवार्थं "सुतः" अभिषुतः त्वं "विश्वा" व्याप्तानि सर्वाणि बहूनि "वसूनि" धनानि "आ विश" अस्मान् प्रापय [यद्वा सर्वाणि "वसूनि" वासस्थानानि ग्रहादीनि† "आविश" समन्तात् प्रविश]॥

"देवेभ्यस्सुतः"--"देवेभ्यस्परि"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
आपवमानसुष्टुतिंवृष्टिन्देवेभ्योदुवः।
३ १ २ ३ १ २
इषेपवस्वसंयतम॥ ३ ‡॥ ५

हे "पवमान" पूयमान! पुनान! वा सोम! "सुष्टुतिं" ¶

---

* ऋ० वे० ७, २, १, २।

† ग्रह-चमसादीनि यज्ञीयपात्राणीति यावत्।

‡ ऋ० वे० ७, २, १, ३।

¶ 'सुष्टुतिं—शोभनां स्तुतिम् प्राप्नुवानां'—इति वि०।

शोभनस्तुति-युक्तां "वृष्टिं" "देवेभ्यः" देवानां "दुवः"*
["सुपां सुलुक् (७, १, ३९)"—इति चतुर्थ्या लुक्] दुवसे
परिचरणाय† "आ पवस्व" आ गमय त्वम् [यथा मदीयया
स्तुत्या वृष्टिर्भवति तथा कुर्वित्यर्थः] किञ्च अस्माकम् "इषे"
अन्नार्थञ्च "संयतं"‡ सम्यगस्मान् सङ्गच्छतीति वृष्टिं कुरु [यद्वा
"दुवः" परिचर्या मभिलक्ष्य क्रियमाणां "सुष्टुतिं" शोभन-स्तुति-
रूपां वृष्टिं बहुशः स्तुतिमित्यर्थः, एतां देवेभ्यः प्रापय] ॥ ३ ॥५

॥ विशोविशीयम् ॥ हिन्वाऊम् । ता३यिम् । रा३
मूस्रा३याः । स्वसारः । जामार२३याः । ऊम्मायि । पा
३ता३यिम् । मा२३४दा५हायि । ओ । ऊवायि । ई
२३४न्दूम् । ऊम्मायि । मा३दो३ । यू२३४वाः । एहि
याईहा ॥(१) पवाऊम्मा३ना । रू३चारू३चा । देवदे ।
वायिभा२३याः । ऊम्मायि । सू३ता ३ः । वा२३४यि

* 'दुवः—दूरात् द्युलोकात्'— इति वि० ।

† "दुवस्यति"—इति परिचरण-कर्मसु पञ्चमं नैघण्टुकम् (३, ५) ।

‡ "संयतं—सम्यक् नियतम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

२ ५ १ २ १ ३ ५ १ २
श्वाहायि। औो। ऊवाँयि। वा२३४सू। ऊम्मा। नी
२ १ ५२ ५ १२ २ २
३या३। वा२३४यिम्रा। एह्वियाइहा॥(२) आपाश्म्।
२ ११२ ११२ १ २
वा३मा। ना३सूष्टू३तीम्। वृष्टिन्दे। वायिभा२३थाः।
१ २ २ १ २५ १ २१
ऊम्मायि। दू३वा३ः। पा२३४यिषेहायि। औो। ऊवाँ
२ ५ १ २ २ १
यि। पा२३४वा। ऊम्मा। स्वा३सा३म्। या २ ३ ४
५२ ५ ४
ताम्। एह्वियाइहा। होपृई। डा(३)॥ १० *॥[१]

॥ ऐडानाᳲसञ्चारम्†॥
१२ २ १ २
औहोयिऊवा३होयि। हि
४ २१५ २२ २ ४ ११ ५ २
न्वन्तिसू३रा३मुस्रयः। स्वसारोजा३मा३यस्पतिम्। म
२ २ ५ २१२१ १ २ २
हामा२३४यिन्दूम्। महीयुवः। इडा२३॥(१) पवमा
४ २२ २५२ १२ ४ २ २५ २१ २ ५
ना३रू३चारुचा। देवदे३वे३भ्यःसुतः। विश्वावा२३४सू।
२१२ २ १ १२ ४ ११ ५
नियाविश। इडा२३॥(२) आपवमा३ना३सुष्टु तिम्।
२ ४ २२ २५ २२ २ १ ३ १२
वृष्टिन्दे३वे३भ्योदुवः। औहोयिऊवा३होयि। इषायि

* ऊ० गा० ५प्र० १ अ० १०सा०। † "इडानांसंचारः"—इति ख० पाठः।

२ ५ २ १ २ १ २ ४ ५ ४
पा२३४वा। स्वसंयतम्। इडा२३भा३। एहीडा। हो

५ई। डा(३)॥ १० *॥ [२]५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
द्वितीय खण्डः† ॥ २ ॥

अथ तृतीयखण्डे‡ प्रथमतृचे—

प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
जनस्यगोपाअजनिष्टजागृवि

३१ ३१ २ २ ३ २ ३ १ २
रग्निःसुदक्षःसुवितायनव्यसे।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
घृतप्रतीकोबृहतादिविस्पृशा

३ १२ ३२ ३ १ २ १ २
द्युमद्विभातिभरतेभ्यःशुचिः ॥ १ ¶ ॥

"जनस्य" § "गोपा" गोपयिता रक्षिता, "जागृविः"

---

* ऊ० गा० १८प्र० २ख० १०गा०।

† 'उक्तम् बहिष्पवमानमेकविंशकोऽग्निकम्'—इति वि०।

‡ 'इहाग्नीनाख्यानि त्रृक्षयाणि'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ४, १, ७, १=म० वे० १५, २७।

§ 'जनस्य—यजमानस्य'—इति वि०।

जागरणशील: सदा प्रबुद्ध:, "सुदक्ष:" सुबल: सर्वै: श्लाघनीय-बल:, स: "अग्नि:" "नव्यसे" नवतराय "सुविताय"* लोकानां कल्याणाय "अजनिष्ट" जात:। तत: "घृत-प्रतीक:" घृतेन प्रज्वलिताङ्ग:, बृहता" महता "दिविस्पृशा" द्युलोकं प्राप्नुवता तेजसा युक्त:, "शुचि:" शुद्ध:, एवंविधोऽग्नि: "भरतेभ्य:" ऋत्विग्भ्य: तत्तदर्थं† "द्युमत्" दीप्तिमत् यथा भवति तथा "भाति"‡ प्रकाशते¶ ॥ १ ॥

---

* "सुविताय—यजमानजनाय अभिषवकर्त्तृणे'—इति वि०।

† 'भरता: मनुष्या: ऋत्विजो यष्टारस्ते, तेभ्य:'—इति वि०। "भरता:"—इति ऋत्विङ्नामसु प्रथमं नैघण्टुकम् (३, १८)।

‡ नात्र वि-शब्दो व्याख्यात: सायणेन, विवरणकारस्त्वाह—'वि=विविधम्'—इति।

¶ अत्र महीधरव्याख्या यथा—"योऽग्निर्भरतेभ्य: ऋत्विग्भ्य: सकाशादजनिष्ट जात: तैर्मथितत्वात्तेभ्यो जात इत्युच्यते। भरता इति ऋत्विङ्नामसु पठितम्। किमर्थं जात:। नव्यसे नवीयसे नवतराय सुविताय सूताय प्रसूताय कर्मणे यागाय सूतरिडागम आर्ष: अभिनवं नवीयस्तस्मै ईलोप आर्ष:। सोऽग्निर्दिविस्पृशा द्युलोकस्पर्शिना बृहता ज्वालासमूहेन द्युमत्कान्तिमद्यथा तथा विभाति विविधं दीप्यते। कीदृशोऽग्नि:? जनस्य यजमानस्य गोपा:। गोपायति रक्षतीति गोपा: क्विप् लोपोर्व्योर्वलि यलोप:। जागृवि: जागरणशील: कर्मणि सावधान:। सुदक्ष: शोभनो दक्ष उत्साहो यस्य अतिकुशलो वा। घृतप्रतीक: घृतं प्रतीके मुखे यस्य। शुचि: शुद्ध: बहूनि हवींषि भक्षयन्नपि उच्छिष्टो न स्यात् शोधको वा ॥ "—इति।

अथ द्वितीया।

१ २३ १ २ ३ १ २ ३ १र
त्वामग्ने अङ्गिरसोगुहाहित
२र ३ १ २र
मन्वविन्दञ्छिश्रियाणंवनेवने।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र
सजायसेमथ्यमानःसहोमह
२र ३ १ २ ३ १ २
त्वामाहुःसहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ २ * ॥

हे "अग्ने!" "अङ्गिरसः"†—एतन्नामका ऋषयः "गुहा" गुहायां "हितं" निहितं निगूढं "वनेवने" वृक्षे "शिश्रियाणम्" आश्रितम् "त्वाम्" "अन्वविन्दन्"‡ अलभन्त। "महत्" महता "सहः" सहसा बलेन युक्तः "सः" त्वं "मथ्यमानः" "जायसे" हे "अङ्गिरः"¶ अङ्गिरसां प्रकृतिभूत! त्वां "सहसस्पुत्रम्" आहुः§ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ४, १, ३, ६ = य० वे० १५, २८।

† 'अङ्गानां रसभूताः'—इति वि०।

‡ 'अन्वविन्दन्—विद्ज्ञाने, विद्लाभे, विद्सत्तायाम्'—इति वि०।

¶ 'अङ्गिरा जाठरोऽग्निः'—इति वि०।

§ अत्र महीधरव्याख्या यथा—'हे अग्ने! अङ्गिरसः अङ्गिरोवंशोद्भवा ऋषयस्त्वा अन्वविन्दन् लेभिरे अन्विष्य प्रापुरित्यर्थः। किम्भूतं त्वां? गुहा गुहायां निगूढे प्रदेशे हितं स्थितमप्सु प्रविष्टमित्यर्थः। अग्निर्देवेभ्य उदक्रामत्सोऽप आविशदित्यादि श्रुतेः। सुपां सुलुगिति गुहाशब्दात्सप्तमीलोपः। हे अग्ने! पुनर्महं त्वां वनेवने शिश्रियाणं नानावनस्पतिषु श्रितमङ्गिरसोऽन्वविन्दन्। नित्यवीप्सयोरिति वनेपदस्य

Digitized by Google

अथ तृतीया।

२१ १२ १२ ३१२३ १ २
यज्ञस्यकेतुम्प्रथमम्पुरोहित
३ १२ १२ ३१२ १२
मग्निन्नरस्त्रिषधस्थेसमिन्धते।
१ २ ३२३१२ ३२३ १ २
इन्द्रेणदेवैःसरथꣳसबर्हिषि
२ ३ १२ १२३१ १२ ३१ २
सीदन्निहोतायजथायसुक्रतुः॥ ३ *॥ ६

"नरः" कर्मणां नेतारः ऋत्विजः "यज्ञस्य" यागस्य "केतुं" प्रज्ञापकं "पुरोहितं" यजमानैः पुरस्कृतम् "इन्द्रेण" "देवैः" "सरथं" देवानां तेषां मान्यत्वात् समान-रथम् "अग्निं" "त्रिषधस्थे"† त्रिस्थाने विहारप्रदेशे "प्रथमं" "समिन्धते" सम्यग् दीपयन्ति। ततः "सुक्रतुः" शोभन-कर्मा "होता" देवाना-माह्वाता "सः" अग्निः "बर्हिषि" बर्हिर्युक्ते तस्मिन् स्थाने

हितम्। मथतेः शानचि बहुलं छन्दसीति शपः लुः हितं च। यं त्वामङ्गिरसो ऽमन्थन्त स त्वं जायसेऽधुनाप्यरणिभ्य उत्पद्यसे। कीदृशः? महस्त्वदः महता बहुना सहसा बलेन मथ्यमानः। महस्पदः-शब्दाभ्यां तृतीयाया लोपः। मथ्यमानो जायस इत्यर्थः। हे अङ्गिरः अग्ने! अतएव सहसो बलस्य पुत्रं त्वामाहुः वदन्ति मुनयः बलेन मथ्यमानत्वात् सहसस्पुत्रं वदन्तीत्यर्थः॥"—इति।

* ऋ॰ वे॰ ४, १, २, २।

† 'त्रिषधस्थे—सधस्थं स्थानमुच्यते। तृभिः स्थानैः समिन्धते—गार्हपत्य-दक्षिणाग्न्याहवनीय-प्रभृतिभिः स्थानैः समिन्धते'—इति वि॰।

Digitized by Google

"यजथाय" यज्ञाय * "निषीदन्" न्यसीदत् प्रतिष्ठितो भवदिति यावत्॥

"समिन्धते"-"समीधिरे"—इति पाठौ॥३॥६

२१ २२ २२१
॥कावम्॥ जनोवा। इयगोपाअजनायि। इजागृ
१ २ १ १
वा२यिः। अग्निःसुदक्षःसुविता। यनव्यासा२यि। घृ
२२ २ १ १२ ४५ २
तप्रतीकोबृहता। दिविस्पृशा२३। द्यूमा३द्वायिभा। ति
१ १२ ४ ११
भराता२३यि। भायाऽःशुध्ऽ५चा६५६यिः॥(१) तुवोवा।
२ २२१ १ २
अग्ने अङ्गिरसो। गहाहायिता२म। अन्वविन्दञ्छिश्रिया
२२१ १२२ २ २
णाम्। वनेवाना२यि। सजायसेमथ्यमानाः। स
२१ ११४५ २१ १२
होमाहा२३त्। तुवा३माऽः। सहसास्पू२३त्। त्रामा
४ २१ २
३ऽगा५यिरा६ ५६ः॥(२) यज्ञोवा। इयकेतुम्प्रथमाम्।
२२१ २२१ १
पुरोहायिता२म्। पुरोहायिता२म्। अग्निन्नरस्त्रिष
२ १ १२ २२
धस्थायि। समिन्धाता२यि। इन्द्रेणदेवैःसरथाम्।

* 'यजथाय—यजन-क्रियायाः कर्तृत्वे'—इति वि०।

२ १ १ २ ४ऽ ५ २र १
स्वर्हायिषा२३यि। सायिदा३न्नायिद्दो। तायजाथा२३।
१ २ ४
यासू३क्का५तू६५६:(३)॥ १५ *॥ [१] ६

अथ द्वितीयद्वचे¶—

प्रथमा।

२ १ २ ३ १र १र
अयंवाम्मित्रावरुणासुत:सोमऋतावृधा।
२उ ३ १ २ ३ १ २
ममेदिहश्रुतꣳहवम्॥ १ ‡॥

हे "ऋतावृधा" ऋतस्य सत्यस्य यज्ञस्य वा वर्द्धकौ¶! "मित्रावरुणा" हे मित्रावरुणौ! "वां" युवाभ्याम् "अयं" "सोम:" "सुत:" अभिषुत:। यस्मादेवं तस्मात् "इह" अस्मिन् यज्ञे "ममेत्" मदीयमेव§ "हवम्" आह्वानं "श्रुतं" शृणुतम्॥ १॥

* ऊ० गा० १९प्र० १ख० १५गा०।

† 'मैत्रावरुणसाम्नम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० २, ८, ७, ४।

¶ 'ऋतावृधा—ऋतो यज्ञः, तेन वर्द्धयितारौ अथवा ऋतमन्नं तेन वर्द्धेते ऋतावृधौ' —इति वि०। निघण्टौ तु ऋतमिति यज्ञनामसु (१, १२), धननामसु (२, १०); उदकनामसु (१, १२), सत्यनामसु (३, १०) च दृश्यते परं नान्ननामसु।

§ 'मम इत्—इत्-इति पद-पूरणः। इह मदीये यज्ञे'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ १ १ ३ १२ ३२ ३ २
राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे।
३ १ २
सहस्रस्थूण आशाते ॥ २ * ॥

"राजानौ" ईश्वरौ दीप्यमानौ वा "अनभिद्रुहा" † अनभिद्रोग्धारौ यौ मित्रावरुणौ "ध्रुवे" स्थिरे "उत्तमे" उत्कृष्टे "सहस्रस्थूणे" ‡ "सदसि" ¶ स्थाने "आशाते" उपविशतः [तावागच्छतामिति शेषः] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३२३ १२
ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती।
१ २ ३ १ २
सचेते अनवह्वरम् ॥ ३ § ॥ ७

"सम्राजा" सम्राजौ सम्यगेव सर्वेषां शास्तारौ, "घृतासुती" घृताहौ ‖ ["तद्यामहित्वं घृतासावस्तु" — इति मन्त्रान्तरात्,]

---

* ऋ० वे० ५, ८, ७, ५। "आसाते" — इति तत्र पाठः।

† 'अद्रोहकर्त्तारौ' — इति वि०।

‡ 'सहस्रस्थूणे — स्थूणानां सहस्रं यस्मिन्' — इत्यादि वि०।

¶ 'सद्दोनामसदसि' इति व्याख्यत्।

§ ऋ० वे० २, ८, ८, १।

‖ 'घृतासुती — घृतेन आहुतिः * * * शरीरवृद्धिर्ययोर्भवति * *' — इति वि०।

"आदित्या" अदितेः पुत्रौ, "दानुनस्पती" 'दानुनः' धनस्य देवस्य वा 'पती' स्वामिनौ,* "ता" तौ मित्रावरुणौ "अनवह्वरम्" अकुटिलं यजमानं† "सचेते" हविर्भक्षणार्थं सेवेते ॥ २ ॥ ७

अथ तृतीय-तृचे‡—प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र
इन्द्रोदधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः।
३ १ २ ३ १र २र
जघाननवतीर्नव ¶ ॥ १ § ॥

[अत्र शाट्यायनिन इतिहासमाचक्षते—"आथर्वणस्य दधीचो जीवतो दर्शनेन असुराः पराबभूवुः। अथ तस्मिन् स्वर्गते सति असुरैः पूर्णा पृथिव्यभवत्। अथेन्द्रस्तैरसुरैः सह योद्धुमशक्नुवंस्तमृषिमन्विच्छन् स्वर्गं गत इति शुश्राव। अथ पप्रच्छ तत्रत्यान्—'नेह किमस्य किञ्चित् परिशिष्टमङ्गमस्ति?'—इति; तस्मा अवोचन्—'अस्त्येतदाश्वं शीर्षं, येन शिरसा अश्विभ्यां मधुविद्यां प्राब्रवीत्, तत्तु न विद्मः यत्राभवत्'—इति। पुन-

---

* 'दानुनस्पती—दान-कर्मणे च यजमानाय'—इति वि०।

† 'अनवह्वरं—यज्ञम्'—इति वि०।

‡ 'ऐन्द्रमाग्न्यम्'—इति वि०। ¶ "नवतीर्णवा"—इति क० पु० पाठः।

§ ऋ० आ० १, २, ४, ५ (१भा० ३९९ प०) = ऋ० वे० १, ९, ७, १।

रिन्द्रोऽब्रवीत्—'तदन्विच्छत'—इति । तद्वान्वेषिषुस्तच्छर्यणावत्यनुविद्या अजुः । ग्रयंणावद्ध वै नाम कुरुक्षेत्रस्य जघनार्द्धे सरः स्यन्दते । तस्य शिरसोऽस्थिभिरिन्द्रोऽसुरान् जघान"—इति ॥]
"अप्रतिष्कुतः" परैरप्रतिशब्दितः प्रतिकूल-शब्द-रहितः इन्द्रः आथर्वणस्य "दधीचः"—एतन्नामकस्य ऋषेः "अस्थभिः" पार्श्व-शिरः-सम्बन्धिभिरस्थिभिः "नवतीर्नव" नवसङ्ख्याका नवतीः दशोत्तरा अष्टशतसङ्ख्याकाः (८१०) [तथाहि—लोकत्रयवर्त्तिनो देवान् जेतु मादावासुरी माया त्रिधा सम्पद्यते ; त्रिविधा सा अतीतानागतवर्त्तमान-काल-भेदेन तत्कालवर्त्तिनो जेतुं पुनरपि प्रत्येकं त्रिगुणिता भवति—एवं नव सम्पद्यन्ते ; पुनरपि उत्साहादि-शक्ति-त्रय-रूपेण त्रैगुण्ये सति सप्तविंशतिः सम्पद्यते ; पुनः सात्विकादि-गुणत्रयभेदेन त्रैगुण्ये सति एकोत्तरा अशीतिः सम्पद्यते ;—एवं चतुर्भिस्त्रिकैर्गुणिताया मायाया दशसु दिक्षु प्रत्येकमवस्थाने सति नवनवतयः सम्पद्यन्ते । एवंविधमायारूपाणि] "वृत्राणि" आवरकाण्यसुरजातानि "जघान" हतवान्] दधीचः—दधि अञ्चतीति दध्यङ्, अञ्चतेः ऋत्विगित्यादिना (३, २, ५९) क्विन्, अनिदितामिति (६, ४, २४) न-लोपः, षष्ठ्येकवचने "अचः (६, ४ १३८)"—इत्यकारलोपे चाविति (६, ३, १३८) दीर्घत्वम्, उदात्तनिवृत्तिस्वरेण विभक्त्युदात्तत्व-विधानेन तद्बाध्यते ।

Digitized by Google

अस्थभिः—"छन्दस्यपि दृश्यते (७, १, ७६)" —इति अन-जादावपि अस्थि-शब्दस्यानङादेशः अपोदात्तः] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२१ १२३२७ ३ १२३१२
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्।

१२ ३१ २
तद्विदच्छर्यणावति ॥ २ * ॥

"पर्वतेषु" पर्ववत्सु गिरिषु अपश्रितम् अप गत्य स्थितम् "अश्वस्य" अश्व-सम्बन्धिनो दधीचः "यत्" "शिरः" "इच्छन्" इन्द्रो वर्त्तते, "शर्यणावति" एतन्नामके सरसि† "तत्" शिरः "विदत्" अज्ञासीत्] 'ज्ञात्वा, तदाहृत्य, तदीयैः अस्थिभिः वृत्राणि जघान'—इति पूर्वस्यामृचि सम्बन्धः॥ इच्छन्—इषु इच्छायां तुदादित्वाच्छप्रत्ययः। विदत्— वेत्तेर्लुङि व्यत्ययेन च्लेरङादेशः। शर्यणावति—शर्यणा नामानो देशास्तेषामदूर-भवः सरः शर्यणावत्; मध्वादिषु शर्यणाशब्दस्य पाठात् "मध्वादिभ्यश्च (४, २, ८६)"—इति चातुरर्थिको मतुप्, "सञ्ज्ञायाम् (८, २, ११)"—इति मतुपो वत्वम्, मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् (६, ३, ११९)"—इति दीर्घः ॥ २ ॥

* ऋ० वे० १, ९, ७, ४।

† 'शर्यणावति—यज्ञे कर्मवति'—इति वि०।

अथ तृतीया।

२उ १ २ १ २ १ २ २ १ २ ३क २र

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्।

१ २ ३ १ २ ३ १

इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ * ॥ ८

"अत्राह" अत्रैव "गोः" गन्तुः "चन्द्रमसः" "गृहे" मण्डले "त्वष्टुः" दीप्तस्य आदित्यस्य सम्बन्धि "अपीच्य" रात्रावन्तर्हितं स्वकीयं यत् "नाम" तदादित्यरश्मयः "इत्था" इत्थमनेन प्रकारेण "अमन्वत" अजानन् [उदकमये स्वच्छे चन्द्रबिम्बे सूर्य्य-किरणाः प्रतिफलन्ति, तत्र प्रतिफलिताः किरणाः सूर्य्ये यादृशीं सञ्ज्ञां लभन्ते तादृशीं चन्द्रेऽपि वर्त्तमानां लभन्त इत्यर्थः। एतदुक्तम्भवति—यद्रात्रावन्तर्हितं सौरं तेजश्चन्द्र-मण्डलं प्रविश्य अहनीव नैशं तमो निवार्य्य सर्वं प्रकाशयति; ईदृग्भूत-तेजसा युक्तः सूर्य्यश्चन्द्रएव, द्वादशस्वादित्येषु इन्द्रस्यापि परिगणितत्वात्। अतोऽहोरात्रयोः प्रकाशक इन्द्रएवेति इन्द्र-स्तुतेः प्रतीयमानत्वादिन्द्रोदेवतेत्येतदुपपन्नं भवति। अत्र निरुक्तम्—'अथाप्यस्यैको रश्मिश्चन्द्रमसं प्रति दीप्यते तदेतेनोपे-क्षितव्यमादित्यतोऽस्य दीप्तिर्भवतीति; 'सुषुम्णः सूर्य्यरश्मि-श्चन्द्रमा गन्धर्वः'—इत्यपि निगमो भवति; सोऽपि गौरुच्यते—

---

* ऋ० आ० १, २, १, १ (१आ० २४१ ऋ०) = ऋ० वे० १, ८, ७, ५।

"अत्राह गोरमन्वत"—इति (२, ६,)। "अत्रा ह गोः सममंसतादित्यरश्मयः स्वनामापीच्यमपगतमपचितमपिहितमन्तर्हितं वा (४, २५)"—इति॥ अमन्वत—'मनु अवबोधने (त०, आ०)। अपीच्यम्—अपपूर्वाच्चिनोते र्निपातनाद् यत्, अतएवाभिमतरूपसिद्धिः; यद्वा अपिपूर्वादञ्चतेः "ऋत्विग् (३, २, ५९)"—इत्यादिना क्विन्, "अनिदिताम् (६, ४, २४)"—इति न-लोपः, अपिगते निर्गते भवमपीच्यम् "भवे छन्दसि (४, ४, ११०)"—इति यत्, "अचः (६, ४, १३८)"—इत्यकारलोपे "चौ (६, ३, १३८)"—इति दीर्घत्वम्; 'अपीच्यो प्रकाशः'—इति भट्टभास्करमिश्रः। इत्था—इदम्-शब्दाच्च "था हेतौ च छन्दसि (५, ३, २६)"—इति प्रकारवचने था-प्रत्ययः; यदि तत्रेदं-शब्दोनानुवर्त्तते तदानीम् "इदमस्थमुः (५, ३, २४)"—इति थमुः प्रत्यय; "अव्ययादाप्-सुपः (२, ४, ८२)"—इति सुब्लुकं बाधित्वा "सुपां सु-लुक् (७, १, ३९)"—इत्यादिना डादेशः। चन्द्रमसः—चन्द्रमाह्लादनं मिमीते निर्मिमीते—इति चन्द्रमाः "चन्द्रेमोडित् (उ०, ४, २२७)"—इत्यसि-प्रत्ययः; दासीभारादिषु पठितत्वात् पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्; पूर्वपदञ्च "स्फायितञ्चि (, ,)"—इत्यादिना रक्-प्रत्ययान्तत्वादन्तोदात्तम्॥ १॥ ८

अथ चतुर्थतृचे—प्रथमा ।

२१२१ १ १२२ २ २१ २
इयंवामस्यमन्मनइन्द्राग्नीपूर्व्यस्तुतिः ।
२ २ १ १ २
अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि ॥ १ * ॥

हे "इन्द्राग्नी ! "इयं" "पूर्व्यस्तुतिः" पूर्व्या स्तुतिः मुख्या स्तुतिः†, कस्य सम्बन्धिनी? "मन्मनः"‡ स्तोतुः अस्मात् वसिष्ठात् "वां" युवाभ्यां युवयोरर्थम् "अभ्रात्" मेघात् "वृष्टिरिव" वृष्टी सती "अजनि" प्रादुर्भूता¶, तां शृणुतमित्युत्तरेण सम्बन्धः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १२ ३१२३ १ २ ३ १२३ १२
शृणुतञ्जरितुर्हवमिन्द्राग्नीवनतङ्गिरः ।
२ १ २ ३ १ २
ईशानापिप्यतन्धियः ॥ २ § ॥

हे "इन्द्राग्नी !" "जरितुः" स्तोतुः "हवम्" आह्वानं युवां

---

* ऋ० वे० ५, ६, १७, १ ।

† 'पूर्व्यस्तुतिः—पूर्वा प्रथमतरा स्तुतिः सर्वेषां स्तुत्यानां प्रथमतरे इन्द्राग्नी-स्तुत्यौ —इति वि० ।

‡ 'मन्मनः प्रज्ञानस्य बलाः'—इति वि० ।

¶ 'यथा अभ्रात् सकाशात् वृष्टिरुत्पद्यते, तद्वदिन्द्राग्नीभ्यां सकाशात् बलमुत्पद्यते —इति वि० ।

§ ऋ० वे० ५, ६, १७, २ ।

शृणुतम्। श्रुत्वा च "गिरः" तदीयाः स्तुतीः "वनतं" सम्भजतम्। तथा "ईशाना" ईश्वरौ युवां "धियः" अनुष्ठितानि कर्माणि "पिप्यतं" तैस्तैः फलैः पूरयताम्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २३१ २ ३१ ३ २१ ३२

मापापत्वायनोनरेन्द्राग्नीमाभिशस्तये।

१ २ ३१२

मानोरीरधतन्निदे॥ ३ *॥ ८

हे "नरा" नेतारौ! इन्द्राग्नी! "नः" अस्मान् "पापत्वाय"† हीनभावाय "मा रीधतम्"‡ मा वशं नयतम्, तथा "अभिशस्तये" शत्रुभिः कृतायाभिशंसनाय मा रीरधतम्, तथा "निदे"¶ निन्दकाय मा रीरधतं मा वशीकुरुतम्॥ ३॥ ८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः§॥ ३॥

---

* ऋ० वे० ५, ६, १०, ३।

† 'पापत्वाय—पापबुद्धये'—इति वि०।

‡ 'मा रीधतम्—अहिंसायाम्; मा हिंसताम्'—इति वि०।

¶ 'निदे—नितरां दीयते यस्मिन् यस्मै निदे'—इति वि०।

§ 'उत्तरं प्रातः-सवनम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ चतुर्थखण्डे* प्रथमतृचे—

प्रथमा।

१२ २१२ ३१२ ३१२

पवस्वदक्षसाधनोदेवेभ्यःपीतये†हरे।

३१ २ १२३१२

मरुद्भ्योवायवेमदः॥ १ ‡॥

हे "हरे" हरितवर्ण! पापहर्त्तर्वा सोम! "दक्षसाधनः" दक्षो बलं तस्य साधनो "मदः" मदकरश्च त्वं "पवस्व" क्षर। किमर्थम्? "देवेभ्यः" इन्द्रादिभ्यः "पीतये" पानाय, तथा "मरुद्भ्यः" "वायवे" च पीतये पवस्व॥ १॥

अथ द्वितीया।

२३१२ ३१२ ३२उ २१२३२

सन्देवैःशोभतेवृषाकविर्योनावधिप्रियः।

१२ ३१२

पवमानोअदाभ्यः॥ २ ¶॥

"अयं" सोमः "सं शोभते" "देवैः" सह। कीदृशः सोमः? "वृषा" वर्षकः, "कविः" क्रान्तदर्शी, "योनौ" स्थाने स्वीये "अधि" अधिष्ठितः§ "प्रियः" प्रियोभूतः सर्वेषां [यद्वा प्रीणयिता]

---

* 'इदानीं माध्यन्दिनसवनमुच्यते'—इति वि०।

† "देवेभ्यपीतये"—इति क० पु० पाठः।

‡ ऋ० आ० ५, २, ४, ८ (२ भा० २४ पृ०) = ऋ० वे० ९, ८, १५, १।

¶ ऋ० वे० ९. ८, १५, २। "पवमानोअदाभ्यः"—इति स्थले "वृत्रहादेववीतमः" —इति ऋ०-पाठः।

§ 'योनौ अधि—सप्तम्येकवचनमिदं द्वितीयैकवचने द्रष्टव्यम्। योनिम् अधि' —इति वि०।

"पवमानः" चरन् "अदाभ्यः" केनाप्यहिंसितश्च भवति अतएव सोमः सं शोभते ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २   ३ २   ३ १   २उ   ३ १ २

पवमानधियाहितो३ऽभियोनिङ्कनिक्रदत्।

१ २   ३ १   २र

धर्मणावायुमारुहः॥ ३* ॥ १०

हे "पवमान" सोम! "धिया" कर्मणा अस्मद्व्यापारेण अङ्गुल्या वा † "हितः" धृतः सन् "कनिक्रदत्" शब्दं कुर्वन् "योनिं" स्थानं "द्रोणकलशं" च "अभि आरुहः" आभिमुख्येन आरोहणं कुरु प्रविशेत्यर्थः। तदेवाह—"धर्मणा" कर्मणा "वायुं" वायुसम्बन्धिपात्रमित्यर्थः, तदारुहः प्रविश ॥

"आरुहः"-"आविश"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १०

१   २ १   २र १र

॥ निधनकामम् ॥ पवस्वदा२क्षसाधनाः। देवेभ्यः

२ र   २ १ र   ०   ३र २

पीतयेहराथि। मरुद्भ्यो वा। पवा२३४थि। हाहोथि।

१ र   १   १   १

मदाः। होथि। २। मदः। होथि। २। मदः। होथि।

---

* ऋ० वे० ६, ८, १५, २।

† 'धिया बुद्ध्या'—इति वि०।

२र १र २र २   १ १ १ १   १ र र   र १
२। औहोऔहोवा२३४५हाउ ॥(१) सन्देवैःशो२भतेवृ
२ १ र र   २१ र   ०
षा। कविर्योनावधिप्रियाः। पवमानाः। अदा२३४।
२र २   १ र
हाहोयि। भियाः। होयि। होयि। भिय। होयि।
             २र १र २र   १ १ १ १
२। भियः। होयि। २। औहोऔहोवा२३४५हाउ ॥(२)
१ र   र १   २ १ र   २ १
पवमाना२धियाहिताः। अभियोनिकनिक्रदात्। धर्म्म
र   ०   २र २   १ र
णावा। युमा२३४। हाहोयि। रुहाः। होयि।
                    २र १र २र   १ १ १ १
होयि। रुह। होयि। २। औहोऔहोवा२३४५
हाउ। वा(३) ॥ ८ * ॥ [१]

                 ३२   र   ५
॥ सत्रासाहीयम् ॥ पवा३४। स्वदक्षसाधनः। ओ
५   १रर   र र   १   १   १
६वा। देवेभ्यःपीतयेहा२रायि। मा२रु। ज्ञो२३वा।
१ ६ २र २र २   १   ५ ५   ३ १
यवौ३हो। वाहा३४३यि। मा२३४दो६हायि ॥(१) सन्दे
    र र   र र   ५ ५   १ र र
३४। वैःशोभतेवृषा। ओ६वा। कविर्य्योनावधिप्रा२

* ऊ० मा० १प्र० १ख० ८ सा०।

याः। पा२वा। मा२३नाः। अदौ३ह्रो। वाहा३४३
यि। भा२३४यो६हायि॥(२) पवा३४। मानधियाहि
तः। ओ६वा। अभियोनिकनिक्रा२दात्। धा२र्मा।
णा२३वा। युमौ३ह्रो। वाहा३४३यि। रू२३४ओ६हा
यि(३)॥ ८ *॥ [२]

॥ त्वाष्ट्रीसाम॥ पवस्वदा। क्षसा२धाना२ः। दा
यिवेभ्यःपो। तयायिन्द्रा१रा२यि। मरुद्भ्यो२३वा। यवे
मदा३१उवा२३॥(१) सन्देवैःशो। भता२यिवार्षा२।
काविर्योनौ। अधायिप्रा१या२ः। पवमा२३नाः। अदा
भिया३१उवा२३॥(२) पवमाना। धिया२हायिता२ः।
आभियोनिम्। कनायिक्रा१दा२त्। धर्म्मणा२३वा।
युमारुहा३१उवा२३। वृधे१(३)॥ १ †॥ [३] १०

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० ८गा०। † ऊ० गा० १६प्र० २ख० १गा०।

Digitized by Google

अथ प्रगाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

तवाहᳪसोमरारणसख्यइन्दोदिवेदिवे।

३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ २उ ३ १ २

पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमामवपरिधीᳪरतिताᳪइहि॥ १*॥

हे "इन्दो" स्यन्दमान-सोम! "तव" "सख्ये" सखि-कर्मणि "अहं" "दिवेदिवे" अन्वहं "रारण" रमे [रणेर्लिटि उत्तमे णलि रूपम्]। हे "बभ्रो" बभ्रुवर्ण-सोम "पुरूणि" बहूनि रक्षांसि "मां" तव सख्ये स्थितं "नि अव चरन्ति" नीचीनं चरन्ति बाधन्ते। ये मां बाधन्ते तान् "परिधीन्" "अति इहि" अतीत्य गच्छ जहीति यावत्॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

तवाहन्नक्तमुतसोमतेदिवादुहानोबभ्रऊधनि।

३ १ ३र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

घृणातपन्तमतिसूर्य्यंपरःशकुनाइवपप्तिम॥ २ †॥ ११

हे "बभ्रो" बभ्रुवर्ण-सोम! "उत" अपिच "नक्तम्" "उत" अपिच "दिवा" अहोरात्रयोः "सख्याय" सख्यार्थं ‡ "तव"

---

* छ० आ० ६, १, ३, ६ (२भा० ८१३०) = ऋ० वे० ७, ५, १५, ४।

† ऋ० वे० ७, ५, १५. ५।

‡ सख्यायेति ऋग्वेदीयपाठमवलम्ब्येदं व्याख्यातं यतः सामवेदीय-पाठस्तु "दुहानः"—इति।

Digitized by Google

"उधनि" समीपे * "अह" रमे—इति शेषः। "ते" वयं "घृणा" दीप्त्या "तपन्त" ज्वलन्त "परः" परस्थानस्थितं "सूर्य" तदात्मकं त्वाम् † "अति पप्तिम" तत्र स्थितं त्वां प्राप्तुमतिपतेम। कथमिव? शकुनाइव यथा सुपर्णादयः पक्षिणः सूर्यमतिगच्छन्ति तद्वत् ‡ [पतॢगतौ, अस्माच्छान्दसो लिटि "तनिपत्योश्छन्दसि (६, ४, ६६)"—इत्युपधालोपः॥

"दुहानः"--"सख्याय"—इति पाठौ॥२॥११

॥ आष्टादंष्ट्रोत्तरम्॥ तवाहंसोमरारणऐयादौ। होइवा। सख्यइन्दोदिवे। दायिवे २ ३। ऐया२३त्। औ२३होवा। पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमाम्। आवा२३। ऐया२३त्। औ२३होवा। परिधीꣳरतितान्। आयि हा२३यि। ऐया२३त्। औ२३होवा२३४३॥(१) परिधीꣳ रतिताꣳइहिऐयादौ। होइवा। परिधीꣳरतितान्।

---

* 'उधनि—दशापवित्रात् द्रोणकलशे'—इति वि०।

† 'परःसूर्यम्—सूर्यादपि परतः'—इति वि०।

‡ 'एतदुक्तं भवति—सख्ये वयं स्थिताः पुरूणि यजमानकुलानि त्वा मुपचरामः, एव मुपचरमाणाः शकुनाइव पप्तिम'—इति वि०।

Digitized by Google

१ १र १ र २ १ १र १
आयिष्ठा२३यि। ऐया२३त्। औ२३होवा। तवाहन्न

२ १ र १र १ १र १ र
क्तमुतसोमते। दायिवा२३। ऐया२३त्। औ२३हो

२ र १र २ र १ १र १
वा। दुहानोबभ्रुज। धानी२३। ऐया२३त्। औ२३

र २ २र १र २ १र२ १र१र१र १ १
होवा३४३॥(२) दुहानोबभ्रुजधनिऐयादौ। हो३वा।

र १र २र १ १र १ र २
दुहानोबभ्रुज। धानी२३। ऐया२३त्। औ२३होवा।

१र २ १११र२ १ १र १
घृणातपन्तमतिसूरियम्। पारा२३ः। ऐया२३त्। औ

र २ १र २ १ १र
२३होवा। शकुनाइवप। ष्ठायिमा२३। ऐया२३त्।

१ र १ १
औ२३होवा३४३। ओ२३४५ई। डा॥९*॥[१]

२र र र
॥ आभीशवोत्तरम्॥ तवाहꣳसोमरारणए। ए। स

र ३ १ २ २ ३ ५ २ २ १
ख्यइन्दो३दायिवे१दिवा॥यि। पू२३४ह। हा३हा। पि

र २ २ ३ ५ २ २
बभ्रोनिचरन्तायिमा१मवा। पा२३४री। पा३हायि।

१ २ १ ५ ४ ५ २ र
धायिꣳरतितो२२४वा। आ५यिहो६हायि॥(१) परिधीꣳ

---

* ऊ० गा० २प्र० १ख० ९षा० ।

रतिताॅइहिए। ए। परिधीॅराइतायिताॅइहायि।
ता२३४वा। हाइहायि। अच्चनक्तमुतसोमातेऽदिवा।
दू२३४हा। हाइहायि। नोबभ्रओ२३४वा। धा५नोई
हायि॥(२) दुहानोबभ्रऊधनिए। ए। दुहानोवाइभ्राऊ१
धनायि। घा२३४णीं। हा ३ हा। तपन्तमतिसूराय
म्यार:। श्चा२३४क। हाइहायि। नायिवपो२३४वा।
म्रा५यिमोइहायि(३)॥ १० *॥ [२]

॥ स्वःपृष्ठम्† ॥ तवा२हॅसो३४। औहो५मरारणा।
सख्या२इन्दो३४। औहो५दिवेदिवायि। पुरूरिणबा३
४औहो५भ्रोनिचरा। श्रो। तार्यिमा२३४औहोवा। घा
२३४वा। ऊ२३४पा। ऊ२३४पा। परिधीॅरा २ ३।
तारयिताॅ२३४औहोवा। ई२३४हो॥(१) परारयिधीॅ

* ऊ० गा० १प्र० १अ० १०षा०। † "पृष्ठम्"—इति वि०।

रा३४। औहोऽ५तिताऽ२इदायि। परा२यिधीऽ२रा३४। औहोऽ५तिताऽ२इदायि। नवा२च्चा३४। औहोऽ५क्तामु तसो। ओ। मा२ता२३४औहोवा। दी२३४वा। ज २३४पा। ज२३४पा। दुद्दानोवा२३। भा२ज२३४औ होवा। धा२३४नी ॥(२) दुह्वा२नोवा३४। औहोऽ५भ्र जधनायि। दुह्वा२नोवा३४। औहोऽ५भ्रजधनायि। घृ णा२तपा३४। औहोऽ५न्तमतिसू। ओ। रा२या२३४ औहोवा। पा२३४राः। ज२३४पा। ज२३४पा। मक्र ना आ२ ३ यि। वा २ पा २ ३ ४ औहोवा। म्री २ ३ ४ मा(३) ॥ ११ * ॥ [३]

॥ पभीवर्त्तम् ॥ परा३यिधा३यिऽ२रा१तिताऽ२इदोवा। परिधीऽ२र। तिताऽ२आ१यिहा २यि। तावाच्चा३१२३४।

° ज० गा० १प्र० १ख० ११गा०।

२ ४५र ११ १ १२ ३१
क्तामुतसो। मतायिदा१यिवा२। दुहानो१वा२। भ्रज

१ ११११ १
३। धा२३४५। ना२३४यि(२)॥ १८*॥ [४]

३ ४र३ ४र ५ र र ११
॥ उत्सेधम्॥ तवाह्०सोमरारण। सख्ये। इन्दा

३र ४र ५ १ १र २
३४औहोवा। दिवेदिवाऽ२यि। हा३१उवा२३। ऊ३

५ ३२ ४ ५र ४ ५ १ ११
४ पा। पुरू ३ णिबा। औहोवाहायि। भ्रोनिचरा।

१र ११ २ ५ ३१ ४र
तिमामाव। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। परा३यिधी०

५र ४ ५ ११ ४
र। औहोवाहायि। तिता३०सा५यिहा६५६यि॥(२)

४ ३र ४ ३र ४ ५ ३र १ ३र ४र ५
परिधी०रतिता०इहि। परि। धी०रा ३ ४ औहोवा।

१ १र २ ५ २२
तिता०इहाऽ२यि। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। तवा३

४ ५र ४ ५ १ ११ २र१ १र
ह्ना। औहोवाहायि। क्तामुतसो। मतेदायिवा।

२ ५ ११ ४र ५र ४ ५
हा३१उवा२३। ऊ३४पा। दुहा३नोव। औहोवाहायि।

११ ४ ४र ३र४ ३र४ ५ र
भ्रज३धा५ना६५६यि॥(२) दुहानावभ्रजधनि। दुहा।

---

* ऊ० गा० ८प्र० १ख० १८गा०।

२र १ ३र ४र ५ १ १र २
नोबा३४औहोवा। भ्रजऽधनाऽ२यि। हा३१उवा२३। ज
५ ३ १ ४ ५र ४ ५ १ २ १
३४पा। घृणा२तपा। औहोवाहायि। तामतिसू।
२ १ १ २ ५ ३ १ ४र
रियंपार। हा३१उवा २ ३। ज३४पा। शकूइनाश।
५र ४ ५ ३ २ ४ ३ १ १ २ १
औहोवाहायि। वपा३प्ना५यिमा६५६। ज२३४५(३)॥

॥ १० * ॥ [५]

५ १ ४ ५ ४र ५ १
॥ जनित्राद्यम्॥ परिधा३यि॰राततिता॰इहायि। ऊ
१ १ र १ १र
वेहो२यि। परिधी॰रतिता॰आ१यिहा२यि। नवाहम
३ २ ३ ५ १ १ १ र
कामुतसो२। मतायिदा२३४यिवा। दुहा३होयि। नो
२ १ २ १र ३ ५र र २ १ १ १
वा३हो। भ्रज। धा२ना२३४औहोवा। जनित्रा२३
१ १
२३४५म्(२)॥ १४ †॥ [६]

१ २र १ २र १र २ १ १
॥ समन्तम्॥ तवाह॰सोमरारणा। सख्यइन्दोऽदि
१र १ र २ १ २ १
वेदिवायि। पुरूणा२३यिबा। भ्रोनिचर। तिमामा

---

* ऊ० गा० ६प्र० १ख० १८सा०। † ऊ० गा० ६प्र० २ख० १४सा०।

वां। औहो३४वाहायि। प। रायिधा२३यि९रा३।
होवा३हायि। तिता९भा२३यिहा३४३यि॥(१) परिभी९
रतिता९इहायि। परिधी९राऽतिता९इहायि। तवा
हा२३म्ना। क्तामुतसो। मतायिदायिवां। औहो३४
वाहायि। दु। हानो२३वा३। होवा३हा। भ्रजधा
२३नां३४३यि॥(२) दुहानोवभ्रजधनायि। दुहानोवाऽ
भ्रजधनायि। घृणातार३पा। तामतिव। रियाम्या
रा। औहो३४वाहायि। म। कूना२३चा३यि। हो
वा३हायि। वपम्रा२३यिमां३४३। ओ२३४५ई। ओ२३
४५ई। डा(३)॥ १ *॥ [७]

॥ यौधाजयम्॥ तवाह१। हा३९सो। म। रां
रा२३४पा। साख्या३यि। इन्द्रो२। दिवा३४५वि।

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १गा०।

Digitized by Google

२ ५ २१२१ २र १ २१

दी२३४वे। पुरुणिवा। औ। निचरार२। तिमा३४५म्।

२ ५ २ १ २१

आ२३४वा। परा२यि। धायि९रार२। तिला९३४५।

२ ५ ११ २ ४ ५ १

ई२३४हो॥(१) परा३१यि। धा३यि९र। ति। तौ९

२ ५ १ १ १र २१

आ२३४यिचायि। पारी३। धी९रार२। तिता९३४५।

२ ५ २१२१ २ १ २१

ई२३४वौ। तवाहमा। काम्। उतसो२। मता३४

२ ५ २ १र २१

५यि। द्वी२३४वा। दुहा२। नोबार२। अज३४५।

२ ५ २१ २४ १र २१

धार२३४नी॥(२) दुवा३१। नो३व। औ। जधा२३४

५ १२ १र १२ २ ५

नायि। दूद्रा३। नोबार२। अज३४५। धार२३४नी।

२१२१ २ १ २२ २

घृणातपा। तम्। अतिसूर२। रिया३४५म्। घा२३

५ २ १ ११ २

४राः। शकु२। नाआरयि। वपा३४५। मी२३४

५

मा(३)॥२ * ॥ [८]

५र २ ४र५४र ५ १

॥ पौरुहन्मनम् ॥ तवाहा३९सोमरारणा। सख्य

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० २गा०।

१ र १ २ १ १ र २
इन्दो। दिवायिदा१यिवा२यि। दायिवा२यिपूछणि

१ २ १ २ १ २ १ ५
व। भो। निचरा३। निचरा३। तायिमामार३४वा।

१ १ र १ २ २ ५ ४
पारिधीॱरा। तायिताॱआर३४यिहायि। तिताॱ५इ

५ २ ४ ५ ४ र ५ १ २र
हायि॥(१) परिधा३यिॱरातिताॱइहायि। पारिधीॱ

१ २ १ १ र १
रातिताॱआ१यिहा२यि। आयिहा२यि। तावाइन्द

१ २ १ २ १ २ २ ५
ज्ञाम्। उतसो३। उतसो३। मातायिदार३४यिवा।

१ २र र १ २ २ ५ ४
दूहानोवा। भ्राजधा२३४नायि। भ्रज ५ धनायि॥(२)

५ र २ ४ ५ ४र ५ १ र २र १ २
दुहानो३वभ्रजधनायि। दूहानोव। भ्रज१ा१ना२यि।

१ १ र १ १ २ १ २
धाना२यि। घार्णातप। ताम। आतिसू३। आतिसू

५ २ ३ ५ १ २र १ २ २
३। रायम्पार३४रा:। आकुनाआयि। वापम्नार३४यि

५ ४ ४
मा। वपा५म्निमा। होपूई। डा(३)॥ १५ *॥ [९]

५ र २ ४र ५ ४र ५ १ २र
॥ दैगतम्॥ तवाहा३ॱसोमरारणा। साख्यइन्दो।

० ऊ० गा० १६प्र० १ख० १५गा०।

दिवायिदा१यिवा२यि । पुरु३ । हौ३हो३वा । पिब
श्रोनिचरन्तायिमा१मवा२ । परा२३यि । धा२यिऽरा२
३४औहोवा । ए३ । तिता२ऽइहा२३४५यि ॥(१) परि
धा३यिऽराऽतिताऽइहायि । पारिधीऽर । तिताऽश्रा
१यिहा२यि । तवा३ । हौ३हो३वा । अहन्नक्तमुतसो
माते१दिवा२ । दुहा२३ । नो२वा२३४औहोवा । ए३ ।
भ्रज२धना२३४५यि ॥(२) दुहानो३बभ्रऊधनायि । दू
हानोब । भ्रऊधा१ना२यि । घृणा३ । हौ३हो ३ वा ।
तपन्तमतिसूरायम्पारा२ः । अकू२३ । ना२भा२३४औ
होवा । ए३ । वपा२ऽग्निमा२३४५(३) ॥ १६ * ॥ [१०]

॥ गौक्रवम् ॥ नवाहा३ऽसोमरारणा । सख्या२
यि । इन्दोदिवे३ । दायिवायि । पुरूपिबश्रोनिचा२३

* ऊ० आ० १६प्र० २ख० १६सा० ।

१ ३२ २५ २१र र ३२ ४
रार। तिमाइमावा। पुरूणिबभ्रोनिचर। तिमाइमा
५ १ २र १ २ २ १ ५
वा। पारिधीन्। घा। औइहो। तितोर३४वा।
४ ५ ५ ४६ ५ ४र ५
घापूयिघोईहायि॥(१) परिधाइयिरानितांईहायि।
१ १र ३१ ४ ५ २१प
पारीर। धीरतिनाइ। आयिहायि। तवाहन्न
१ ३२ ४ ५ २१र र
क्तमुता२३सोर। मताइयिदायिवा। तवाहन्नक्तमुतसो।
३१ ४ ५ १ र र १ २ २ १
मताइयिदायिवा। दूहानः। वा। औइहो। धचो
५ ५ ५ ५ र २ ४ ५ ४र ५
२३४वा। धापुनोईहायि॥(२) दुहानोइवभ्रजधनायि।
१ १र ३ २ ४ ५ २ १र
दूहार। नोबभ्रज३। धानायि। घृणातपन्तमतार३
१ ३२ ४ ५ २१र र ३२ ४५
यिमूर। रियाइपाराः। घृणातपन्तिमू। रियाइपाराः।
१ २र १ २ २ १ ५ ४
शाकुनाः। आ। औइहो। वपोर३४वा। घापुयिमो
५
ईहायि(३)॥ १७ ॥ [११]

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ष० १७गा०।

२ ४र २ ४र५ र २
॥ द्विनिधनमायास्यम् ॥ तवाहꣳसोमरारण । ए३ ।
२ ४ १ २ १ २ १
औ३हो५वा ऽऽ । साख्या३यि । इन्दोऽ२ । दिवा३४५यि ।
२ १ ११११ १र २१ २१
दा३यिवा२३४५यि । पूरूणिबा । भ्रोनिघरा । तायि
२ १ २ ४ ५ २१ २ २
मा३भा । औ३हो३ । आ२३४वा । पराऔ ३ हो ।
१ ३ २ २ १११११
धायिꣳरा२ । तिताꣳ३४५ । भा३यिहा२३४५यि ॥(१)
४ ३र ४ ३र ४ ५ २ २ ४ १ २
परिधीꣳरतिताꣳइहि । ए३ । औ३हो५वा ऽऽ । पारी
१र ३ २ २ १११११
३ । धीꣳरा२ । तिताꣳ३४५ । भा३यिहा२३४५यि ।
१ र २ १ २ १ २ १ १ ४
तावाहना । कामुतसो । माता३भा । औ३हो३ ।
५ ३१ २ २ १ ३ २
दी२३४वा । दुहाऔ३हो । नोवा २ । भज ३ ४ ५ ।
२ १ ११११ ४ र ३र ४ ३र ४ ५ २ २
धा३ना२३४५यि ॥(२) दुहानोवभ्रजधनि । ए३ । औ३
४ १ २ १र ३ २ २
हो५वा ऽऽ । दूहा३ । नोवा२ । भ्रज२३४५यि । धा
र ११ २ १ २ १ २ ४
पीतपा । तामतिसू । राया३भा । औ३हो३ । पा

Digitized by Google

५ ११२ २ १ ३२ २
२३४राः । प्रकूऔ३हो । नाआरयि । वपा३४५ । प्रा
१ ११११
३यिमा२३४५ (३) ॥ १८* ॥ [१२]

२१ ४र ३ ५ ११ १र
॥ पृश्नि ॥ तवाहा२३ꣳसोमरारणाहाउ । सख्यइन्दो
१र १ २ १२ २ १ऽ २
दिवेदिवे । पुरूणा१यिबा२३ । होवा३हा । भ्रोनिचर । नि
१२ १२ १ १ २
मामा१वा२३ । होवा३हायि । परायिधा१यिꣳरा२३ ।
१२२ १ र१ १ २ १
होवा३हायि । तायिताꣳइहि । इडा२३भा३४३ । ओ
२३४५ई । डा(१) ॥ १ † ॥ [१३]

१२र१ २र र १
॥ अर्कपुष्पाद्यम् ॥ तवाहꣳसोमरारण । ऊवे२३ ।
२१ २र १र २र १ २१र १र१ २
सख्यइन्दोदिवेदिवे । ऊवे२३ । पुरूणिबभ्रोनिचरन्ति
१र २ १ २ १र २१र २ १
मामव । ऊवे२३ । परिधीꣳरतिताꣳइहि । ऊवे२३ ॥(१)
२ १र २१र २ १ २ १र २१र २
परिधीꣳरतिताꣳइहि । ऊवे२३ । परिधीꣳरतिताꣳइ
१ १२र१ ११र २र १२र १
हि । ऊवे२३ । तवाहन्नक्तमुतसोमतेदिवा । ऊवे२३ ।

---

* ऊ० गा० १६प्र० २ख० १८सा० । † ऊ० गा० १८प्र० २ख० १सा० ।

Digitized by Google

२ र १र २ १र२ १ २ र १र २ १र२
दुहानोबभ्रऊधनि। ऊवे२३॥(२) दुहानोबभ्रऊधनि।
१ २ र १र २१र२ १ २१र २१२
ऊवे२३। दुहानोबभ्रऊधनि। ऊवे२३। घृणातपन्तमति
१र २ १ २ १र १ १
सूर्य्यम्परः। ऊवे२३। भ्रकुनाइवपप्तिम। ऊवे२३।
१ १ २ २ २ ५र र २ १र
ऊवे२३। हावा३हा३। हा३४। औहोवा। अर्क्षी
र र १र २ १ १ १ १
देवाना२म्। परमेवियो२मा२३४५न्(३)॥ १४ *॥[१४]

॥बार्हदुक्थम्॥ तवाह२सोम। रा२रणा। सख्य
र २१र २ १२ १ ७
इन्दोदिवेदा२३यिवा१यि। पूरू१णायिबा२। भोनिचरा
१र २ १र
२। तिमामवा। परिधा२३यिऽरा। तिताऽआ२३यि
२ २ १र २ १
हा३४३यि॥(१) परिधीऽरति। ता२ऽइहायि। परि
र २ १र २ १ २ १ ७
धीऽर्तताऽआ२३यिहायि। तावा१हान्ना२। क्तामु
१र र २ १र २
तासो२। मतेदिबा। दुहानो२३बा। भ्रऊधा२३ना
२ र १र२र १ र र
३४३यि॥(२) दुहानोबभ्रो। ऊ२धनायि। दुहानोब

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १५गा०।

भ्रूऊधा २३ नायि। घार्णा१तापा२। तामतायिसू२।
रियम्परा:। ग्रक्रुना२३भायि। वपप्पा२३यिमा३४३। भौ
२३४५ई। डा(३)॥ १५ *॥ [१५]

॥ माण्डवम्॥ तवाहऽसोमराराणा। सख्यइन्दो
दिवेदिवे। पुरूणा१यिवा२। भ्रूनिचर। तिमामा१वा
२। परिधा२३यिऽरा। निताम्। आ२यिहा२३४औ
होवा॥(१) परिधीऽरनिताऽआयिहायि। परिधीऽरति
माऽइहि। तवाहा१म्रा२। क्रामुतसो। मतायिदा
१यिवा२। दुहानो२३वा। भ्रूऊ। धा२ना२३४औहो
वा॥(२) दुहानोवभ्रूऊधानायि। दुहानोवभ्रूऊधमि।
घृणाता१पा२। तामतिसू। रियाम्पा१रा२:। ग्रक्रुना

* ऊ० गा० २प्र० १ख० १५ खा०।

२　　१　　२　५र २　　१ र १ २
२३आयि । वप । प्रा२यिमा२३४औहोवा । विद्दावसू

१ १ १ १
२३४५(३) ॥ १६ * ॥ [१६] ११

अथ तृतीय-तृचे—

प्रथमा ।

२　१ २　३ १उ २　१२　१ २
पुनानो अक्रमीदभिविश्वामृधोविचर्षणिः ।

२ २ ३ १२ ३　१ २
शुम्भन्तिविप्रन्धीतिभिः ॥ १ † ॥

"पुनानः" पूयमानः "विचर्षणिः" विद्रष्टा सोमः "विश्वा" सर्वान् "मृधः" हिंसकान् शत्रून् "अभि अक्रमीत्" अतिक्रान्तवान्, तं "विप्रं" मेधाविनं "धीतिभिः" कर्मभिरभिषवादिभिः स्तुतिभिर्वा "शुम्भन्ति" दीपयन्ति अलङ्कुर्वन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१　२र　२ १　२३१२ २　२ १२ ३२
आयोनिमरुणोरुहद्गमदिन्द्रोवृषासुतम ।

३ १　२र
ध्रुवेसदसिसीदतु ॥ २ ‡ ॥

अयम् "अरुणः" अरुणवर्णः सोमः "योनिं" स्थानं द्रोणकलशम् "आरुहत्" आरोहति, ततो "वृषा" कामानां वर्षकः

---

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १६ सा० ।

† ऋ० चा० ६, १, १, २ (२ भा० ४४ पृ०) = ऋ० वे० ६, ८, १०, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १०, २ ।

Digitized by Google

"इन्द्रः" "सुतम्" अभिषुतं सोमं "गमद्" गच्छति, गत्वा "ध्रुवे सदसि" स्थिरे स्थाने द्युलोकाख्ये "सीदति"* निवसति ॥

"इन्द्रोवृषासुतम्"-"इन्द्रं वृषा सुतः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ १ ३ ३ १ २ ३ १ १ ३ १ २

नूनोरयिम्महामिन्दोऽस्मभ्यꣳसोमविश्वतः ।

१ २ ३ १ २

आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३ † ॥ १२

हे "सोम !" अभिषुतस्त्वं हे "इन्दो !" "नः" अस्मभ्यम् "नु" क्षिप्रं "महां" महान्तं "सहस्रिणम्"‡ असङ्ख्यातं "रयिं" धनं "विश्वतः" "आ पवस्व" सर्वतः परिस्रव ॥ ३ ॥ १२

३ २ र र

॥ सत्रासाहीयम् ॥ पुना ३ ४ । नोयक्रमीदभि ।

५ ५ १ र र १ १

औ३वा । विश्वाम्टधोविचर्षा२णायिः । शु२म्भा । ता

१ १ ऽ १र २र १ १ ५

२३यिवौ । प्रन्धो३हो । वा चा३४३यि । ता२३४यिमो६

५ २र १ र ५ ५ १

हायि ॥(१) आयो३४ । निमत्सोरुहत् । औ३वा । गम

र र १ ० १ १ १ ऽ

दिन्द्रोवृषासू२ताम् । ध्रु२वे । सा२३दा । सिसौ ३

* "सीदति"—इति ऋग्वेदीय पाठः, मूलपाठस्तु "सीदतु"—इति ।

† ऋ० वे० ९, ८, १०, ३ ।

‡ 'सहस्रिणं -सहस्रसंख्यातम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

हो। वाहा३४३यि। दा२३४तो६हायि॥(२) नूनो३४।
३४। रयिम्महामिन्द। ओ६वा। अस्मभ्यꣳसोमविश्वा
२ताः। आ२पा। वा२३स्वा। सहौ३हो। वाहा३
४३यि। स्वा२३४यिणो६हायि(३)॥ १२ *॥ [१]

॥ यामम्॥ पुनानोआ२। क्रमीदा२३४भी। वि
श्वाम्रृधोर। विचर्षा२३४णायिः। शुम्भतिवा२३यि। प्र
न्धा३यितापुयिभा६५६यिः॥(१) आयोनिमा२। कृणो
२३४हात्। गमदिन्द्रो२। वृषासू२३४ताम्। ध्रुवेस
दा२३। सिसा३यिदापुता६५६उ॥(२) नूनोरया२यि
म्। महामा२३४यिन्दो। अस्मभ्यꣳसो२। मविश्वा२३
४ताः। आपवस्वा २ ३। सहा ३ स्रा ५ यि णा ६ ५
६ म्(३)॥ ११॥ [२]

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० १२गा०। † ऊ० गा० १३प्र० १ख० ११गा०।

॥ यामोत्तरम् ॥ पुनानोअक्रमीदभि । औहा३औ
हा । विश्वामृधोविचर्षणिः । औहा३औहा । शुम्भ
ता२३यिवि । प्रन्धा३यितापुयिभा६५६यिः ॥(१) आयो
निमरुणोरुहत् । औहा३औहा । गमदिन्द्रोवृषासुतम् ।
औहा३औहा । ध्रुवेसार२३दे । सिसा३यिदा५ता६५
६उ ॥(२) नूनोरयिंमहामिन्द । औहा३औहा । अस्म
भ्य९ंसोमविश्वतः । औहा३औहा । आपावा २ ३ स्व ।
सहा३स्रा५यिणा६५६म् (३) ॥ १२ * ॥ [३]

॥ गौराङ्गिरसस्य साम ॥ आहायिहा३वार३यि । ऊव
ए । पुनानोआ३क्रा३मीदभि । विश्वामृधो३चर्षणिः ।
शुम्भतिवि । प्रन्धा३यितापुयिभा६५६यिः ॥(१) आयो
निमा३रु३णोरुहत् । गमदिन्द्रो३वा३र्षासुतम् । ध्रुवे

* अ० आ० १२प्र० २ख० ११सा० ।

२ १ ४ १२ र ४
सद । सिसा३यिदापूता६३६उ ॥(२) नूनोरया३यिमा३

१२ ३ ५र ४ १३५ १२ र
द्यामिन्दो । अस्मभ्य᳚सो३मा३विश्वतः । ओचोयि । इ

१ २३१ र २१ ४
३वा२३यि । इवा । आपवस्व । सद्दा३स्ता५यिणा ६५

६ म्(३) ॥ १२ * ॥ [४] १२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
चतुर्थ खण्डः† ॥ ४ ॥

—— ——

अथ पञ्चम-खण्डे‡ प्रथमदृचे—

प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ १ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
पिबा सोममिन्द्रमन्दतुत्वायन्ते सुषावहर्यश्वाद्रिः ।

१ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ ३
सोतुर्बाहुभ्या᳚सुयतोनार्वा ॥ १ ¶ ॥

हे "इन्द्र!" "सोमं" "पिब", स सोमः "त्वा" त्वाम् "मन्दतु" मादयतु, हे "हर्यश्व" हरितवर्ण्णाश्ववन्! इन्द्र!

---

* क० आ० १३प्र० २० १३गा ० ।

'उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि० ।

‡ 'इदानीं पृष्ठान्युच्यन्ते विराजं पृष्ठं भवति । यत्राग्निमन्थनम् ॥'—इतिवि० ।

¶ छ० आ० ५, १, १, ८ (१भा० ८(४ पृ०) = ० ५, ४, ५, १ ।

Digitized by Google

"ते" त्वदर्थं "सोतुः" अभिषवकर्त्तुः "बाहुभ्याम्" "अर्वा" रश्मिभ्यामश्वइव "सुयतः" सुष्ठु परिगृहीतः "अद्रिः" ग्रावा "यं" सोमं "सुषाय" अभिषवं करोषि, स मन्दत्विति पूर्वेण सम्बन्धः॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यस्तेमदोयुज्यश्चारुरस्तियेनवृत्राणिहर्यश्वहᳬसि।
१२ १२
सत्वामिन्द्रप्रभूवसोममत्तु॥ २ *॥

हे "हर्यश्व!" "इन्द्र!" "ते" तव "युज्यः" योग्यः "चारुः" समीचीनः "मदः" मदकरः "यः" सोमः "अस्ति" विद्यते "येन" च पीतेन सोमेन "वृत्राणि" आवरकादीनि राक्षसादीनि "हंसि", हे "प्रभूवसो" प्रभूतधन इन्द्र! "त्वा" त्वां "सः" सोमः "मदतु" मादयतु॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३
बोधासुमेमघवन्वाचमेमांयान्तेवसिष्ठोअर्चतिप्रशस्तिम्।
३ १२ १२ ३ १ २
इमाब्रह्मसधमादेजुषस्व॥ ३ †॥ १३

हे "मघवन्" इन्द्र! "ते" तव "प्रशस्तिं" स्तुतिरूपां "यां" वाचं "वसिष्ठः" नामर्षिः "अर्चति" वहति, "इमां" वसिष्ठस्य

---

* ऋ० वे० ५, २, ५, २। † ऋ० वे० ५, २, ५, ३।

सम्बन्धिनीं वाचं "सु आ बोध" सुष्ठु अभिबुध्यस्व किञ्च "इमा" इमानि "ब्रह्म" ब्रह्माणि हवीरूपाख्यन्नानि * "सधमादे" यज्ञे "जुषस्व" सेवस्व ॥ ३ ॥ १३

॥ दैर्घतमसम् ॥ हाउपिबा। सोममिन्द्र। मा। दतुत्वा। यन्तेसुषावहरिया। अश्वा१द्री२ः। अश्वाद्री२ः। सोतुर्बाहुभ्याम्। सुयता३ः। सुयताः। ना२र्वा२ ३ ४औहोवा ॥(१) हाउयास्तायि। मादोयुजियः। चा। रुरस्ता३यि। रुरस्तायि। येनवृत्राणिहर्य्यश्वा। हा१ ९सा२यि। हा९सा२यि। सत्वामिन्द्रा। प्रभूवसा३ उ। भूवसा३उ। ममा२त्तू२३४औहोवा ॥(२) हाउबो धा। सूमेमघवन्। वा। चमेमा३म्। चमेमाम्। यान्तेवसिष्ठअर्चतिप्रा। शा१स्ता२यिम। प्रास्ता

---

* 'अथवा ब्रह्माणि च विप्रलक्षणानि'—इति वि०।

२यिम। इमाब्रह्मा। सधमादा३यि। धमादा३यिः।
जुषा२स्वा२३४औहोवा(३) ॥ १ * ॥ [१]

॥ मरायम् ॥ हाउहाउहाउ। पायिबा। सोमाम्।
इन्द्र। मन्दतुत्वा। त्वा। त्वा। यान्तायि। सुषा।
वच्चर्य्यस्वाद्रिः। द्रिः। द्रिः। सोत्हः। बाहू। भ्या२
सुयतोनार्वा। र्वा। र्वा ॥(१) यास्तायि। मदो। यु
जियस्वा२रस्ति। स्ति। स्ति। यायिना। वृत्रा। षि
वर्य्यस्वह२ंसि। सि। सि। त्वाम्। इन्द्रा। भूप्र
वसोममत्तु। तु तु ॥(२) बोधा। सुमायि। मघवन्।
बाचमेमाम्। माम्। माम्। यान्तायि। वसायि।
ष्ठोमश्चंतिप्रशस्तिम्। स्तिम्। स्तिम्। अयिमा। ब्र
ह्मा। सधमा। देजुषस्व। स्व। स्व(३) ॥ २ † ॥ [२] १३

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ष० १षा०। † ऊ० गा० ११प्र० २ष० २षा०।

Digitized by Google

अथ द्वितीयहृचे—*प्रथमा ।

२ ३ १ २　३ १ २ ३ १ २
विश्वाःपृतनाअभिभूतरन्नरः

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सजूस्ततक्षुरिन्द्रञ्जजनुश्चराजसे ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
क्रत्वेवरेस्थेमन्यामुरीमुतोग्र

२र ३ १ २ ३ १ २
मोजिष्ठन्तरसन्तरस्विनम् ॥ १ † ॥

"विश्वाः" सर्वाः व्याप्ता वा "पृतनाः" [पृङ् व्यायामे (तु०, आ०); व्याप्रियन्ते इति पृतनाः] सेनाः परस्परं सङ्गताः सत्यः "अभिभूतरम्" [शत्रूणामित्यर्थः] अभिभवितारम् "इन्द्रम्" "ततक्षुः" आयुधादिभिः तीक्ष्णीचक्रुः आयुधवन्तम-स्त्रवन्तञ्च चक्रुरित्यर्थः [यद्वा पृतना इति सङ्ग्राम नाम (निघ० २, १७, १८); व्याप्रियन्ते अत्रेति पृतनाः सङ्ग्रामाः, सर्वा-नेव सङ्ग्रामानभिभावुकमिन्द्रं "नरः" नेतारः स्तोतारः अन्योन्यं सङ्गताः स्तुतिभिः तीक्ष्णमकुर्वन्, स्तुतोऽतिबलवान् भवतीति । यद्वा यष्टारो हविः-प्रदानेन वीर्यवन्तं कुर्वन्तीति] किञ्च स्तोतारः "राजसे" [राजतेः तुमर्थे असे प्रत्ययः (३, ४, ९)] आत्मनो विराजनार्थं प्रकाशनार्थं सूर्यात्मानमिन्द्रं "जजनुः" जनयामासुः स्तोत्र-शस्त्रैः स्व-यज्ञे प्रादुरभावयन्ति-

* 'वामदेव्यम् । मैत्रावरुणं साम । विश्वोकं प्रकाशाम'—इति वि० ।

† छ० आ० ४, २, ४, १, (१भा० ७५४४०) = ऋ० वे० ६, २, २७, ५ ।

त्यर्थः। किञ्च "क्रत्वा" ईदृशमिन्द्रम् "आसुरीम्" असुराणामभि-मुख्येन मारयितारम् "उग्रम्" उद्गूर्णबलम् अतएव "ओजिष्ठम्" ओजस्वितमं "तरसं" प्रवृद्धं "तरस्विनं" सङ्ग्रामे अनुबधार्थं वेगवन्तं बलवन्तं वा एवम्भूतमिन्द्रं धनार्थं स्तुवन्ति॥

"क्रत्वेवरेस्थेमनि"·"क्रत्वावरिष्ठंवरे"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
नेमिन्नमन्तिचक्षसामेषंविप्राअभिस्वरे।
२ १ २ ३ १ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
सुदीतयोवोअद्रुहोपिकर्णेतरस्विनःसमृक्वभिः॥ २ *॥

"नेमिम्" [अरान् यथा नेमिर्व्याप्नोति तद्वदिन्द्रं सर्वं व्याप्नुते तादृशं] नमनशीलमिन्द्रं "चक्षसा" दर्शनमात्रेणैव† "विप्राः" मेधाविनः ‡ "अभिस्वरे" ¶ अभिस्वरेण गीताय स्तोत्राय इन्द्रविषयं स्तोत्रं कर्त्तुमित्यर्थः "नमन्ति" नमस्कुर्वन्ति। कीदृशम्? "मेषम्" इन्द्रो मेषोभूत्वा मेधातिथिं स्वर्गमनयत् तस्मात् मेधातिथेर्मेषभूतमिति यावत्। इदानीं यजमानः स्तोतॄनाह—अपिच हे स्तोतारः! "सुदीतयः" शोभनदीप्तयः

---

* ऋ० वे० ६, १, १८, १।

† 'चक्षुषा दर्शनमात्रेण'—इति वि०।

‡ 'विप्राः ब्राह्मणाः'—इति वि०।

¶ 'अभिस्वरे—अभिस्वरो यज्ञस्तस्मिन् अभिस्वरे यज्ञे'—इति वि०।

Digitized by Google

"अद्रुहः" कस्याप्यद्रोग्धारः "वः" यूयं [छान्दसो वसादेशः] "तरस्विनः" कर्मसु स्तोत्रेषु वा त्वरायुताः सन्तः इन्द्रस्य "कर्णे" श्रोत्र-समीपे "ऋक्वभिः" अर्चनयुक्तैर्मन्त्रैः * [यद्वा ऋचो बह्व्यो येषु सन्ति तैः स्तोत्रादिभिः] संस्तुतः इन्द्रो यथा युष्मदीयानि स्तोत्रादीनि शृणोति तथा सम्यगभिष्टुतेत्यर्थः ॥

"अभिस्वरे"-"अभिस्वरा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
समु रेभासो अस्वरन्निन्द्रꣳ सोमस्य पीतये ।
१र २ १ ० ३ २ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ २ १ २
स्वःपतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ ३ † ॥ १४

"रेभासः" [रेभृ शब्दे (भ्वा० आ०) शब्दयितारः स्तोतारः [यद्वा, "रेभासः" कश्यप-पुत्रा रेभाः एतन्नामका ऋषयः] "इन्द्रम् उ" इन्द्रमेव "समस्वरन्" ‡ सम्यगशब्दयन् समस्तुवन् । किमर्थम् ? "सोमस्य पीतये" सोमपानाय "यद्" यदा "स्वष्पतिः" स्वर्गस्य पालयिता धनस्य स्वामी वा इन्द्रः "वृधे" यजमानादिवर्द्धनाय भवति, तदा "धृतव्रतः" धृत-कर्मेन्द्रः

---

* 'ऋक्वभिः—ऋग्वद्भिः सामभिः'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, १, २८, १ । "यदीम्"—इति च ऋ०-पाठः ।

‡ 'अस्वरन्—सामभिर्गायन्ति'—इति वि० ।

"ओजसा" बलेन "ऊतिभिः" मरुद्भिः पालनैर्वा सह सङ्गच्छते ; स्तुतिभिर्बलं मरुद्भिः पालनैश्चेन्द्रस्य भवतीत्यर्थः* ॥

"समु"-"समोम्"—इति पाठो, "स्वष्पतिः"-"स्वर्पतिम्"—इति च ॥ ३ ॥ १४

॥ त्रैशोकम् ॥ विश्वोहायि । पृतनाअभिभु । तरन रा: । सजूस्ततक्षुरायिन्द्रञ्जजनूः । चराजासोर२३४हा यि । क्रत्वौहोयि । वरौहोयि । स्थेमन्यार२मूर२३४रीम् । उतोहायि । उग्रमोर२३४जो । छन्नारार२३४साम् । हो यि । तरा३४ । स्विनम् । ओ२ईवा ॥(१) नेमोहायि । नाम । तिचक्षसा । मेषंविप्राः । अभिस्वारोर२३४हा यि । सौहोयि । दौहोयि । तयोरवोर२३४आ । क्रु होहायि । अपायिकार२३४र्णौ । तारस्वौर२३४ना: । हो यि । समु३४ । क्वभिः । ओ२ईवा ॥(२) समोहायि ।

* अत्र 'सम् उ'—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

Digitized by Google

र　२र ३ १ १　२ १र　२ र १
रायिभा । सोअस्वरान् । इन्द्र७सोम । सुपीतायो२३
५　१र　र　३　५
४वायि । सोवोयि । वौवोयि । पतार्यिर्या२३४दी ।
२ १　२ १　५　१　३　५　२
वृधोवायि । धृतव्रा२३४ताः । हियोजा२३४सा । वो
१ २　५　५　२　३
यि । समू३४ । तिभिः । ओ६वा । ओयिदो २ ३ ४
५
वा (७) ॥ १२ * ॥ [१] १४

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते †—

प्रथमा ।

१　२र　३ २उ　२ १ १ ३ १ २
योराजाचर्षणीनांयातारथेभिरध्रिगुः ।
१ २　१ १　२र　३ र३ १ २ ३ ३ ३ १
विश्वासान्तरुतापृतनानाञ्ज्येष्ठंयोवृत्रहागृणे ॥ १ ‡ ॥

"यः" इन्द्रः "चर्षणीनां मनुष्याणां "राजा" स्वामी, "रथेभिः" रथैः "याता" आगन्ता च, "अध्रिगुः" अधृतगमनो ऽन्यैः, "विश्वासां" "पृतनानां" सेनानां "तरुता" तारकः, "यः" च "वृत्रहा" वृत्रं हतवान्, "ज्येष्ठ" गुणैर्ज्यायांसं तं महाभागमिन्द्रं "गृणे" स्तौमि ॥ १ ॥

* ऊ० गा० १३प्र० २ख० १३मा० ।

† 'भरद्वाजस्य पृश्न्यात्वावाकं साम'—इति वि० ।

‡ छ० आ० ३, २, ४, १ (१ भा० ५६३ पृ०) = ऋ० वे० ६, ५, ८, १ ।

अथ द्वितीया।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ २ १ २

इन्द्रन्तꣳशुम्भपुरुहन्मन्नवसेयस्यद्विताविधर्त्तरि।

१ २ ३ २ ३ २ २ ३ २ ३ २ ३१ २र

हस्तेनवज्रःप्रतिधायिदर्शतोमहान्देवोनसूर्य्यः॥ २* ॥ १५

हे "पुरुहन्मन्" ऋषे! † त्वं "तम्" "इन्द्रं" "शुम्भ" ‡ हविःप्रदानादिना अलङ्कुरु। किमर्थम्? "अवसे" रक्षणाय ¶। एवमात्मा स्वात्मानं सम्बोध्य ब्रवीति—"यस्य" तव "विधर्त्तरि" विधारके इन्द्रे "द्विता" § द्वित्वम् अस्ति, —भोग्यमभोग्यम् [तव अत्र न् हन्तुमुपत्वं, तदनुग्रहाय अनुग्रहस्वेति हैतमर्सि]; तयोर्यं दर्शयति—"दर्शतः" दर्शनीयः "महान्" प्रभूतः "वज्रः" "देवो न सूर्य्यः" द्योतमानः सूर्य इव स्थितः, "हस्तेन" करेण "प्रति धायि" प्रतिनिहितो भवति ‖ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ५, ८, २।

† पुरुहन्मन्—पुरुहन्मा नामऋषिः स्वस्य तृषस्य सन्धानं परोक्षत् ब्रवीति' —इति वि०।

‡ 'शुम्भ—शुम्भं बलवन्तम्'—इति वि०।

¶ 'कुरुोति वाक्यशेषः'—इति वि०।

§ 'चितः, द्वितः, एकतः—इति ऋषयः; तेषां मध्ये द्विताः'—इति वि०।

‖ 'हस्तेन वज्रः प्रतिधायि—हस्तेन गृहीत्वा वज्रः प्रति धेह् पाने सर्वप्राणिनां वीर्यं रसं शोणितादि पिबते'—इति वि०।

Digitized by Google

"हस्तेन"-"हस्ताय"—इति पाठौ, "महान्देव"-"महोदेवः" —इति च * ॥ २ ॥ १५

॥ पृश्नि ॥ योराजा२३चर्षणीना१७हाउ। यातारथे
भिरध्रिगुः। विश्वासा१स्ता२३। होवा३हायि। तता।
पृतानाश्ना२३म्। होवा३हायि। ज्येष्ठांयो१वा२३।
होवा३हा। वाहागृणे। इडा२३॥(१) ज्येष्ठांयो२३वृ
त्रहागृणेहाउ। ज्येष्ठंयोवृत्रहागृणे। इन्द्रान्ता१७भू२
३। होवा३हा। भपुरुह। न्मन्नावा१सा२३यि। हो
वा३हायि। यस्यादा१यिता२३। होवा३हायि। वायि
धर्त्तरि। इडा२३॥(२) यस्यद्वी२३ताविधर्त्तरिहाउ।
यस्यद्विताविधर्त्तरि। हस्तायिना१वा२३। होवा३हा।
जः प्रतिधा। यिदार्भा१ता२३ः। होवा३हायि। महा/

* "महोदिव"—इति च क० पाठः।

Digitized by Google

१ १ २ २ १ र २ १
न्दा१यिवार३ः। चोवा३चायि। नासूरियः। इडा २ ३
१ १
भा३४३। ओ२३४५ई। डा(३)॥१४*॥ [१]

५र ४ २ ४ ५र ४ ५ १ र १
॥ अभीवर्त्तम्† ॥ योरा३जा३चर्षणीनोवा। यातार
र १ २ १ र १ २५५र
थे। भिराध्रा१यिगू२ः। वायिश्वासा३१२३४म्। तरुता।
२ १ २ २र १ २ ३ २ १
पृतानाश्ना२म्। ज्येष्ठांया१वा२। चहा३। गा२३४
३ १ १ १ ५र ४ २ ४ ५र ४ ५
५। णा२३ ४ ५ यि ॥(१) ज्येष्ठा३यो३ वृत्रहागुणोवा।
१ २र १ २ १ २
ज्यायिष्ठयोवु। चहा१गा१र्णा२यि। आयिन्द्रन्तꣳशू३१
३ ४५ २ १ २ १ २
२३४। भपुरुहू। न्मन्नावा१सा२यि। यस्यादा१यिता
२ २ १ २ १ १ १ १ ५ ४ २
२। विधा३। ता२३४५। रा२३४यि ॥(२) यस्या३दा३यि
४ ५ ४ ५ १ २ र १ २ १
ताविधर्त्तरोवा। यास्यहिता। विधार्त्ता१रा२यि। हा
र २ ३ ४ ५र २ १ २ १
स्तेनवा३१२३४। ज्रःप्रतिधा। यिन्दार्गा१ता२ः। मह्रा

---

* ऊ० गा० २प्र० २अ० १४सा०। † "अभीवर्त्तः"—इति क० पु० पाठः।

Digitized by Google

२ ३२ १ ११११
न्दा१यिवा२ः । नमू३ । रा२३४५ । या२३४५ः (३)

॥ ७ * ॥ [२]

५र र १ ४ ५ ४ ५ २ १
॥ जनित्राद्यम ॥ योराजा३चर्षणायिनाम । ऊवे

१र र २ १ र र
हो२यि । याताथेभिराधा१यिगू२ः । विश्वासान्तरु

३ २ ३ ५ १र २ १ र १
ता२ । पृताना२३४नाम् । ज्ये ष्ठा३ऽ द्दोयि । योवा३

१ २ २ १ २ १र ३ ५र र
ऽ द्दोयि । योवा३द्दो । त्रद्दा । गा२र्णा२ ३ ४ औहो

१र २ ४ ५ ४ ५ २ १
वा ॥(१) ज्ये ष्ठं यो ३ वृत्रहागृणायि । ऊवेहो२यि ।

१र र २ १
ज्ये ष्ठंयोवृत्रहागा१णा२यि । इन्द्रन्तऽ ग्रुम्भपुरुहा२ ।

३ २ ३ ५ १ २ १ २ १
न्मन्नावा२३४सायि । यस्या ३ द्दोयि । द्विता ३ द्दोयि ।

२ १ ३ ५र र ५ २ ४र ५ ४ ५
विध । ता२रा२३४ओद्दोवा ॥(२) यस्यद्दी३ताविधर्त्तरा

२ १ १ र २ १ र
यि । ऊवेद्दो२यि । यस्यद्विताविधार्त्ता१रा२यि । हस्ते

३ २ ३ ५ १ २ १
नवज्रःप्रतिधा२ । यिदार्शा२३४ताः । मद्दा३न्द्दोयि ।

* ऊ० गा० ७प्र० १ख० ७सा० ।

२१ १ २१र २ ५रर ११ ११
देवा३द्दो। नम्। रा२यां२३४औहोवा ॥(३) जनित्रा२३

११
४५म् ॥ १३ * ॥ [३] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे ‡, प्रथमतृचेण ¶—

प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ १ २ १ ३र ३क २र ३ २
परिप्रियादिवःकविर्वयाꣳसिनप्त्योर्हितः।

२ १ २ ३ १ २
स्वानैर्यातिकविक्रतुः ॥ १ § ॥

"कविः" मेधावी "कविक्रतुः" क्रान्त-प्रज्ञः क्रान्त-कर्मा "नप्त्योः" अभिषवणफलकयोः "हितः" निहितः सोमः "दिवः" द्युलोकस्य "परि प्रिया" प्रति प्रियाणि "वयांसि" यावणः ॥

"स्वानैः"-"सुवानः"—इति पाठो ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ख० १३गा०। † 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि०।
‡ 'इदानीमार्भवमुच्यते'—इति वि०। ¶ 'यौधाजयं साम'—इति वि०।
§ छ० आ० ५, १, ४, १० (१भा० ३९) = ऋ० वे० ६, ७, ३२, १।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ १ २ ३ २३ १ २ ३ २ २ १ २
ससूनुर्मातराशुचिर्जातोजातेअरोचयत्।
३ २ ३ १ २ २ १ २
महान्मही्ऋतावृधा॥ २ *॥

"जातः" उत्पन्नः "शुचिः" † विशुद्धः महान् हविष्टमः "सः" सोमाख्यः "सूनुः" पुत्रः "मही" महत्यौ "ऋतावृधा" ‡ यज्ञस्य वर्द्धयित्र्यौ "जाते" विश्वस्य जनयित्र्यौ "मातरा" आत्मनो मातरौ द्यावापृथिव्यौ "अरोचयत्" रोचयति दीपयति॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रप्रक्षयायपन्यसेजनायजुष्टोअद्रुहः।
३क २र ३ १ २
वीत्यर्षपनिष्टये॥ ३ ¶॥ १६

हे सोम! "प्र प्र" अत्यन्तं "क्षयाय" तव निवास-भूताय "अद्रुहः" अद्रुहे अद्रोग्ध्रे "पन्यसे" स्तोत्रे "जनाय" मनुष्याय

---

* ऋ० वे० ६, ७, २२, २।   † 'शुचिः दीप्तः'—इति वि०।

‡ 'ऋतावृधा—ऋतो यज्ञः तेन वर्द्धतः ऋतावृधौ अथवा ऋतमन्नं तेन वर्द्धते'—इति वि०।   ¶ ऋ० वे० ६, ७, ११, २।

Digitized by Google

"वोति"वीत्यै भक्षणाय "जुष्टः" पर्याप्तः त्वं "पनिष्टये"* स्तुतवे "अर्ष" अङ्गं प्रति गच्छ ॥

"अद्रुहः"-"अद्रुहे"—इति पाठौ, "पनिष्टये"-"च मङ्घया"—इति च ॥ ३ ॥ १६

॥ और्णायवोत्तरम् ॥ परिप्रिया२दिवःकवायिः। वया२हो१वा॒सिनप्त्रोवोर्हिताः। स्वानैर्या२३ती। ऊवा। होवा। होवा। ऊवा२यि। ई३या। कविक्रतोर२। या२३४औहोवा ॥(१) समूनुर्मा२तरायुचायिः। जाता२हो१वाजातेअरोवोचयात्। महान्मा२३ही। ऊवा। होवा। २। ऊवा२यि। ई३या। ऋतावृधोर२। या२३४औहोवा ॥(२) प्रप्रक्षया२यपन्यसायि। जना२हो१वायजुष्टोवोअद्रुहाः। वीतिया२३र्षा। ऊवा। होवा।

* 'पनतिः स्तुतिकर्म्मा (निघ० ३, १४, १६),—इति वि०।

Digitized by Google

२। ऊवा२यि। ई३र्या। पनिष्टयोर। या२३४औहो
वा। ई३या२३४५म्(३) ॥ १५ * ॥ [१]

॥ और्णायवाद्यम् ॥ परिप्रियादिवःकावीः। वया९
सिनप्त्रोर्हिताः। स्वानैर्य्या२३तो। आया२। इया
२ई३या। कविक्रतोर। या२३४औहोवा ॥(१) सन्तुनु
र्म्मातराघूचीः। जातोजातेअरोचयात्। महान्मा २ ३
ही। आया२। इया२ई३या। ऋतावृधोर। या२
३४औहोवा ॥(२) प्रप्रन्त्ययायपन्यासायि। जनायजुष्टो
अद्र हाः। वीतिया२३र्षा। आया२। इया२ई३र्या।
पनिष्टयो२। या२३४औहोवा। ई२३४५(३) ॥८ † ॥[२]

॥ बृहद्भारद्वाजम् ॥ परिप्रिया। दिवःकवायिः।
वया९सा२३यिना। प्रियोर्हिताः। स्वानैर्या२३तायि।

* ऊ० गा० २प्र० २ख० १५सा० ।　† ऊ० गा० ७प्र० २खं० ८सा० ।

आ। औ३होवा। काविक्रतुः। इडा२३ ॥(१) ससूनु
र्म्मा। नराप्युचायिः। जातोजा२३ते। परोचयात्।
मयान्मा२३ही। आ। औ३होवा। आर्त्तावृध। इडा२
३ ॥(२) प्रप्रक्षया। यपन्यसायि। जनाया२३जू। ष्टो
अद्रुहाः। वीतिया२३र्षा। आ। औ३होवा। पानि
ष्टये। इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई। डा(३) ॥ १० * ॥[३]

॥ गौषूक्तम् ॥ परिप्रियादिवौ। दौहोवाहायि।
कवायिः। वयाꣳसिनप्रियौ२। ऊवायि। ऊवा२यि।
हायिता२ः। स्वानैर्य्यातिकवौ२। ऊवायि। ऊवा२
यि। क्रातू२३ः। होऽ२वा२३४औहोवा। अग्निराऊता
२३४५ः(१) ॥ ११ † ॥[४]

॥ ईनिधनमागौयवम् ॥ परिप्रियादिवःकवा३यिरे।

---

* ऊ० गा० १५प्र० २अ० १०सा०। † ऊ० गा० १६प्र० १अ० ११सा०।

१ र र र र २
वयाॅसिनप्रगोर्हिताः। स्वानैर्य्या२३तायि। ऐ२हो१आ
२ १ ३ ५र र १ र
२३यिहो। कवि। क्रा२ह्व२३४औहोवा॥(१) ससूनु
र र १ १ र र र र र
र्म्मातराशुचा३ए। जातोजातेअरोचयात्। महान्मा२३
२ २ १र ३ ५र र
हो। ऐ२हो१आर२३यिहो। ऋता। वा२र्द्धा२३४औहो
२ र २ १र र
वा॥(१) प्रप्रक्षयायपन्यसा ३ ए। जनायजुष्टोअद्रुहाः।
र २ २ १ ३
वीतियार्२३र्षा। ऐ२हो१आर२३यिहो। पनि। ष्टा२या
५र र ३१११
२३४औहोवा। ई२३४५(३)॥ १७ *॥ [५] १६

अथ प्रगाथे द्वितीयसूक्ते †—

प्रथमा।

२ ३ १२३१२ ३१२ ३१२
त्वॅह्या३ङ्गदैव्यपवमानजनिमानिद्युमत्तमः।
३ १२३१२
अमृतत्वायघोषयन्॥ १ ‡॥

हे "पवमान" पूयमान! "दैव्य" देवसम्बन्धि सोम! "द्युम-

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० १७गा०।

† 'वामदेव्यं बृहत्कं साम'—इति वि०।

‡ छ० आ० ६, २, ४, ६ (२भा० २३५ पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, १०, ३।

त्तमः" अतिशयेन दीप्तिमान् "त्वं हि" त्वमेव "अङ्ग" क्षिप्रं "घोषयन्" शब्दयन् शब्दं कुर्वन् "जनिमानि" देवसम्बन्धीनि जन्मान्यभिलक्ष्य "अमृतत्वाय" अमरणाय आगच्छेति शेषः ॥

"दैव्य"-"दैव्या"—इति पाठौ, "घोषयन्"-"घोषः"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३२
येनानवग्वादध्यङ्ङपोर्णु*तेयेनविप्रासआपिरे ।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ २ २ ३ १ २
देवानाᳬसुम्ने अमृतस्यचारुणोयेनश्रवाᳬस्याशत ॥२†॥१७

"नवग्वा"‡ नवनीय-गतिः यद्वा नवभिर्मासैः सत्रस्यानुष्ठानात् "दध्यङ्"—एतन्नामकः अङ्गिराः "येन" सोमेन पणिभिरपहृतानां "द्वारम्" "अपोर्णुते" अपच्छादयति विवृतमकार्षीत् "विप्रासः" तत् मुख्याः सर्वे मेधाविनोऽङ्गिरसः "येन" च सोमेन "आपिरे" तैरपहृता गाः आप्नुवन् किञ्च "देवानाम्" इन्द्रादीनां "सुम्ने" सुखे यज्ञेन सम्प्राते सति "चारुणः" कल्याणस्य "अमृतस्य" उदकस्य सम्बन्धीनि "श्रवांसि" अन्नानि

* "र्णु"—इति क० पु० पाठः । † ऋ० वे० ७, ५, १९, २ ।

‡ 'नवग्वा—नवा गावो यस्य असौ नवग्वा'—इति वि० ।

"येन" च सोमेन यजमानाः "आग्रत" व्याप्नुवत् अलभन्त ; स त्वं देवानाममरणायागच्छेति पूर्वेण सम्बन्धः ॥

"नवग्वा"-"नवग्वो"—इति पाठौ, "आग्रत"-"आनशुः" —इति च ॥ २ ॥ १७

१ २ १ २ १२ २ १

॥ बृहत्कम् ॥ तुवᳲह्वो। अङ्गदैवा२ ३ या। पाव

२र १ २र १ ० १ २ २ ४

मानजनिमानि। द्यूमत्तमा२ः। अमार्त्ताइत्वा३। य

५ ४ ५ १ २ १ १र १र

घोवा। पा५योई्हा॥यि ॥(१) अमृता। त्वायघोषा२३

२ १ २र १ २र १ २ १र

यान्। यायिनानवग्वादध्यङ्। आपो१र्णूता२यि। येना

२ २ ४ ५ ४ ५ १र २ १

वा३यिप्रा३। सञ्ओवा। पा५यिरोई्हायि ॥(२) येनवो।

२र १र २ १ २ २र १र २ १ २ १

प्रासआपा२३यिरा॥यि। दायिवानाᳲसुम्ने अमृत। स्या

२ १र २ २ ४ ५ ४ ५

चा१रूणा२ः। येनाआ३वा। सियोवा। शा५तोई्हा

यि(३) ॥ १६ * ॥[१]

---

* उ० गा० २प्र० २ख० १६ गा०।

Digitized by Google

॥ स्वारसौम् ॥ त्वꣳह्यङ्गदैवा३या। पवमानज
निमानिद्युमा। ऊम्। ता२३४माः। आमा ३ उवा।
तात्वा। यद्यो२३४वा। पा५यो ६ हायि ॥(१) अमृत
त्वायघोषा३यान्। येनानवम्वाद्ध्यङ्ङ्पो। ऊम्। णू
२३४तायि। यायिना३उवा। विप्रा। सम्रो२३४वा।
पा५यिरो६हायि ॥(२) येनविप्रासआपा३यिरायि। दे
वानांसुम्ने अमृतस्यचा। ऊम्। रू२३४णाः। यायिना
३उवा। अवा। सियो२३४वा। आ५तो६हायि(३)॥१६*॥[२]

॥ आङ्कुम्† ॥ तुवꣳहिया। ए२। गदा। विया।
पवमानजनिमानिमानिद्युमत्ता२३माः। आमा२त्ताला
२३। यघो२३४वा। पा५यो६हायि ॥(१) अमृतत्वा।
ए२। यघो। षयान्। येनानवम्वाद्ध्यङ्पोर्णू२३तायि।

* ऊ० गा० ५प्र० २अ० १६ गा०। † "आङ्क"—इति क० पु० पाठः।

यायिना २वायिप्रा२३। सत्रो२३४वा। पापुयिरो६हा
यि ॥(२) येनविप्रा। ए२। सत्रा। पिरायि। देवा
ना९ सुम्ने अमृतस्यचारु२३णाः। यायिना २स्त्रावा२३। सि
यो२३४वा। श्रापूतो६हायि(३)॥ १८ * ॥ [३]

॥ सत्रासाहीयम्॥ तुवा३४म्। छियङ्गदैविय। ओ
६वा। पवमानजनिमानिद्युमत्ता २माः। आ २मा। ता
२३त्वा। यद्यौ३र्हो। वाहा३४३यि। षा२३४ यो ६ हा
यि ॥(१) अमा३४। तात्वायघोषयन्। ओ६वा। येना
नवम्वादध्यङ्ङपोर्णु २तायि। या २यिना। वा२३यिप्रा।
सत्रौ३र्हो। वाहा३४३यि। पा२३४यिरो६हायि ॥(२)
येना३४। विप्रासआपिरे। ओ६वा। देवाना९सुम्ने

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १८गा०।

२ १ १ २ १ ६
अमृतस्यचारु२णाः। या२यिना। आ२३वा। सियौ३
२र ३र १ १ ५ ५
हो। वाहा३४३यि। आ२३४तो६हायि(३)॥ १२ * ॥[४]१७

अथ तृतीयतृचे†—प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ १ ३ ३ २ ३ १ २
सोमःपुनानऊर्म्मिणाव्यंवारंविधावति।
१ ३ २ १ २र ३ १ २
अग्रेवाचःपवमानःकनिक्रदत्॥ १ ‡ ॥

"पुनानः" पूयमानः "सोमः" "ऊर्मिणा" स्वीयया धारया "अव्यम्" अवेः सम्बन्धिनं "वालं" पवित्रं "वि धावति" विविधं गच्छति। कीदृशः सोमः? "पवमानः" पूतः "वाचः" स्तोत्रस्य "अग्रे" "कनिक्रदत्" पुनः पुनः शब्दं कुर्वन् विधावति॥

"अव्यम्"-"अव्ये"—इति पाठो॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
धीभिर्मृजन्तिवाजिनंवनेक्रीडन्तमत्यविम्।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २
अभित्रिपृष्ठम्मतयःसमस्वरन्॥ २ ¶ ॥

"वाजिनं" बलवन्तं वा "नवनीये" वसतीवर्याख्ये उदके

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० १२सा०। † 'वातोपादीयं साम'—इति वि०।

‡ छ० आ० ६, २, १, ७ (२ भा० २१४ पृ०) = ऋ० वे० ५, ५, १०, ५।

¶ ऋ० वे० ५, ५, ११, १

"क्रीडन्तं" सङ्क्रीडमानम् "अत्यविम्" [अविशब्देन तद्रोमकृतं पवित्रमभिधीयते] अतिक्रान्त-पवित्रं सोमम् ऋत्विजः "धीभिः" स्तुतिभिः * "मृजन्ति" शोधयन्ति [यद्वा, धीभिः—वर्णलोपश्छान्दसः, धीतिभिः अङ्गुलीभिः मृजन्ति] किञ्च "त्रिपृष्ठं" [त्रीणि पवित्राणि द्रोणकलशाधवनीयपूतभृदात्मकानि पात्राणि स्पृशतीति त्रीणि सवनानि वा स्पृशतीति स तथोक्तः, तम्] सोमं "मतयः" स्तुतयः "अभि समस्वरन्" अभितः संस्तुवन्तीति ॥

"मृजन्ति"-"हिन्वन्ति"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २
असर्ज्जि कलशाँ अभिमीढ्वान्त्सप्तिर्नवाजयुः।

३ १ २र ३ १ २
पुनानोवाचञ्जनयन्नसिष्यदत् ॥ ३† ॥ १८

"वाजयुः" यजमानानामन्नमिच्छन् "मीढ्वान्" सेक्ता ‡ स सोमः "कलशान्" "अभि" लक्ष्य, कलशेषु "असर्जि" असृज्यत। तत्र दृष्टान्तः—"सप्तिर्न" यथा सर्पणशीलोऽश्वः ¶ सङ्ग्रामे सृज्यते तद्वत्। ततः "पुनानः" पूयमानः सोमं

* 'धीभिः बुद्धिभिः'—इति वि०। † ऋ० सं० ५, ५, ११, २।

‡ 'मीढ्वान् बलवान्'—इति वि०।

¶ 'सप्तिर्न—सप्तिरश्वोऽभिधीयते'—इति वि०। "सप्तिः"—इति निघण्टावश्वनामसु पञ्चमं पदम् (१, १४,)।

(७१)

Digitized by Google

"वाचं" शब्दं "जनयन्" उत्पादयन् "अभिष्यदत्" पात्रेषु स्यन्दते ॥

"मीढ्वान्"--"मेल्हा"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १८

॥ आतीषादीयम् ॥ सोमःपुना। हों। नऊर्म्मिणा ईए। अव्यंवारंविधा१वा३ती। अग्रेवा२३४५। चां २ ३४५ः। पवमा२३ना३ः। का२ना२३४औहोवा। क्रद दे२३४५ ॥(१) धीभिर्मृजा। हों। तिवाजिनाईमे। वनेक्रीडन्तमा१त्या३वायिम्। अभित्रा२३४५यि। पा२ ३४५। इष्मता२३या३ः। सा२मा२३४औहोवा। स्वर न्ति२३४५ ॥(२) असर्ज्जिका। हों। लशा९अभीईए। मीढ्वान्सप्तिर्न्नवा१जा३यूः। पुनानो२३४५वा२३४५। च ञ्जना२३या३न्। मा२सा २ ३ ४ औहोवा। व्यदधे २ ३ ४ ५ (३)॥ १७ * ॥ [१]

* ऊ० गा० ३प्र० २ख० १७गा०।

२र र १ २ १
॥ सुज्ञानम् ॥ सोमःपुना। नऊर्म्मिणा। अव्यवा

र १ २र १ १
रा२म्। विधावतायि। अग्रेवाचा२ः। पव। मा२

२ ५र र १ २ १र
ना२३४औहोवा। कनिक्रदद२॥(१) धीभिर्मृजा। ति

र १ २र १ १ २
वाजिनाम्। वनेक्रायिडा२। तमत्यवायिम्। अभि

१ १ २ ५र र १ २
त्रायिपा२। छन्म। ता२या२३४औहोवा। समस्वरन्

२ र १ २र र १
३ ॥(२) असर्जिका। लशा२अभायि। मीढान्सप्ता२

र १ २ र १ १ २
यिः। नवाजयूः। पुनानोवा२। चञ्ज। ना२या२३

५र र १ २ १ ११ ११
४औहोवा। असिष्यददे३उपा२३४५ (३)॥ ८ * ॥ [२]

१र र १ र १
॥ शुध्यम् ॥ सोमःपुना२नः। ऊर्म्मिणोवा। अव्यं

२र १ २ २र२१ र २र१ २र १
वाराम्। विधावतायि। अग्रेवाचःपवमानःक। ना२

२ १र १र
३यि। क्रदाउवा। शूधिया२॥(१) धीभिर्मृजा२न्ति।

र १ २१र२र१ २२२१ २ १ २१
वाजिनोवा। वनेक्रीडा। तमत्यवायिम्। अभित्रिपृष्ठ

* क० गा० ७प्र० २अ० ९सा०।

२ १ २ १ २ १र
मतयःसम् । आ२३ । स्वराउवा । अूधिया२ ॥(२)
१ र १ २र१र १ १
असर्जिका२ल । आा३ अभोवा । मीठात्मपायिः । न
१र२१ २ र१र र र १२१ २
वाजयूः । पुनानोवाचञ्जनयन । सा २ ३यि । ष्यदाउ
१र १ २ १
वा । अूधिया२ । ए२३हिया३४३ । ओ २ ३ ४ ५ ई ।
डा (३)॥ ४ * ॥ [३]

२र १ र र २र १
॥ क्रोश्रम् ॥ सोमाः । पुनानानजर्म्मि । णा । हो
१ २र १ र र २ १
ई२ । हो । वाहोयि । अव्यंवारंविधावतायि । अग्रा
२ २ १२ २ १ २
यिवा१चा२३ः । पा३वामा३नाः । कना२३यिक्रदा३४३
२र १ र २ १
त् ॥(१) धीभोः । मृजन्तिवाजि । नम् । होई२ ।
१ २र१ रर २१ २
हो । वाहोयि । वनेक्रीडन्तमत्यायिम् । अभायित्रा१
२ १ २ २ १ २
यिपा२३ । घ्टा३म्माता३याः । समा२३स्वरा३४३न् ॥(२)
२१ र २ १ १ २र
असा । जिकलशाऽ२ष । भि । होई२ । हो । वा

* ऊ० गा० ६प्र० २खा० ४गा० ।

Digitized by Google

१ २ २ २ २१ २ २
द्योयि। मौद्गाल्यग्निर्न्नवाजयू:। पुनानो१वार२३। चा३

१ २ २ १ २ १
ञ्जाना३यान्। असार२३यिष्यदौ३४३त्। ओर२३४५ई।

डा (३)॥ ११ *॥ [४] १८

अथ चतुर्थच्चे †—प्रथमा।

१ २ २ १ २ २ १
सोम:पवतेजनितामतीना

२ ३२ ३१ २ ३१२ ३ २
ञ्जनितादिवोजनितापृथिव्या:।

३ १ २र ३ २र
जनिताग्नेर्जनितासूर्य्यस्य

३ १ २ ३ १ २र
जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णो:॥ १ ‡॥

"सोम:" अभिषूयमाण: "पवते" पात्रेषु चरति। कीदृश:? "मतीनां" बुद्धीनां [यद्वा, मननीयानां] "जनिता" जनयिता, ["जनिता मन्त्रे (६, ४, ५३)"—इति निपातनाण्णिलोप:] किञ्च "दिव:" द्युलोकस्य "जनिता" प्रादुर्भावयिता, तथा

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० ११सा०।

† 'वात्सप्रं' साम सोमस्यायं स्तुति:'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ६, १, ४, ५ (२ भा० ११७पृ०) = ऋ० वे० ७, ४, ६, ५।

Digitized by Google

"पृथिव्याः" "जनिता", "अग्नेः" 'जनिता' प्रकाशयिता, "सूर्य्यस्य" सर्वस्य प्रेरकस्यादित्यस्य "जनिता", "इन्द्रस्य" "जनिता" तेन मदस्य जनयिता "उत" अपि च "विष्णोः" व्यापकस्य "जनिता" जनयिता;—एतत्सर्वं सोमेऽभि षूयमाणे भवतीति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
ब्रह्मादेवानाम्पदवीःकवीना*

३ १ २ ३ २ ३ १ २
मृषिर्विप्राणाम्महिषोमृगाणाम्।

२ १ ३२३ १ २ ३१ ३
श्येनोगृध्राणाꣳस्वधितिर्वनानाꣳ

१ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २
सोमःपवित्रमत्येतिरेभन् ॥ २ † ॥

"सोमः" एवंरूपो भवति—"देवानां" स्तोत्रकारिणा मृत्विजां "ब्रह्मा" ब्रह्माख्यर्त्विक्स्थानीयो भवति [यद्वा, "देवानां" द्योतमानानामिन्द्रादीनां "ब्रह्मा" राजा भवति] तथा "कवीनां" शास्त्र-प्रज्ञानां "पदवीः" [स्खलन्ति पदानि साधुत्वेन यो योजयति स पदवीः, वी गत्यादिषु (अदा०, उभ०)—इत्येतस्मात् क्विपि

* "द्वीत्कवीना"—इति क० पु० पाठः। † ऋ० वे० ७, ४, ७, २।

रूपम्], तथा "विप्राणां" मेधाविनां मध्ये "ऋषिः" भवति [यः परोक्षं पश्यति स ऋषिः 'ऋषिर्दर्शनात् (निरु० २, ११)"—इति,] "मृगाणां" "महिषो" भवति महिषाख्यो बलवान् राजा भवति तथा "गृध्राणां" पक्षिविशेषाणां "श्येनः" शंसनीयः पक्षिराजो भवति, "वनानां" [वनतिर्हिंसाकर्मा] हिंसकानां छेदकानां मध्ये "स्वधितिः"—एतन्नामकश्छेदकोऽसि। एवम्प्रभावः सोमः "रेभन्" शब्दायमानः सन् "पवित्रम्" ऊर्णास्तुकेन कृतम् "अत्येति" अतिगच्छति * ॥ २ ॥

---

* अत्राह यास्कः—"ब्रह्मा देवानामित्येष हि ब्रह्मा भवति देवानां देवनकर्मणामादित्यरश्मीनां पदवीः कवीनामित्येष हि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानामादित्यरश्मीनामृषिर्विप्राणामित्येष हि ऋषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्मणामादित्यरश्मीनां महिषो मृगाणामित्येष हि महान् भवति मृगाणां मार्गणकर्मणामादित्यरश्मीनां श्येनो गृध्राणामिति श्येन आदित्यो भवति श्यायतेर्गतिकर्मणो गृध्र आदित्यो भवति गृध्यतेः स्थानकर्मणो यत एतस्मिंस्तिष्ठति स्वधितिर्वनानामित्येष हि स्वयं कर्माण्यादित्यो धत्ते वनानां वननकर्मणामादित्यरश्मीनां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्नित्येष हि पवित्रं रश्मीनामत्येति स्तूयमान एष एवैतत्सर्वमक्षरमित्यधिदैवतमथाऽध्यात्मं ब्रह्मा देवानामित्ययमपि ब्रह्मा भवति देवानां देवनकर्मणामिन्द्रियाणां पदवीः कवीनामित्ययमपि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानामिन्द्रियाणामृषिर्विप्राणामित्ययमप्यृषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्मणामिन्द्रियाणां महिषो मृगाणामित्ययमपि महान् भवति मृगाणां मार्गणकर्मणामिन्द्रियाणां श्येनो गृध्राणामिति श्येन आत्मा भवति श्यायतेर्ज्ञान-कर्मणो गृध्राणीन्द्रियाणि गृध्यतेर्ज्ञान-कर्मणो यत एतस्मिंस्तिष्ठन्ति स्वधितिर्वनानामित्ययमपि स्वयं कर्माण्यात्मनि धत्ते वनानां वननकर्मणामिन्द्रियाणां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्नित्ययमपि पवित्रमिन्द्रियाण्यत्येति स्तूयमानोऽयमेवैतत्सर्वमनुभवत्यात्मगतिमाचष्टे ॥"—इति निरु० प० ९, १२।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१ २   ३ १ २ ३   २
प्रावीविपद्वाचऊर्म्मिं नसिन्धु

३१ २ ३ १ २   ३   ३ २
र्गिरस्तोमान्पवमानोमनीषाः।

३ २   ३र ३१२१ २ ३ १
अन्तःपश्यन्वृजनेमावराण्या

२   ३ १   ३र ३ १
तिष्ठतिवृषभोगोषुजानन्॥ ३ *॥ १९

"पवमानः" सोमः "मनीषाः" मनस ईषिता हृदयङ्गमान् "प्रावीविपत्" प्रकर्षेण विपर्यति † प्रेरयति "सिन्धुर्न" स्यन्दमान-नदीव "वाचः" शब्दस्य "ऊर्मिं न" सङ्घं यथा प्रेरयति तद्वत्। किञ्च "वृषभः" कामानामुदकानां वा वर्षकः सोमः "अन्तः" अन्तर्हितं वस्तुजातं ‡ "पश्यन्" "अवराणि" दुर्बलैः वारयितुमशक्यानि "इमा वृजना" ¶ इमानि बलानि "आ तिष्ठति" आसीदति। किं कुर्वन्? "गोषु जानन्" § गवां जयाय जानानः सन् परबलानि प्रविशति॥

"स्तोमान्"-"स्तोमः"—इति पाठो॥ ३॥ १९

---

* ऋ० वे० ७, ४, ७, १। † 'वेपयति'—इति वि०।

‡ 'अन्तः हृदये'—इति वि०।

¶ 'वृजना वृजनानि छिद्राणि शरीरावच्छिन्नानि'—इति वि०।

§ 'गोषु जानन्—गोशब्देन रश्मयः ता एव नाड्यो गम्यन्ते; वृषभो वर्षिता; गोषु अप्सु नाडीषु जानन्'—इति वि०।

Digitized by Google

१र र र १

॥ महावात्सप्रम् ॥ हाउहाउहाउ। औ। होहो

१ १ १ र १ १ १ १

वा। औ। होहोवा। सोमःपवा। तेऽजनि। ताऽ

र र र र र र १र

मतीनाम्। मतीनाम्। मतीनाम्। जनिताद्दायि।

१ १ १ र र र

वोऽजनि। ताऽपृथिव्याः। पृथिव्याः। पृथिव्याः। ज

१र १ १ र २ र र

निताग्नायिः। जनिता। सूऽरियस्या। रियस्या। २।

१र १ १ १ र र

जनितेद्रा। स्याऽजनि। तोऽतविष्णोः। तविष्णोः। २।

१र र १ १ २ र र र र

ब्रह्मादेवा। नाम्पद। वीःकवीनाम्। कवीनाम्।

र र १ २ १ १ र र

कवीनाम्। ऋषिर्विप्रा। णाम्महि। षोऽमृगाणाम्।

र र र १र १ १ १ र

मृगाणाम्। २। श्येनोगृध्रा। णाꣳस्वधि। तिर्वना

र र र र १ १ १ १र

नाम्। वनानाम्। २। सोमःपवायि। त्राऽमति। एऽ

र र र १र २ १ र

तिरेभन्। तिरेभन्। २। प्रावीविपात्। वाऽचऊ।

१ १ र

मिन्नसिधुः। नसिन्धुः। नसिन्धः। गिरःस्तोमान्।

२ १ र १ र र १
पवमा । नो॒ऽमनीषाः । मनीषाः । २ । अन्तःपश्यान् ।
२ १ र १ र र र १
वृजने । मा॒ऽवराणी । वराणी । २ । आतिष्ठतायि ।
२ १ १ र र १र
वृषभः । गो॒ऽधुजानन् । धुजानन् । २ । हाउ । ३ ।
१ १ १ २
ओ । होहोवा । २ । ओ । हो । होर । वा२३४
५र र ३ १ १ १ १
औहोवा । ई२३४५ (३)॥ १९ * ॥ [१]

१र १ २र १ २
॥ जनित्राद्यम् ॥ हाउजनत् । सोमःपवा । ते३
१ १ २ र ५ २ १र २ १ २
जेनि । तामतीनाम् । जनितादायि । वो३जनि । ता
२ ४ ५ २ १र १ १ र १ २ ४ ५
पृथिव्याः । जनिताग्नायिः । जनिता । सूरियस्या ।
२ १र २ १ २ २ ४
जनितेन्द्रा । स्या३जनि । तो३४३ । ता३वा५यिष्णो६५
२ १र र २ १ २ ३ ४ ५ २
ई: ॥(१) ब्रह्मादेवा । ना३पद । वीःकवीनाम् । ऋ
१ २ १ २ २ ४ ५ १र १र २
षिर्विप्रा । णा३म्महि । षोम्टगाणाम् । श्येनोगृध्रा । णा
१ १ २ ४ ५ २र १ २ १
३९स्वधि । तिर्वनानाम् । सोमःपवायि । चा३मति ।

* ऊ० गा० ३प्र० २अ० १९गा० ।

२ १ १र १र
आ३४३यि। तो३रा५यिभा६५६न्॥(२) प्रावीविपात्।

२ १र २३४५ २१र २१र
वा३चजा। मिन्नसिंधूः। गिरस्तोमान्। पवमा।

२३४५ २१ २१र २३४५ २र
नोमनीषाः। अन्तःपश्यान्। वृजने। मावराणी। हा

१ २र १ २१ २ २
उजनत्। आतिष्ठतायि। वृषभः। गो३४३। षू३

४
जा५ना६५६न्(३)॥ १ *॥ [२]

४र २ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ सोमाऽ५:प। वा३तार्यिजनि

५ १र र र र २ १ २
ता। मन्तीनाञ्जनितादिवोजनायि। ता३पार्था३यि

२ १ १र र र २ १
व्याः। जना२यिताग्नेर्जनि। तासूर३री। ऊम्मायि।

२ २ १ऽ र र १ २ १
या३स्या। जानितेन्द्रस्यजनितोतार्विष्णाउ॥(१) ब्रो

२ १र र र र र र र र र २
र्ना। ह्मादेवानांपदवीःकवीनामृषिर्विप्राणाम्महायि। षो

१ २ २ १र १ र र र
३मार्म्मा३णाम्। श्येनो२गृध्राणा९स्वधितिर्वनानार३९

२ १ २ २ १ र ३र २
सो। ऊम्मायि। मा३:पा। वायित्त्रमत्येता२ यिरेभा

* ऋ० मा० ८म० २ख० १सा०।

१ १ १र र र र र
भान्प्रा। वीविपद्धाचक्रूर्मिं नसिन्धुर्गिररस्तोमान्यवमा।
२ १२ र १ १ र र र
नो३माना३यिषाः। अन्ता२ःपश्यन्वृजनेमाव। राषा
२ १ २ २ १ र र
२३षा। ऊम्मायि। ता३यिष्ठा। तायिवृषभोगोषू२
१र १ १११
जानाउ। वा३४५(३) ॥ १० * ॥ [३]

१र २ १ २र१ र
॥ ष्यावाश्वम् ॥ सोमःपवा। तेजनितामता२यि
१ १ र र र १
नाउया२। जनितादिवोजनिताष्टथा२यिव्याउवा२३४।
२ २ २र २ १ र र२१ १ २र१
जना३४यिताग्नेः। जनितासूरियास्या२। जाबितेन्द्रा।
२ १ ४ ५ ४ ५ १ २र
स्याजनिता२३। तोवा। वा५यिष्णोः६हायि ॥(१) ब्रह्मा
र १ २र १ र १ १ र र
दवा। नाम्पदवीःकवा२यिनाउवा२। ऋषिर्विप्राणां
र १ २र २ १२ १र
महिषोमृगा२णाउवा २ ३ ४। श्येनो३४गृध्रा। णाःस्व
२ १ १ २ १ २ १
धितिर्वनाना२म्। सोमःपवायि। त्वामतिया २ ३ यि।
४ ५ ४ ५ १र २र १ २र१
तोवा। रा५यिभो६हायि ॥(२) प्रावीविपात्। वाच

* ऊ० गा० २१प्र० १अ० १०सा०।

Digitized by Google

२　　१　　१ २ २　　२ २
ऊम्मिं न्नसा २यिन्धाउवा २। गिरस्तोमान्यवमानोमना

१　　२ २　　२ १　　१ २ २ १ १
२यिषाउवा२३४। मन्ता३४ःपथ्यान्। वृजनेमावराणा

१　　२ १　　२२ १　　४ ५　　४
२यि। आतिष्ठताथि। वार्षभोगो२३। पोवा। जा५

५
नो६हायि (३)॥ १६ *॥ [४] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
षष्ठः खण्डः† ॥ ६ ॥

अथ तृचत्रयात्मके सप्तमे खण्डे‡,

प्रथमतृचेषु¶—प्रथमा।

३ १२ ३ १ २ २　　३ १ २　　३ १ २
अग्निं वोवृधन्तमध्वराणाम्पुरूतमम्।

२　　३ १ २ १ २
अच्छानप्त्रे सहस्वते॥ १§॥

---

* ऊ० गा० २३प्र० १ख० ११सा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोमीयं साम'—इति वि०।

‡ 'इदानीमुक्थानि'—इति वि०।

¶ 'सौरभं ब्रह्मसाम वशिष्ठस्य प्रियतम मच्छावाकसाम'—इति वि०।

§ ऋ० सा० १, १, ३, १ (भा० ११७पृ०) = ऋ० वे० ७, ७, १०, ३।

"अध्वराणाम्" अहिंस्यानां बलिनां "नप्त्रं" बन्धुं "सहस्वते" बलवन्तं [विभक्तिव्यत्ययः (३, १, ८५)] "वृधन्तं" ज्वालाभि-र्वर्द्धमानं "पुरुतमम्" अतिशयेन बहुमग्निं हे ऋत्विजः ! "वः" यूयम् "अच्छ" अभिगच्छत । उपसर्गश्रुतेर्योग्यक्रियाध्याहारः ॥१॥

अथ द्वितीया ।

२ १र २र २ २ ३ १ २ ३१२३१ २
अयंयथानआभुवत्त्वष्टारूपेवतक्ष्या ।
२ ३उ २ १ १
अस्यक्रत्वायशस्वतः ॥ २* ॥

"अयम्" अग्निः "नः" अस्मान् "तक्ष्या" विकर्त्तव्यानि "रूपेव त्वष्टा" रूपाणि वर्द्धकिरिव "यथा" येन प्रकारेण "आ भुवत्" आ भवति प्राप्नोति, तथैनमग्निमभिगच्छतेत्यर्थः । किञ्च वयम् "अस्य" अग्नेः "क्रत्वा" † प्रज्ञानेन युक्ताः "यशस्वतः" यशस्वन्तो ‡ भवामेति शेषः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ १र ३ २उ ३ ३२ १ २
अयंविश्वाअभिश्रियोग्निर्देवेषुपत्यते ।
२उ ३ १ २
आवाजैरुपनोगमत् ॥ ३¶ ॥ २०

* ऋ० वे० ७, ७, १०, ३ ।

† 'क्रत्वा—तृतीयैषा षष्ठी-स्थाने द्रष्टव्या क्रतो' (?) ति वि० ।

‡ 'यशस्वतो यशसा सम्पन्नस्य'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, ७, १०, ४ ।

मनुष्याणां "विश्वाः" सर्वाः "श्रियः" सम्पदः * "देवेषु" देवानां मध्ये यः "अयम् अग्निः"† "अभिगच्छति, सः अग्निः "नः" अस्मानपि "वाजैः" अन्नैः "उपागमत्" उपागच्छतु॥३॥२०

२ र १ १ १
॥ स्वारसैन्धुक्षितम्॥ अग्निर्वोवृधान्ताम्। आध्व
२र र १ २र र २ १ १
राणाम्। पुरूतामौ। होवा३हायि। आश्छा२नाम्न२३।
२ १ ५ ४ ५ २ र र १ २
सहो२३४वा। स्वा५तो६हायि॥(१) अयंयथानआभूवात्।
१ र१र र १ २र र २ १ १
त्वाष्टारूपे। वताच्छायौ। हौवा३हायि। आस्या२क्रा
२ १ ५ ४ ५ २
त्वा२३। यशो२३४वा। स्वा५तो६हायि॥(२) अयंवि
र १ २ २र र १ २र र २
श्वाअभिश्रायाः। आग्निर्देवे। षुपात्यातौ। होवा३हा
१ १ २ १ ५ ४ ५
यि। आवा२जायिष्व२३। पनो२३४वा। गा५मो६हा
यि (३)॥ २० ‡॥ [१]

---

* 'अभिश्रियः—अभिश्रयणमाश्रयणं सर्वं।आश्रयणानि'—इति वि०।

† 'अग्निः देवेषु भवति यदा परस्मिन्नर्थं पत्यते। पत्यत इति छान्दसः प्रयोगो न दोषः'—इति वि०।

‡ ऊ० गा० १प्र० १अ० २०सा०।

Digitized by Google

३ २ र
॥ सत्रासाहियम्॥ अग्ना ३ ४ यिम्। वीवृधन्तम्।
५ ५ १ र र र १ १
ओ६वा। अध्वराणाम्पुरूता२मास्। आ२च्छा। ना
२ १ ऽ २र ३र २ १ ५ ५
२३प्त्रे। सहौ३हो। वाहा३४३यि। स्वा२३४तो६हा
३ २ र र ५ ५
यि॥(१) अया ३ ४ म्। यथानआभुवत्। ओ६वा।
१ र र र १ १ २ १ ऽ
त्वष्टारूपेवतक्षा२या। आ२स्या। क्रा२३त्वा। यहौ३
२र ३र ६ १ ५ ५ ३ २
३हो। वाहा३४३यि। स्वा२३४तो६हायि॥(२) अया
र ५ ५ १ र र
३ ४म्। विश्वाअभिश्रियः। ओ६वा। अग्निर्देवेषुपत्या
१ २ १ ऽ २र २र
२तायि। आ२वा। जा२३यिहु। पनौ ३ हो। वा
२ १ ५ ५
हा३४३यि। गा२३४मो६हायि(३)॥ ११ *॥ [२] २०

* ऋ० मा० ६म० २ष० ११वा०।

अथ द्वितीयखण्डे—प्रथमा ।

२१ २ ३ १ २३ २ ३१२ ३ १२
इममिन्द्रसुतम्पिबज्येष्ठममर्त्त्यम्मदम् ।

३ १ १ ३क २र १ २ ३ २३ १ २
शुक्रस्यत्वाभ्यक्षरन्धाराऋतस्यसादने ॥ १ * ॥

हे "इन्द्र!" "सुतम्" अभिषुतम् "इमं" सोमं "पिब" कोदृशम्? "ज्येष्ठम्" अतिशयेन प्रशस्यं "मदं" मदकरम् "अमर्त्त्यम्" अमारकम् [सोमपान-जन्यो मदो मदान्तरवत् मारको न भवतीत्यर्थः] तथा "ऋतस्य" यज्ञस्य सम्बन्धिनि "सादने" गृहे वर्त्तमानाः "शुक्रस्य" दीप्तस्यास्य सोमस्य "धाराः" "त्वाम्" "अक्षरन्" आभिमुख्येन सञ्चलन्ति त्वां प्राप्तुं स्वयमेवा-गच्छन्तीत्यर्थः [ज्येष्ठं—प्रशस्य-शब्दादियसुनि "ज्य च (५,३,६१)"—इति ज्यादेशः । अक्षरन्—क्षर सञ्चलने (भ्वा०, प०) छान्दसो लङ् (३, ४, ६) ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ २२ १ २३ २ ३ १ २ ३१२
नकिष्टद्रथीतरोहरीयदिन्द्रयच्छसे ।

२ ३१ २२ ३ ३२३ १ २
नकिष्ट्वानुमज्मनानकिःस्वश्वआनशे ॥ २ † ॥

* ऋ० सा० ४, २, १, २ (१ आ० ७०१ सू०)=ऋ० वे० १, ६, ५, ४ ।

† ऋ० वे० १, ६, ६, १ ।

Digitized by Google

हे "इन्द्र!" "यद्" यस्मात् त्वं "हरी"—एतसञ्ज्ञावश्वौ* "यच्छसे" रथे योजयसि, तस्मात् "त्वत्" त्वत्तोऽन्यः कश्चित् "रथीतरः" अतिशयेन रथवान् "नकिः" नास्ति [अन्येषामीदृगश्वयुक्तरथाभावात्]"त्वा" त्वाम् "अनु" लक्ष्य "मज्मना" [बलनामैतत् (निघ० २, ९, २१)] बलेन सदृशोऽपि "न किः" नह्यस्ति "स्वश्वः" शोभनाश्वो "न किः आनशे" न प्राप [इन्द्रस्य बलाश्वयोरसाधारणत्वात् इन्द्रसदृशो बलवान् अश्ववान्] लोके कश्चिदपि नास्तीत्यर्थः [न किष्ट्वत्—"युष्मत्ततक्षुष्वन्तः पादम् (८, ३, ११२)"—इति षत्वम्। रथीतरः—अतिशयेन रथी; तरपि "ईद्रथिनः"—इति ईकारान्तादेशः। यच्छसे—यमेर्व्यत्ययेनात्मनेपदम्। स्वश्वः—बहुव्रीहावाद्युदात्तत्वोत्तुत्तर-पदाद्युदात्तत्व। आनशे—"अश्नोतेश्च (७,४,७२)"—इति अभ्यासादुत्तरस्य नुट्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रायनूनमर्चतोक्थानिचब्रवीतन।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुताअमत्सुरिन्दवोज्येष्ठन्नमस्यतासहः॥ ३ †॥२१

---

* "हरी इन्द्रस्य"—इति नैघण्टुकम् १,१५,१।

† ऋ० वे०,१,६, ४, ५।

Digitized by Google

हे ऋत्विजः! "इन्द्राय"* "नूनं" क्षिप्रम्† "अर्चत" पूजनं कुरुत। एतदेव स्पष्टीक्रियते—"उक्थानि" अप्रगीत-मन्त्र-साध्यानि शस्त्राणि स्तोत्राणि च "ब्रवीतन" ब्रूत। "सुताः" अभिषुताः "इन्दवः" सोमाः त्वाम् "अमत्सु" आगत मिन्द्रं मत्तं कुर्वन्तु, अनन्तरं "ज्येष्ठं" प्रशस्यतमं "सहः" सहस्विनं बलवन्तम् तमिन्द्रं नमस्यत नमस्कुरुत [ब्रवीतन—ब्रवीते र्लोटि "तप्तनप्तनथनाश्च (७,१,४५)"—इति तनबादेशः। अमत्सु—मदी हर्षे(भ्वा०,प्रा०)छान्दसः प्रार्थनायां लुङ्, आगमानुशासनस्या-नित्यत्वादिड़भावः। नमस्यत—"नमोवरिवश्चित्रङः (३,१,१९)" —इति क्यच्। सहः—"युगकारेकाररेफाश्च वक्तव्याः—इति मत्वर्थीयस्य लुक्॥ ३॥ २१

॥ वसिष्ठप्रियम्॥ इममी२३। द्रसुतम्पिब। ज्येष्ठाम्। अमा३र्त्यम्मादा२म्। शुक्रास्यत्वा३। भियार्२क्षा२३४रान्। धाराओ२३४वा। आर्त्ताओ२३४वा। स्सदा५नायि॥ (१) नकिष्टू२३। वद्रथीतरः। हारी। यदीइन्द्रायच्छासा२यि। नकायिष्टूवा३। नुमा२ज्मा२३४

* 'इन्द्रायेति चतुर्थी द्वितीयार्थे द्रष्टव्या, इन्द्रम्'—इति वि०।

† 'नूनं निश्चितम्'—इति वि०।

५ १ २ ३ ५ १ २ २ ५ ४
ना। नाकाओ२३४वा। सूवाओ२३४वा। स्वआ५नआ

२ १र ४र ५ ४ ५ २ १२
यि॥(२) इन्द्राया२३। नूनमर्च्च। तोक्था। निचा३ब्रावी१

१ २ १ ३ ५ १
ताना२। सुताआमा३। त्सुरी२न्दा२३४वाः। ज्यायि

२ ३ ५ १ २ ३ ५ ४ ३
ष्ठाओ२३४वा। नामाओ२३४वा। स्यना५सद्दाः। ह्वो

५ई। डा(३)॥ १ *॥ [१]

१ २ १ र
॥ आसितायम्॥ इममिन्द्रसुताम्। पिबा। ज्येष्ठम

२ १ १ १
मर्त्तियम्मा२३दाम्। शुक्रा२स्यात्वा२। भियक्षरान्।

१ १ २ १ ५ ४ ३
धारा२आर्त्ता२। स्यसोवा३ओ२३४वा। दा५नोइद्दा

१ २ १ १ र २
यि॥(२) नकिष्ठाद्रथायि। तरो। हरीयदिद्रयच्छा२३सा

१ १ १ १
यि। नाका२यिष्ठूवा२। नुमज्मना। नाका२यिसूवा

१ २ १ ५ ४ ५ १ र
२। स्वओवा३ओ२३४वा। ना५योइद्दायि॥ इन्द्रा

२ र १ र र २ १
यनूनमा। चता। उक्थानिचब्रवीता२३ना। सूता२

* ऋ० मा० ३प्र० १षा० १या०।

१ १ १ १
आमा२ । त्वरिन्दवाः । ज्यायिष्ठा२न्नामा२ । स्यतो
२ १ ५ ४ ५
वा३ओ२३४वा । सा५दोऽ६हायि(३) ॥ १७* ॥ [२]

५ ३ २ ४ ५
॥ गौरीवितम् ॥ इमम् । इन्द्रा३ । सुतम्पिबा ।
१र १ २ ४
ज्येष्ठममर्त्यम्मदा२३म् । शूक्रस्यत्वा३१२३ । भिया५च्च
१ र २ ४ ५ ४ ५
रान् । धाराऋता३१२३ । स्यसोवा । दा५नोऽ६हायि ॥(१)
५ ३ २ ४ र ५ १ र
नकिः । तुवा३त् । रथीतराः । हरीयदिन्द्रयच्छसा
१ २ ४ १
२३यि । नाकिष्टुवा३१२३ । नुमा५ऽमना । नाकिस्तुवा
४ ५ ४ ५ ५ र ३ २
३१२३ । स्वओवा । ना५ओऽ६हायि ॥(२) इन्द्रा । यनू३ ।
४ ५ १ र १ र २
नमर्चता । उक्थानिब्रवीतना२३ । सूतात्र्यमा३१२३ ।
४ १ २ ४ ५ ४
त्सुरो५दवाः । ज्यायिष्ठन्नमा३१२३ । स्यतोवा । सा५
५
होऽ६हायि(३) ॥ २ † ॥ [३] २१

---

* ऋ० मा० ११प्र० १ख० १७मा० ।

† ऋ० मा० ११प्र० १ख० २मा० ।

अथ तृतीयतृचे*—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रजुषस्वप्रवहायाहिशूरहरिह।
१ २ ३ १ २ ३ १ १ १ २र ३ २उ ३ १ २
पिबासुतस्यमतिर्नमधोश्चकानश्चारुर्मदाय॥ १ ॥

यानि मया हवींषि दत्तानि तानि "प्र वह" "आ याहि" आगच्छ "शूर" वीर्यवन्! उपसर्गाक्षराणि—"हरिह" [अथवा हरितवर्णा हया यस्य स हरिहयः, तस्य सम्बोधनं क्रियते—हे हरिह! छान्दसो यकारलोपः] "पिबा"† "सुतस्य" सोमस्य उपसर्गाक्षराणि—"मतिर्नमधोश्चकानः", "चारुः" शोभनः "मदाय" भक्षणाय॥ १ ॥

---

* 'इदानीं चतुर्थेऽहनि षोडशी भवति। तस्य षोडशिनः महान् विचारः इन्द्रश्च इत्यत्र समभवता मित्यारभ्य महान् विचारो निदानकृतेत्युक्तः चतुर्विंशत्यक्षराणि स्तुता भवन्ति। तमुपसृत्य प्रवहादीनि उपसर्गाक्षराणि निरूप्यन्ते। तथा सति आदिमयानां पादानां त्रीणि त्रीणि उपसर्गाक्षराणि पादान्तेषु भवन्ति'—इति वि० एवञ्च—

प्रथमर्चि—"प्रवह","हरिह","मतिर्न"—इति नव,
द्वितीयर्चि—"मध्यम","दिवोन" "स्व३र्ण" इति नव,
तृतीयर्चि— "मिवोन","मतिर्न","भृगुर्ण"—इति नव,

किञ्च प्रथमर्चि चतुर्थपदादौ च "मधो३श्चकान"—इति षष्ठ, तदित्थं षड्विंशता चतुर्विंशदुपसर्गाक्षराणि सम्पद्यन्ते। अत्र च "स्व३र्ण","मधो३"—इत्युभयत्र विमानस्य ह्रस्वत्वेन गणनं बहुविचारेण सम्पादितम्॥

† "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
इन्द्रजठरन्नव्यन्नपृणस्वमधोर्द्दिवोन।

३ २ ३ १ २ ३ १　१ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्यसुतस्यस्वा ऽ३ ऽर्नोपत्वामदाःसुवाचोअस्थुः॥ २ ॥

हे "इन्द्र!" "जठरम्" उदरं "नव्यं न" नवतरं "पृणस्व" पूरयस्व "मधोः" मधुरस्य "दिवो न" "अस्य" सोमस्य "सुतस्य" अभिषुतस्य "स्वर्न" स्वर्गस्येव "उप त्वा" उप समीपे त्वाम् "मदाः" "सुवाचः" शोभनवाचः "अस्थुः" स्थितवन्तः॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २　३ २　३ २उ　३ १ २ ३ २उ ३ २
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रोनजघानवृत्रंयतिर्न।

३ १ २ ३ २उ　३ १ २ ३ २उ　३ २ ३ १ २
विभेदवलम्भृगुर्नससाहेशत्रून्मदेसोमस्य॥ ३ ॥ २२

"इन्द्रः "तुराषाट्" [तुरि सीदति यः सः तुराषाट्] "मित्रो न" मित्र इव "जघान" "वृत्रं" शत्रुं "यतिर्न"—उपसर्गाक्षराणि "विभेद" भिन्दस्व "वलं" वलोनाम दानवस्तं वलं "भृगुर्न" त्रीणि त्रीणि पदान्तेषु उपसर्गाक्षराणि भवन्ति "ससाह" सहितवान् "शत्रून्" "मदे" भक्षणे कृते सोमस्य तथाच निविदापदे विहृतस्य षोडशिनः। अस्य मदे जरित इत्यारभ्य बहूनि वीर्ययुक्तानि कर्माणि* ॥ ३ ॥ २२

* एतत्पदस्य व्याख्यानं विवरणकृत् कृतानुकृतमेवेति व्याख्योर्विशेषः।

Digitized by Google

॥ गौरीवितम्* ॥ इन्द्र । जुषा३ । स्वप्रवहा । आ याहिशूरहरिहा२३ । पायिबासुता३१२३ । स्वमतिर्न्नो ५मधोः । चाकानश्चा३१२३ । रुम्मीवा । दा५योइहा यि ॥(१) इन्द्र । जठा३ । रन्नव्यन्ना । पृणस्वमधोहिं वोना२३ । आस्यसुता३१२३ । स्वस्वर्न्ना५उपा । त्वाम दाःसू३१२३ । वाचोवा । मा५स्योइहायि ॥(२) इन्द्रः । तुरा३ । षाणिमन्त्रोना । जघानवृत्रंयतिर्न्ना२३ । बायि भेदवा३१२३ । त्वंभृगुर्न्ना५ससा । द्वेषत्त्रून्मा३१२३ । दे सोवा । मा५स्योइहायि(३) ॥ २ † ॥ [१] २२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥

---

* "गौरीवीतम्"—इति ख० पु० पाठः ।

† ऋ० गा० ३प्र० १ख० २सा० ।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्द्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ५ ॥

॥ इति तृतीयस्यार्द्धः-प्रपाठकः* ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे पञ्चमोऽध्यायः ॥

---

* 'इति तृतीय-प्रपाठकस्य पञ्चमार्द्धः । चतुर्थमञ्च: परिसमाप्त:'—इति वि० ।

Digitized by Google

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्म्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ ६ ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्याय आरभ्यते* ॥

तत्र,

गोवित्पवस्वेति प्रथमे खण्डे —

प्रथमा ।

२ १ २   २ १ २ २ १
गोवित्पवस्ववसुविद्धिरण्यवि

२ २ १ २ २ १ २ २ १ २
द्रेतोधाइन्दोभुवनेष्वर्पितः ।

२ २ १ २   २ २उ
त्वᳬसुवीरोअसिसोमविश्ववित्त-

२ २ २ १ २ २ १ र २र
न्त्वानरउपगिरेमआसते ॥ १ † ॥

हे "इन्दो" सोम ! त्वं "पवस्व" क्षर‡ । कीदृशस्त्वं ? "गोवित्"¶ गवां लम्भकः, "वसुवित्"§ धनस्य लम्भकः, "हिरण्य-

---

* 'इदानीं षष्ठमध्याय उच्यते'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७,२, १९, ४।

‡ 'पवस्व पूयस्व'—इति वि० ।

¶ 'गोवित्—गावो यस्य विद्यन्ते स गोवित्'—इति वि० ।

§ 'वसुवित्—वसु धनं तेन तद्वान्'—इति वि०।

Digitized by Google

वित्’’* हिरण्यस्य लम्भकः, “रेतोधाः” रेतउदकं तस्य धातो-षधीनां यद्वा रेतः प्रजनन-सामर्थ्यं तस्य धारयिता “भुवनेषु” उदकेषु “अर्पितः”; भो सोम! कीदृशस्त्वं? “सुवीरोऽसि”† शोभनवीर्योऽसि भवसीति, “विश्ववित्” सर्वस्य वेत्तासि। यस्मादेवं तस्मात् तादृशं “त्वा” त्वाम् “इमे” “नरः”‡ नेतारः “गिरा” स्तुत्या “उपासते”¶॥

“नरः”-विप्राः”—“इति पाठो॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ १ २
त्वन्नृचक्षाअसिसोमविश्वतः
१ २ ३ १र २र
पवमानवृषभताविधावसि।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
सनःपवस्ववसुमद्धिरण्यवद्वयँ
२ ३ १ २ ३ १ २
स्यामभुवनेषुजीवसे॥ २ §॥

---

* ‘हिरण्यवित्--हिरण्यविशिष्टं वसु’—इति वि०।

† ‘सुवीरः—शोभनवीरः’—इति वि०।

‡ ‘नरः—ऋत्विजः’—इति वि०।

¶ ‘उपासते—उप समीपे स्थित्वा आसते, समीपे उपविश्य गिरा स्तुतिलक्षणया वाचा इमे आसते स्तुतिं कुर्वाणाः’--इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, १९, ४,।

Digitized by Google

भो "सोम!" त्वं "विश्वतः" सर्वतः सर्वेषु "भुवनेषु"* "नृचक्षाः† असि" नृणां द्रष्टा भवसि। हे "पवमान" पुनान सोम! "वृषभ" अपां वर्षक! "वाः" अपः "वि धावसि" विविधं गच्छसि, स त्वं "नः"‡ अस्माकं "पवस्व" क्षर किञ्च "वसुमत्" बहुभिर्वसुभिर्वासकैर्गवादि-द्रव्यैर्युक्तं, तथा "हिरण्यवत्" बहुभिः हिरण्यैर्युक्तं धनं। वयञ्च वसुभिर्हिरण्यैश्च युक्ताः "भुवनेषु" लोकेषु "जीवसे" जीवितुं प्रभवः "स्याम" भवेम॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ २३ १र २र ३ १ २
ईशानइमाभुवनानिईयस

३ १२ ३ १२३ १ २र
युजानइन्दोहरितःसुपर्ण्यः॥

१ २ ३ १ २ ३१७ ३
तास्तेक्षरन्तुमधुमद्घृतम्पय

१ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तवव्रतेसोमतिष्ठन्तुकृष्टयः॥ ३ ¶ ॥ १

हे "इन्दो" सोम! "ईशानः" सर्वस्य स्वामी त्वम् "इमा" इमानि "भुवनानि"§ भूतजातानि "ईयसे" गच्छसि [ईङ्

---

* 'भुवनेषु—भुवनानि चतुर्दश'—इति वि०।

† 'नृचक्षाः—नृणां चक्षुभूतः'—इति वि०।

‡ 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ७, ३, १९, ३।

§ 'भुवनानि—चतुर्दश'—इति वि०।

गतो (दि० प्रा०), "दिवादिभ्यः श्यन् (३,१,६९)"—इति श्यन्]। किङ्कुर्वन्? "हरितः" हरितवर्णाः "सुपर्ण्यः" सुपतमानास्ता रथे "युजानः" योजयन्, "ताः" सुपर्ण्यः "ते" तव सम्बन्धिन्यः "मधुमत्" माधुर्योपेतं "घृतं" दीप्तं "पयः" उदकं "चरन्तु"। हे सोम! तव "व्रते" कर्मणि तिष्ठन्तु "ऋष्टयः"* मनुष्याः सर्वे॥

"ईयसे"-"वीयसे"—इति पाठौ॥ ३॥ १

॥ द्विरभ्यस्तं लौशोत्तरम॥

४र ३ ४   ३ ४ र
गोवित्पवस्ववसुविद्धिर।

१ १   ३ १ १ १ १   ३र १   २र र
एयवायित्। एयवार३४५यित्। रेतो३१२३४। धाइन्दो

र   १ १ १ १   ३ १   २ र र
भुवनेषु। पिताःपिताः। तुवा३१२३४म्। सुवीरोपसि

र   १ १ १ १   २ १   २
सोमवि। श्ववायिच्छ्वायित्। तन्वा३१२३४। नरउप

र   २ १ ४   ३ ४ ३ ५र   ३ ४र
गिरे। मश्वा३सा५ता६५६यि॥(१) त्वन्नृचक्षाअसिसो

५   २ १   ३ १ १ १ १   ३ १   २र
मवि। श्वताः। श्वतार३४५ः। पवा३१२३४। मानवृष

र र   १ १ १ १   ३ १   १
भताविधा। वसायिवसायि। सना३१२३४ः। पवस्वव

१ १ १ १   ३ १   २र र
सुमद्धिर। एयवाएयवात्। वया३१२३४म्। स्यामभुवने।

१ १   ४   ४र र ३ ४ ३र   ४ ५र   र
षुजा३यिवा५सा६५६यि॥(२) ईशानइमाभुवनानिईई।

---

* 'ऋष्टयः—ऋषयः पण्डिताः मेधाविनः'—इति वि०।

यसायि। यसा२३४५यि। युजा३१२३४। नइन्दोहरितः सुप। पियापियाः। तास्ता२१२३४यि। चरन्तु मधु मत्तमम्। पयाःपयाः। तवा३१२३४। व्रतेसोमतिष्ठ। तुका३र्ष्टा५या६५६ः(३ ॥ ७ * ॥ [१]

॥ श्येनम्॥ गोवित्पवस्ववसुवायित्। हा२३यिरा। ण्यावित्रेतो३आउवा२३। धाइया। दोभुवनेषुवार्पायि ताः। त्वंसौ३हो। वायिरोअसा३१उवा२३। सोम पा। विश्ववित्तन्वाना१रा२ः। उयौ३हो। गायिरेम आ३१उवा२३। ए३। सतआ३२॥(१) त्वन्नृचक्षाअसि सो। मा२३वायि। स्वातःपवा३१उवा२३। मानआ। वृषभताविधावासायि। सनौ३हो। पावस्ववा३१उवा २३। सुमदा। हिरण्यवदया३स्या१मा२। भवौ३हो।

* ऊ० गा० ८प्र० १ख० ७गा०।

१ २ २ १ २ १ १र २ १ २ १र
नायिषुजा३१उवा२३। ए३। वसआ३२॥(२) ईशानइमा
२१ २ १ र२ १र३२
भुवना। ना२३ई। यासेयुजा३१उवा२३। नाइया।
र १ २ १र ऽ ऽ १ २
दोहरितःसुपार्णायाः। तास्तौ३ष्णो। चारन्तुमा३१उवा
२३२ १ २ १र ऽ २
२३। धूमदा। घृतम्पयस्तवाब्रा१ता२यि। सोमौ३द्धो।
१ २ १ २३२
नायिष्ठन्तुवा३१उवा२३। ए३। इयआ३२(३)॥१८*॥ [२]१

अथ द्वितीयखण्डे—

प्रथमा।

१२ ३२ ३१२
पवमानस्यविश्ववित्प्रतेसर्गाअसृक्षत।
१२ ३१२ ३१२
सूर्यस्येवनरश्मयः॥ १ †॥

हे "विश्ववित्" विश्वस्य द्रष्टः सोम! "पवमानस्य" क्षरतः "ते" तव "सर्गाः"‡ सृज्यमाना धाराः "सूर्यस्येव रश्मयः" सूर्यस्य किरणा इव प्रकाशमानाः "न"—इति सम्प्रत्यर्थे। इदानीं "प्रासृक्षत" प्रासृज्यन्त॥ १॥

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १८गा०।

† ऋ० वे० ७, १, २७, १।

‡ 'सर्गाः—सृज्यमानाः उदकसङ्घाताः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ ३१२ ३ २३उ ३ १२ ३१२
केतुङ्कृण्वन्दिवस्परिविश्वारूपाभ्यर्षसि।

२ १ २
समुद्रःसोमपिन्वसे॥ २ *॥

हे "सोम!" "समुद्रः"† समुद् द्रवन्ति यस्माद्रसाः स समुद्रः स त्वं "केतुं"‡ प्रज्ञानं "कृण्वन्" कुर्वन् अस्माकं "विश्वा रूपा" विश्वानि रूपाणि "दिवः"¶ अन्तरिक्षात् "अभ्यर्षसि"§ अभिपवसे "पिन्वसे" नानाविधानि च धनानि अस्मभ्यं प्रयच्छसि॥२॥

अथ तृतीया।

२ ३२ ३२ ३१२ ३ १२
जज्ञानोवाचमिष्यसिपवमानविधर्मणि।

१ २ ३ १२ ३२
क्रन्दन्देवोनसूर्यः॥ ३ ||॥२

हे "पवमान" सोम! "देवः न सूर्यः" द्योतमानः सूर्यइव "जज्ञानः" प्रादुर्भूतस्त्वं "विधर्मणि" विधारके** दशापवित्रे "क्रन्दन्" ध्वनन् "वाचम्" शब्दम् "इष्यसि" प्रेरयसि॥

---

* ऋ० वे० ७, १, २७, २।

† 'समुद्रः—समुद्रभूतस्त्वम्'—इति वि०।

‡ 'केतुध्वजः नाम'—इति वि०।

¶ 'दिवस्परि—द्युलोकस्योपरि—इति वि०।

§ 'अभ्यर्षसि—आभिमुख्येन रचसि'—इति वि०।

|| ऋ० वे० ७, १, २७, ४।

** 'विधर्मणि—विविधे कर्मणि'—इति वि०।

Digitized by Google

"जग्मानः"-"हिन्वानः' —इति पाठौ,"क्रन्दन्""अक्रान्"—इति च ॥ ३ ॥ २

प्रसोमास इति सप्तर्चं तृतीयं सूक्तम्;

तत्र, प्रथमा।

१र २र २ १ २ ३ १ २

प्रसोमासोअधन्विषुःपवमानासइन्दवः।

२ ३ २ १ २

श्रीणानाअप्सुवृञ्जते ॥ १ * ॥

"पवमानासः" पूयमानाः "इन्दवः" दीप्ताः "सोमासः" सोमाः "प्राधन्विषुः" [धन्वति गतिकर्मा (निघ० २,१४,६४)] प्रगच्छन्ति किञ्च "श्रीणानाः"† गोभिः श्रयमाणाः "अप्सु" वसतीवरीषु‡ "वृजन्ते" गच्छन्ति [व्रज व्रजी गतौ (भ्वा०,प०)] सम्पृक्ता भवन्तीत्यर्थः ॥

"वृजन्ते"-"मृजन्त"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १र २र ३ १ २ १ २ १ २ ३ २

अभिगावोअधन्विषुरापोनप्रवतायतीः।

३ १र २र

पुनानाइन्द्रमाशत ॥ २ ¶ ॥

* ऋ० वे० ६, ८, १४, १।

† 'श्रीणानाः—श्रीणनं मिश्रणं, मिश्रयमाणाः'—इति वि०।

‡ 'अप्सु—सप्तम्या बहुवचनमिदं तृतीया-बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, अद्भिः—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, ८, १४, २।

Digitized by Google

"गावः" गमनशीलाः* "इन्दवः" सोमाः "अभि अध-न्विषुः" दशापवित्रमभिगच्छन्ति। किमिव? "प्रवता" प्रवण-वता देशेन "यतीः" गच्छन्त्यः "आपः नः" आपइव †, पश्चात् "पुनाना" "इन्द्र" प्रणीयितुम् आशत व्याप्नुवन् ॥२॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १र २र ३ १ १
प्रपवमानधन्वसिसोमेन्द्रायमादनः।
१ २३ १र २र
नृभिर्यतोविनीयसे॥ ३‡ ॥

हे "पवमान" सोम! "इन्द्राय" इन्द्रस्य "मादनः" मादयिता त्वं "प्रधन्वसि" प्रगच्छसि पवित्रम्। तदेवाह—"नृभिः" नेतृभि ऋत्विग्भिः "यतः" गृहीतः¶ "विनीयसे"§ हविर्धानात्॥।

"मादनः--"पातवे"—इति पाठो ॥३॥

---

* 'गावः—आदित्यरश्मयः उदकानि सोमरसा गावश्च'—इति वि०।

† 'आपोन—न-शब्द उपमार्थीयः आपइव "प्रवता यतीः" यथा प्रवणेन आपो गच्छन्ति तद्वत् सोमेन अभिषूयमाणेन गावो धन-धान्य-देवताय प्रवणा भवन्ति, यागतश्च पुनाना इन्द्रमाशत'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ९, ८, १४, २।

¶ 'यतः—नियतः संयत इति यावत्, अथवा यमु बन्धने ऋत्विग्भिर्बद्धः सोमबन्ध-नेन'—इति वि०।

§ 'विनीयसे—विविधं नीयसे'—इति वि०।

|| 'अथवा पवमान प्रधन्वसि पातं प्रतीन्द्रपानाय तदर्थं हविर्धानात् विनीयसे'—इति सम्बोधिका व्याख्या।

Digitized by Google

अथ चतुर्थी।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

इन्दोयदद्रिभिःसुतःपवित्रम्परिदीयसे।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अरमिन्द्रस्यधाम्ने ॥ ४ * ॥

हे "इन्दो" त्वं "यद्" यदा "अद्रिभिः" ग्रावभिः "सुतः" अभिषुतः "पवित्रं" दशापवित्रं † "परिदीयसे" परिगच्छसी-त्यर्थः। तदा "इन्द्रस्य" "धाम्ने" स्थानाय धारकायोदराय वा "अरं" पर्याप्तोऽसि ॥

"परिदीयसे"--"परिधावसि"—इति पाठो ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी।

१ २ ३१ २ ३ १२ ३ १ २

त्वꣳसोमनृमादनःपवस्वचर्षणीधृतिः।

२ ३ १ २ ३ १ २

सस्निर्योअनुमाद्यः ॥ ५ ‡ ॥

हे "सोम!" "नृमादनः नृणां मादयिता "चर्षणीधृतिः" चर्षणीभिः ऋत्विग्भिः प्रजाभिः धृतस्त्वं "पवस्व"। "यः" त्वं "सस्निः" शुद्धः "अनुमाद्यः" स्तुत्यः ¶ स पवस्वेति समन्वयः ॥

"चर्षणीधृतिः"-"चर्षणीमहे"—इति पाठो ॥ ५ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ८, १४, ४।

† 'पवित्रं परिदीयसे—द्वितीयैकवचनमिदं षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् पवित्रस्योपरि दीयसे'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १४, ५।

¶ 'अनुमाद्यः—अनु पश्चात् देवता माद्यन्ते स अनुमाद्यः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ षष्ठी।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्ववृत्रहन्तमउक्थेभिरनुमाद्यः।
१ २ ३ १ २ ३ २
शुचिःपावकोअद्भुतः॥ ६* ॥

हे सोम! "वृत्रहन्तमः" शत्रूणामतिशयेन हन्ता त्वं "पवस्व" चर। कीदृशस्त्वम्? "उक्थेभिः" शस्त्रैः "अनुमाद्यः" स्तुत्यः "शुचिः" शुद्धः† "पावकः" अन्यस्य शोधकः‡ "अद्भुतः" महान्¶, एवं महानुभावः पवस्व॥

"वृत्रहन्तमः"-"वृत्रहन्तम"—इति पाठौ॥ ६॥

अथ सप्तमी।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ २
शुचिःपावकउच्यतेसोमःसुतःसमधुमान्।
२ १ २ ३ २
देवावीरघशंसहा॥ ७§ ॥ ३

"सुतः" अभिषुतः "मधुमान्" माधुर्योपेतः "सः" सोमः "शुचिः" स्वयं शुद्धः "पावकः" शोधकश्च उच्यते तथा "देवावीः" देवाना-

---

* ऋ० वे० ६, ८, १४, ६।

† 'शुचिः—दीप्तः'—इति वि०।

‡ 'पावकः—पावनस्वभावः'—इति वि०।

¶ 'अद्भुतः—अपूर्वः आश्चो द्वितीयः'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ६, ८, १४, ७।

Digitized by Google

मविता तर्पयिता* "अघसंसहा" अघं पापं शंसतीत्यघशंसा असुरास्तेषां हन्तेति चोच्यते ॥

"सुतःसमधुमान्"-"सुतस्समध्व:"—इति पाठौ ॥ ७ ॥ ३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय-खण्डे—

प्रकविरिति समर्चं प्रथमं सूक्तम्;

तत्र, प्रथमा ।

१२ २३१२ ३१२ ३ १ २
प्रकविर्देववीतयेव्यावारेभिरव्यत ।

२ १ २र ३१र २र
साह्वान्विश्वाअभिस्पृधः ॥ १ † ॥

"कविः" मेधावी सोमः "देववीतये" देवानां पानाय "अव्यावारेभिः" अविसम्बन्धिभिः वालैः दशापवित्रेण "अव्यत" अव्यते प्राप्यते, "साह्वान्" अभिभवितां साढा‡ सोमः "विश्वाः स्पृधः" सर्वान् सङ्ग्रामान् हिंसकान् वा अभिभवतीति शेषः ॥

"अव्यावारेभिरव्यत"-"अव्योवारेभिरर्षति"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'देवावीः—देवानां अवनभूतः'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ९, ८, १०, २१ ।

‡ 'साह्वान्—साधन-स्वभावः'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१२ १२ ३ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
सहिष्माजरितृभ्य आवाजङ्गोमन्तमिन्वति।
१२ ३ १२
पवमानःसहस्रिणम्॥ २ *॥

"स हि ष्मा" स खलु "पवमानः" सोमः "जरितृभ्यः" स्तोतृभ्यः "गोमन्तं" "बहुभिर्गोभिर्युक्तं" "सहस्रिणं" सहस्र-सङ्ख्याकं† "वाजम्" अन्नम् "आ" आभिमुख्येन "इन्वति" व्याप्नोति प्रयच्छतीत्यर्थः॥ २॥

अथ तृतीया।

३२ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३२
परिविश्वानिचेतसामृज्यसेपवसेमती।
१२ ३१२
सनःसोमःश्रवोविद॥ ३ ‡॥

हे "सोम!" त्वं "चेतसा" त्वीयेनास्मदनुकूलेन चित्तेन "विश्वानि" सर्वाणि धनानि "मती" मत्वा अस्मत्स्तुत्या "मृज्यसे" दशापवित्रेण शोध्यसे। ततः "पवसे" रसं क्षरसि।

---

* ऋ० वे० ६, ८, १०, २।

† 'सहस्रिणं—सहस्र-पोषण-समर्थम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १०, ३।

Digitized by Google

एवम्भूतः "सः" त्वं "नः" अस्मभ्यं "अवः" अन्नं* "विदः"† देहीति शेषः ॥

"मृज्यसे"-मृशसे"—इति पाठौ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

३क २र ३ १ १ २र ३ १ २ ३ १ ३ १
अभ्यर्ष बृहद्यशोमघवद्भ्योध्रुवꣳरयिम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २
इषꣳस्तोतृभ्यआभर ॥ ४ ‡ ॥

हे "सोम !" त्वं "बृहद् यशः" महतीं कीर्त्तिम् "अभ्यर्ष" अभिगमय, "मघवद्भ्यः" हविष्मद्भ्यः¶ अस्मभ्यं "ध्रुवं"§ रयिं "धनं" च अभ्यर्ष । किञ्च "इषम्" अन्नं‖ "स्तोतृभ्यः" अस्मभ्यम्** "आभर" आहर ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी ।

१ ३र ३ १र २र १ १ २
त्वꣳराजेवसुव्रतोगिरःसोमाविवेशिथ ।
३ १ २
पुनानोवह्नेअद्भुत ॥ ५ †† ॥

---

* 'अवः—अन्नं रक्षां वा'—इति वि० ।

† 'विदः—विद ज्ञाने, विद्लृ लाभे, विद सत्तायाम् । अन्नलाभकरः'-इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १०, ४ ।

¶ 'मघवद्भ्यो यजमानेभ्यः—इति वि० ।

§ 'ध्रुवं स्थिरं'—इति वि० ।

‖ 'इषम् अन्नं हविः वा'—इति वि० ।

** 'स्तोतृभ्यः यजमानेभ्यः'—इति वि० । †† ऋ० वे० ६, ८, १०, ५ ।

Digitized by Google

हे "वह्ने" यज्ञादेर्वोढः! "अद्भुत!"* "सोम!" "सुव्रतः" सुकर्मा "पुनानः" त्वं "राजा इव" "गिरः" अस्मदीयाः "स्तुतीः "आविवेशिथ" आविशसि ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी।

१र २र ३ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २

सवह्निरप्सुदुष्टरोमृज्यमानोगभस्त्योः।

१ २ ३१२

सोमश्चमूषुसीदति ॥ ६ † ॥

"सः" सोमः "वह्निः" यज्ञादेर्वोढा "अप्सु" अन्तरिक्षे वर्त्तमानः "दुष्टरः" दुःखेन अन्यैस्तरणीयः "मृज्यमानः" शोध्यमानः "गभस्त्योः" हस्तयोः‡ एवम्भूतः सन् "चमूषु" पात्रेषु "सीदति"¶ ॥ ६ ॥

अथ सप्तमी।

३ २ ३१र १र ३१२ ३ १ २

क्रीडुर्मखोनमᳪंहयुःपवित्रᳪंसोमगच्छसि।

१ २ ३ २ ३ १ २

दधत्स्तोत्रे सुवीर्य्यम् ॥ ७ § ॥ ४

---

* 'अद्भुतमभूतपूर्वं'—इति वि०।

† ऋ० वे० ६, ८, १०, ६।

‡ 'गभस्त्योः—बाह्वोः'—इति वि०।

¶ 'चमूषु सीदति—अधिषवणेषु तिष्ठति'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ६, ८, १०, ७।

Digitized by Google

हे "सोम!" "क्रीळु" क्रीड़न-शीलस्त्वं "मंहयुः"* [मंहति-दानकर्मा (निघ० ३,२०,१०) दानेच्छुः "मखो न" दानमिव "पवित्र" "गच्छसि"। किं कुर्वन्? "स्तोत्रे" स्तुतिकर्त्रे "सुवीर्यं" शोभन-वीर्यं "दधत्" प्रयच्छन् ॥ ७॥ ४

अथ यवंयवमिति चतुर्ऋचं द्वितीयं सूक्तं ;

तत्र, प्रथमा ।

१ २　२ १ २　३ १ २ ३ १ २
यवंयवन्नोअन्धसापुष्टम्पुष्टम्परिस्रव ।
१ २　२ १ २
विश्वाचसोमसौभगा ॥ १† ॥

हे "सोम"! त्वं "नः" अस्मभ्यम् "पुष्टंपुष्टम्"‡ अत्यन्तं बहुलं "यवंयवं"¶ पुनःपुनर्युतं रसम् "अन्धसा" अन्नरूपया धारया "परिस्रव" क्षर [तत्र प्रार्थयितुस्तृष्णयात्यन्तं पीड़ितत्वात् "आबाधे च (८,१,१०)"—इति द्विर्भावः। आबाधनमाबाधः पीड़ा प्रयोक्तृधर्मो नाभिधेयधर्म इत्युक्तम्]। अपिच "विश्वा" विश्वानि "सौभगा"§ सौभगानि धनानि परिस्रव अस्मभ्यं प्रयच्छेत्यर्थः ॥ १ ॥

---

* 'मंहयुः—पूजेयुः अथवा मंहयुः पूजाकारः'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १, ११, १।

‡ 'परिस्रवसामान्या पुष्टिः धनधान्यादिना वशेषिकी पुष्टिं र्धमनिष्पादिका'—इति वि०।

¶ 'यवं—अभ्यासे भूयामर्थः प्रतीयते। यवं धान्यविशेषं चरुपुरोडाशेभ्यो हेतु-भूतम्'—इति वि०

§ "सुपांसुलुक् (७, १, ३९)"—इत्याले रूपम्।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ ३ २ ३ २३१ २ ३ १ २ ३ १र २र
इन्दोयथातवस्तवोयथातेजातमन्धसः।
२ ३ १ २ ३ १ २
निर्बर्हिषिप्रियेसदः॥ २*॥

हे "इन्दो" सोम! "अन्धसः" अन्नरूपस्य "तव" सम्बन्धी "स्तवः" स्तवनं स्तोत्रं† तथा "ते" तव "यथा जातं" यथा प्रादुर्भूतमस्ति, तथा त्वं "प्रिये" प्रीणयितरि "बर्हिषि" अस्मद्यज्ञे "नि सदः"‡ निषण्णो भव॥ २॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
उतनोगोविदश्ववित्पवस्वसोमान्धसा।
३ १ २ ३ १ २
मक्षूतमेभिरहभिः॥ ३¶॥

"उत" अपि च हे "सोम!" "नः"§ अस्माकं "गोवित्" गोप्रदः‖ "अश्ववित्" अश्वप्रदश्च त्वं** "मक्षुतमेभिः" मक्षुतमैः अतिशयेन शीघ्रैः "अहभिः" अहोभिर्हेतुभिः "अन्धसा पवस्व" अन्नरूपया धारया क्षर॥ ३॥

---

* 'तव स्तवः क्रियते स्तोत्र-प्रकारात्मकः'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १, १२, २।

‡ 'नि—नितराम्'—इति वि०।

¶ 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि०

§ ऋ० वे० ७, १, १२, ३।

‖ 'गोवित्—गोमान्'—इति वि०

** 'अश्ववित्—अश्ववान्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ चतुर्थी।

२ ३ २ ३ १र २र३१ १ २ ३ १ २

योजिनातिनजीयतेहन्तिशत्रुमभीत्य।

१ २

सपवस्वसहस्रजित्॥ ४ *॥ ५

हे "सहस्रजित्" असङ्ख्यात-शत्रूणां जेतः! † सोम! "यः" भवान् "जिनाति" शत्रून् जयति स्वयं शत्रुभिः "न जीयते"। प्रकारान्तरेण तदेवाह—"शत्रुमभीत्य" स्वयमेव शत्रुमागत्य "हन्ति" किन्तु तेन न हन्यते इति शेषः। एवम्भूतः स त्वं धारया क्षर॥ ४॥ ५

अथ तृचात्मके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १र २र ३ २ १

यास्तेधारामधुश्चुतोऽसृग्रमिन्दऊतये।

१ २ ३ १ ३ १ २

ताभिःपवित्रमासदः॥ १ ‡॥

भो "इन्दो" सोम! "ते" तव "मधुश्चुतः" मधुर-रसस्य श्चोतयित्र्यः "याः" "धाराः" "ऊतये" रक्षणाय "असृग्र" सृज्यन्ते "ताभिः" धाराभिः त्वं "पवित्रम्"¶ "आसदः" आसीद॥ १॥

---

* ऋ० वे० ७, १, १२, ४।

† 'स पवस्व सहस्रजित् सहस्राणां जेता'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, १, २५, २।

¶ 'पवित्र'—दशापवित्रम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

२ ३१२ ३१२३१र २र३ १ २
सोमर्षेन्द्रायपीतयेतिरोवाराण्यव्यया।
१२३२ ३१ ३२
सीदन्नृतस्ययोनिमा॥ २ *॥

हे सोम! "सः" अभिषुतः त्वम् "अव्यया" अविमयानि "वाराणि" वालानि "तिरः" तिरस्कुर्वन् "ऋतस्य" यज्ञस्य "योनिं" कारणभूतं द्रोणकलशम् "आसीदन्" आभिमुख्येन उपविशन् "इन्द्राय" इन्द्रस्य "पीतये" पानाय "अर्ष" चर॥

"ऋतस्ययोनिमासीदन्"-"योनावनेषु"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३१२ ३१ २ ३ १ २
त्वꣳसोमपरिस्रवस्वादिष्ठोअङ्गिरोभ्यः।
३ २१ १र २र
वरिवोविद्घृतम्पयः॥ ३ †॥ ६

हे "सोम!" "स्वादिष्ठः" स्वादुतमः "वरिवोवित्"‡ अस्म-दभिलषितस्य धनस्य लम्भकश्च त्वम् "अङ्गिरोभ्यः" अङ्गिरसा-

---

* ऋ० वे० ७, १, २५, २।

† ऋ० वे० ७, १, २५, ४।

‡ 'वरिवोवित्—वरिवः=वरिष्ठः, वित्=भजः'—इति वि०।

Digitized by Google

मर्थाय* "घृतं"दीप्तं† "पयः" क्षीरवत् सारभूतं रसं "परिस्रव" परिक्षर ॥

"त्वं सोम"-"त्वमिन्दो" —इति पाठौ ॥ ३ ॥ ६ ॥

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य
द्वितीयः खण्डः‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीय-खण्डे¶—

प्रथम-तृचे, प्रथमा ।

१ २ १ २ ३क २र ३ २ ३
तवश्रियोवर्ष्यस्येवविद्युतो
१र २ ३ १ २ ३ १ २
ग्ने श्चिकित्रउषसामिवेतयः ।
१र २र ३ १ २ ३ १ २ ३
यदोषधीरभिसृष्टोवनानिच
१ २ ३ १ २ ३ १र ३र २ १ २
परिस्वयंचिनुषेअन्नमासनि ॥ १ §॥

"अग्नेः" अञ्जनादि-गुण-युक्तस्य "तव" "श्रियः" रश्मि-लक्षणा विभूतयः"चिकित्रे"प्रज्ञायन्ते । तत्र दृष्टान्तः—"वर्षस्येव‖

---

* 'अङ्गिरोभ्यः—अङ्गिरो नाम देवास्तेभ्योऽर्थे'—इति वि० ।

† "घृतमाज्यम्"—इति प्रथमं दीयव्याख्या ।

‡ 'उक्तं वक्ष्यमाणं । त्रितयं सौमिकञ्च तत् । पवमानः'—इति वि० ।

¶ 'इहाग्नीमान्यानि; आग्नेयमथममाज्यम्'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ८, ४, २०, ५ ।

‖ मूले तु "वर्ष्यस्येव ,, —इति य-यकारः श्रूयते ।

Digitized by Google

विद्युतः" यथा वर्षितुर्मेघस्य सम्बन्धिन्यो विद्युतः, "उषसामि-
वेतयः" यथा चोषसाम् 'एतयः' गमनशीलाः श्यामाः प्रकाशाः
प्रभायन्ते, तद्वदित्यर्थः। कदेत्यचाह—"यद्" "यदा" त्वम्
"ओषधीः" व्रीहियवाद्याः "वनानि" अरण्यानि च अभिसृष्टो
सृष्टः दग्धुं विसृष्टः सन् "स्वयम्" आत्मना "आसन्" आस्ये मुखे
"अन्नम्"अदनीयं स्थावर-लक्षणं"परि चिनुषे"परिक्षिपसीत्यर्थः॥

"विद्युतोऽग्ने:"-"विद्युतस्त्विषा"—इति, "उषसामकेतवः"-
"उषसामिवेतयः"—इति पाठौ॥१॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १उ २ १ २
वातोपजूतइषितोवशाꣳअनु

३ १उ ३ १ २ ३ १ २
तृषुयदन्नावेविषद्वितिष्ठसे।

१ २ १ २ २ ३ २ ३
आतेयतन्तेरथ्यो ऽ३ ऽयथापृथक्

१ २ ३ १ २ ३ १ २
शर्धांꣳस्यग्ने अजरस्यधक्षतः॥२*॥

हे "अग्ने!" त्वं "यद्"यदा "वातोपजूतः" वायुना कम्पितः†
"वशान्" कान्तान् वनस्पतीन् "अनु" प्रति "तृषु" क्षिप्रम्

---

* ऋ॰ वे॰ ८, ४, २१, २।

† 'वातोपजूतः—वातयुक्तः'—इति वि॰।

"इषितः" प्रेषितश्च* सन् "अन्ना" अन्नानि अदनीयानि वनस्पत्यादीनि स्थावराणि "वेविषत्" व्याप्नुवन् "वितिष्ठसे" इतस्ततो गच्छति; तदानीम् "अजरस्य" जरा-रहितस्य "धक्षतः" दहतः "ते" तव "अर्चींषि"† तेजांसि "यथा" "रथ्यः" रथिनः तद्वत् "आ पृथक्" पृथगायन्त गच्छन्ति ॥

"अजरस्य"-"अजराणि"—इति पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ १ २ १ २ २ १ १
मेधाकारंविदथस्यप्रसाधन

२ १र १र ३ १ २ २ १
मग्निꣳहोतारम्परिभूतरम्मतिम्।

१र १र २ १ २ ३ २उ
त्वामर्भस्यहविषःसमानमित्त्वां

३ १ २ ३ २
महोवृणतेनान्यन्त्वत्॥ ३‡ ॥ ७

"मेधाकारं" प्रज्ञायाः कर्त्तारं "विदथस्य" यज्ञस्य "प्रसाधनम्" प्रकर्षेण साधकं "होतारं" देवानामाह्वातारं "परिभूतरम्" अतिशयेन शत्रूणा मभिभवितारं "मति" मन्तारं "यं" "त्वाम्" "अग्निम्" वयमृत्विजः वृणीमहे—इति शेषः।

हे अग्ने! "त्वामित्" त्वामेव "अर्भस्य" अल्पस्यास्य "हविषः"

---

* 'इषितः—इषु इच्छायाम्, इच्छासंयुक्तः'—इति वि०।

† 'अर्चींषि—बलानि'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ८, ४, १६, ३।

Digitized by Google

पुरोडाशादिकस्य भक्षणार्थमिति शेषः । "समानमित्" सहैव ऋत्विजः "वृणते" प्रार्थयन्ते "मह्नः" महतः सोमात्मकस्य हविषः भक्षणार्थं त्वामेव वृणते "त्वत्" त्वत्तः "अन्यम्" अतिरिक्तं देवं "न" वृणते ॥

"परिभूतरं"-"परिभूतमम्"—इति छन्दोगबह्वृचानां पाठौ, "त्वामभस्यहविषः"-"तमिदर्मेहविषि"—इति, "इत्वान्यहो"-"तमिन्यहो"—इति च ॥ ३ ॥ ७

अथ द्वितीय-तृचे—प्रथमा ।

२ १ २ २ १र १र२ १ २

पुरूरुणाचिध्यस्त्यवोनूनंवांवरुण ।

२ ३१ २ ३ २

मित्रवꣳसिवाꣳसुमतिम् ॥ १ * ॥

हे मित्रावरुणौ ! "वां" युवयोः "पुरूरुणा" [प्रथमार्थे तृतीया (७,१,८५)† पुरोरपि बहु उरु बहुतरम् अथवा पुरु च तदुरु च पुरूरु] अत्यन्तं बहुतरमित्यर्थः, तादृक् "अवः" रक्षणं "नूनं" निश्चयेन "अस्ति हि" [हि प्रसिद्धौ; चिदिति पूरणः] हे "वरुण !" हे "मित्र !" "वां" युवयोः "सुमतिम्" अनुग्रहबुद्धिम् "वंसि"‡ सम्भजेयम् ॥ १ ॥

---

* ऋ० वे० ४, ४, ८, १ ।

† "अत्र सोः सुपांसुलुगित्याकारः"—इति ऋ०-व्याख्या ।

‡ 'वंसि—वाञ्छयसि'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
तावाꣳसम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धामच ।
३ १ २
वयंवाम्मित्रास्याम ॥ २* ॥

हे "अद्रुह्वाणा" हे अद्रोग्धारौ ! "ता" तौ प्रसिद्धौ "वां" युवां सम्यक् स्तुमइति शेषः । स्तोतारः "वयम्" "इषम्" अन्नं "धाम च" आधारम् "अश्याम" प्राप्नुयाम । हे "मित्रा" मित्रावरुणौ ! "वां" स्तोतारौ वयं "स्याम" भवेम सम्यक् इति शेषः, युवाभ्यां स्वभूता वा स्याम ॥

"धामच"-"धायसे"—इति पाठौ, "मित्रा"-"रुद्रा"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
पातन्नोमित्रापायुभिरुतत्रायेथाꣳसुत्रात्रा ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
साह्यामदस्यून्तनूभिः ॥ ३† ॥ ८

हे "मित्रा" मित्रावरुणौ देवौ ! युवां "नः" अस्मान् "पायुभिः" रक्षणैः "पातं" रक्षतम् । "उत" अपिच "सुत्रात्रा" शोभनेन

* ऋ० वे० ४, ४, ८, १ ।
† ऋ० वे० ४, ४, ८, ३ ।

Digitized by Google

त्राणेन "त्रायेथां" पालयेथाम् [इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहार-भेदेन भेदः —स्तोत्रादि-वैकल्याच्छत्रोर्वा त्रायेथाम् अभिमत-प्रापणेन रक्षत-मित्यर्थः]। वयञ्च "तनूभिः" * पुत्रादिभिः सहिताः स्वीयै-रङ्गैर्वा "दस्यून्" शत्रून् "सह्याम" अभिभवेम ॥

"मित्रा"-"रुद्रा"—इति पाठौ, "त्रायेथां"-"त्रायेताम्" —इति, "सह्याम"-"तुर्याम"—इति च ॥ ३ ॥ ८

अथ तृतीय-तृचे †—

प्रथमा।

३ २ ३ १ २ ३ १ ३ १र २र

उत्तिष्ठन्नोजसासहपीत्वाशिप्रे अवेपयः।

१ १ २ ३ १ २

सोममिन्द्रचमूसुतम् ॥ १‡ ॥

हे "इन्द्र!" त्वं "पीत्वा" "ओजसा" बलेन "सह" "उत्तिष्ठन्" ¶ "शिप्रे" हनू "अवेपयः" अकम्पयः मदावेशादिति भावः। किं पीत्वा? "चमू" चम्वोरधिषवण-फलकयोः "सुतम्" अभिषुतम् "सोमम्" ॥

"पीत्वा"-"पीत्वी"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'तनूभिः—त्रिभिः युष्माभिः शरीरैरभिष्टुतैरिति वाक्यशेषः'—इति वि०।

† 'ऐन्द्रमाज्यम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ८, ७६ = ऋ० वे० ६, ४, २८, ४।

¶ 'उत्तिष्ठन्—ओजसा सह वीर्येण उत्थानं कुरु। सोमं पिब। पीत्वा शिप्रे हनूनासिके च मत्तः सन् अवेपयः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १र २र
अनुत्वारोदसीउभेस्पर्द्धमानमददेताम् ।
२ ३ १२ ३ १२
इन्द्रयद्दस्युहाभवः ॥ २* ॥

हे "स्पर्द्धमान" शत्रुभिः सह स्पर्द्धां कुर्वाण इन्द्र ! "त्वा" त्वाम् "अनु" लक्ष्य "उभे रोदसी" उभे अपि द्यावापृथिव्यौ "मददेतां" ह्रष्येताम् "यद्" यदा "दस्युहा भवः" शत्रूणां हन्ता भवसि, तदा मददेतामिति सम्बन्धः ॥

"स्पर्द्धमानमददेतां"-"क्रध्यमाणमक्लपेताम्"—इति पाठौ ॥२ ॥

अथ तृतीया ।

१ २३१ २ ३ १र २र ३ १ २
वाचमष्टापदीमहन्नवस्रक्तिमृतावृधम् ।
२ ३ १ २ ३क २र
इन्द्रात्परितन्वम्ममे ॥ ३† ॥ ९

"अष्टापदीम्" अष्टाभिर्दिग्भिर्विदिग्भिश्चाष्टापदीं,‡ "नवस्रक्तिम्" उपरिस्थितेनादित्येन नवस्रक्तिम् आसु दिक्षु व्याप्तामि-

---

* ऋ० वे० ६, ५, १८, ५ ।

† ऋ० वे० ६, ५, १९, ३ ।

‡ 'अष्टापदीम्—चत्वारो वेदाः शाखाश्च च अष्टापदानि'—इति वि० ।

Digitized by Google

त्यर्थः*, "ऋताहृधं" यज्ञस्य हृद्धिं कुर्वन्तीं,† "वाचं" स्तुतिमयीं, परिपूर्णात्‡ "तन्वं तनूं न्यूनां सतीम्¶ "अहम्" "परि ममे" न्यूनयन्तां करोमीत्यर्थः§। कात्स्न्येन स्वरूपं स्तुत्या विषयीकर्तुमशक्यत्वादितिभावः॥

"ऋताहृधम्"-"ऋतावृधम्"—इति पाठौ॥२॥९

अथ चतुर्थ-तृचे॥—

प्रथमा।

१ २   ३ १ ३ २   ३ २   ३ २

इन्द्राग्नीयुवामिमेऽ३भिस्तोमाअनूषत।

१ २   ३ २

पिबतंशम्भुवासुतम्॥१**॥

हे "इन्द्राग्नी!" "युवाम्" "इमे" "स्तोमाः" स्तोतारः†† "अभ्यनूषत" अभिष्टुवन्ति। हे "शम्भुवा" सुखस्य भावयितारा विन्द्राग्नी "सुतम्" अभिषुतम् अस्मदीयं सोमं "पिबतम्"॥१॥

---

* 'नवग्वाति—नव वाग्मयः कोषाः तां: अच्छिद्यमानाः यस्यो नव खलवा नवग्वाति' विवृतकौमिकम्'—इति वि०।

† 'ऋताहृधम्—ऋतो यज्ञः अथवा ऋत मन्नं तं वर्द्धयतीति ऋताहृधम्'-इति वि०।

‡ 'इन्द्रात् परि—उपरि'—इति वि०।

¶ 'तनु'—शरीरम्'—इति वि०।

§ 'ममे—मिमोति'—इति वि०।

॥ 'ऐन्द्राग्नमाज्यम्'—इति वि०।

** ऋ० वे० ४, ८, २४, २।

†† 'स्तोमाभिष्टमचहमाहवः'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ द्वितीया ।

१ २   १ १   ३ १ २   ३ १ २ ३ १ २

यावाᳬसन्तिपुरुस्पृहोनियुतोदाशुषेनरा ।

१ २ ३ २   ३ १ २

इन्द्राग्नीताभिरागतम् ॥ २* ॥

हे "नरा" नेतारौ ! "इन्द्राग्नी !" "वां" युवयोः स्वभूताः "पुरुस्पृहा" पुरुभिर्बहुभिः स्पृहणीयाः† "दाशुषे" हवींषि दत्तवते यजमानार्थम् उत्पन्नाः "नियुतः" अश्वाः "सन्ति"‡ हे इन्द्राग्नी ! "ताभिः" "नियुद्भिः" सह "आगतम्" आगच्छतम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २   ३ १ ३ १२   १२   ३ २

ताभिरागच्छतन्नरोपेदᳬसवनᳬसुतम ।

१ २ ३ १ २

इन्द्राग्नीसोमपीतये ॥ ३¶ ॥ १०

हे "नरा" नेताराविन्द्राग्नी ! [सूयतेऽभिसूयतइति सवनः सोमः] "इदं सवनम्"§ इमं सोमं "सुतम्" अभिषुतम् "उप"

---

* ऋ० वे० ४, ८, २४, ३ ।

† 'पुरुस्पृहा—पुरुस्पृही बहुभिः स्पृहणीयौ'—इति वि० ।

‡ 'सन्ति—बहुवचनमिदं द्विवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, सतः'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ४, ८, २४, ४ ।

§ 'इदं प्रातःसवनं सुतं सोमम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

प्रति* [यद्वा, इदं प्रातःसवनम् उप अस्मिन् सवने सुतमभिषुतं सोमं प्रति] "ताभिः" नियुद्भिः† आगच्छतम् । किमर्थम् ? "सोमपीतये" अस्य सोमस्य पानार्थम् ॥ ३ ॥ १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

तृतीयः खण्डः‡ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ-खण्डे¶, प्रथम-तृचे—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २

अर्षा सोमद्युमत्तमोभिद्रोणानिरोरुवत् ।

२ ३ १ ३ २ ३ २

सीदन्योनौवनेष्वा ॥ १§ ॥

हे "सोम" पवमान ! "द्युमत्तमः" अतिशयेन दीप्तिमान् "वनेषु" अरण्येषु मध्ये‖ "योनौ" [स्वकारण-भूते पर्वतादि-

---

* 'उप—समीपे'—इति वि० ।

† 'ताभिः—तृतीया-बहुवचनमिदं, षौष्ठिक' बत्ययेन तैः पालनैः'—इति वि० । "नियुतो वायोः"—इति च निघ० १, १५, १० ।

‡ 'उत्र' प्रातःसवनम्'—इति वि० ।

¶ 'इदानीं माध्यन्दिनं सवन मभिधीयते'—इति वि० ।

§ छ० आ० ६, १, २, ७ (२भा० ६१ पृ०) = ऋ० वे० ७, २, ४, ४ ।

‖ 'वषु—उदकेषु'—इति वि० ।

स्थाने * "आसीदन्" सर्वतो गच्छंस्त्व "द्रोणानि" [प्रयोग-बाहुल्यापेक्षमेतत् बहुवचनम्] द्रोणकलशान्† "अभि" लक्ष्य "रोरुवत्" पुनः पुनः भृशं वा शब्दं कुर्वन् "अर्षा" ‡ आगच्छ दशापवित्रमध्याविर्गतः सोमः अविच्छिन्न-धारया द्रोणकलशे पतन् शब्दं करोति खलु ॥

"योनौवनेष्वा"-"श्येनोमयोनिम"—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १र　१र　२ २ २ १ २　　२ १ २
अप्सा इन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः ।
१ २　　२ १ २
सोमाअर्षन्तुविष्णवे ॥ २¶ ॥

"अप्सा" वसतीवरी-नामधेयानामपां सम्भक्तारः [वनषण सम्भक्तौ (भ्वा, प०); "जनसनेति (३,२,६७,) विट्, आत्वं विड्वनोरिति (६,४,४१,) तादृशाः] "सोमाः" "अर्षन्तु" द्रोण-कलशमागच्छन्तु । किमर्थम्? "इन्द्राय" सर्वदेवानां प्रथमत एव इन्द्रः सोमान् पिबति, तस्मात् तदनु वायुरुक्तः तस्मै च "वायवे", तदनन्तरं वरुणः सोमान् पिबति तस्मै च "वरुणाय", ततो "मरुद्भ्यः" एतन्नामकेभ्यो देवेभ्यः, "विष्णवे" सर्वजगद्-

* 'योनौ—द्रोणकलशे'—इति वि० ।

† 'द्रोणानि—द्रोणकलशसम्बन्धीनि पात्राणि'—इति वि० ।

‡ "द्व्यचोऽतस्तिङः (६,३,१३५)"—इति दीर्घः ।

¶ ऋ० वे० ७, २, ५, १ ।

अपिने एतन्नामकाय देवाय च,—एतेभ्यः सर्वेभ्यः सोमा आगच्छन्त्वित्यर्थः ॥

"सोमा अर्षन्तु"-"सोमोऽर्षति"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इषन्तोकायनोदधदस्मभ्यꣳसोमविश्वतः।
१ २ ३ १ २
आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३* ॥ ११

हे "सोम!" त्वं "नः" अस्माकं "तोकाय"† पुत्राय "इषम्" अन्नं "दधद्" विदधत् प्रयच्छन् "सहस्रिणं" सहस्र-सङ्ख्याकं धनं "विश्वतः" सर्वतः "अस्मभ्यं" च "आपवस्व" आप्रापय अस्मभ्यं पुत्राय च अन्न-धनादिकं प्रयच्छेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ११

१ २ २ १ २ १ २ २
॥ प्राकलम् ॥ अर्षासोमा२द्युमत्तमाः। अभिद्रोणा
२ १२ २ १ १ २ १ १
निरोरु२३वात्। सायिदा२न्। योनीवना २ ३ यि।
१ २ ५ १ २ २ १
ऊम्। पू२३४५वोꣳहायि ॥(१) अप्साइन्द्रा२यवायवायि।
२ २ १ २ १ १ २ १
वरुणायमरुद्भ्या२३याः। सोमा२ः। आर्षन्तुवा२३यि।

---

* ऋ० वे० ७,१,५,१,।

† 'पुत्राय पौत्राय'—इति वि०।

Digitized by Google

१ २ ५ १ २ २ १
ष्ठम्। ष्णा ३ ४ ५ वो६ हायि ॥(२) इषन्तोका २ यनोद
२ १ २ २ १ २ १ १
धात्। असमभ्य २ सोमविश्वा२३ताः। आपा२। वाख
२ १ १ २ ५
सद्दा२३। ष्ठम्। ष्णा३४५ यिणो६हायि(३) ॥ ३* ॥ [१]
१ २ २ १ २ २ १ २
॥ वार्षम् ॥ अर्षासोमा। द्युमाना३माः। अभि
२ १ ० २ ५ १ २ २
द्रो। णा। निरो२द्व२३४वात्। सायिदन्यीना३उ।
ऽ २ १२ १ २ ५२ २ २ २
ई३या। वने। पू२वा२३४औहोवा ॥(१) अपाइन्द्रा।
१ २ २ १ २ २ १ ० २ १
यवाया३वायि। वरुणा। या। मरु२त्ना२३४याः। सो
२ ऽ २ १ २ ५२२
मार्षा३। ई३या। तुवि। ष्णा२वा२३४औहोवा ॥(२)
२ २ १ २ २ १ १ ०
इषन्तोका। यनोदा३धात्। असमभ्यम्। सो। मवा
२ ५ १ २ ऽ २ १
२यिश्वा२३४ताः। आपवस्वा३। ई३या। सद्द। स्वा
२ ५२ २ २ ५
२यिणा२३४औहोवा। ऊं३२३४पा(३) ॥ ४† ॥ [२]
१ २ १ २
॥ सन्तनि ॥ अर्षाहाउ। सोमद्युमा २ १ उवा २ ३।

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० ३सा०।

† ऊ० गा० ३प्र० १ख० ४सा०।

Digitized by Google

५ १ २ २र १र २ ११११ २ १
ता२३४माः। अभिद्रोणानिरोरुवा२३४५त्। सीदान्हा

१ २ १ ५ २ १र
उ। योनौवना३१उवा२३यि। पू२३४वा ॥(१) अपा

२ १ २ ११२१ १र १ २ २ १ १ १ १ १र २
इन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यिया२ ३ ४ ५ः। सोमाधाउ।

१ २ ५ १ १र १र
आर्षन्तुवा३१उवा२३यि। प्णा२३४वे ॥(२) इषन्तोका

१र१ २ १ १र १ २ १ १ १ १ १र २ १
यनोदधदस्मभ्यथ्सोमविश्वता२३४५ः। आपाधाउ। वा

२ ५
स्वसद्या३१उवा२३। स्रो२३४णाम्(३) ॥ १३* ॥ [३]

१ २ २ १र २ १ १
॥ आकरवर्णम् ॥ आयिषाम्। तोकायनोदधात्।

२ १ २ १ २ २
अस्मभ्यम्। सोमवा२यि। श्वता३१उवा२३। ऊ ३ ४

५ १र१ २ १ २ १ २
पा। आपवा२३स्वा। सद्दस्त्रिणा३माउवा२३। ऊ३२

५
३४पा(३) ॥ १८ ॥ [४]

२ २ १ २ १ २ २ १ २ १
॥ जराबोधीयोत्तरम् ॥ इषन्तोकोवा। यानोदधात्। अस्मा

---

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० १२सा०।

† ऊ० गा० १७प्र० १अ० १८सा०।

र   १   र १ ४ ५
भ्या२३९सो। मविस्वाता:। आपाघा१स्वा२३सा। द्यु।

३ २
म्निणो३४५ई। डा(३)॥ १५*॥ [५]

१ र १ २   १
॥ मार्गीयवम्॥ अप्सौहोवा। आयिन्द्रा२। यं

२ ३ ५ १ १र १ २ १र र
वाया२३४वायि। वरुणाय। मरुद्भ्या१या२:। सोमा:।

२ २ ३ ५ १ ३ ५र र
च्चा। औ३होयि। आ२३४र्षा। दूरवा२३४औहोवा।

२ १ ११११
ए३। म्णावा२३४५यि(२)॥ २१†॥ [६] ११

अथ प्रगाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ १ ३१३ २ ३१२
सोमंउषाण:सोतृभिरधिष्णुभिरवीनाम्।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अश्वयेवहरितायातिधारयामन्द्रयायातिधारया॥ १‡॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० १ख० १५सा०।

† ऊ० गा० १६प्र० २ख० २सा०।

‡ छ० आ० ६, १, ३, ५ (२भा० ८८पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १३, ९।

Digitized by Google

"सोढृभिः" अभिषुण्वद्भिः ऋत्विग्भिः "स्वानः"* अभिषूयमाणः "सोमः" "अवीनां" "स्नुभिः"† ["मांसपृतन्स्नूनामुपसंख्यानम् (६,१,६३)"—इति सानु-शब्दस्य स्नु-भावः] समुच्छ्रितैर्वालैः पवित्रैः "अधि याति" अधिकं गच्छति। "उ"—इति प्रसिद्धौ। "अश्वया इव" वड़वया इव "हरिता" हरित-वर्णया धारया "याति" "मन्द्रया" मदकारिण्या द्रोणकलशमधिगच्छति॥

"उष्वाणः"-उपवाणः"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३उ २ १ २ २ १ २ ३१ २ १
अनूपेगोमान्गोभिरक्षाःसोमोदुग्धाभिरक्षाः।

२ ३उ ३१२ २ ३१र २र
समुद्रन्नसंवरणान्यग्मन्मन्दीमदायतोशते॥ २‡॥ १२

"गोमान्" गोयुक्तः सोमः "अनूपे" निम्ने देशे‡ कलशे "गोभिः" गोर्विकारैः क्षीरादिभिः§ सह "अक्षाः" क्षरन्ति।

---

* क्वचित्तु "स्वाणः"—इति मूर्द्धन्य-षकार-णकारोपेतः मूयते। तत्र "पूर्वपदात् (८, ३, १०६)"—इति षत्वम् सुतरां णत्वञ्च।

† "ष्णुभिः"—इति मूर्द्धन्यपाठो क्वचित्, "पूर्वपदात् (८, ३, १०६)"—इति च तत्र दीर्घः।

‡ 'अनूपे—उर्व्वैः प्रदेशे'—इति वि०।

§ 'गोभिः—उदक-सङ्घातैः गोभिर्वा'—इति वि०।

तदेवोच्यते—"सः" सोमः आश्रमोमिश्रणार्थं "दुग्धाभिः गोभिः" सह "अघाः" चरति [चरतेर्लुङि रूपम्]। किञ्च "समुद्रं न" यथा समुद्रमुदकानि गच्छन्ति तद्वत् "संवरणानि" सम्भजनीयानि रसरूपाणि अन्नानि* द्रोणकलशम् "अग्मन्" गच्छन्ति [गमेर्लुङि च्लेर्लुकि रूपम्] किञ्च "मन्दी" मदकरः सोमः "मदाय" मदार्थं "तोशते"† हन्यते अभिषूयते [तोशतिर्वधकर्मा (निघ० २,१९,२९)] ॥ २ ॥१२

॥ मानवोत्तरम् ॥ होवायि। सोमउष्वाणःसोतृभिः। होवायि। आधिष्णुभिरवीनाम्। आश्वयेव। हारिता या३१। तिधा२रा२३४या। मन्द्राया२३४या३। ता२ यिधा२३४औहोवा। रा२३४या। होवायि। मन्द्रया यातिधारया। होवायि। मन्द्रयायातिधारया। आ नूपे। गोमान्गो३१। भा२यिरा२३४वाः। सोमोदू२३ ग्धा३। भा२यिरा२३४औहोवा। आ २ ३ ४ स्वाः ॥(२)

---

* 'संवरणानि—उदकानि'—इति वि०।

† 'तोशते—तुषि व्याप्तौ व्यापयति'—इति वि०।

होवायि। सोमोदुग्धाभिरक्षाः। होवायि। सोमोदु
ग्धाभिरक्षाः। सामुद्रम्। संवरणा३१। नियार२आ२३
४ग्मान्। मन्दायिमा२३दा३। या२तो२३४औहोवा।
आ२३४तें(३)॥ ५* ॥[१]

॥ आनूपन्ध्यश्वम् ॥ सोमाःसोमाः। उग्वाणा३ःसोतृ
१भी२ः। आधिष्णुभिः। आवा१यिना२म्। आश्वा
२येवा२। हरितायातिधारा२३या। मन्द्राया३या३।
तार३इधा३। रा३४५योई३हायि॥(१) मन्द्रामन्द्रा। या
याती३धारा१या२। मान्द्रयाया। तिधारा१या२।
आनू२पेगो२। मान्गोभिरा२३क्षाः। सोमोदू३ग्धा३।
भा२३यि३। रा३आ२३४५ओई३हायि॥(२) सोमाःसोमाः।
दुग्धा३भायिरा१क्षा२ः। सोमोदुग्धा। भायिरा१क्षा

---

* ऊ० गा० ३ प्र० १ अ० ५ गा०।

Digitized by Google

१ १ १ २ २ १ २ १
२ः। साम्२द्रावा२। संवरणानियार३म्मान्। मन्दा
२ २ १ ४ २ ५
यिमा३दा३। यार३तो३। श्रा ३ ४ ५ तो ६ हायि(३)
॥ ६* ॥ [२]

२र २ र ५र २ १
॥ वाम्रम् ॥ सोमउष्वाणःसो। हा३हा३यि। तर
४ ५ १ १
३४। भिस्तुभीवा। अधाद्दो२यि। ष्णुभायिर्द्दो२।
१ २ १ २र १ २ २ २
आवा३यिना२म्। आव्ययेव। हरायितायो। तिधा
२ ४ १ १ १
उवा३। ऊ२३४पा। रया२। मान्द्रा२याया२।
१र २ ५र र ४ २ ४र ५र र
तिधा। रा२या२३४ औहोवा ॥(१) मन्द्रयायातिधा।
२ २ १ र ५ १
हा३हा३यि। रा२३४। या२योवा। मान्द्राद्दो२यि।
१र १ २ १ र२र १ २
यायाहो२। तायिधा१राया२। आनूपेगो। मान्गो।
२ २ २ ५ १ १ १
भिराउवा३। ऊ३४पा। अक्ष्मा२ः। सोमो२दुग्धा२भि
१ २ ५र र २र ४र २र ४ ५र २
रा२। हा२३४ औहोवा ॥(२) सोमोदुग्धाभिरा। हा३

* ऊ०गा० ३प्र० १ख० ६सा०।

Digitized by Google

हाउयि। आ२३४। वाःसोवा। सोमोहो२यि। दुग्धाचो२। भायिरा१वा२ः। सामुद्रम्। संवाराणां। नियाउवा३। ऊ३४पा। अग्मा२न्। मान्दो२माद्दा२। यतो। आ२तार३४औहोवा। ऊ२२३४पा(३)॥ ७*॥ [३]

॥ अग्नेस्त्रिणिधनम्॥ सोमउय्वा। पाःसोतृ२३४भीः। अधायिष्णु भिरा३१उवार३। वी२३४नाम्। आश्वाये२३४वा। हरितायातिधा३१उवार३। रा२३४या। मान्द्रायार३४या। तिधा३१उवार३। रा २ ३ ४ या॥(१) मन्द्रयाया। तायिधारा२३४या। मन्द्रयायातिधा३१उवार३। रा२३४या। भानुपि२३४गो। मान्गोभिरा३१उवार३। आ२३४वाः। सोमोदू२३४ग्धा। भिरा३१

---

* ऊ० गा० ७प्र० १अ० ७गा०।

५ १र २ २
उवा२३। आ२३४त्वाः ॥(२) सोमोदुग्धा। भायिरा२
५ १र १र र २ ५
३४त्वाः। सोमोदुग्धाभिरा३१उवा२३। आ२३४त्वाः।
२ २ ५ ११ २
सामूद्रा२३४त्वा। संवरणानिया३१उवा२३। मा २ ३४
५ १ १ ५ २ १
ज्मान्। मान्दीमा२३४दा। यतो३माउवा२३। मा
५
२३४ते(३) ॥ ८* ॥ [४]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तः ॥ मन्द्रा३या३या॒तिधारयोवा। मान्द्र
२र र १ २ १ रर ५र
याया। तिधारा१या२। आनूपेगो३१२३४। मान्गो।
१ २ र १ २ ३ २ १
भायिरा१त्वा२ः। सोमोदू१ग्धा२। भिरा३। मा२३४
२ ११११
५। त्वा२३४५ः(२) ॥ २† ॥ [५]

५र र २ ४र ५ ४ ५ १र १ २ १
॥ कालेयम्‡ ॥ सोमोदू३ग्धाभिरत्वाः। सोमोदुग्धा।
२ १ २ २ २ १ २४र ५
भिरत्वा२३ः। समुद्रत्वा३। सा२३४म्। वरणानि।

---

* ज० गा० ३प्र० १ख० ८वा० ।

† ज० गा० ८प्र० २ख० ३वा० ।

‡ "लवाकालेयम्"—इति क० पु० पाठः ।

२ १ १ २१ १ ५ ४
आ३४मान्। मन्दायिमदौ। वा३४३ओ३४वा। यतो५

४
मतायि। औ५ई। डा(२)॥ ४*॥ [६]

१ २ २१ ५
॥ मानवाद्यम्॥ मन्द्रयाया। तिधारा२३४या।

२ ३ ५ १ १२२ १ २
तायिधारा २ ३ ४ या। मान्द्रयाया। तिधारा१या २।

१२ १२ १ ७२ २ १ ३ ५ १२ १२
आ। नू। पे। गोमान्गो३। भा२यिरा२३४ना:। सोमो

१ १ २ ५२२ २ ५
दुग्धा२३। भा२यिरा२३४औहोवा। आ२३४ना:(२)।
॥ १२† ॥ [७]

२२२ २ २ ३
॥ आग्नेस्त्रिणिधनम्॥ आनूपेगो। मान्गोभायिरा

५ १२ १२ २ १
२३४ना:। सोमोदुग्धाभिरा३१उवा२३। आ२३४ना:।

२ ३ ५ ११ २ १
सामूद्रा२३४ना। संवरणानिया३१उवा२३। आ २ ३ ४

५ २ ३ ५ २ १
ग्मान्। मान्दीमा२३४दा। यतो३आउवा२३। आर

५
३४ते(२)॥ १‡॥ [८]

---

* ऊ० गा० ८प्र० २अ० ४गा०।

† ऊ० गा० ६प्र० २अ० १२गा०।

‡ ऊ० गा० १९प्र० २अ० ३गा०।

२र १
॥ वैष्णवाद्यम् ॥ सोमउक्षा। पाःसो २नृभायिः। नृ
र १ र र र
भिः। अधिष्णुभिरा २वीनाम्। वीनाम्। अश्वयेवह
र र १ र र र १
रितायातिधा २रया। रया। मन्द्रयायातिधा २रया२३।
१ १ ५र र र र
रा२। या२३४। औहोवा ॥(१) मन्द्रयाया। तिधा २
१ र र र १ र र र
रया। रया। मन्द्रयायातिधा २रया। रया। अनूपे
र र र १ र र र १
गोमान्गोभिरा २क्षाः। क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा २क्षा२३ः।
१ १ ५र र २र र
आ२। क्षा२३४। औहोवा। सोमोदुग्धा। भि
१ र र र १
रा २क्षाः। क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा २क्षा२३ः। आ२।
१ ५र र २र र १
क्षा२३४। औहोवा ॥(२) सोमोदुग्धा। भिरा २क्षाः।
र र र १
क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा २क्षाः। क्षाः। समुद्रन्नसंवर
र १ र र १
णान्यग्मान्। ग्मन्। मन्दीमदायतो २शता२३यि।
१ १ ५र र र ५
आ२। ता२४३। औहोवा। ऊ३२३४पा(३) ॥१८*॥ ९]

---

* ऋ० मं० १०म० १ख० १८ सा०।

१२ २ २ १ २ २
॥ वैष्णवोत्तरम् ॥ सोमः। सोमाः। उष्वाणःसोतृ
१ २ २ १ २ २ १
भिः। अधायिष्णू३भायिः। आश्वौ३हो। वायिना२
१ २ २ २ २ २ २ १ १ २
म्। अश्वयेवहरितायातिधा१रा३या। मन्द्रायौ३हो।
१ २ २ १ ५ ४ ५
यायातिधोर३४वा। रा५योई३हायि(१) ॥ २०* ॥ [१०]

१२ २ २ १
॥ यौक्तस्रुचम् ॥ सोमउष्वाणःसो। तृभायिः। अ-
२ १ २ १ १२ २ २ २
धिष्णुभिरवा२३यिनाम्। आश्वा२। येवहरितायाति
१२ २ १ १ २ २ १ ५ ३
धारा२३या। मान्द्रा२। यायातिधो२३४वा। रा२३४
५ २ १ २ १२ १ २ २ २ १२
या ॥(१) मन्द्रयायातिधा। रया। मन्द्रयायातिधारा
२ १२ २ २ २ २ १ २ १
२३या। आनू२। पेगोमान्गोभिरा२३क्षाः। सोमा
१ २ १ ५ ३ ५ १२ १२
२ः। दुग्धाभिरो२३४वा। आ२३४क्षाः ॥(२) सोमोदु
१२ २ १ २ २ २ २ १ २ १
ग्धाभिरा। क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा२३क्षाः। सामू२।
१ २ २ १ २ १ १ २ २ १
द्रन्संवरणानिया२३ग्मान्। मान्दी२। मादायतो२३४
५ ३ ५
वा। आ२३४ते(३) ॥ १† ॥ [११] १२

---

* ऊ० गा० २०प्र० १ख० २०गा०।

† ऊ० गा० २०प्र० २ख० १गा०।

Digitized by Google

अथ तृतीय-खण्डे—

प्रथमा ।

१ २   ३ २ १ ३२ ३ १२ ३२३ १ २
यत्सोमचित्रमुक्थ्यन्दिव्यम्पार्थिवंवसु ।
१ २ ३ १२ ३२
तन्नःपुनानआभर ॥ १* ॥

हे "सोम!" "यत्" "चित्र" चायनीयम् "उक्थ्यम्"† स्तुत्यं "दिव्यं" दिवि भवं "पार्थिवं" पृथिवी-सम्बन्धञ्च यत् "वसु" धनमस्ति "तत्" "नः" अस्मभ्यम् "पुनानः" पूयमानः सन् "आभर" आहर ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १२ ३२   ३ १ २ १ २ ३ १ २
वृषापुनानआयूꣳषिस्तनयन्नधिबर्हिषि ।
२ ३ १उ ३ १ २
हरिःसन्योनिमासदः ॥ २‡ ॥

हे सोम! "आयूꣳषि" यजमानादीनामृत्विजां जीवितकालान् "पुनानः" शुद्धान् कुर्वन् "वृषा" कामानां वर्षकस्त्वं "स्तनयन्" शब्दं कुर्वन् "अधि बर्हिषि" [अधीति सप्तम्यर्थानुवादी] आस्तीर्णे दर्भे "हरिः सन्" हरितवर्णः सन् "योनिं" स्वकीयं स्थानम्¶ "आसदः" आसीद ॥

---

* ऋ० वे० ६, ८, ९, १ ।

† 'उक्थ्यं—नामरूपम्'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ९, ३ ।

¶ 'योनिं—द्रोणकलशम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

"आयूंषि"-"आयुःषु"—इति पाठौ, "आसदः"-"आसदत्"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २र २र ३ १ २ ३ १ २
युवᳫं हिस्थःस्वःपतीइन्द्रश्चसोमगोपती ।
३ १ २ ३ १ २
ईशानापिप्यतन्धियः ॥ ३* ॥ १३

हे "सोम !" त्वम् "इन्द्रश्च" युवं हि" युवां खलु "स्वःपती" सर्वस्य स्वामिनौ "स्थः" भवथः । तथा "गोपती" गवां पालकौ† "ईशाना" ईश्वरौ सन्तौ "धियः" अस्मदीयानि कर्माणि‡ "पिप्यतम्" प्याययतम्¶ ॥

"युवंहिस्थःस्वःपती"-"युवंहिस्वःस्वर्पती"-इति पाठौ ॥ ३ ॥ १३

२र १ २ १ र
॥ गौषवम् ॥ यत्सोमचित्रमुक्थ्यायाम् । दिव्यम्पार्थिं
२ १ ५ ३ २ ४ १ र
वंवसू । तन्नःपू२३४ना । नषाइभा५रा६५६ ॥(१) वृषा
र र १ २ १ २ १
पुनानआयूᳫंषी । स्तनयन्नधिबर्हिषायि । हरिःसा२३
५ ३ २ ४ २ १
४न्यो । निमाइसा५दा६५६ः ॥(२) युवᳫं हिस्थःसुवःपा

---

* ऋ० वे० ६, ८, ८, २ ।

† 'गोपती—गवां पती, उदकानामादित्यरश्मीनां वा'—इति वि० ।

‡ 'धियः—बुद्धयः'—इति वि० ।

¶ 'पिप्यतं—पाययतम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

१ १ २ २ १२१२ ५ ३ २
तौ। इन्द्रस्यसोमगोपतायि। ईशानार२३४पो। प्यता
५
ऽन्धा५याई५६:(३) ॥ ८* ॥ [१] १३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डे‡ प्रथम-सूक्ते—

प्रथमा ।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १२ २२
इन्द्रोमदायवावृधेशवसेवृत्रहानृभिः।
१७ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३२ २
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भेहवामहे
१२ ३२३ १ २
सवाजेषुप्रनोविषत् ॥ १¶ ॥

---

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० ९सा० ।

† 'उक्षो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि० ।

अतोऽनन्तरं विवरणकृता इहैव प्रकरणे प्रयुक्ता एव आम्नाताः । तथाहि—'इहान्ते षष्ठानि भवन्ति, तत्र पञ्चमेऽवर्गे प्रकर्षः षष्ठं भवति ता उच्यन्ते ;—सन्धे-हैवत-साम्नाानि परिभाषासिद्धानि "विद्मा मघवन्" सर्वम् त्वं मघवन्'—इत्यादि । एवचैतग्रन्थे उत्तरार्चिकीयत्व मनानाञ्जार्चिकः न तु ग्रन्थान्तरच्छन्दआर्चिकपरिमिढ-भूतः, परमेतदतीव चित्रं मूलपुस्तकदर्शनेन तथात्वं यावागात् ।

‡ 'वार्षहरं वृषसाम'—इति वि० ।

¶ ऋ० वा० ५, १, ३, २ (१भा० ८३९पृ०) = ऋ० वे० १, ७, १, १ ।

Digitized by Google

"वृत्रहा" वृत्रस्यावरकस्य वृष्टि-निरोधकस्य मेघस्यासुरस्य वा हन्ता। यद्वा, आवरकाणां शत्रूणां हन्ता, "इन्द्रः" "मदाय" हर्षार्थं "शवसे" [बलनामैतत् (निघ० २,९,१) बलार्थञ्च "नृभिः" यज्ञस्य नेतृभिः ऋत्विग्भिः "वृधे" स्तोत्र-शस्त्र-रूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव। स्तुत्या हि देवता प्राप्त-बला सती प्रवर्द्धते। "तम् इत्" तमेवेन्द्रम् "महत्सु" प्रभूतेषु "आजिषु" सङ्ग्रामेषु "ऊति" रक्षां कुर्वन्तमितिशेषः "हवामहे" अस्माकं रक्षणाय आह्वयामहे। ["उत" अपिच "ईम्" एनम् एवम्भूतमिन्द्रम्*] "अर्भे" अल्पे सङ्ग्रामे हवामहे अस्माभिराहुतः सचेन्द्रः "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु "नः" अस्मान् "प्राविषत्" प्रावतु प्रकर्षेण रक्षतु॥ ["ऊतिमर्भे"--"ऊतेमर्भे"—इति पाठौ॥ वावृधे—वृधेः कर्मणि लिट् तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घत्वम्†। नृभिः—"सावेकाच (६,१,१६८)"—इति प्राप्तस्य विभक्त्युदात्तत्वस्य "नृचान्यतरस्यां (६,१,१८४)"—इति प्रतिषेधः। हवामहे—ह्वयतेर्लटि "ह्वः (६,१,३२)"—इत्यनुवृत्तौ "बहुलञ्छन्दसि (६, १, ३४)"—इति सम्प्रसारणम्, अपि गुणावादेशौ। अविषत्—अवरक्षणे (भ्वा०,प०) लेटयडागमः, "इतश्च लोपः (३, ४, ९७)—इति इकारलोपः, "सिब्बहुलं लेटि (३,१,३४)—इति सिप्, तस्यार्द्धधातुकत्वात् वलादिलक्षण इट्]॥ १॥

---

* अन्यं दोष-पाठमनुसृत्येदं व्याख्यानम्।

† परं चिन्त्यमेतत्—"संहितायामभ्यासस्य अन्येषामपिदृश्यतइति दीर्घत्वम्। तुजादित्वेऽपि तूतुजान इति वत् पदकाले दीर्घः श्रूयेत"—इति अस्मद्-व्याख्यानपरेऽवलेय वाचकः।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १२३१ २ ३ १ २ १ २
असिद्धिवीरसेन्योसिभूरिपराददिः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ १२
असिदभ्रस्यचिद्वृधोयजमानाय
३ १२ १२ ३ १ २
शिक्षसिसुन्वतेभूरितेवसु ॥ २* ॥

हे "वीर !" शत्रु-क्षपण-कुशलेन्द्र ! त्वं "सेन्यः असि" सेनार्हो भवसि†, त्वमेकोऽपि सेना-सदृशो भवसीत्यर्थः । "हि"‡ यस्मादेवं तस्मात् प्रभूतं शत्रूणां धनं "पराददिः" परादाता शत्रूणां पराङ्मुखं यथा भवति तथा आदाता "असि" भवसि "दभ्रस्य चित्" अल्पस्य नामैतत्¶ अल्पस्यापि तव स्तोतुः§ "वृधः" वर्द्धयितासि, तथा "यजमानाय" यागं कुर्वते "सुन्वते" सोमाभिषवं कुर्वते पुरुषाय "शिक्षसि" अपेक्षितं धनं ददासि [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघ० ३,२०,८)] यस्मात् "ते" तव वसु"

* ऋ० वे० १, ६, १, २ ।

† विवरण-मते 'वीरसेन्यः'—इत्येकं पदम्, अत एवैवं व्याख्यातम्—'वीरसेन्यः—
वीराः सेन्या यस्य असौ वीरसेन्यः'—इति । परन्तेतत् पदपाठ-विरुद्धम्, तत्र "वीर ।
सेन्यः"—इति भेद-स्वरयोर्दर्शनात् ।

‡ 'वेति पदपूरणः'—इति वि० ।

¶ "दभ्रम्"—इति निघण्टौ तृतीयस्य द्वितीये ह्रस्वनामसु पाठमिति दर्शनात् ।

§ 'दभ्रस्य—ध्वंसकस्य'—इति वि० ।

Digitized by Google

धनं "भूरि" बहुलं अक्षयं धनं विद्यते तस्मात् ददासीति भावः ॥ [पराददिः—डु दाञ् दाने (जुहो० उ०) "आदृगमहन जन (३,२,१७१)"—इति कि-प्रत्ययः; लिड्वद्भावाद् द्विर्वचने कृत्वम्, "आतो लोप इटि च (६,४,६४)"—इत्याकारलोपः। वृधः—वृधेरन्तर्भावितण्यर्थादिगुपध-लक्षणः कः। सुन्वते—"अतुरनुमः (६,१,१७३)"—इति विभक्तेरुदात्तत्वम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २१ २ २ १२ २ १ २ ३ १२

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्।

३ १ ३२ २ ३ २ ३२उ ३ १ ३२

युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ

३ १ २ ३१ २

दधोऽस्माꣳ इन्द्र वसौ दधः ॥ ३* ॥ १४

[अथेदमाख्यानम्—'रहूगण-पुत्रो गोतमः कुरु-सृञ्जयानां† राज्ञां पुरोहित आसीत्, तेषां राज्ञां परैः सह युद्धे सति स ऋषिः अनेन सूक्तेन इन्द्रं स्तुत्वा स्वकीयानां जयं प्रार्थयामास'—इति। तस्य च तत्पुरोहितत्वं वाजसनेयिभिराम्नातम्—"गोतमो ह वै राहूगण उभयेषां कुरु-सृञ्जयानां‡ पुरोहित आसीत्"—इति।] "यत्" यदा "आजयः" सङ्ग्रामाः "उदीरते" उद्गच्छन्ति उत्पद्यन्ते तदानीं "धना" धनं "धृष्णवे" यो धृष्णुः धर्षयिता

---

* ऋ० सा० १, १, १, ९ (१मा० ८४४पृ०) = ऋ० सं० १, ६, १, १।

†, ‡ "सृञ्जयानां"—इति रा० सा० पु० पाठः।

शत्रूणां जेता भवति तस्मै "धीयते" निधीयते, जयतो धनं भवतीत्यर्थः। हे इन्द्र! त्वं तादृशेषु युद्धेषु प्रवृत्तेषु "मदच्युता" शत्रूणां मदस्य गर्वस्य च्यावयितारौ "हरी" त्वदीयावश्वौ "युक्ष्व" स्व-रथे योजय, योजयित्वा च कञ्चिद्राजानं तव परिचरणमकुर्वन्तं "हनः" हन्याः कञ्चन त्वां परिचरन्तं "वसौ" वसुनि धने "दधः" स्थापय॥ [उदीरते—ईरगतौ (आ०) आदादिकः, "अनुदात्तेत्त्वाल्लसार्वधातुकानुदात्तत्वे (६,१,१८६) धातुस्वरएव शिष्यते, "यद्वृत्तान्नित्यम् (८,१,६६)"—इति निघातप्रतिषेधः। धना—"सुपां सुलुक् (७,१,३५)"—इति डादेशः। युक्ष्वा—युजिर् योगे (रु० उभ०), अन्तर्भावित-ण्यर्थोलोटि "बहुलञ्छन्दसि (२,४,७३)—इति विकरणस्य लुक्, "द्व्यचोऽतस्तिङः (६,३,१३५)"—इति संहितायां दीर्घत्वम्। हनः—हन्तेर्लेटि सिप्यडागमः, हनश्च दधश्च चार्थप्रतीतेः "चादिलोपे विभाषा (८,१,६३)"—इति प्रथमायास्तिङ्विभक्तेर्निघातप्रतिषेधः। वसौ—लिङ्ग-व्यत्ययः। दधः—दध धारणे (भ्वा०आ०) लेटि व्यत्ययेन परस्मैपदम्॥ ३॥ १४

१ २ १ २ १
॥ सन्तनि ॥ इन्द्रोहाउ। मादायवा३१उवा२३।
५ १ २र १र २ १ २ १ २र १ २र १ र १
वा२३४स्वँ। श्रवसेवृत्रहानृभिस्तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भेह
र २ १११ १ २ १ २ १
वामंहा२३४५यि। सवाहाउ। जायिषुपनो३आउवा२३।

५ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ १

वा२३४यिषात् ॥(१) असिद्धिवीरसेन्योसिभूरिपरादृदिः

२ १ २ १ २ २ ३ २ १ १ १ १ १ २

सिदभ्रस्यचिद्वृधीयजमानायशिक्षसा२३४५यि। सुन्वाखा

१ ३ २ ५ १ २

उ। तायिभूरिता३१उवा२३यि। वा२३४सू ॥(२) यदु

१२ १२ १ ३ २ १ ३ १२ १२ १ १२ १ १ १२ १ १२ १

दीरतआजयोधृष्णवेधीयतेधनंयुङ्क्ष्वामदच्युताहरीकंह

२ १ २ २ १ १ १ १ १ २ १ २

नःकंवसौदधार२३४५ः। अस्मान्हाउ। आयिन्द्रवसा३१उ

५

वा२३। दा२३४धाः(३) ॥ ४* ॥ [१] १४

अथ द्वितीय-तृचे†—

प्रथमा।

३ २ ३ १ २ ३ १ २

स्वादोरित्थाविषूवतो

१ २ ३क २र

मधोःपिबन्तिगौर्यः।

१ २र ३ १ २ ३

याइन्द्रेणसयावरी

२ ७ १ २ ३ १ २

वृष्णामदन्तिशोभथा

२ ३ १ २ ३ १ २

वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ १‡ ॥

---

* ऊ० गा० १२प्र० २ख० ४गा०।

† 'रायोवाजीयमच्छावाकसाम'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ५, १, ३, २(१मा० ८३१ऋ०) = ऋ० वे० १, ८, ६, ५।

Digitized by Google

"स्वादीः" स्वादुभूतस्य रसयुक्तस्य "इत्था विषूवतः" इत्थमनेन प्रकारेण सर्वयज्ञेषु व्याप्तियुक्तस्य "मध्वः" मधोः मधुर-रसस्य सोमस्य "क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (१,४,३२ वा०)"—इति कर्मणः सम्प्रदानत्वात् चतुर्थ्यर्थे षष्ठी। एवंविधं सोमं "गौर्यः" गौरवर्णा गावः पिबन्ति। या गावः "शोभथाः" [वचन-व्यत्ययः] इन्द्रेण सह शोभन्ते "वृष्णा" कामाभिवर्षकेन्द्रेण "सयावरीः" सह यान्त्यो गच्छन्त्यः सत्यः "मदन्ति" हृष्टा भवन्ति। ता इन्द्रपीतस्य सोमस्य शेषं पिबन्तीत्यर्थः। "वस्वीः" पयः-प्रदानेन निवासकारिण्यः ता गावः "स्वराज्यं" स्वस्येन्द्रस्य यत् "राज्यं" राजत्वं तदनु लक्ष्यावस्थिताइति शेषः॥ [विषूवतः—विष्लृ व्याप्तौ (जु०उभ०) अस्मादौणादिकः कुप्रत्ययः ततो मतुप् "ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् (६,१,१७६)"—इति मतुप उदात्तत्वम्, "अन्येषामपि दृश्यते (६,३,१३७)"—इति संहितायां दीर्घः, व्यत्ययेन मतोर्वत्वम्। मध्वः—"जसादिषु छन्दसि वा वचनम् (१,४,७)"—इति "घेर्ङिति (७,३,१११)"—इति गुणा-भावे यणादेशः। गौर्यः—"षिद्गौरादिभ्यश्च (४,१,४१)"—इति ङीष्, जसि यणादेशे "उदात्तस्वरितयोर्यणः (८,२,४)"—इति परस्यानुदात्तस्य स्वरितत्वम्। सयावरीः—या प्रापणे (अदा०प०) "आतोमनिन् (३,२,७४)"—इति वनिप्, "वनोरच (४,१,७)"—इति ङीब्रेफौ। मदन्ति—मदी हर्षे (दि०प०), श्यनि प्राप्ते व्यत्ययेन (३,१,८५) शप्। वस्वीः—"वस निवासे (भ्वा०प०)शृस्वृस्निहि (उ०,१,१०)"—इत्यादिना वसे रुप्रत्ययः, "धान्ये नित् (उ०१,९)"—इत्यनुवृत्ते राद्युदात्तत्वम, "वोतो

गुणवचनात् (४,१,४४)"—इत्यत्र "गुणवचनात् ङीषाद्युदात्तार्थम् (४, १, ४४ भा०)"—इतिवचनात् वसुशब्दात् ङोपि यणादेशः, अपि "वाच्छन्दसि (६,१,१०६)"—इति पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्। स्वराज्यं—"अकर्मधारये राज्यम् (६,२,३०)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
.ता अस्य पृशनायुवः सोमꣳ श्रीणन्ति पृश्नयः।

३ १२ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रꣳ हिन्वन्ति सायकं

२ ३ १ २ ३ १ २
वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ २* ॥

"ताः" पूर्वोक्ताः† "अस्य" इन्द्रस्य "पृशनायुवः" स्पर्शनकामाः पृश्नयः नानावर्णाः‡ गावः इन्द्रेण पातव्यं "सोमं" पयसा "श्रीणन्ति" मिश्रीकुर्वन्ति, "इन्द्रस्य" "प्रियाः" प्रीतिहेतुभूताः "ताः" "धेनवः" "सायकं" शत्रूणामन्तकारकं¶ "वज्रं" आयुधं "हिन्वन्ति" शत्रुषु प्रेरयन्ति इन्द्रो यथा शत्रुषु वज्रं प्रेरयति तथेन्द्रस्य मदमुत्पादयन्तीत्यर्थः। अन्यत् पूर्ववत् ॥ [हिन्वन्ति

* ऋ० वे० १, ६, ७, १।

† 'ताः—धेनवः'—इति वि०।

‡ 'पृश्नयः—गावः'—इति वि०।

¶ 'सायकं—शरणभूतं क्षेपणीयम्'—इति वि०।

Digitized by Google

ह्वि प्रीणनार्थः (भ्वा० प०), इदित्त्वान्नुम्। सायकं—षो अन्त-कर्मणि (दि० प०), ण्वुल्यात्वे युगागमः॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ताअस्यनमसासहःसपर्यन्तिप्रचेतसः।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
व्रतान्यस्यसश्चिरेपुरूणिपूर्व
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
चित्तयेवस्वोरनुस्वराज्यम्॥ ३ *॥ १५

"प्रचेतसः" प्रकृष्टज्ञाना: "ताः" गावः "अस्य" इन्द्रस्य "सहः" बलं "नमसा" स्वकीयेन पयोरूपेणान्नेन "सपर्यन्ति" परिचरन्ति "पुरूणि" बहूनि "अस्य" इन्द्रस्य "व्रतानि" असुरवधादि-रूपाणि वीर्य-कर्माणि "सश्चिरे" सेविरे ज्ञातव्यतया इत्यर्थः। किमर्थम्? "पूर्वचित्तये" युयुत्सूनां असूराणां पूर्वमेव प्रज्ञापनायर्† [अनेन युध्यमाना वृत्रादयः सर्वे मरणं प्राप्ताः किमर्थं भवद्भिः प्राणास्त्यजन्त इति तेषां बोधनायेत्यर्थः। अन्य-त्पूर्ववत्॥ पूर्वचित्तये—चिती सञ्ज्ञाने (भ्वा० प०), भावे क्तिन्, मन्क्तिव्याख्यादित्वात् पूर्वपदान्तोदात्तत्वम्॥ ३॥ १५

* ऋ० वे० १, ६, ७, १।

† 'पूर्व-चित्तये—पूर्व-प्रसादनाय'—इति वि०।

Digitized by Google

४र ३र ४ ३र ४ ५र २ २ ३र ४र ४
॥ ययैतम् ॥ स्वादोरित्थाविषू । वता३४ओहोवा ।
१ र २ १ ० ५ ५ ३र र २
माधोःपिब । तिगौरियार३४ः । ओ६हा । याइन्द्रे ण
३र ३र१ २ १ २ ५
सयावरीर्वृ । ष्णोमार३दा । तिशोरे । भा२३४या ॥(१)
३र ४ २ ४ ५र २ २ ३र ४र ५ १ ३र
ताश्रस्यपृश्न ना । युवा३४ओहोवा । सोमऽश्रीण । ति
१ ० ५ ५ २ १र १ र १ ३र १
पार्श्वयार३४ः । ओ६हा । प्रियाइन्द्रस्यधेनवोव । ज्राऽ
२ १ २ ५ ३र ४ २
ज्रा२३यिन्वा । तिसारे । या२३४काम् ॥(२) ताश्रस्न
४ ५र २ २ ३र ५र ५ १ १ १ ०
मसा । सद्दा३४ओहोवा । सापर्य्यन्ति । प्रचायितसा
५ ५ २ १र २ र १ २
२३४ः । ओ६हा । व्रतान्यस्यसश्चिरेपू । रूणा२३यिपू ।
२ ५ १ र २ २ १
वर्चा२यि । ता२३४यायि । वस्त्रोरनुस्त्रा३रा । ऊम्मायि ।
२ ५र र २ ५
जा२या२३४ओहोवा । वा२३४सू(३) ॥ ४ * ॥ [१] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य
पञ्चमः खण्डः† ॥ ५ ॥

---

* ऋ० मा० १०म० १ख० ४सा० ।

† 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

अथ षष्ठे खण्डे,* प्रथमतृचे—

प्रथमा ।

१ २ ३ १र २र२ १र २र ३ १
असाव्यꣳशुर्मदायाप्सुदक्षोगिरिष्ठाः ।
३ २उ ३ १ २
श्येनोनयोनिमासदत् ॥ १ † ॥

"गिरिष्ठाः" पर्वत-जातः "अंशुः" सोमः "मदाय" मदार्थम् "असावि" अभिषुतः "अप्सु" वसतीवरीषु "दक्षः" प्रवृद्धश्च भवति । किञ्च "श्येनो न" यथा श्येनः पक्षी वेगेनागत्य स्थानमासीदति तद्वदयं सोमः "योनिं" स्वकीयं स्थानम् "आसदत्" आसीदति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १र २र ३ १ २ ३ १ ३ १र २र ३ १
शुभ्रमन्धोदेववातमप्सुधौतन्नृभिःसुतम् ।
१ २ ३ १ ३ १ २
स्वदन्तिगावःपयोभिः ॥ २ ‡ ॥

यत् "देववातं" देवैः प्रार्थितं¶ "शुभ्रं" शोभनम् "अन्धः" अन्नस्वरूपं "नृभिः" नेतृभिः "सुतम्" अभिषुतम् "अप्सु"

---

* 'इदानीं' तृतीय-सवनमुच्यते'—इति वि० ।

† छ० आ० ५, २, ४, ७ (२आ० ११४०)=ऋ० वे० ७, १, २४, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, १, २४, ५ ।

¶ 'देववातं—देवानां भक्षणीयम्'—इति वि० ।

Digitized by Google

वसतीवरीषु "धौतं" शोधितं सोमं "गावः" पशवः "पयोभिः" आशिरैः "स्वदन्ति" स्वादयन्ति॥

"धौतंसुतं"-"धूतःसुतः"—इति पाठौ॥ १॥

अथ तृतीया।

१ ३ २ ३१र २र ३१ २ ३११
आदीमश्वन्न हेतारमशूशुभन्नमृताय।
२३१२ ३१३
मधोरसꣳसधमादे॥३ *॥१६

"आत्"† अनन्तरं "हेतारं" प्रेरकम्‡ "ईम्"¶ एनं "मधोः" मधुरस्य सोमस्य "रसं" "सधमादे" यज्ञे "अमृताय" अमरणाय "अशूशुभत् ऋत्विजः शोभयन्ति। तत्र दृष्टान्तः— "अश्वं न" यथा प्रेरका अश्वं सङ्ग्रामे शोभयन्ति तद्वत्॥

"हेतारं"-"हेतारः"—इति पाठौ, "मधोः"-"मध्वः"— इति च॥ ३॥१६

१ २ १ २
॥सन्तनि॥ असाहाउ। वायाꣳशुर्मा३१उवा२३।
५ २ १ र १२२ र १ १
दा२३४या। अꣳसुदच्योगिरिष्ठा१ः। श्येनोहाउ। ना
र २ ५ २१
योनिमा ३१ उवा २३। सा २३४ दात्॥(१) शुभ्रम

* ऋ० वे० ७, १, २४, १।

†, ¶ "आत्"—"ईम्"—इत्येतावुपसर्गौ—इति वि०।

‡ 'हेतारं—शीघ्रगामिनम्'—इति वि०।

१र २ १ र २ १२र १ २ ३ १ २ १
मन्धोदेवषातमप्सुधौतन्नृभीःसुताश्म्। स्वदाहाउ। ता
२ १ ५ १र २र १ २ १
यिगावःपा३१उवा२३। यो२३४भीः॥(२) आदीमश्वन्न
र २र १ र २ १ २र १ १ १ १ १ १ २ १
चेतारमप्रुभ्रभन्नमृतायार२३४५। मधोर्हाउ। रासक्ष
१ ५
सदाधा३१उवा२३। मा२३४दे(३)॥ १० *॥ [१]

१ र २ १ र र २
॥ गौषूक्तम्॥ अस्वाव्यक्षभ्रुम्नौ। हौहोवाहायि।
र १ २ १ र २ १
हाया। अप्सुदच्चोगिरो२। ऊवायि। ऊवा२यि। छा२ः।
र २र २ १ १ १
श्येनोनयोनिमौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। सादा२३त्।
१ २ ५र र २ १ र २र र र २
धो२वा२३४औहोवा॥(१) भ्रभ्रमन्धोदेवौ। हौहोवाहा
र १ २ १ र २ १
यि। वाताम्। अप्सुधौतन्नृभौ२। ऊवायि। ऊवा
१ १ र २ १
२यि। सूता२म्। स्वदन्तिगावःपौ२। ऊवायि। ऊ
१ १ २ ५र र
वा२यि। योभा२३यिः। हो२वा२३४ औहोवा॥(२)
१र २र १ २ १ र र १२ र १ र
आदीमश्वन्नौ। हौहोवाहायि। ताराम्। अभ्रभ्र

* ज० गा० १प्र० १ख० १० गा०।

२ १ १ १२
भववमो२। ऊवायि। ऊवा२यि। ताया२। मधोर
२ १ १
सᳫसधी२। ऊवायि। ऊवा२यि। मादा २ ३ यि।
१ ५२ २ १ १ २ १ १ १ १ १ १
हो२वार३४औहोवा। अग्निराऊता२३४५:(३)॥ १८* ॥[२]

१ २ १ १
॥ ऐड त्र्य चितम्॥ असाव्यᳫशो। हायि। मदा
२ १ २ १ २ १ २ २ १
२३या। अप्सु२स्वोगा१यिरा३यिष्ठा:। श्येनोनयो२३४
५ १ २ १ १ ४ ५
हायि। नायिमा३हायि। सदात्। औ२३होवा ॥(१)
२ १ १२१ १ १ २ २
शुभ्रमन्धो। हायि। देववा२३ताम्। अप्सुधौतमृभा
२ २ ३ ५ १ २ २
१यि:सू३ताम्। स्वदन्तिगो२३४हायि। वा:पा३हायि।
२ १ ४ ५ १२ १२ १ २
योभायि:। औ२३होवा॥ (२) आदीमश्वो। हायि। न
१२ २ १२ २ २ १ २ १
हेता२३राम्। अप्सुशुभ्रममा१र्ता३या। मधोरसो२३
५ १ २ २ २ १ १ ४ ५
४हायि। साधा३हायि। मादा। औ३होवा।
होऽ५ई। डा(३) ॥ ४ † ॥ [३]

---

* ऊ० गा० ७प्र० २खा० १९सा०।

† ऊ० गा० १६प्र० १खा० ४सा०।

Digitized by Google

॥ अध्यर्द्धेडऌसोमसाम ॥ असाव्यऌशुर्म्मदाया ३ ए ।
अप्सुदक्षोगिरिष्ठाः । श्येनोनया२३ । हायि । नायि
माउवा । सादाउवा३ ॥(१) शुभ्रमन्धोदेववाता३मे ।
अप्सुधौतन्नृभिःसुताम् । स्वदन्तिगा२३ । हायि । वाः
पाउवा । योभाउवा३ ॥(२) आदीमश्वन्नचेतारा३मे ।
अशूशुभन्नमृताया । मधोरसा२३म् । हायि । साधा
उवा । मादाउवा३ । ऊ३२३४पा(३) ॥ २ * ॥ [४] १६

अथ प्रगाथरूपे द्वितीय-सूक्ते†—

प्रथमा ।

अभिद्युम्नम्बृहद्यशइषस्पतेदिदीहिदेवदेवयुम् ।
विकोशम्मध्यमंयुव ॥ १ ‡ ॥

हे "इषस्पते" अन्नस्य पते ! "देव !" स्तोतव्य सोम ! "द्युम्नं" द्योतमानं "बृहत्" प्रभूतं "यशः" अन्नरूपं "देवयु"

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० २सा० ।

† 'श्यावनं साम'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० ६, १, ४, २ (२भा० २२६पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १८, ४ ।

देवान् कामयमानं हविर्लक्षणं त्वदीयं रसम् "अभि दीदिहि" अस्मभ्यमाभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः। [यद्वा, हे सोम! यतोऽत्र देवयु देवानिच्छन्तं यजमानमभिलक्ष्य प्रकाशय। आमन्त्रितस्याविद्यमानवत्त्वेन (८,१,१८) पादादित्वादनिघातः। किञ्च "म यमम्" अन्तरिक्ष-स्थितं "कोशं" मेघं "वियुव" दृष्ट्यर्थं विगमय विश्लेषय॥

"देवयु"-"देवयुः"---इति पाठौ॥१॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ ३ २र ३ २ ३ २उ २ ३ २ १ २
आवच्यस्व सुदक्षचम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः।
२ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ ९ ३ १ २
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः॥२*॥१७

हे "सुदक्ष" शोभन-बल! "चम्वोः" अधिषवण-फलकयोः "सुतः" अभिषुतः त्वं "वह्निः न विश्पतिः" सर्वासां प्रजानां वोढा राजेव "विशां" प्रजानां वोढा सन् "आ वच्यस्व" आगच्छ कलशमापवस्व [वचेर्गत्यर्थस्य व्यत्ययेन श्यनि रूपम्! किञ्च त्वम् "अपः" अपाम् उदकादीनां "रीतिं" व्याप्तां गतिं वृष्टिं "दिवः" द्युलोकात् "पवस्व" कुरु। किं कुर्वन्? "गविष्टये" गामात्मन इच्छते यजमानाय "धियः" कर्माणि "जिन्वन्" प्रेरयन्॥

"अपोजिन्वन्"-अपाञ्जिन्व"—इति पाठौ॥२॥१७

* ऋ० वे० ७, ५, १८, ५।

Digitized by Google

॥ च्यावनम् ॥ अभा२३४यि । द्यु म्नम् । बृहा२३४ द्यशा६ः । हाउ । आयिषस्पा२३४ता यि । दिदीहिदेव देवायू२३४ऽहायि । वायिकोशा३म्मा३ । ध्यामा२३ऽ हा३४३यि । यू२३४वो६हायि ॥ (१) विको२३४ । ग्रम्म । ध्यमा२३४युवा६ । हाउ । आवच्या२३४स्वा । मुदच चमुवोः हतो२३४हायि । वायिशांवा३क्रा३यिः । नावा२३ हा३४३यि । ग्या २ ३ ४ तो६हायि ॥ (२) विश्वा२३४म् । वह्निः । नवा३४यिशपतो६ः । हाउ । वाष्टिन्दा२३४यि वाः । पवस्वरीतिमापो२३४हायि । जायिन्वान्गा३वा३यि । हायाः२३हा३४३यि । धा२३४यो६हायि (३) ॥ ११ * ॥ [१]

॥ ऐषिरम् ॥ अभिद्युम्नम्बृहद्या३शाः । आयिषस्प ते । दायिदी१हायिदे२ । वादा१यिवायू२म् । वायि

* छ०गा० ३प्र० १ख० ११सा ०।

कोऽ१श्राम्मार२३ । ध्यमोवा । यू५वोऽ६हायि ॥(१) विक्को
ग्राम्मध्यमंयू३वा । आवच्यस्व । सूदक्षाचा२ । मूवोः
सुता२ः । वायिशा१वाशा२३यिः । नवोवा । ध्याऽ५तो
६हायि ॥(२) विश्रांवक्रिन्नविश्पा३तीः । वाष्टिन्दिवः ।
पावस्वारी२ । नायिमा१पा२ः । जायिन्वा१न्गावार३
यि । ष्टयोवा । धाऽ५योऽ६हायि(३) ॥ १ * ॥ [२]

॥ सफम् ॥ अभिद्यु३म्नम्बृ । हद्या२३४शाः । इष
स्पतायिदी२ । दीहिदायिवा३दा३यि । वा३२३४यूम् ।
विक्को । ग्राम्माध्या३मा३म् । यू३४५वोऽ६हायि(१)॥ १२ †॥ [३]

॥ वाचःसाम ॥ अभिद्युम्नाम् । बोयि । बृहद्यशा
६ए । आयिषस्पते । दायिदी१हायिदे२ । वादेवयुम् ।

---

* ऊ० गा० ५प्र० १अ० १खा० ।

† ऊ० गा० ६प्र० १अ० १२खा० ।

Digitized by Google

१ २ १ ४ २ ५
वायिकोश्आम्मार२३ । ध्यार३मा३म् । यू३ ४ ५ वो ६ हा
३ ४र ५ ७ ३ ४ ५ ५ १ २
यि ॥(१) विक्कोश्अम्मा । हों । ध्यमंयुवा६ए । श्रावच्च
१० १र २ १ १०
स्व । स्वदत्त्वाचा २ । मूवोःसुतः । वायिश्राश्वाक्का २ ३
१ ४ २ ५ ३ ४र
यिः । ना२३वा३यि । श्या३४पूतो६हायि ॥(२) विश्वा
५ २ ३ ४ ५ ५ १ २ १०
वक्कीः । चोयि । नविश्पता६ए । वार्ष्टिन्दिवः । पाव
१ २ १ २ १
स्वारी २ । तायिमपः । जायिन्वा१न्गावा२३यि । ष्टा२
४ २ ५
३या३ । धा३४पूयो६हायि(३) ॥ १४ *॥ [४] १७

अथ तृतीय-तृचे*—

प्रथमा ।

३ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ १ २
प्राणाभिशुर्म्मचोनाश्चिन्वन्नृतस्यदोधितिम् ।

३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
विश्वापरिप्रियाभुवदधद्विता ॥ १ †॥

---

* ऊ० गा० १४प्र० २ख० १४सा० ।

* 'ओइं सामं—इति वि० ।

† ऋ० आ० ६, १, २, ५ (२भा० ११२४०) = ऋ० वे० ७, ५, ४, १ ।

Digitized by Google

"प्राणा" ते [अनिते : प्राणवि "बहुलञ्छन्दसि (२,४,७३)"—इति विकरणस्य लुक्, "सुपां सुलुग् (७,१,३९)"—इति सुप आकारादेशः] यज्ञस्य प्रापयिता चेष्टयिता "महीनां" महतीनां मंहनीयानां वा अपां "शिशुः" पुत्र-स्थानीयः सोमः "ऋतस्य" यज्ञस्य "दीधितिं" प्रकाशकं धारकं वा स्वीयं रसं "हिन्वन्" प्रेरयन् "विश्वा" सर्वाणि "प्रिया" प्रियाणि हवींषि "परिभुवत्" परिभवति व्याप्नोति। "अध" अपिच "द्विता" द्विधा भवति दिवि च पृथिव्याञ्च वर्त्तत इत्यर्थः ॥

"प्राणा"-"क्राणा"--इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३१ १ २ ३ १ १ २ ३१र २र ३ २
उपत्रितस्यपाष्यो३ऽरभक्तयद्गुहापदम्।

३ १ २ ३१र २र ३ १ २ ३ २
यज्ञस्यसप्तधामभिरधप्रियम् ॥ २* ॥

"त्रितस्य एतन्नामकस्य ऋषेस्तोतुर्मम यज्ञे "गुहा" गुहायां हविर्धाने वर्त्तमानयोः "पाष्योः" पोषणवहुलयोः अधिषवण-फलकयोः "पदं" स्थानं सोमः "यत्" यदा "उप अभक्त" सम-भजत। "अध" अनन्तरं "यज्ञस्य" "धामभिः" च धारकैः "सप्त" सप्तभिश्छन्दोभिः गायत्र्यादिभिः "प्रियम्" प्रीणयितारं सोमम् "अभि" ष्टुवन्ति ऋत्विजः [अपि वा सप्त सर्पणशीलैर्वसतीवर्या-दिभिरुदकैः सोममभिषुण्वन्ति ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ७, ५, ४, १।

Digitized by Google

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २
त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम् ।
२ १ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥ ३* ॥ १८

सोमः "त्रितस्य" मम यज्ञस्य सम्भूतानि "त्रीणि" सवनानि धारया आत्मीयया "वि धारया" । किञ्च पृष्ठेषु" सामसु "रयिं" दातारमिन्द्रम् 'ऐरयत्' आयमतु "सुक्रतुः" शोभन-यज्ञः स्तोता "अस्य" इन्द्रस्य "योजना" संयोजनादीनि स्तोत्राणि "वि मिमीते" करोति† यस्मादेवं तस्मादिन्द्रं सामसु प्रेरयत्वित्यर्थः ॥

"ऐरयत्"—"एरया"—इति पाठो ॥ ३ ॥ १८

२र १ र २र १
॥ ओम् ॥ प्राणा । शिशुर्म्महो । नाम् । हो
१ २र १ र
इ२ । हो । वाहोयि । हिन्वन्नृतस्यदीधितायिम् ।
२ १ २ १ १ २ २ १ २
विश्वापा१रा२३यि । प्री३याभू३वात् । अधा २ ३ हिता
२ १ र २र १ १
३४३ ॥(१) उपा । त्रितस्यपा । ष्योः । होइ२ । हो ।

* ऋ० वे० ७, ५, ४, ३ ।
† 'विमिमीते—मा माने, मानं करोति'—इति वि० ।

Digitized by Google

२र १ र २१ १
वाद्धोयि । अभक्तायद्गुह्यापदाम् । यज्ञास्या१स्मा २ ३ ।
२ १ २ १ १ २ २र१
:प्ना३धामा३भायि । मधा२३प्रिया३४३म् ॥(२) चोणो ।
र २र १ १ २र १ र
चितस्यधार । या । घोई २ । घो । वाद्धोयि । पृष्ठे
१ १ २ २ १ २ १
ष्वैरयद्रयायिम् । मिमायिते१आ२३ । स्या३योजा३ना ।
१ १ १
विसू२३कत्व३४३: । औ२३४५ई । डा(३) ॥ १२* ॥ [१]

२र र १ १ १
॥ चैतम् ॥ प्राणाशिशुर्मह्यायिनाम् । हिन्वन्नृतस्य
र २ र र २१ ५ १
दोधितायिम् । विश्वापरिप्रिया३भूवो२३४हायि । आर२
२ ५र र १ १ १ १ १ १ १ १
धार३४औहोवा । ए३ । द्विता२३४५ ॥(१) उपचितस्य
र१ २ १ र १ १ २ १
पाषायो: अभक्तायद्गुह्यापदाम् । यज्ञस्यसप्ताधा३माभी
५ १ १ ५र र १ १ २ १ १ १ १
२३४हायि । आ२धा२३४औहोवा । ए३ । प्रिया२३४५
२र र १ २ १ र र
म् ॥(२) चोणिचितस्यधाराया । पृष्ठेष्वैरयद्रयायिम् ।

---

* छ० आ० ३प्र० १अ० १२खा० ।

Digitized by Google

१ २ २ २ ३ १ ५ १ २ ५२ २
मिमीतेअस्ययो३जानो२३४ह्रायि। वा२यिस्२३४औहो
२ १ २ १ १ १ १
वा। ए३। क्रतू२३४५ः(३) ॥ २* ॥ [२]

१२ २ १२ २
॥ सुज्ञानम् ॥ प्राणाग्निभूः। महीनाम्। हिन्व
१ २ २ २ १ १२
नार्त्ता२। अदीधितायिम्। विश्वापारा२यि। प्रिया।
२ ५२ २ १ २ २
भू२वार३४औहोवा। अधद्दितए३ ॥ (१) उपचिता। अ
१ १ १ १ २ १ २ १
पार्थियोः। अभक्तायार२त्। गुहापदाम्। यज्ञस्यासा
१२ २ ५२ २ १ १
२। प्रधा। मा२भार३४औहोवा। अधप्रियमे३ ॥ (२)
१२ २ १ २२१ १
चौणिचिता। अधारया। पृष्ठेषुवा२यि। रयद्रया
२२१ १२ २ ५२ २
यिम्। मिमीतेआ२। अयो। जा२नार३४औहो
१ २ १ १११
वा। विसुक्रतुरि३उपार३४५(३) ॥ २०† ॥ ३]

१२ १ २ १ ५
॥ दैवोदासम् ॥ प्राणा३१। ग्निभू३१२३४ः। म।
१ २ २ १ २ १ ५२
हा३यिनाम्। हिन्वा३१न्। ऋता३१२३४। अदी।

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० १सा०।

† ऊ० गा० ७प्र० १ख० २०सा०।

२ २ ३ २ ३ २ ५र
धा३यितायिम्। विश्वा३१। परा३१२३४यि। प्रिया।
२ र ३ ३ २ १ ५ ३ २
भू३वात्। मधा३१। दिता३। औ३र२३४वा॥(१) उपा
३ २ ५र २ २ ३ २
३१। चिता३१२३४। स्यपा। षा३योः। अभा३१।
३ २ ५र २ २ ३२ २
क्षया३१२३४त्। गुहा। पा३दाम्। यथा३१। स्य
२ ५र २ २ ३२ ३ २
सा३१२३४। प्रधा। मा३भायिः। मधा३१। प्रिया३
१ ५ ३र २ ३ २
म्। औ३र२३४वा॥(२) चौणी३१। चिता३१२३४। स्य
५र २ २ ३ २ ३२ ५
धा। रा३या। पृष्ठा३१यि। ध्रुवा३१२३४यि। रयत्।
२ २ ३ २ ३र २ ५ र
रा३यायिम्। मिमा३१यि। तेभ्रा३१२३४। स्ययो।
२ ३ ३२ ३ २ १ ५ २
जा३ना। विभू३१। क्रतू३ः। औ३र२३४वा। ऊ२३४
५
पा(३)॥ २१*॥ [४]

३र र र १ २ ३२
॥ अध्यम्॥ प्राणाग्निमू२र्म। चोनोवा। दिव्यस्
१ २ ३र २ १ ३र १ २३र२ १
ता। स्वदीधितायिम्। विश्वापरिप्रियाभुवद्। धा२

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० २१सा०।

१ १र १ १ १
३। हिताउवा। ऊधिया२। ए२३हिया३४३। औ२
३४५ई। डा(१) ॥ १४* ॥ [५]

१र१र१ ५ १ २ ५
॥ पौष्कलम् ॥ प्राणाभ्रा३यिभ्रुः। मा२हा२३४यिनाम्।
१ १ १ १ २ २ ५ १ १
चिन्वानृता। स्वादायिधी२३४तीम। विश्वापरायि।
० २ २ १ २ १ १ ११ २ १ २
प्रिया२भ२३४५वा६५६त्। अधद्विता२३४५ ॥(१) उपत्री२
४ ५ २ २ ५ १ १ ११ १ २
तस्य। पाषा२३४यो:। अभाक्तयात्। गूहापा२३४
५ २१ ० २ २
दाम्। यथास्यसा। प्रधा२मा२३४५भा६५६यिः। अ
१ २ १ १ १ १ १र १ २ ४ ५ २ २ ५
र्धप्रया२३४५म् ॥(२) त्रीणित्री३तस्य। धारा२३४या।
२१ २ १ २ २ ५ २ १ र
पृष्ठायिषुवायि। रायद्रा२३४यायिम्। मिमायितेश्वा।
० २ २ १२ १ १ १ १
स्ययो२जा२३४५ना६५६। विसुक्रतू२३४५:(३) ॥ २*॥ [६]

१र र र १ २ १ २
॥ ऋध्यम् ॥ प्राणाग्निमू२र्मा। चीनोवा। हिन्वन्नृ
१ २ ३र २ १ २र १ २ १र २ १
ता। स्वदीधितायिम्। विश्वापरिप्रियाभुवद्। धा२३।

* ज० गा० ८प्र० १ख० १४सा०।

† ज० गा० ८प्र० २ख० २सा०।

२ १र १ र १
द्विताउवा। अूधिया२ ॥(१) उपत्रिता२स्य। पाषियो

२१ २१ २ १र२ १ २१ २१र २
वा। अभक्तयात्। गुहापदाम्। यज्ञस्य सप्तधाममभि

१ २ १र १र
र। धार३। प्रियाउवा। अूधिया२ ॥(२) त्रीणिचि

र १ २१र११ १२१ १
ता२स्य। धारयोवा। पृष्ठेषुवायि। रयद्र्यायिम्।

र १र र १२र १ २ १र
मिमीतेअस्ययोजनावि। सूर३। क्रताउवा। अूधि

१ १ १
या२। ए२३हियाऽ३४३। औ२३४५ई। डा(३) ॥ ५*॥ [७]

१र र र र १ १
॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ प्राणाग्निश्चाश्चौहोहायि। मां

२ ५ २ १ ५ १ र र
हा२३४यिनाम्। चिन्वाना२३४हा। तस्यदीधितिंविश्वा

२ २र४र ५ १२ ५ २ २ ५
पा३४। औहोवा। हुहा२३४हायि। उरुवा२३४रायि।

२१र१ १ ७ २ र४र५ १२ ५
प्रियाभु। वादधद्दा३४। औहोवा। हुहा२३४हायि।

२र२ ५र ५ २ र प
औहो३१२३४। ता। एहियाऽहा ॥(१) उपत्रिताश्चौ

१२ २२ ५ २१ ५ १ र
होहायि। स्यापाषा२३४योः। अभाक्ता२३४हा। यज्ञुहा

* ऋ० मा० ११प्र० १अ० ५मा०।

Digitized by Google

२ ३र ४र ५ १ ७ ५ २ २
प्रद्वंयन्नस्या३४। औहोवा। हुहा२३४हायि। उऊवा२

५ २ १र २ १ ७ २ ३र ४र ५ १ २
३४सा। प्रधाम। भायिरधप्रा३४। औहोवा। हुहा

५ ३र २ ५र ५
२३४हायि। औहो३१२३४। याम्। एहियाइहा॥(२)

२र र र १ २ २ ५ २ १
त्रीणित्रिताऔहोहायि। स्याधारा२३४या। पृष्ठायिषू

५ १र र २ ३र ४र ५ १ २
२३४हायि। ऐरयद्रयिम्मीता३४। औहोवा। हुहा

५ २ ३ ५ २ १र २ १ ७ २
२३४हायि। उऊवा२३४आ। स्ययोज। नाविसुका३

३र ४र ५ १ २ ५ ३र २
४। औहोवा। हुहा२३४हायि। औहो३१२३४। तूः।

५ १ ५ ४
एहियायाईहा। होऽ५ई। डा(३)॥ ८* ॥ [८]

२र र १ १ २ १
॥ वार्शम्॥ प्राणाशिशूः। माहा ३ यिनाम्। चि

र ७ २ ५ र
त्वन्नृतस्यदीधि। तायिम्। विश्वा२पार३४रायि। प्रि

र २ ७ २ १ २ ५र र
याभुवा३त्। ई३या। अध। द्वा२यिता२३४औहोवा॥(१)

२ १ २ २ १ र
उपन्निता। स्यपाषा३योः। अभक्तयद्भ्,हाप। दाम्।

* ऊ० गा० १४प्र० २ खा० ८षा० ।

Digitized by Google

०   २   ५   १ र   २   ३ २   १
यम्रा२स्या२३४सा। प्राधामभा३यिः। ई३या। अध।
२   ५र र   २र   १ २ २
प्रा२या२३४औहोवा ॥(२) चौणिचिता। स्वधारा३या।
१ र र   ०   २   ५   १ र
पृष्ठेषु२रयद्र। यायिम्। मिमा२यितेर२३४षा। स्वायो
२   १ २   १   २   ५र र   २
जना३। ई३या। विस्तु। क्रा२स्नू२३४औहोवा। ऊ
५
२२३४पा(३) ॥ ८* ॥ [९] १८

अथ चतुर्थ-द्वचे†—

प्रथमा।

१ २ ३१ २   ३ १ २ ३ १ २   ३ १
पवस्ववाजसातयेपवित्रेधारयासुतः।
१ २   ३ १ २   ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रायसोमविष्णवेदेवेभ्योमधुमत्तरः ॥ १‡ ॥

हे "सोम!" "सुतः" अभिषुतः त्वम् "इन्द्राय" "विष्णवे" च अन्येभ्यो मित्रादिभ्यः "देवेभ्यः" "मधुमत्तरः" अतिशयेन माधुर्य्योपेतः सन् "वाजसातये" अन्न-लाभाय "पवित्रे" "धारया" "पवस्व" चर॥

---

* ऊ० गा० १६प्र० १ख० ८गा०।

† "गौरीवितं साम"—इति वि०

‡ ऋ० वे० ७, ४, १८, १।

Digitized by Google

"वाजसातये"-"वाजसातमः"—इति पाठौ, "मधुमत्तरः"-"मधुमत्तमः"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ ११
त्वाꣳरिहन्तिधीतयोहरिम्पवित्रे अद्रुहः।
३ २ ३ २उ ३ २३ १२ ३ १२
वत्सञ्जातन्नमातरःपवमानविधर्मणि ॥ २* ॥

हे "पवमान" पूयमान सोम! "वि धर्मणि" विविधं हविषां धारकेण† यज्ञे "अद्रुहः" द्रोह-वर्जिताः "धीतयः" अङ्गुलयः [धीतय इति अङ्गुलिनाम (निघ० २,५,७)] "हरिं" हरित-वर्णं "पवित्रे" स्थितं "त्वां" "रिहन्ति" लिहन्ति निष्पीड़नार्थं स्पृशन्तीत्यर्थः। तत्र दृष्टान्तः—"वत्सं जातं न मातरः"; 'मातरः' मातृ-भूता गावः उत्पन्नं 'वत्सं' यथा 'लिहन्ति' तद्वत् ॥

"धीतयः"-"मातरः"—इति पाठौ, "मातरः"-"धेनवः"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१र २र २ १र २र
त्वन्द्यांचमहिव्रतपृथिवीञ्चातिजभ्रिषे।
१ ३२ १२ २ १२ ३ २
प्रतिद्रापिममुञ्चथाःपवमानमहित्वना ॥ ३‡ ॥ १९

---

* ऋ० वे० ७, ४, १८, २।

† 'विविधे कर्मणि'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १८, ४।

Digitized by Google

हे "महिव्रत" महाकर्मन् सोम! "त्वं" "द्यां" द्युलोकं "पृथिवीं च" "अति जभ्रिषे" अत्यन्तं बिभर्षि [डुभृञ् धारण पोषणयोः (त०उ०), तस्य छान्दसे लिटि (३,४,६) सर्वविधीनां छन्दसि वैकल्पिकत्वात् अत्र इडागमः। अन्तरिक्षे सोमात्मना,- पृथिव्यां लता-रूपेणेति एवं लोकद्वयवर्त्तित्वम्]। हे "पवमान' चरन्! त्वं "महित्वना" महत्त्वेन युक्तः सन् "द्रापिं" कवचं* "प्रति अमुञ्चथाः" प्रतिमुञ्चसि संवृणोसि॥ ३॥ १९

५ ३ २ ४ र ५
॥ गौरीवितम्॥ पव। स्ववा३। जसातयायि।
१ र र र १ र १ ४
पवित्रे धारयासुता२३ः। आयिन्द्रायसो३१२३। मवा
१ र र २ ४ ५ ४
५यिष्णवायि। दायिवेभ्योमा३१२३। धुमोवा। ता५
५ ५ र ३ १ ४ र ५ १
रो६हायि॥ (१) तुवाम्। रिहा३। तिधीतयाः। ह
र १ र र ४
रिम्पविन्ने अद्रुहाः। वात्सञ्जाता३१२३म्। नमा५तराः।
१ र २ ४ ५ ५ ५
पावमाना३१२३। विधोवा। मा५णो६हायि॥ (२) तु
२ १ ४ ५ १ र र
वम्। द्याञ्चा३। महिव्रता। पृथिवीञ्चातिजभ्रिषा२३

* 'द्रापिं—द्राप्तव्यम् *** केषां ? यजमानानाम्'—इति वि०।

Digitized by Google

१ २ २ २ १ २ १
यि। प्रातिद्रापा३१२३यिम्। अमू५चथाः। पावमाना
४ ५ ४ ५
३१२३। मद्योवा। त्वा५नो६चायि(३) ॥ १३ ॥ [१]

२ २ २ १ २
॥ पार्थम् ॥ ओ३चो३चोयि। पव। स्ववा२। ज
२ २ ५ २ १२ २ २ २ ५
सातार३४यायि। पवि। च धा२। रयामू२३४ताः।
१२ १ ३२ २ ५ २ २२ १
इन्द्रा। थसो२। मवायिष्णा२३४वायि। देव। भ्यो
३ ४ २२ १
मा२३। धुमा३न्ता५रा६५६ः ॥(१) तुवाम्। रिहा२।
२२ २ ५ २ १ २ २ २ २
तिधायिता२३४याः। हरिम्। पवा२यि। च अद्रू२३
५ २ १२ २२२ ५ २
४ द्वाः। वत्सम्। जाता२म्। नमाता२३४राः। पव।
१२ २ ४ १ १२
माना२३। विधा३र्मा५णा६५६यि ॥(२) तुवम्। द्या
३ ११ ५ २ १२ २ २ २
चा२। मचित्रा२३४ता। पृथि। वीचा२। तिजभ्री
५ २ १२ २ २२ ५
२३४षायि। प्रति। द्रापा२यिम्। अमुचा२३४थाः।
२ २ २ १२ २
ओ३चो३चोयि। पव। माना२३। महा३यित्वा५ना
६५६(३) ॥ १४† ॥ [२]

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० १३गा० ।

† ऊ० गा० ३प्र० १ख० १४गा० ।

२ १ २ २ ३ २
॥ रयिष्ठम्॥ पवस्खवा। जसाता३यायि। औ३हो
१ १ २ १ २ १ २ १ १ १ १ १ २ २
३वा। इन्द्रायसोमविष्णवार ३ ४ ५ यि। इन्द्रायसो।
१ २ २ ३ २ २ २ १२ २२ १ २ ११
मवायिष्णा३वायि। औ३हो३वा। देवेभ्योमधुमत्तरार
१११ २२ २ २ १ २ २ ७ २ २
३४५ः। देवेभ्योमा। धुमात्ता३राः। औ३हो३वा॥(१)
१२ १ २ २ ३ २ २ १
तुवाᳲरिहा। तिधायिता३याः। औ३हो३वा। हरि
२ २ १ २१ १ १ १ २ २ १ २ २
म्यविचे अद्रू हार२३४५ः। हरिम्यवायि। चे षाद्रू ३हाः।
७ २ २ १ २२ १ २२ २ १ १ १ १ २ २
औ३हो३वा। वत्सञ्जातन्नमातरा २ ३ ४ ५ः। वत्सञ्जा
१ २ २ ३ २ २ १ २२ १ २
ताम्। नमाता३राः। औ३हो३वा। पवमानविधर्म्म
२ १ १ १ १ २ २ १ २ २ ३ २ २
णो२३४५। पवमाना। विधर्म्मा३णायि। औ ३ हो ३
२ २ १ २ २ ७ २
वा॥(२) तुवन्द्याञ्चा। महायिव्रा३ता। औ ३ हो ३
२ १२ २ २ २ १ १ १ १ १ २
वा। पृथिवीञ्चातिजभ्रिषार२३४५यि। पृथिवीञ्चा। ति
१ २ २ ३ २ २ १ २२ १ २ २ १ १
जाभ्रो३षायि। औ३हो३वा। प्रतिद्रायिममुञ्चथा२ ३
११ २ २ १ २ २ ३ २ २
४५ः। प्रतिद्रापायिम्। ममूञ्चा३थाः। औ३हो३वा।

१ २र १ २ २ १ १ १ १ १ २र २ १ २ १
पवमानमच्छित्वना२३४५ । पवमानमच्छित्वना१ । पवमाना ।

१ १ २ ऽ २ २ ऽ २ १ ऽ २
महायित्वा३ना । औ३हो३वा । औ३हो३वा । ई३या ।

ऽ २ ५ २ २ ५
ई३या ३ ४ । हा । हाउवा३ । ऊ२३४पा(४) ॥१*॥ [३]

५ २ १ २ २
॥ द्विरभ्यस्तत्वाष्ट्रीसाम ॥ पव । स्ववा३ । हा३हा ।

२ २र १ ५ २र २ २ २ २ २र
जसातायार२३४यि । पवि । त्रधा३ । हा३हा । रया

१ ५र २ १ २ २ २ १ १
सूतार२३४ः । इन्द्रा । यसो३ । हा३हा । मविष्णार

र ५र २र २ २ २ २ १ १
३४यि । देवे । भ्योमा३ । हा३हा । धुमा३हो२३

५ ४ ५ ५ र २ २
४ । वा । ता ५ रो ६ हायि ॥(१) तुवाम् । रिहा ३ ।

२ २ २ २र १ ५ २१ २
हा३हा । तिधीतायार२३४ः । हरिम् । यवा३यि । हा

२ २र २ १ ५ २र २ २
३हायि । चम्रद्रुहा२३४ः । वत्सम् । जाता३म् । हा

२ २ २र १ ५ २र २ २ १
३हायि । नमातारा२३४ः । पव । माना३ । हा३हा

२ २ १ ५ ४ ५ ५
यि । विधा३हो२३४ । वा । मा५णोईयायि ॥(२) तुव

---

* ऊ० गा० द्र० १प्र० १खा० ।

३र १ १ १ २ १ १ ५
म् । द्याम्वा३ । हा३हा । महिन्वाता२३४ । पृथि ।
१र १ २ ३ ३ १ १ ५ २र
वीन्वा३ । हा३हा । निजभ्रीषा२३४यि । प्रति । द्रा
१ २ १ २ १ १ ५ ३र
पा३यिम् । हा३हायि । अमुन्वाथा२३४ः । पव । मा
१ २ ३ २ १ १ ५ ४
ना३ । हा३हायि । मद्दा३हो२३४ । वा । त्वा५नो६
५
हायि(३) ॥ ६* ॥ [४]

२ २ १ ४र ५र १
॥ श्यावाश्वम् ॥ पवा ३१ । स्वा३वा । जसा । ता
४२ ५ १ र र १र १
३ये । एहिया । पा । वित्रेधारा । या । सुता२ः ।
१र र १ र १ ४ ५ १र
एहिया२ । इन्द्रायसोमा३वा३यि । त्वा२३४वायि । ऐ
१र र र १र १ ४ १
हा२यि । एहिया२ । देवेभ्योमाधू३मा३ । ता३४४रो
५ ३ १ २ ४ ५र १
६हायि ॥(१) तुवा३१म् । रा३यिद्द । मिधो । ता२३ः ।
५ १ २ १
एहिया । हा । रिम्पवित्रे । च्च । द्रुहा२ः । एहि
१र १ ४ ५ १र
या२ । वत्सञ्जातानो३मा३ । ता२३४रा: । ऐहा२

* ऊ० गा० ८प्र० २ख० ६गा० ।

Digitized by Google

१र १र २ ४ २
यि । एँहिया२ । पवमानावा३यिधा३ । मा३४५णो६
५ ३१ २ ४ ५ २ ४
वा यि ॥(२) तुवा३१म । व्या३च्च । महि । व्रा३त ।
५ १ रर २ १
एहिया । पा । थिंवीम्बातायि । ज । भ्रिषा२यि ।
१र १र २ ४ ५ १र
एहिया२ । प्रतिद्रापायिमा३सू३ । चा२३४थाः । ऐ
२र १र २ ४ १
हा२यि । एहिया२ । पवमानामा३हा३यि । त्वा३४५
५
नो६हायि(३) ॥ १९* ॥ [५]

२ र २ १
॥ वान्धीगवम् ॥ पवस्ववाजसा१तायायि । पवित्रे ।
र २ १ १ र १र १ ३१
धारा२३या । ऊम्मा२१५२ । सुतइन्द्रायसोमविष्णवा२
१११ १ २ २ २ २
३४५यि । दायिवा३उवा । भ्यो२मा । धू२३मा । त
१ २ ४ ५ २र २ १
रा । औ३होवा ॥(१) त्वा१रिहन्तिधा१यितायाः । ह
२ १ १ र १ १ १र १
रिम्य । विन२३त्रा । ऊम्मा२१५२ । कुह्रोवत्सञ्जातन्न
२र १ ३ १ १११ १ २ २ १
मातरा२३४५ः । पावा३उवा । मा२ना । वा २ ३ यि

* ज० गा० १५प्र० २ख० १९गा० ।

Digitized by Google

२ १ २ ४ ५ २
धा । मणा । औ३होवा ॥(२) त्वन्त्यामहा १ विश्वा

२ १ २ २ २ १ २
ता । पृथिवीम् । धाता२३यिजा । ऊमा२१५२ । धि

२ १२ १ २ १ १११ ११ २ १
येप्रतिद्रापिममुञ्चथा२३४५: । पावा३उवा । मा२ना ।

२ १ २ ४ ५ ४
मा२३हायि । त्वना । औ३होवा । हो५ई । डा(३) ।

॥ २०॥ [६]

२१ ४२ ५ १२ २ ५
॥ आकूपारे ॥ पवस्वा२३वाज । साता२३४यायि ।

१ १२ १२ १ २ २ १ १
पवा२यिस्वधा । रयासुता: । इन्द्रायासो२ । मविष्ण

१२ २ १२ १ ४ २ १
वायि । देवेभ्योमार३ । धू२३मा३ । ता३४५ रो ६ हा

२ १२ ४ ५ १२ २ ५ १
यि ॥(१) तुवा९रा२३यिहन्ति । धीता२३४या: । हरा

१ १२ १ २ १ २ १
२यिम्पवायि । न अक्तुभा: । वत्सञ्जाता२म् । नमात

२ १ १ ४ २ ५
रा: । पवमाना२३ । वा२३यिधा३ । मा३४५णो६हा

२१ ४ ५ २ २ ५ १
यि ॥(२) तुवन्त्या२३म्म । दिवा२३४ता । पृथा२यि

● ऊ० गा० १५प्र० २अ० २०गा० ।

१र २ १ २ १
वीत्वा। तिजभिषायि। प्रतिद्रापा२विम्। अमुञ्च

२ १ १ ४ २ ४
थाः। पवमाना२३। मा२३हा३यि। त्वा३४५नोई३हा

यि(३) ॥ २१* ॥ [७]

२ १र १ १
॥ आचेयम् ॥ पवस्वा। जसातार३यायि। पा

२र १र २ १र २ १र र र
विचे धा। रयासूर३ताः। इन्द्रायसो। माविष्णावा२

१र २ २ ४ ५ ५
यि। देवेभ्योश्मार। धुमोवा। ता५रो६हायि॥(१)

१ र १र २ १ २ १ २र १
तुवा७रिहा। तिधीतार३वाः। हारिपवि। चेभद्र

२ १ र ७५ १ २ २
२३हाः। वत्सञ्जातम्। नामातारा२ः। पवामा३नार।

४ ५ ४ ५ २ र १
विधोवा। मा५णो६हायि॥(२) तुवन्त्याच्चा। महिना

२ १ १र ११ २ १ र
२३ता। पार्थिवीञ्चा। तिजभीर३षायि। प्रतिद्रापिम्।

० १ २ १ ४ ५ ४
आमुञ्चाया२ः। पवामा३ना३। महोवा। त्वा५नो

५
ई६हायि(३) ॥ १०† ॥ [८]

---

* ऊ० गा० १५प्र० १ख० २१गा०।

† ऊ० गा० १६प्र० १ख० १८गा०।

४ २ ४ ३ ४र

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवाऽ५स्व । वा३जा३सा३साता

५ १ र २ १ २ २ १ १ र

यायि । पाविन्वेधा । रा३यासू३ताः । इन्द्रा२य । सो

२ १ १ २ १ रर

मा२३वा । ऊम्मायि । ष्णा३वायि । दायिवेभ्योमधुमा

ऽ२२ १ २ १र र २र

२त्तरा ३ ॥(१) रास्व । वा३रिवन्तिधीतयोवरिम्णवायि ।

२ १ २ २ १ र १ २ १

वे३भाद्रू३द्वाः । वत्सा२जा । तन्ना२३मा । ऊम्मायि ।

२ २ १ र ऽ २ १ २ १

ता३राः । पावमानविधा २ म्माणा ३ ॥(२) पायित्व । व

र र २ २ २ २ १

न्द्यास्त्वमदिव्रतपृथिवीञ्चा । ती३जाभी३षायि । प्राता२

१र २ १ १ २ १ र

यिद्रा । पिमा२३मू । ऊम्मायि । चा३थाः । पावमान

ऽ २ २ ऽ१११

मद्दा२यित्वनाउ । वा३४५(३) ॥ ८ ॥ [८]

१ ५ १र१र

॥ त्रासदस्यवम् ॥ पा२३४ । व । स्ववा । जासात

१ र५ १र१र

या२३यि । पा२३४ । वि । न्वेधा । रायासुता२३ः ।

१ र ५ १र१ १

आ२३४यि । द्रमयसो । माविष्णवा२३यि । दा२३४यि ।

* ज० मा० १६प्र० २ख० ८सा० ।

र र ५ ११ २ १ र
वे । भ्योमा । धुमत्तरा३१उ ॥(१) तू२३४ । वाम् ।
५ १र१र १ ५
रिद्दा । तीधीतया२३ः । द्वा२३४ । रिम् । पवायि ।
१र १ १ र ५ १र१र
चे भद्र॒द्दा२३ः । वा२३४ । त्मम् । जाताम् । नामा
१ र ५ १र१ १
तरा२३ः । पा२३४ । व । माना । वीधर्म्मणा३१उ ॥(२)
१ र ५ १र १ १
तू२३४ । वम् । द्याम्वा । माश्विन्नता२३ । पा२३४ ।
र ५ १र १ १
र्थिं । वीश्वा । तीजम्निषा२३यि । प्रा२३४ । ति ।
र ५ १र १ १ र ५
द्रापायिम् । भामुश्चथा२३ः । पा२३४ । व । माना ।
१र १ २ ११११
माश्विलना३१उ । वा२३४५(३) ॥ ३* ॥ [१०]

३ ५ र १र४५र २
॥ वषट्कारनिधनम् ॥ पवस्ववाजसातये । पवस्वा
४र ५ ४र ५ २ र र १ ० १ २
३वाजसातयायि । पवित्रे धारा३यासुता२ः । रयासू१
१र ऽ २ र १ ०
ता२३ः । ओमो३वा । इन्द्रायसोमा३वायिष्णावा२यि ।
१ २ १र ऽ २ र र र १ ०
मवायिष्णा१वा२३यि । ओमो३वा । देवेभ्योमध३मात्त

* ऋ० मा० १०म० १ख० ३सा० ।

रा२ः। भुमात्ता१रा२३ः। श्रोम्। श्रोर। वा२३४।
श्रौहोवा। ऊ२३०पा(१) ॥ २* ॥ [११]

॥ घृताघृतीयाद्यम्॥ त्वन्द्याञ्चमहिव्रता। पृथिवी
ञ्चातिजभ्रौ२३षापि। प्रतिद्रापिममुञ्चा२३थाः। पवमा
२३ना३। मा२। हित्वा ३४ औहोवा। ना२३
४५(३) ॥ १२† ॥ [१२] १९

अथ पञ्चम-खण्डः‡—

प्रथमा।

इन्दुर्वाजीपवतेगोन्योघा
इन्द्रेसोमःसहइन्वन्मदाय।
हन्तिरचोबाधतेपर्यरातिं
वरिवस्कृण्वन्वृजनस्यराजा ॥ १¶ ॥

---

* ऊ० गा० १३प्र० ३अ० २गा०।

† ऊ० गा० १३प्र० १अ० ११गा०।

‡ 'हारायणं नाम'—इति वि०।

¶ ऋ० सं० ६, १, ६, ८ (१म० ११९४०)—ऋ०वे० ७, ४, १९, ५।

"इन्दुः" चरण-शीलः "सोमः" "वाजी" बलवान् "गोन्योघा" गमनशील-गोधीनाम-रस-सङ्घातः "इन्द्रे" "सहः" बलकरं रसम् "इन्वन्" प्रेरयन् सोमः "मदाय" अस्य मदार्थं "पवते" चरति । किञ्च "रक्षः" राक्षस-कुलं हन्ति" हिनस्ति । किञ्च "अरातिं" शत्रुं "परि बाधते" परितः संहरति । कीदृशः ? "वरिवः" वरणीयं धनं "कृण्वन्" स्तोतृणां कुर्वन् "वृजनस्य" बलस्य "राजा" ईश्विता सोमइति ॥

"अरातिम्"–अरातीः"—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २१ २ ३ १ २ ३ १
अधधारयामध्वापृचान

३ १र २र ३ २ ३
स्तिरोरोमपवतेअद्रिदुग्धः ।

२३ १ २ ३ १ २ ३ २
इन्दुरिन्द्रस्यसख्यञ्जुषाणो

३ २ ३ १ २ ३ १र २र
देवोदेवस्यमत्सरोमदाय ॥ २* ॥

"अध" अथ अनन्तरं "अद्रि-दुग्धः" ग्रावभिर्दुग्धोऽभिषुतः सोमः "मध्वा" मदकारिण्या "धारया "पृचानः" देवान् सम्यर्चयन्† "रोम"‡ अवि-रोमभिः कृतं पवित्रं "तिरः"

---

* ऋ० वे० ७, ४, १३, १ ।

† 'पृचानः—सिच्यायमानः'—इति वि० ।

‡ 'रोम—रोमाणि चर्मिरयाणि, दशापवित्रस्येत्यर्थः'—इति वि० ।

तिरस्कृत्य व्यवधायकं कृत्वा "पवते" कलशेषु चरति। किञ्च "इन्द्रस्य" "सख्यं" सखिभावं कर्म वा "जुषाणः" सेवमानो "देवः" द्योतमानः "मत्सरः" मदकरः* "इन्दुः" सोमः "देवस्य" इन्द्रस्य "मदाय" मदार्थं "पवते" चरति ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३१ २ ३ २
अभिव्रतानिपवतेपुनानो

३ २ ३ १उ ३१२ ३र २
देवोदेवान्त्स्वेनरसेनपृञ्चन्।

१ ३ १२ ३१र ३र ३
इन्दुर्धर्माण्यृतुथावसानो

२३ १ २ ३२ ३ १ २
दशक्षिपोअव्यतसानोअव्ये ॥ ३† ॥ २०

"धर्माणि" धारकाणि "व्रतानि" कर्माणि "ऋतुथा" ऋतोः काले "वसानः" आच्छादयन् "इन्दुः" सोमः "पुनानः" पूयमानः सन् "अभि पवते" कलशानभिलक्ष्य चरति। कीदृशः? "देवः" सद्योतन-शीलः‡ 'स्वेन आत्मीयेन "रसेन" इन्द्रादीन् "पृञ्चन्" सम्पर्चयन् संयोजयन्¶। तमिमं सोमं

---

* 'मत्सरः—मदनीयः मत्सयोगो वा"—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, ४, १३, ३।

‡ 'देवः—सोमः दानादि-गुण-युक्तः'—इति वि०।

¶ 'पृञ्चन्—तर्पयन् प्रीणयन् वा'—इति वि०।

Digitized by Google

"दश" दशसङ्ख्याकाः "क्षिपः"* [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ० २,५,३)] कर्मार्थं प्रेर्यन्त इति तत्सङ्ख्याका अङ्गुलयः "साती" समुच्छ्रिते† "अव्ये" अवि-भवे पवित्रे "अव्यत" गमयन्ति [यद्वा, तत्र पवित्रे पूयमानं सोमम् अव्यत गच्छन्ति। वी गत्यादिषु (अदा०प०) लङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् ॥

"व्रतानि"-"प्रियाणि"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २०

१ र र र र १ र र
॥ दाशस्पत्यम् ॥ इन्दुरौहोवाहाईया । वाजाउ ।
२ र र १ २ २
वा३ । हाउवा । पवतेगोनियोघाउ । वा३ । हाउ
१ २ १ २ २
वा । इन्द्रायिसोमः । साहइन्वाउ । वा३ । हाउवा
१ २ ५र र २१११ २१ २
३ । मा२दा२३४औहोवा । या२३४५ । चन्तायिरक्षो ।
र १ २ २ १ २ ५र
बाधातायिपाउ । वा३ । हाउवा३ । मा२दा२३४औ
र २११११ २१ २ १ २
होवा । तीर२३४५म् । वरायिवस्कृ । पवन्वृजनाउ ।
२ १ २ ५र र २ १ १
वा३ । हाउवा३ । स्या२रा२३४औहोवा । जा २ ३

* 'क्षिपः—क्षिप्यन्त इति क्षिपः अङ्गुल्यः,—इति वि०

† 'उच्चे प्रदेशे'—इति वि० ।

Digitized by Google

४५ ॥(१) अधीद्धोवाद्धाईया । धाराउ । वा३ । हाउ
वा । यामधृवापृचानाउ । वा३ । हाउवा । तिरोरो
म । पवाताआउ । वा३ । हाउवा३ । द्रा२इदू२३४
औहोवा । ग्धा२३४५: । इन्दूरायिन्द्रा । सासाखीया
उ । वा३ । हाउवा३ । जू२षा२३४औहोवा । णा२३
४५: । देवोदायिवा । समात्माराउ । वा३ । हाउ
वा३ । मा२दा२३४औहोवा । या२३४५ ॥(२) अभीद्वो
वाद्धाईया । व्रताउ । वा३ । हाउवा । निपवतेपु
नानाउ । वा३ । हाउवा । देवोदायिवान् । स्वेना
रासाउ । वा३ । हाउवा३ । ना२पा२३४औहोवा ।
चा२३४५न् । इन्दुर्बार्म्मा । णियार्त्थाउ । वा३ । हा
उवा३ । वा२सा२३४औहोषा । ना२३४५: । दग्माशा

२ १ २ २ १ २
यिपो। मध्यामामाउ। वा३। हाउवा३। नोरचा

५र र २ १११११
२३४औहोवा। व्या२३४५यि(३)॥ १५*॥ [१]

२ १ ऽ २ ३र २
॥ सम्पावैयश्वम्॥ ओ३हायि। ओ३हा। ओहा।

१ ऽ २ २ १ र २१र २ २ ४
इया२। ओ३हा३ए। इन्दुर्वाजी। पवते। गोनियो

५ ११रर २१ २ २ ४ ५ २ १
घाः। इन्द्रेसोमाः। सहइ। न्वन्मदाया। हन्तिर

२ १र २२४५ २१ २
क्षो। बा३धते। पर्य्येंरातीम्। वरिवस्का। एवा३

१ २ २ ४ २१र
न्वृज। ना३४३। स्या३रा५जा६५६॥(१) अधधारा।

२ १ २ २४ ५ २१रर २१र २
या३मधु। बापृचानाः। तिरोरोमा। पवते। अद्रि

४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
दुग्धाः। इन्दुरिन्द्रा। स्या३सखि। यज्ञ्पाणाः।

२र१रर २१ २ २ ४
देवोदेवा। स्यमत्स। रो३४३। मा३दा५या६५६॥(२)

२ १ २ १ २ २४ ५ १रर र २
अभिव्रता। नी३पव। तेपुनानाः। देवोदेवान्। स्वे

१ २ ३ ४ ५ ५ १ २ १ २ २
३नर। सेनपृचान्। इन्दुर्ब्रम्मी। णी३क्रतु। थाव

* ऊ० गा० ९प्र० १ख० १५गा०।

४ ५ २ १ २ १र २ १
सानाः। थोइहायि। श्रोइहा। योहा। इया२।

५ २ २ १ २१ २ २ ४
श्रोइयाइए। दशचियो। अव्यत। सा३४३। नोइया

५व्याई५६यि(३)॥ ५*॥ [२] २०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः† ॥ ६ ॥

अथ सप्तमे खण्डे,‡ प्रथम-सूक्तम्¶—

प्रथमा।

१ २ २१ २ ३ १२
आते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्।

१२ २ ३१२ ३ २ ३ १२ ३१२
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवी

३र ३ २ ३ १ २
षं स्तोतृभ्य आभर॥ १॥

---

* ऊ० गा० ८प्र० २ख० ५सा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'इहानोमुक्थसामानि'—इति वि०।

¶ 'अश्वयं साम'—इति वि०।

§ ऋ० सा० ५, १, ४, १ (१भा० ८५४पृ०) = ऋ० वे० ३, ८, ११, ४।

हे "अग्ने!" "द्युमन्तं" दीप्तिमन्तम् "अजरम्" अजीर्णम् "ते" त्वाम् "आ" सर्वतः "इधीमहि" दीपयामः। "यत् ह" यदा खलु "ते" तव "स्या" सा "पनीयसी" स्तुत्या "समित्" दीप्तिं "दिवि" द्युलोके "दीदयति" दीप्यते तदा हे अग्ने! "स्तोतृभ्यः" अस्मभ्यम् "इषम्" अन्नम् "आभर" आहर॥१॥

अथ द्वितीया।

१ २　　२ २ २ २　२ १ २
आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य ज्योतिषस्पते।
१ २ २ २२ १ २ २ १ २२　१ २
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यꣳ हूयत
२ १ २　२ २ २ १ २
इषꣳ स्तोतृभ्य आभर॥ २*॥

हे "ज्योतिषस्पते" दीप्तेः स्वामिन् अग्ने! "शुक्रस्य" दीप्तस्य "ते" तुभ्यम् "ऋचा" मन्त्रेण सह† "हविः"‡ "आ" आभिमुख्येन "हूयते"। हे "सुश्चन्द्र" सुष्ठाह्लादक! शोभन-हिरण्य! वा, हे "दस्म" शत्रूणामुपक्षपयितः!। शिष्टं गतम्॥

"ज्योतिषः"-"शोचिषः"—इति पाठौ॥ २॥

---

* ऋ० वे० ३, ८, ११, ५।

† 'याज्यानुवाक्या-लक्षणया'—इति वि०।

‡ 'हविः—चरु-पुरोडाशादि-लक्षणम्'—इति वि०।

Digitized by Google

अथ तृतीया।

१र २र १ १ २ १ १ १
ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि।
१ २ ३१ २ २ १ २ २
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत
१ २ ३ २ ३ १ २
इषꣳ स्तोतृभ्य आभर॥ ३* ॥ २१

हे "सुश्चन्द्र" शोभनाह्लादक! शोभन-हिरण्य! वा, अग्ने! "उभे" "दर्वी" दर्व्यौ हविः-पूर्णे स्रुक्स्रुवौ "आसनि" आस्ये "आ श्रीणीषे" आश्रयसि पचसि वा "उतो"† अपिच "नः" अस्मान् "उक्थेषु" यागेषु‡ "उत्पुपूर्याः उत्पूरय¶ फलैः। हे "शवसस्पते" बलस्य पालयितः!। इषमित्यादि गतम् ॥३॥२१

१र ४र ५ र १ ४ १
॥ सञ्जयम् ॥ आते अग्नइधी। माइचायि। द्युम
१ ४र५ ४ ५ २ ४ १र ४र १ ४र ५ र ४ १ ४र १ ३ ५
न्ताइन्देवअजरम्। यद्धस्यातेपनीयसी। समिद्दीदयता
२ २ ३ ५ १र ४र ५ र
यि। ऊ३। ऊम्। द्यार३४वी ॥(१) आते अग्नऋचा।
२ ४ ५ २ ४र ५ ४ ५ १ ४ २ ४
हा३वायिः। इषꣳस्तोतृभ्य आभराइज्योतिषस्पतायि। सुश्चन्द्रदस्म

* ऋ० वे० ५, ८, २२, ४।

†,¶ 'उत उ—इति पदपूरणः'—इति वि०।

‡ 'उक्थेषु—सामसु'—इति वि०।

Digitized by Google

२ ४र२४र १२४ ५ ५ २र १ ५
विश्वतेद्रव्यवाट्तुभ्यऽह्र। ऊ२। ऊम्। या२३४ता

२र४र५ २ ४ ५र१ ४
यि॥(२) षोभेसुश्चन्द्रवि। श्वा३तायि। दवीश्रा३यि

२र ५ ४५ ५२र४ २४रर २र ४५ ५
षोषमासनायि। उतोनवत्युपूर्व्यांउक्थ्युषुश्रवसा। ऊ३

२ ५ १ र २ २ ५
३ऊम्। पा२३४तायि। इषऽम्तोनूभ्या३षा। ऊ२।

२ २ ५
ऊम्३४म्। भा३४५रो६हायि(३)॥ १६ *॥ [१]

१ र५ र ४५
॥ सौगमतम्॥ षा२३४। तेषग्रद्वधी। माहायि।

२ र १ १२१ १ १ १
द्युमन्तन्देवा२। आ२३। जरमा। यद्वास्या३ता३यि।

१ २ ५ २१ १ २२
पानीरया२३४सो। समिद्दी२दय। ता२३यि। द्यवि

२ १ र५ र ४५ २
या॥(१) षा२३४। तेषग्रऋचा। हावायिः। श्रुक्र

र १ १२१ १ १ १
स्यज्योती३। षा२३ः। पतषा। सुश्चान्द्रा३दा३।

१ २ ५ २१ १
श्रवारयिश्रपा२३४तायि। द्रव्यवा२ट्तुभ्यम्। ऊ२३।

२२१ १ र५ ४५
यतषा॥(२) षो२३४। भेसुश्चन्द्रवि। श्रपानायि।

---

* ऊ० गा० ३प्र० १ख० १६गा०।

१२ २ २ १२ १ २ २ २ १ ० २
इवीओणोषे३ । आ२३ । सनिया । उतोना३ऊ३त् ।
१ २ २ २ १२ १ २ २ २
पुपू२रा२३४याः । उक्थेषू२भव । सा२३ः । पतया ।
१ २ २ १ ४ २ ५
इषाᳪस्तो३तृ३ । भ्या२३आ३ । भा३४ ५ रो ६ हायि ।
॥ ६ * ॥ [१२] २१

अथ द्वितीयस्यर्चः†—

प्रथमा ।

१ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २ २
इन्द्रायसामगायतविप्रायबृहतेबृहत् ।
२ १ २ २ १ २ २ १ २
ब्रह्मकृतेविपश्चितेपनस्यवे ॥ १ ‡ ॥

हे उद्गातारः! "इन्द्राय" "बृहत्" एतन्नामकं साम "गायत" उच्चरत । कीदृशाय? "विप्राय" मेधाविने "बृहते" महते "ब्रह्मकृते" वृष्टिद्वारा हविर्लक्षणस्यान्नस्य कर्त्रे "विपश्चिते" विदुषे "पनस्यवे" स्तुतिमिच्छते ॥

"ब्रह्मकृते"-"धर्मकृते"—इति पाठौ ॥ १ ॥

* ऊ० गा० १०प्र० १अ० ६गा० ।

† छ० आ० ४, २, ५, ८ (१भा० ७६८ पृ०)=ऋ० वे० ६, ७, १, १ ।

‡ 'मन्द्रावैश्वामित्रं साम'—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

१र १र ३१२ ३ १र २र
त्वमिन्द्राभिभूरसित्वꣳसूर्य्यमरोचयः ।
३ १२ ३१२ ३१ २
विश्वकर्म्माविश्वदेवोमहाꣳअसि ॥ २ * ॥

हे "इन्द्र!" "त्वम्" "अभिभूः" शत्रूणाम् अभिभविता "असि" भवसि" किञ्च "त्वम्" "सूर्यम्" आदित्यम् "अरोचयः" तेजोभिरदीपय,† किञ्च "विश्वकर्मा" विश्वस्य कर्त्तासि "विश्वदेवः" सर्वदेवश्चासि [तथाच यजुर्ब्राह्मणम्—"अग्निं वा अन्वन्या देवता इन्द्रमन्वन्या" इति] अतो "महान्" सर्वाधिकोऽसि ॥२॥

अथ तृतीया ।

३ २ ३ १ १ २ २ १२ ३ १ २ १
विभ्राजञ्ज्योतिषास्वाऽ३ऽरगच्छोरोचनन्दिवः ।
३ १ २ ३ १ २
देवास्तइन्द्रसख्यायये मिरे ॥ ३‡ ॥ २२

हे "इन्द्र!" त्वं "ज्योतिषा" तेजसा "दिवः" आदित्यस्य "रोचनं" प्रकाशकं अधिकरणत्वेन "स्वः" स्वर्गं "विभ्राजत्" प्रकाशयन् "अगच्छः" अप्राप्नोः, किञ्च "देवाः" सर्वाः "ते" तव

* ऋ० वे० ६, ७, १, १ ।

† 'त्वं सूर्यमपि दीपयसे'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ७, १, ३ ।

Digitized by Google

"सख्याय" मित्रत्वाय "येमिरे" स्वं स्वमात्मानं नियमितवन्तः* अस्माकम् इन्द्रः सखा यथा स्यादिति सर्वे देवाः प्रयत्नमकार्षुरित्यर्थः ॥ ३ ॥ २२

२र र१ १ ४ २
॥ सौमित्रम् ॥ औहोहोयि। औ३हो३यि। ओ
१ २ १२ १२ २ १११ १
३२३४५वा६५६। इन्द्रा२यसामगायता२३४५। विप्रा२
२ २ १ १ १११ २ २ १
यबृहा१त्। ब्रह्मकृते२विपश्चिते२३४५। ए३। पनस्य
११११ १ १२ १२ २ ११११ १ २ १२
वे२३४५॥(१) त्वमिन्द्राभिभूरसी२३४५। त्वꣳसूर्य्यमरो
१ १११११ २ १ १२ १ २ ३ १११११ २ २
चया२३४५ः। विश्वकर्म्माविश्वदेवा२३४५ः। ए३। म
१२ ११११ १ १२ १ १२ १२ १ ११११
हाꣳअसा२३४५यि॥(२) विभ्राजञ्ज्योतिषात्सुवा२३४५ः।
१ १२ २ १ २ १२ १२ १ १२ १ १ १ १
अगच्छोरोचनन्दिवा१ः। देवास्तइन्द्रसख्याया२३ ४ ५।
१२ १२ २ ४ २ २
औहोहोयि। औ३हो३यि। ओ३२३४५वा६५६। ए३।
१२ १ १ १ १ १
येमिरा२३४५यि(३) ॥ १७ † ॥ [१] २२

---

* 'एतदुक्तं भवति—त्वदीयाय सख्याय चात्मानं नियेमिरे'—इति वि०।

† ऊ० गा० ३प्र० १ख० १७गा०।

Digitized by Google

अथ तृतीय-तृचे*—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २   ३ १ २   ३ १ २
असाविसोमइन्द्रतेशविष्ठधृष्णवागहि ।

१ २   ३ २उ   ३ १ २   १२ १ २
आत्वापृणक्त्विन्द्रियꣳरजःसूर्य्योनरश्मिभिः ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र !" "ते" त्वदर्थं "सोमः" "असावि" अभिषुतोऽभूत् । हे "शविष्ठ" अतिशयेन बलवन्! अतएव "धृष्णो" शत्रूणां धर्षयितः! इन्द्र! "आगहि" देवयजनदेशमागच्छ, आगतञ्च "त्वा" त्वाम् "इन्द्रियं" सोमपानेनोत्पन्नं प्रभूतं सामर्थ्यम् "आ पृणक्तु" आपूरयतु । "रजः" अन्तरिक्षं "रश्मिभिः" किरणैः "सूर्यो न" यथा सूर्यः पूरयति तद्वत् [शविष्ठ--शवस्विन्-शब्दादिष्ठनि विन्मतोर्लुक्, "टेः (६,४,११५)"—इति टि-लोपः, पादादित्वान्निघाताभावः (८,१,१८) । गहि—गमेर्लोटि "बहुलंछन्दसि (२,४,७३) "—इति शपो लुक्, "अनुदात्तोपदेश (६,४,३७)"—इत्यादिना अनुनासिक-लोपः, तस्य असिद्धवदत्रा-भात् (६,४,२२)"—इत्यसिद्धत्वाद्धेर्लुगभावः ॥ १ ॥

---

* 'मत्स्यवैश्वानिय' साम'—इति वि० ।

† ऋ० सं० ४, २, १, ६ (१म० ०८४सू०)=ऋ० वे० १, ६, ५, १ ।

Digitized by Google

अथ द्वितीया।

१ २ ३१२ ३२ ३ २ १ २ ३ १ २
आतिष्ठवृत्रहन्रथंयुक्तातेब्रह्मणाहरी।
३ १ २ १२ ३१२ १ २ ३१२
अर्वाचीनᳬसुतेमनोग्रावाकृणोतुवग्नुना॥ २ *॥

हे "वृत्रहन्" शत्रूणां हन्तः इन्द्र! "रथम्"† "आ तिष्ठ" आरोह। यस्मात् "ते हरी" त्वदीयावश्वौ "ब्रह्मणा" स्तोत्र-लक्षणेन मन्त्रेण‡ "युक्ता" रथेऽस्माभिर्योजितौ ["सुपां सुलुग् (७,१,३९)"—इत्याकारः] तस्मात् त्वं रथमातिष्ठ। "ते मनः" त्वदीयं मनश्च "ग्रावा" अभिषवार्थं प्रवृत्तः पाषाणः "वग्नुना" वचनीयेनाभिषवशब्देन ["वचेर्गश्च (उ० ३, ३३)"—इति नु-प्रत्ययो गकारश्चान्तादेशः] "अर्वाचीनम्"—अस्मदभिमुखं "सुकृणोतु" सुष्ठु करोतु॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३१र २र ३ १२
इन्द्रमिद्धरीवहतोप्रतिधृष्टशवसम्।
१ २ ३१र १र२३१२ ३ २
ऋषीणाᳬसुष्टुतीरुपयज्ञञ्चमानुषाणाम्॥ ३ ¶॥ २३

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः॥

---

* ऋ० वे० १, ६, ५, २=य० वे० ८, ३३।

† 'रथं—रंहणीयं वेगवन्तम्'—इति वि०।

‡ 'ब्रह्मणा—वैदिक-लक्षणेन अथवा ब्रह्मणा मन्त्रेण। अथवा ब्रह्मणा हिरण्य-गर्भेण'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० १, ६, ५, ३=य० वे० ८, ३४।

Digitized by Google

"अप्रतिधृष्टशवसं" केनाप्यधर्षितबलमहिंसितबलमित्यर्थः "इन्द्रमित्"*इन्द्रमिव "ऋषीणां" वसिष्ठादीनां† "मानुषाणाम्" अन्येषां मनुष्याणाञ्च "सुष्टुतीः" शोभनाः स्तुतीः "अश्वा" "हरी" अश्वौ "उप वहतः" समीपं प्रापयतः। यत्र यत्र स्तुवन्ति यत्र यत्र यजन्ते तत्र सर्वत्रेन्द्रमश्वौ प्रापयत इत्यर्थः। [मानुषाणाम् "मनोर्जातौ (४,१,१६१)"—इति मनु-शब्दादञ्, षुगागमश्च]॥ "ऋषीणां सुष्टुतीः"-"ऋषीणाञ्चस्तुतीः"—इति पाठौ ॥३॥ २३

॥ महावैश्वामित्रम् ॥ इयायि। इया३। ओहा ओहा। (एवन्त्रिः) असाविसो। मइन्द्राता२यि। शविष्ठधा। ष्णा वागाही२। आत्वापृणा। क्त इन्द्राया २म्। रजःसूर्यो। नरश्मायिभा२यिः ॥(१) आतिष्ठ वा। तृत्रन्नाथा२म्। युक्तातेब्रा। ह्मणाहारी२। अर्वाचीनाम्। सुतेमाना२ः। ग्रावाकृणो। तुवग्नूना २ ॥(२) इन्द्रमिद्वा। रीवहाता२ः। अप्रतिधा। ष्टश

* 'इत्—इति पदपूरणः'—इति वि०।

† 'ऋषीणां—दर्शन-समर्थानाम्'—इति वि०।

Digitized by Google

१ र र २ २र १
वासा२म्। कृष्टीणा॒सू। हूतीरूपा२। यम्मा।
१ २र २ १
नुषाणा२म्। यश्चा। मानुषाणा२म्। इयायि।
४ ५ ४ ५ २ ५ २
इया३। ओहाओहा। ३। हो४इडा। २। हो२३४५ई।
डा(३) ॥ १८ * ॥ [१]

१र २ २ २२ १
॥ त्वष्ट्रीसाम † ॥ असाविसो३हा। मइन्द्राता२यि।
१ २ २ २२र १ १र र २ २ २
प्रविष्ठधा३हा। एवागाही२। आत्वापृणा३हा। क्र
२ १ १ र २ २ २२ १ ५
इन्द्राया२म्। रजःसूर्य्यो३हा। नरा३हो२३४। वा।
४ ५ १र २ २ २२ १
मा५यिभोईहायि ॥(१) आतिष्ठवा३हा। तृहन्नाथा२
१ र र २ २ २२र १ १र र २
म्। युक्तातेब्रा३हा। ब्रह्मणाहारी२। अर्वाचीना३॒
२ २२र १ १ र २ २ २२ १
हायि। सुतेमाना२ः। ग्रावाकृणो३हा। तुवा३हो२
५ ४ ५ १ २ २ १र
३४। वा। ग्रे५नोईहायि ॥(२) इन्द्रमिद्धा३हा। री
२ १ २ २ २१ १ १ र
वहाता२ः। अप्रतिधा३हा। इष्प्रवासा२म्। कृष्टी

* छ० गा० ३प्र० १अ० १८सा०।

† 'त्वारत्वाष्ट्री'—इति क० पु० पाठः।

र २ १ २ २र १ १ १ १ ३र २
णाऽ३सू३द्दा। ष्टुतीहूपा२। यअभ्वा३हायि। मानू३
१ ५ ४ ५
घो२३४। वा। घा५णोइ्हायि(३) ॥ १८ * ॥ [२]

५ र ३ १ ४ ५ १
॥ गौरीवितम् ॥ असा। विसो३। महइन्द्रतायि। अ
र १ र २ ४
विष्टधृष्णुवागद्दा२३यि। आत्वापृणा३१२३। क्रुई५द्रि
१ र १ ४ ५ ४ ५
याम्। राजःसूर्य्यो३१२३। नरोवा। आ५यिभोइ्हा
५र २ २ ४ ५ १ र र
यि ॥(१) आति। ष्ठवा३। तृहन्यौम्। युक्तातेब्रह्म
र १ र र १ ४ १
णाहरा२३यि। आर्वाचीना३१२३म्। सुते५मनाः। आ
र २ ४ ५ ४ ५ ५
वाक्रणो३१२३। तुवोवा। गू५नोइ्हायि ॥(२) इन्द्रम्।
३ १ ४र ५ १ १ ३र
दृह्मा३। रीवहताः अप्रतिधृष्टशवसा२३म्। आर्षी
र १ ४ १ २ ४र
णाऽ३सू३१२३। ष्टुती५हूपा। याअभ्वा३१२३। मानो
५ ५
वा। घा५णोइ्हायि(३) ॥ ४ † ॥ [३] २३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

सप्तमः खण्डः ॥ ७ ‡ ॥

---

* ऊ० गा० ११प्र० २ख० १८सा०।

† ऊ० गा० ११प्र० १ख० ४सा०।

‡ 'द्वादशाध्यायस्य पञ्चमखण्डः परिसमाप्तम्'—इति वि०।

Digitized by Google

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्द्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः॥ ६॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्ग-प्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे षष्ठोऽध्यायः* ॥

---

* 'तृतीयः प्रपाठकः परिसमाप्तः'—इति वि० मूलग्रन्थसम्मतम्।